प्रकाशन गृह की ओर से

विदेशी पाठको की अनेकानेक प्रार्थनाओ को ध्यान मे रखते हुए प्रगति प्रकाशन 'समाजवाद और कम्युनिज्म' सकलन प्रकाशित कर रहा है। इस पुस्तक मे नि० से० ख्रुश्चोव के ऐसे उद्धरण सग्रहीत किए गए हैं, जो समाजवादी तथा कम्युनिस्ट निर्माण के मुख्य व्यावहारिक तथा सैद्धान्तिक प्रश्नो से सम्बन्धित हैं, आधुनिक ससार मे समाजवाद की स्थिति को और व्यापक तथा मजबूत बनाने और दो सामाजिक-आर्थिक व्यवस्थाओ की शान्तिमय प्रतियोगिता के प्रश्नो से सम्बन्धित हैं।

प्रस्तुत सस्करण मे नि० से० ख्रुश्चोव के उन भाषणो, रिपोर्टो और सार्वजनिक वक्तव्यो के उद्धरण शामिल हैं, जो १९५६–१९६३ के दौरान सोवियत अखबारो मे प्रकाशित हुए।

इसके साथ ही प्रगति प्रकाशन हमारे युग की अन्य मूलभूत समस्याओ पर चार सग्रह और प्रकाशित कर रहा है 'साम्राज्यवाद—जनता का शत्रु, शाति का शत्रु', 'क्रान्तिकारी मजदूर और कम्युनिस्ट आन्दोलन', 'राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन' और 'युद्ध रोकना—हमारा प्रमुखतम कर्त्तव्य'।

विषय-सूची

१. समाजवाद विश्व-विवर्तन मे निर्णायक कारणिक बन रहा है

बीसवी शताब्दी के सातवे दशक के प्रारभिक वर्षों की विश्व-परिस्थिति का विश्लेषण महान कम्युनिस्ट आन्दोलन के सभी सदस्यो के मन मे एक गभीर सतोष तथा उचित गर्व की भावना पैदा किए बिना नही रह सकता। सच तो यह है साथियो, कि यथार्थत जो कुछ घटित हुआ है वह अधिक से अधिक साहसिक तथा आशावादी भविष्यवाणियो और प्रत्याशाओ से भी कही बढकर है।

पहले हम कहा करते थे कि इतिहास समाजवाद के लिए काम कर रहा है। हमारा आशय यह था कि अन्ततोगत्वा मानव-जाति पूजीवाद को कूडे मे फेंक देगी और समाजवाद विजयी होगा। आज हम यह कह सकते हैं कि समाजवाद इतिहास के लिए काम कर रहा है, क्योकि एक विश्वव्यापी पैमाने पर समाजवाद का निर्माण और उसकी बल-वृद्धि वर्तमान ऐतिहासिक प्रक्रिया का बुनियादी अन्तर्य है।

अक्तूबर क्रान्ति से चार साल पहले १६१३ मे हमारे अमर नेता तथा शिक्षक व्ला० इ० लेनिन ने लिखा था कि 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' के समय से विश्व का इतिहास स्पष्टत तीन मुख्य कालो मे बट जाता है। पहला १८४८ की क्रान्ति से १८७१ के पेरिस कम्यून तक, दूसरा पेरिस कम्यून से १६०५ की रूसी क्रान्ति तक और तीसरा १६०५ की रूसी क्रान्ति से आगे। इन तीनो कालो के वर्णन को लेनिन ने इन शब्दो के साथ समाप्त किया है. "मार्क्सवाद के उद्भव के समय से विश्व-इतिहास के उक्त तीन बडे कालो मे से प्रत्येक काल मे मार्क्सवाद को नई पुष्टि और नई विजये प्राप्त हुई हैं। लेकिन आनेवाले ऐतिहासिक काल

मे सर्वहारा वर्ग के मतवाद के नाते, मार्क्सवाद को कही महानतर विजय प्राप्त होगी।"*

ये आगम बतानेवाले शब्द है, जो आश्चर्यजनक शक्ति और अचूकता के साथ चरितार्थ हुए है। ब्ला० इ० लेनिन ने जिस ऐतिहासिक काल की ऐसी शानदार भविष्यवाणी की थी, वह विश्व-इतिहास मे गुणात्मक और बुनियादी ढग से एक नया काल है। पहले के किसी भी काल से उसकी तुलना नही हो सकती। वे ऐसे काल थे जब मजदूर वर्ग शक्ति सचय कर रहा था और जब उसके वीरतापूर्ण सघर्ष पूजीवाद की बुनियादो को हिलाते हुए भी अभी मुख्य समस्या को, यानी मेहनतकश लोगो के हाथो मे सत्ता के अन्तरण की समस्या को हल करने मे असमर्थ थे। १९१७ की अक्तूबर क्रान्ति द्वारा प्रादुर्भूत समाजवाद की विश्वव्यापी ऐतिहासिक विजय के *कारण नया काल अन्य सभी कालो से भिन्न है।* उसके बाद से मार्क्सवादी-लेनिनवादी मतवाद एक पर एक शानदार विजये प्राप्त करता रहा है। आज उसका महान प्रभाव तथा क्रान्तिकारी भूमिका महज अलग अलग देशो और महाद्वीपो मे ही नही, बल्कि सारे ससार के सामाजिक विकास मे भी महसूस की जाती है।

अनेक ऐसे कारण है जो समाजवाद के मार्च को अविजेय बनाते है। सबसे पहला तो यह कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद ने आज ही लाखो-करोडो लोगो का मन जीत लिया है और इस प्रकार, मार्क्स के शब्दो मे, वह एक प्रबल भौतिक शक्ति बन गया है। इसके अतिरिक्त, मानव-जाति की दृष्टि मे आज मार्क्सवाद-लेनिनवाद महज एक सिद्धान्त नही, बल्कि एक जीता-जागता यथार्थ भी है, यानी यूरोप और एशिया के विस्तृत क्षेत्रो मे निर्मित होनेवाले समाजवादी समाज का यथार्थ, जिसमे वह सिद्धान्त मूर्त्त हो रहा है। पृथ्वी पर न कोई ऐसी शक्ति है और न हो सकती है, जो विशाल जन-समुदायो की निरन्तर बढ़ती हुई इस इच्छा को रोक सके कि वे अपनी आखो से देखें, बल्कि अपने हाथो से "महसूस करे" कि समाजवाद किताबो या घोषणापत्रो मे नही, वरन यथार्थ मे, व्यवहार

---

*ब्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, चौथा रूसी सस्करण, खण्ड १८, पृष्ठ ५४७।

मे कैसा होता है। अब ससार मे कोई ऐसी शक्ति नही है जो अधिकाधिक देशो की जनता को समाजवाद की ओर अग्रसर होने से रोक सके। एक और तथ्य है, जिसका प्रमुख महत्व है। अभी कल तक एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के करोडो-करोडो लोग साम्राज्यवादी "सभ्यता-प्रसारको" के जुए के नीचे पिस रहे थे, जबकि आज तसवीर बिलकुल ही बदल रही है। इतिहास के क्षेत्र मे अधिकाधिक सख्या मे नव-स्वाधीन देशो के क्रान्तिकारी प्रवेश से मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचारो के प्रभाव-क्षेत्र मे अभूतपूर्व विस्तार के लिए अत्यधिक अनुकूल परिस्थितिया प्रस्तुत हो रही है। अब वह दिन दूर नही है, जब मार्क्सवाद-लेनिनवाद ससार के अधिकतर लोगो के मन जीत लेगा। अक्तूबर क्रान्ति की विजय से लेकर गत तैतालिस वर्षो का विश्व-विवर्तन इस बात का निर्णयात्मक प्रमाण प्रस्तुत करता है कि विश्व समाजवादी क्रान्ति का लेनिनवादी सिद्धान्त वैज्ञानिक दृष्टि से अचूक और जीवत है।

लेनिन ने विश्व समाजवादी क्रान्ति की प्रक्रिया और उसमे भाग लेनेवाली शक्तियो का जैसे वर्णन किया है, उसे याद करना उपयोगी होगा। उन्होने कहा " समाजवादी क्रान्ति प्रत्येक देश के पूजीपति वर्ग के खिलाफ एकमात्र अथवा मुख्य रूप से वहा के क्रान्तिकारी सर्वहारा वर्ग का ही सघर्ष नही होगा—नही, वह अन्तर्राष्ट्रीय साम्राज्यवाद के खिलाफ साम्राज्यवाद के सताए सभी उपनिवेशो और देशो का, सभी पराधीन देशो का सघर्ष होगा।"* लेनिन ने इस बात पर जोर दिया कि उस सघर्ष का मुख्य लक्ष्य राष्ट्रीय आजादी होगा और उन्होने कहा "यह पूरी तरह स्पष्ट है कि ससार की अधिकतर जनता का जो आन्दोलन प्रथमत राष्ट्रीय आजादी के लिए अभिप्रेत था, वह विश्व-क्रान्ति के आगामी निर्णयात्मक सघर्षो मे पूजीवाद और साम्राज्यवाद-विरोधी बन जाएगा और सभवत हमारी आशा से कही बढकर क्रान्तिकारी भूमिका अदा करेगा।"**

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, चौथा रूसी सस्करण, खण्ड ३०, पृष्ठ १३८।

**व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, चौथा रूसी सस्करण, खण्ड ३२, पृष्ठ ४५८।

मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सस्थापको ने इस बात पर ठीक ही जोर दिया था कि जब समाजवाद विज्ञान बन जाए, तब उसे विज्ञान की तरह बरतना चाहिए। अगर हमारे कार्यक्रम मे कम्युनिस्ट समाज के निर्माण की भूमिका के रूप मे कम्युनिज्म के भौतिक और तकनीकी आधार का निर्माण न शामिल होता, तो एक वैज्ञानिक पार्टी-कार्यक्रम की हैसियत से वह बेकार होता।

पार्टी-कार्यक्रम तैयार करने मे हमने लेनिन के आदेशानुसार काम किया है। मै एक ऐतिहासिक उदाहरण की याद दिलाऊ। 'गोएलरो' योजना को बयान करते हुए व्ला० इ० लेनिन ने बताया था "मेरी राय मे यह हमारा दूसरा पार्टी-कार्यक्रम है . हमारा पार्टी-कार्यक्रम महज पार्टी-कार्यक्रम नही रह सकता। उसका विकसित होकर हमारे आर्थिक निर्माण का कार्यक्रम वन जाना लाजिमी है। अन्यथा वह पार्टी-कार्यक्रम के रूप मे भी बेकार है। उसका पूरक एक दूसरा पार्टी-कार्यक्रम, पूरी की पूरी राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था की वहाली और उसे आधुनिक स्तरो तक उन्नत करने की एक योजना बनाई जानी चाहिए।"* लेनिन ने कहा था कि "बिजलीकरण से रूस का कायाकल्प हो जाएगा। सोवियत व्यवस्था पर आधारित बिजलीकरण से हमारे देश मे कम्युनिज्म की बुनियादो की अतिम विजय के लिए पथ प्रशस्त होगा .."**

इतिहास के अनुभव ने हमे दिखला दिया है कि हमारे महान शिक्षक की बात कितनी ठीक थी। 'गोएलरो' योजना, औद्योगीकरण-योजना तथा लेनिन की सामूहीकरण-योजना की बरकत से ही सोवियत भूमि मे उत्पादन के समाजवादी सम्बन्धो की जड जमी।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के नए कार्यक्रम मे यह निर्धारित करके हमारी पार्टी ने लेनिनवादी भावना के अनुसार काम किया है कि कम्युनिज्म के भौतिक और तकनीकी आधार का निर्माण करना ही हमारा मुख्य आर्थिक कार्यभार है।

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, चौथा रूसी सस्करण, खण्ड ३१, पृष्ठ ४८२।

**व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, चौथा रूसी सस्करण, खण्ड ३०, पृष्ठ ३४३।

करती है और कम्युनिस्ट तथा मजदूर आन्दोलन के सामने कम्युनिज्म की विश्वव्यापी विजय की स्पष्ट सभावना प्रस्तुत करती है।

समूचे वर्त्तमान युग के सार तथा चरित्र की व्याख्या करने मे यह बेहद जरूरी है कि उसकी मौजूदा मजिल की मुख्य विचित्रताओ और विशेषताओ के बारे मे हमारी समझ साफ हो। अपनी मुख्य गामक शक्तियो के लिहाज से अक्तूबर के बाद की मुद्दत साफ साफ दो दौरो मे बटी हुई है। पहली की शुरूआत अक्तूबर क्रान्ति की विजय के साथ हुई। लेनिन के शब्दो मे कहे कि वह सर्वहारा वर्ग के राष्ट्रीय अधिनायकत्व, यानी केवल रूस की राष्ट्रीय सीमाओ के भीतर सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व की स्थापना और विकास का दौर था।

यद्यपि सोवियत सघ अपने अस्तित्व के पहले दिनो से ही अन्तर्राष्ट्रीय मामलो को बहुत अधिक प्रभावित करने लगा, फिर भी अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो की दिशा और चरित्र का निर्णायक अधिकतर साम्राज्यवाद ही बना रहा। लेकिन उन प्रारभिक दिनो मे भी सोवियत सघ को कुचल देने, उसे विकसित होकर एक ऐसी प्रबल औद्योगिक शक्ति बनने से रोकने मे साम्राज्यवाद असमर्थ सिद्ध हुआ, जो प्रगति और सभ्यता का गढ बन गया, साम्राज्यवादी उत्पीडन तथा फासिस्ट गुलामी के खिलाफ लडनेवाली सभी शक्तियो का आकर्षण-केन्द्र बन गया।

वर्त्तमान युग के विकास मे दूसरे दौर का सम्बन्ध विश्व समाजवादी व्यवस्था के उद्भव के साथ है। यह एक विश्वव्यापी ऐतिहासिक महत्व की क्रान्तिकारी प्रक्रिया है। अक्तूबर क्रान्ति ने साम्राज्यवादी जजीर की एक ही कडी तोडी थी। उसके बाद वह जगह जगह तोड दी गई। पहले हम साम्राज्यवादी जजीर की एक या अधिक कडिया तोडने की बाते करते थे। आज साम्राज्यवाद की कोई भी सर्वग्राही जजीर नही रह गई है। मजदूर वर्ग का अधिनायकत्व एक देश की सीमाओ को पार करके एक अन्तर्राष्ट्रीय शक्ति बन गया है। साम्राज्यवाद ने केवल उन्ही देशो को नही खोया है, जहा समाजवाद की विजय हो चुकी है। वह तेजी से प्राय· अपने सारे उपनिवेश खो रहा है। स्वभावत इन चोटो और नुकसानो के फलस्वरूप पूजीवाद का आम सकट अत्यधिक तीव्र हो गया

है और ससार का शक्ति-सतुलन मौलिक रूप से बदलकर समाजवाद के अनुकूल हो गया है।

हमारे युग की मुख्य परिचायक विशेषता यह है कि मानव-समाज के विकास मे विश्व समाजवादी व्यवस्था निर्णयात्मक कारणिक बनता जा रहा है। यह बात अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो के क्षेत्र मे भी सीधे सीधे अभिव्यक्त हो रही है। वर्त्तमान परिस्थितियो मे इस बात के आधार पैदा हो गए हैं कि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो के चरित्र, उसकी प्रणालियो तथा रास्तो का अधिकाधिक निर्णय समाजवाद द्वारा हो।

(विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन की नई विजयो के लिए। कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियो के प्रतिनिधियो के सम्मेलन के निष्कर्ष। ६ जनवरी १६६१। 'कम्युनिज्म—जनता के लिए शान्ति और सुख' शीर्षक सग्रह, खण्ड १। मास्को, 'गोस्पोलीत-इज्दात' प्रकाशन गृह, १६६२, पृष्ठ १२—१६)*

---

*इस पुस्तक मे उल्लिखित सभी पुस्तको के नाम रूसी सस्करण के अनुसार दिये गये हैं।—सं०

२. सर्वाधिक प्रगतिशील समाज-व्यवस्था – समाजवाद

पूंजीवादी व्यवस्था से समाजवादी व्यवस्था की वरिष्ठता

ससार के लोग हमारी सोवियत समाज-व्यवस्था को सर्वाधिक उन्नत और सर्वाधिक प्रगतिशील व्यवस्था क्यो समझते है?

इसलिए कि सर्वाधिक क्रान्तिकारी सिद्धान्त, मार्क्सवाद-लेनिनवाद उसका विचारधारात्मक आधार है, जो मानव द्वारा मानव के शोषण को अमान्य करता है।

इसलिए कि सोवियत व्यवस्था जनता की सच्ची आजादी की जमानत करती है, वह मेहनतकश इन्सान को ऊचे उठाकर उसे अपने भाग्य का स्वामी और नए जीवन का निर्माता बनाती है।

इसलिए कि सोवियत व्यवस्था समाज की उत्पादन-शक्तियो के विकास के लिए अच्छी से अच्छी परिस्थितिया पैदा करती है।

इसलिए कि जनता के लिए भौतिक मूल्यो की प्रचुरता पैदा करना हमारा उद्देश्य और हमारा तात्कालिक अमली कार्यभार है। हमारे देश के मेहनतकश लोग हर रोज और हर घटे यह देखते है कि उनकी भौतिक खुशहाली बढ रही है, उनका जीवन सम्पन्नतर हो रहा है और उनकी सास्कृतिक तथा आध्यात्मिक आवश्यकताओ की पूर्ति अधिकाधिक बेहतर हो रही है।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी का नया कार्यक्रम पूजीवादी देशों के मेहनतकश लोगों को इसलिए आकर्षक प्रतीत होता है कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद के क्रान्तिकारी सिद्धान्त पर आधारित वह कार्यक्रम साफ साफ प्रदर्शित करता है कि कम्युनिज्म मे जनता के लिए क्या क्या राजनैतिक, आर्थिक तथा सास्कृतिक लाभ भरे है। उक्त कार्यक्रम इस बात को सोवियत

समाज-व्यवस्था के उदाहरण द्वारा, कम्युनिज्म के लिए हमारी जनता तथा उसके हिरावल दस्ते, गौरवशाली कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा किए गए शानदार सघर्ष के उदाहरण द्वारा प्रदर्शित करता है।

(कम्युनिस्ट निर्माण के कार्यक्रम की पूर्ति के लिए परती भूमि-विकास का महत्व। त्सेलीनोग्राद मे २२ नवम्बर १९६१ को हुए कजाखस्तान के कृषि-कार्यकर्त्ताओ के सम्मेलन मे किया गया भाषण। 'सोवियत सघ मे कम्युनिज्म का निर्माण और खेतीबारी का विकास' शीर्षक सग्रह, खड ६। मास्को, 'गोस्पोलीतइज्दात' प्रकाशन गृह, १९६३, पृष्ठ १२५-१२६)

पूजीवादी कहते है कि केवल वही व्यवस्था प्रगति करने मे समर्थ है जो स्वतत्र उद्यम—कहना चाहिए कि "जनता के स्वतत्र शोषण"—की सुविधाए प्रस्तुत करती है। पूजीवादियो का दावा है कि अर्थ-व्यवस्था, सस्कृति, विज्ञान तथा कलाओ की मुख्य प्रेरणा-शक्ति व्यापार या मुनाफा है। अमेरिका को उदाहरण-स्वरूप पेश करते हुए वे यह सिद्ध करने की कोशिश करते है कि मानवता की प्रगति केवल स्वतत्र उद्यम के, अर्थात् लाखो-लाखो मेहनतकश लोगो के शोषण की आजादी के रास्ते ही उपलब्ध की जा सकती है।

दूसरी तरफ, महान मार्क्सवादी-लेनिनवादी शिक्षा के आधार पर, समाजवादी निर्माण के अनुभव के आधार पर हम कम्युनिस्ट लोगो का कहना है कि नही, पूजीवादी सज्जनो, समाज की सच्ची प्रगति की जमानत केवल वही व्यवस्था करती है जो जनता को पूजीवादी गुलामी से आजाद करती है, जबकि श्रमिक लोग खुद अपने उत्पादन के मालिक होते है, जबकि उत्पादन के साधन मुट्ठी भर शोषको के बजाए आलीजाह मजदूर वर्ग के हाथो मे, मेहनतकशो के हाथो मे आ जाते है। दर-असल ऐसी ही व्यवस्था हर व्यक्ति की और पूरे समाज की क्षमताओ को उद्घाटित करती है। इस आजाद समाजवादी समाज के आजाद मेहनतकश लोगो मे चमत्कार करने और मानवता के उज्ज्वल भविष्य—कम्युनिज्म—का पथ प्रशस्त करने की क्षमता है। मार्क्स, एगेल्स और लेनिन के इस

महान वैज्ञानिक निष्कर्ष को जीवन ने, समाजवादी निर्माण का रास्ता अपनानेवाले राष्ट्रो की ऐतिहासिक विजयो ने सत्य सिद्ध कर दिया है।

(नोवोसिबीर्स्क मे १० अक्तूबर १९५९ को हुई सार्वजनिक सभा मे किया गया भाषण। 'शस्त्रहीन ससार ही युद्ध मुक्त ससार है' शीर्षक सग्रह, खण्ड २। मास्को, 'गोस्पोलीतइज्दात' प्रकाशन गृह, १९६०, पृष्ठ ३३८)

मानव के लाभ के लिए और अधिक उत्पादन

सभी समाजवादी देशो मे औद्योगिक तथा कृषि उत्पादन का अनुपात बदल गया है। औद्योगिक उत्पादन का अश तेजी से बढता जा रहा है और इस समय समाजवादी देशो के पूरे खेमे मे उसका औसत ७५ प्रतिशत है। विश्व समाजवादी व्यवस्था के आर्थिक विकास का रुख उद्योगो के विकास की ओर है।

अधिकतर लोक-जनतन्त्रो मे कृषि उत्पादन सहकारी सस्थाओ के सगठन-कार्य की पूर्ति इस अर्से (१९५६–१९६२–सं०) की एक महान क्रान्तिकारी घटना रही है। समाजवादी देशो मे खेती की कुल जमीन के ९० प्रतिशत से भी अधिक भाग मे अब समाजवादी खेती होती है। इसके फलस्वरूप समाज का वर्गीय ढाचा बदल गया है, मजदूर वर्ग और किसानो की मैत्री दृढतर हो गई है और मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण का आर्थिक आधार मिट गया है। जनता की नैतिक तथा राजनैतिक एकता, जिसकी स्थापना सबसे पहले हमारे देश मे हुई थी, सभी समाजवादी देशो मे अधिक मजबूत होती जा रही है...

आर्थिक प्रगति की बदौलत समाजवादी देशो मे जनता के रहन-सहन के स्तर उन्नत हुए है। इस बात का उल्लेख करना इसलिए और भी अधिक सतोषप्रद है कि शुरू के वर्षों मे बिरादराना देशो मे समाज के क्रान्तिकारी पुनर्गठन के काम मे अनिवार्यत. काफी नुकसान उठाना और कठिनाइयो का सामना करना पडा तथा पूजीवाद से विरसे मे मिले आर्थिक पिछडेपन को दूर करने मे भारी रकमे खर्च करना पड़ी।

अब चूकि सामाजिक पुनर्गठन की एक महत्त्वपूर्ण मजिल तय कर ली गयी है, इसलिए अर्थ-व्यवस्था तथा सस्कृति के अपर विकास और जनता के रहन-सहन के स्तर को उच्चतर बनाने के लिए अधिक अनुकूल परिस्थितिया उत्पन्न हो गयी है।

(सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २२वी काग्रेस मे पार्टी की केन्द्रीय समिति द्वारा पेश की गई रिपोर्ट। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २२वी काग्रेस, शार्टहैड रिपोर्ट, खड १। मास्को, 'गोस्पोलीतइज्दात' प्रकाशन गृह, १६६२, पृष्ठ २०)

पूजीवाद पर समाजवाद की विजय बहुत हद तक उत्पादन-वृद्धि पर निर्भर होती है। लेकिन किसी एक व्यवस्था के मुकाबले मे दूसरी व्यवस्था के लाभो को ठीक से आकने के लिए हमे मुख्यतया इस बात पर विचार करना चाहिए कि उत्पादन-वृद्धि से समाज को, मनुष्य को, क्या प्राप्त होता है। मिसाल के तौर पर अमेरिका मे फी आदमी बहुत सा गोश्त और मक्खन पैदा होने तथा अनेक टेलीविजन-सेट और मोटरे तैयार होने से किसी बेकार नागरिक को दर-असल क्या फायदा है?

आखिरकार पूजीवादी देशो मे पैदा होनेवाली दौलत का बहुत बडा हिस्सा शोषको और उनके पिछलग्गुओ को ही मिलता है, जबकि समाजवाद के अन्तर्गत प्रति व्यक्ति उत्पादन बढने का मतलब मेहनतकश इसान की जीवन-स्थिति मे सच्चा सुधार होता है। आलकारिक भाषा मे कहे कि जब हम उत्पादन बढाते है, तो सचमुच देश मे हर "व्यक्ति" को उससे लाभ होता है, जबकि पूजीवादी देशो मे उत्पादन-वृद्धि के सभी लाभ केवल धनी "व्यक्ति" को, पूजीवाले "व्यक्ति" को प्राप्त होते है। निपूजिया "व्यक्ति" की तो उत्पादन बढने के बावजूद मुश्किल से जीविका चल पायेगी। वे इसी को पूजीवादी व्यवस्था मे "समान अवसर" कहते है–यानी एक तो तिजोरिया भरे और दूसरा भूखो मरे। यह एक ऐसी व्यवस्था है, जो पूजीवाद के नियमो के अनुरूप ही है। उसमे यह साधारण और स्वाभाविक बात मानी जाती है।

उत्पादन तो वढे, लेकिन अधिकाश जनता की उपभोग-क्षमता न वढे—इस प्रकार के अन्तर्विरोध की समाजवाद मे कल्पना तक नही की जा सकती। समाजवादी समाज मे तो उत्पादन मे विस्तार की योजना भौतिक सम्पत्ति बढाने के स्पष्ट उद्देश्य से बनायी जाती है, ताकि समाज के सभी सदस्यो की आवश्यकताओ की पूर्ति और अच्छी तरह से हो।

इस वात पर जोर दिया जाना चाहिए कि किसी पूजीवादी और किसी समाजवादी देश मे—मिसाल के तौर पर सयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत सघ मे—उत्पादन का स्तर एक ही हो सकता है, लेकिन उसके सामाजिक परिणाम मे जमीन-आसमान का अन्तर होगा। ठीक इसी वात मे समाजवाद की श्रेष्ठता प्रकट होती है, क्योकि उसके अन्तर्गत उत्पादन नफाखोरी की खातिर नही, बल्कि समाज के सभी सदस्यो की आवश्यकताए पूरी करने की खातिर होता है।

(१९५९–१९६५ के लिए सोवियत सघ के आर्थिक विकास के लक्ष्याक। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की असाधारण २१वी काग्रेस मे किया गया भाषण। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की असाधारण २१वी काग्रेस, शार्टहैड रिपोर्ट, खड १। मास्को, 'गोस्पोलीतइज्दात' प्रकाशन गृह, १९५९ पृष्ठ ६६–६७)

वैज्ञानिक तथा तकनीकी उपलब्धियो के आधार पर समाजवादी उद्योग की वृद्धि समाजवादी रास्ता अख्तियार करनेवाले सभी देशों की चारित्रिकता है, चाहे उनके उद्योग अतीत मे चेकोस्लोवाकिया और जर्मन जनवादी जनतन्त्र की तरह विकसित रहे हो अथवा बुल्गारिया और अल्बानिया की तरह अविकसित रहे हो।

कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टिया तथा सभी समाजवादी देशो की सरकारे राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था की सभी शाखाओ मे तकनीकी प्रगति को प्रधान रूप से महत्वपूर्ण मानती है। यह स्वाभाविक ही है, क्योकि समाजवाद और कम्युनिज्म का सफल निर्माण केवल अप्रतिहत वैज्ञानिक और तकनीकी सुधार तथा विकास के आधार पर ही सभव है। उद्योग

श्रौर कृषि मे वैज्ञानिक तथा तकनीकी प्रगति के फलस्वरूप ही सामाजिक श्रम की उत्पादनशीलता मे तीव्र वृद्धि होती है, उत्पादन की क्वालिटी मे सुधार होता है तथा व्यय मे कमी होती है श्रौर उसी से कालान्तर मे समाजवाद तथा कम्युनिज्म के भौतिक श्रौर तकनीकी श्राधार के निर्माण के लिए श्रावश्यक परिस्थितिया प्रस्तुत होती है। इससे भी वढकर, श्रनुभव से प्रगट है कि किसी देश मे समाजवाद की हैसियत जितनी ही श्रधिक मजबूत है, वैज्ञानिक तथा तकनीकी विकास के लिए, श्रौद्योगिक उत्पादन की श्रपर उन्नति के लिए उतनी ही श्रधिक श्रनुकूल परिस्थितिया तथा सभावनाए विद्यमान हैं। ये दोनो ही परिस्थितिया एक दूसरी के साथ श्रविभाज्य रूप से सम्बन्धित हैं।

हम जानते हैं कि पूजीवादी देशो मे भी तकनीकी प्रगति होती है। लेकिन वहा वह एकमात्र इजारेदारी मुनाफे के हित मे होती है श्रौर उसके फलस्वरूप मेहनतकश लोगो का श्रौर श्रधिक शोषण होता है।

समाजवादी देशो मे होनेवाली तकनीकी प्रगति उससे भिन्न चीज है। समाजवादी देशो मे नवीनतम मशीनो श्रौर वेहतर उत्पादन-तकनीक से श्रादमी का श्रम-भार हल्का होता है श्रौर जीवन-यापन के स्तर को निरन्तर ऊचा बनाते जाना सभव होता है। जहा तक मेहनतकश लोगो की स्थिति पर तकनीकी प्रगति के प्रभाव का सवाल है, पूजीवादी देशो श्रौर समाजवादी राज्यो के महान समुदाय मे यही वुनियादी श्रन्तर है।

(मास्को मे ४ सितम्बर १९५९ को पोलैण्ड की श्रौद्योगिक प्रदर्शनी के उद्घाटन के श्रवसर पर किया गया भाषण। 'शस्त्रहीन ससार ही युद्ध मुक्त ससार है' शीर्षक सग्रह, खण्ड २, पृष्ठ ३५–३६)

उन्नत होता हुश्रा जीवन-स्तर। कार्य-दिन में कमी। श्रावास-समस्या का हल। काम की गारंटी

सोवियत जनता के रहन-सहन का स्तर ऊचा करना, उसकी भौतिक तथा श्रात्मिक जरूरतो को प्रोत्साहन देना तथा उनकी श्रधिकाधिक पूर्णतर तुष्टि करते जाना हमारी पार्टी की सरगर्मी का मुख्य उद्देश्य है। हमारे

देश मे समाजवादी व्यवस्था प्रौढता के एक एसे दौर मे पहुच गयी है, जब उसकी निहित क्षमताए अधिकाधिक प्रकट होती जा रही ह। आर्थिक विकास की गति के मामले मे समाजवाद की श्रेष्ठता का न केवल भौतिक उत्पादन पर, वल्कि खपत पर भी अधिकाधिक अनुकूल प्रभाव पड रहा है।

समाजवाद मे राष्ट्रीय आय जितनी ही अधिक होगी, रहन-सहन का स्तर उतना ही ऊचा होगा। सोवियत सघ मे तीन-चौथाई राष्ट्रीय आय जनता की वैयक्तिक आवश्यकताओ की पूर्ति करने मे खर्च की जाती है। १९५५ की अपेक्षा १९६० मे सोवियत सघ की राष्ट्रीय आय ५० प्रतिशत से अधिक वढी थी और पिछले दस वर्षो मे प्रति व्यक्ति १२० प्रतिशत वढी है। **अति विकसित पूंजीवादी देशो की तुलना में सोवियत संघ में प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय कहीं ज्यादा तेजी से बढ़ रही है।**

राष्ट्रीय आय मे वृद्धि के आधार पर मजदूरो तथा दफ्तरी कर्मचारियो की वास्तविक आय पिछले पाच वर्षों मे फी वारोजगार आदमी २७ प्रतिशत और सामूहिक फार्मो के किसानो की आय फी किसान ३३ प्रतिशत वढी है। सप्तवर्षीय योजना (१९५९–१९६५–सं०) के अन्तर्गत मजदूरो, दफ्तरी कर्मचारियो और सामूहिक फार्मो के किसानो की वास्तविक आय मे ४० प्रतिशत तक वृद्धि होगी।

हमने अधिक उन्नत पूजीवादी देशो की अपेक्षा अपने लिए रहन-सहन का उच्चतर स्तर उपलब्ध करने का कार्यभार निर्धारित किया है। यह कार्यभार निर्धारित करने मे हमारा ध्यान केवल उन क्षेत्रो की ओर है, जिनमे हमे वास्तव मे पूजीवादी देशो के वरावर पहुचकर उनसे आगे निकल जाना है। कई मामलो मे सोवियत सघ अभी ही अत्यधिक विकसित पूजीवादी देशो की तुलना मे निर्विवाद रूप से वरतरी हासिल कर चुका है।

नि शुल्क शिक्षा, मुफ्त डाक्टरी सेवा, वेरोजगारी का अभाव और समाजवाद मे प्राप्त अनेक दूसरी सुविधाए बहुत जमाने से सोवियत जनता के लिए मामूली वाते वन चुकी है, जैसे कि वे मानी हुई वाते हो। साथियो, ये हमारी **सबसे बड़ी सफलताएं हैं और हमारी जनता का उनपर गर्व करना ठीक ही है। इस क्षेत्र में हम पूंजीवादी देशो को वहुत पहले पीछे छोड़ चुके है।** इस प्रकार की सफलताएं प्राप्त करने के लिए

पूजीवादी देशो के मजदूर वर्ग को वहुत कोशिश करना पडेगी, उसे डटकर सघर्ष करना पडेगा .

सभी मजदूरो तथा दफ्तरी कर्मचारियो का कार्य-दिन १६६० मे सात या छ घटे का हो गया। इस प्रकार काम का हफ्ता साढे छ घटे कम हो गया और मजदूरी मे कोई कमी नही वल्कि वढती ही हुई। अगले कुछ वर्षों मे सभी मजदूरो तथा दफ्तरी कर्मचारियो के लिए, जिनका कार्य-दिन इस समय सात घटे का है, ४० घटे का कार्य-सप्ताह कर देने का इरादा किया गया है।

(सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २२वी काग्रेस मे पार्टी की केन्द्रीय समिति द्वारा पेश की गई रिपोर्ट। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २२वी काग्रेस, शार्टहैण्ड रिपोर्ट, खण्ड १, पृष्ठ ८४–८५, ८६)

भला वताइए तो, क्या कभी किसी पूजीवादी देश मे, किसी पूजीवादी उद्यम मे ऐसा हुआ है कि खान या कारखाने का मालिक मजदूरो को बुलाकर उनसे कहे कि अमुक दिन से मै आपके काम के घटे घटा दूगा और मजदूरी वढा दूगा? अगर कभी कोई ऐसा पूजीपति हुआ, तो शायद उसके दिमाग की जाच कराने के लिए उसे पागलखाने ले जाया जाएगा। क्यो? क्योकि उसका वैसा करना पूजीवादी व्यवस्था के स्वभाव के विरुद्ध होगा। वैसा होना पूजीवाद मे असभव और अचिन्तनीय है। लेकिन हमारे समाजवादी देश मे वह सामान्य और स्वाभाविक वात है। यही कारण है कि हमारे देश मे मजदूर हडताल नही करते, यही कारण है कि ट्रेड-यूनियने अधिक जल्दी से योजना-पूर्ति के लिए मजदूरो को सगठित करती है और तब मजदूर वर्ग और किसान अधिक लाभ प्राप्त करते है।

(फ्रान्सीसी ट्रेड-यूनियनो के प्रतिनिधियो से वातचीत। ३१ मार्च १६६०। 'सोवियत सघ की विदेश-नीति (१६६०)' शीर्षक सग्रह, खण्ड १। मास्को, 'गोस्पोलीतइज्दात' प्रकाशन गृह, १६६१, पृष्ठ ३३५)

समाजवादी देशो के नागरिको के जीवन को बेहतर बनाने के सभी पहलुओ मे हमारी पार्टियो की गभीर दिलचस्पी है। आवास की समस्या को ही लीजिए। किसी भी समाज की वह एक बुनियादी समस्या है।

इस समस्या को पूजीवाद और समाजवाद मे किस प्रकार हल किया जाता है? मुझे चन्द तथ्यो का हवाला देने की अनुमति दीजिए। सबसे धनी पूजीवादी देश सयुक्त राज्य अमेरिका मे १६३६ मे शुरू किए गए सरकारी गृह-निर्माण कार्यक्रम के अन्तर्गत केवल ४,४४,००० सार्वजनिक मकान वन पाए और उस मुद्दत मे महज ७ फीसदी चाले खतम की गईं। इस बात को सयुक्त राज्य अमेरिका के पूजीवादी अखबार भी मानते है कि तामीर की इस रफ्तार से उस देश की सभी चालो का अन्त करने मे २८० साल लगेगे।

सोवियत संघ मे सप्तवर्षीय योजना के केवल पहले ही साल मे शहरो और मजदूरो की बस्तियो मे जो मकान बनाए गए है उनका कुल रहाइशी रकबा ८,०४,००,००० वर्ग मीटर है। दूसरे शब्दो मे २२,००,००० से अधिक फ़्लैट शहरो मे और ८,००,००० से अधिक घर देहातो मे बनाए गए है।

कुल मिलाकर योजना के सात वर्षो मे १,५०,००,००० फ़्लैट तामीर किए जाएगे। सोवियत गृह-निर्माण कार्यक्रम का और स्पष्ट परिचय कराने के लिए मै कहू कि मोटे तौर से वह २,५०,००० की आबादी वाले १८० नए शहर बनाने के बराबर होगा। हमारे देश मे इन सात वर्षों मे वननेवाले नए मकानो का रहाइशी रकबा क्रान्ति-पूर्व के रूस की शहरी मकानियत के कुल क्षेत्र-विस्तार के तिगुने से भी अधिक होगा।

सयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रान्स, पश्चिमी जर्मनी, स्वीडन, निदरलैडस, बेल्जियम और स्विट्जरलैण्ड मे सब मिलाकर जितने फ्लैट हर साल बनते है, उससे अधिक हमारे देश मे बनते है। फी हजार आबादी पीछे वननेवाले फ़्लैटो की सख्या के लिहाज से सोवियत सघ का ससार मे पहला स्थान है।

गृह-निर्माण मे लोहे के साथ जमाए हुए कक्रीट के ढाचों का इस्तेमाल विस्तृत पैमाने पर हो रहा है, जिसकी वजह से हम औद्योगिक निर्माण-पद्धतियो का अधिकाधिक उपयोग करने, इमारतो की क्वालिटी बेहतर

करने और तामीरात का खर्च घटाने मे समर्थ है। मिसाल के लिए, इस साल सोवियत सघ मे २,६०,००,००० घन मीटर लोहे के साथ जमाए हुए कक्रीट के ढाचे पैदा किए जाते है। सयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रान्स और पश्चिमी जर्मनी मे कुल मिलाकर जितने जमाए हुए लोहे-कक्रीट के ढाचे पैदा किए गए है उनकी तुलना मे उक्त मात्रा दुगुनी से भी अधिक है।

यो इस जीवमूलक महत्वपूर्ण क्षेत्र मे भी समाजवाद उस पूजीवाद के ऊपर अपनी वरिष्टता को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है, जो आवास की समस्या को हल करने मे असफल साबित हो चुका है और करोडो लोगो की जिन्दगी को गन्दी चालो के हवाले करता है या बेघरबार छोड देता है।

(रूमानियाई मजदूर पार्टी की तीसरी कांग्रेस मे जून २१ १९६० को किया गया भाषण। 'सोवियत सघ की विदेश-नीति (१९६०)' शीर्षक सग्रह, खण्ड २, पृष्ठ ४४–४५)

हमारा दावा है कि आदमी का सर्वोच्च अधिकार, जो उसकी आजादी की जमानत करता है, काम करने का अधिकार है, आज और कल के निश्चित जीवन का अधिकार है, बेकारी और गरीबी के भयानक खतरे से मुक्ति का अधिकार है। उन लोगो के शोषण से मुक्ति पा लेना ही व्यक्ति की आजादी और आदमी के अधिकारो की जमानत की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है, जिन्होने उत्पादन के साधनो को, फैक्टरियो, कारखानो, बैको, मकानो, जमीन और उसकी खनिज सम्पत्ति को अपने हाथो मे संकेन्द्रित कर रखा है और उन सबका इस्तेमाल अपनी निजी समृद्धिशीलता के लिए करते है।

शोषको के लिए काम करने के बजाय, अपने लिए और समाज के लिए काम करने मे ही हम सच्चा सामाजिक न्याय, मानव के युग-युग के सपनो की सिद्धि और मानवतावाद की अभिव्यक्ति देखते है।

सोवियत सघ मे हर नागरिक काम, आराम और अवकाश, बुढापे और असमर्थता की हालत मे भरण-पोषण तथा शिक्षा के अधिकार का

यथार्थत उपयोग करता है। हमारी जनता बेकारी के भय से मुक्त हो चुकी हैं, हर नागरिक को अपनी रचनात्मक शक्तियो और योग्यताओ को विकसित करने के पर्याप्त सुयोग प्राप्त हैं।

(भारतीय ससद मे किया गया भाषण। ११ फरवरी १९६०। 'सोवियत सघ की विदेश-नीति (१९६०)' शीर्षक सग्रह, खण्ड १, पृष्ठ ७५–७६)

जनता के सृजनात्मक प्रयास। समाजवाद में स्त्रिया और युवक-युवतिया। ट्रेड-यूनियनें

रचनात्मक श्रम ही कम्युनिस्ट शिक्षा का, व्यक्ति के सर्वतोमुख विकास का आधार है। श्रम सदा मनुष्य के अस्तित्व और विकास का स्रोत रहा है और रहेगा। यह नारा सभी भाषाओ और सभी जातियो मे विभिन्न रूपो मे विद्यमान है कि "जो काम नही करेगा, वह नही खायेगा।"

कम्युनिस्टो ने जनता को श्रम से नही, उसके श्रम के शोषण से मुक्त करना अपना उद्देश्य बनाया है। "प्रत्येक से उसके योग्यतानुसार और प्रत्येक को उसके आवश्यकतानुसार"– इस कम्युनिरट सिद्धान्त मे मनुष्य के श्रम के साथ मनुष्य के लिए जीवन की सभी वस्तुओ की व्यवस्था आन्तरिक रूप से जुडी हुई है।

प्रत्येक मनुष्य मे यह चेतना पैदा करना कम्युनिस्ट शिक्षा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उद्देश्य यह है कि मनुष्य श्रम के विना जीवित नही रह सकता, वह तब तक जीवित नही रह सकता जब तक जीवन के साधनो की सर्जना नही करता। सोवियत जन सारे अच्छे काम अपने लिए और पूरे समाज के लिए करते है। अपने काम को ईमानदारी से करने, प्रत्येक काय को अच्छी तरह और वक्त पर करने का अर्थ है अपने साथियो की चिन्ता करना, जो स्वय भी सबके लिए, आपके लिए भी, काम कर रहे है। इसी बात मे नये समाज के लोगो का साथी जैसा सहयोग और आपसी सहायता निहित है।

पूजीपति वर्ग मेहनतकश लोगो को दवाता और अपमानित करता है। स्वतत्र श्रम को जीवन तथा सभी आदमियो के कल्याण का स्रोत और सामाजिक प्रगति तथा समृद्धि की गारटी समझकर कम्युनिस्ट उसका गौरव-गान करते है।

(सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम के सम्वन्ध मे। पार्टी की २२वी काग्रेस मे प्रस्तुत रिपोर्ट। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २२वी काग्रेस, शार्टहैण्ड रिपोर्ट, खण्ड १, पृष्ठ २१९-२२०)

हमारे देश मे चीजे वहुत अच्छी तरह आगे वढ रही है और हम सभी अपनी उपलब्धियो से आनन्दित है। लेकिन कहावत है कि सुधार की गुजाइश हमेशा रहती है। यही कारण है कि पार्टी सदा जनता का आह्वान करती रहती है कि इतराइए नही, उपलब्ध सफलताओ पर ही सतोप करके न वैठ जाइए।

श्रम-उत्पादनशीलता को वढाने के वारे मे मै एकाधिक वार कह चुका हू। मेरा खयाल है कि आप मे से कुछ लोग मेरी वाते सुन रहे हैं और सोच रहे है कि आखिर हमसे और वेहतर काम करने के लिए कहना ये कव वन्द करेगे? हम अच्छी तरह काम कर रहे है, लेकिन फिर भी ये कहते ही जाते है और वेहतर काम कीजिए, और अधिक पैदा कीजिए।

लेकिन यह एक महत्वपूर्ण मामला है, जिसे हमे भूलना नही होगा। पार्टी कार्यक्रम मे जो कुछ अवधारणा की गई है उसकी उपलब्धि श्रम द्वारा ही हो सकती है, वेहतर जीवन की सर्जना केवल जनता के श्रम से, वेहतर और अधिक उत्पादक श्रम से ही की जा सकती है। सोवियत जन का उच्च ध्येय, उसका प्राथमिक कर्त्तव्य, देश के लिए, समाज की वेहतर जिन्दगी के लिए, आनेवाली पीढियो के लिए धन की सर्जना है, उसका सचयन है। मकान कहा से आते है? क्या उन्हे भगवान आकाश मे से नीचे उतार देता है? नही, हमे खुद उन्हे वनाना

पडता है। मशीने कहा से आती है? आप जानते है कि उन्हे निर्मित करना होता है। अनाज कहा से आता है? उसे पैदा करना होता है। अनेक घर, स्कूल, शिशु-प्रतिष्ठान और अस्पताल बनाने है। अधिक उपभोक्ता-माल तैयार करने है। यही कारण है कि पार्टी सोवियत जनता का आह्वान करती है कि लोगो की आवश्यकताओ की शीघ्रतर पूर्ति के निमित्त उत्पादन को बढाइए। दूसरा कोई मार्ग नही है।

मुझे भरोसा है कि आप यह समझते है कि जब मै श्रम-उत्पादन-शीलता की वृद्धि करने की बात कहता हू तो मेरा मतलब यह नही होता कि वैसा केवल शारीरिक बल द्वारा ही किया जाना है। नही, उसकी उपलब्धि बेहतर श्रम-सगठन, मशीनों के कुशल उपयोग तथा उस उपयोग के लिए आदमियो के प्रशिक्षण द्वारा की जा सकती है। श्रम-उत्पादनशीलता को बढाने के लिए सभी साधनो का मुनासिब उपयोग करना जरूरी है।

(मास्को मे, २७ फरवरी १९६३ को कालिनिन निर्वाचन-क्षेत्र के मतदाताओ की एक सभा मे किया गया भाषण। मास्को, 'गोस्पोलीतइज्दात' प्रकाशन गृह, १९६३, पृष्ठ १५–१६)

सोवियत शासन ने नारी को उस जिल्लतभरी गुलामी से मुक्त कर दिया है जिसमे वह जारशाही के जमाने मे पडी हुई थी और जिसमे आज भी अनेक पूजीवादी देश उसे रखे हुए है। सोवियत नारिया सभी सरकारी, राजनैतिक, आर्थिक और सास्कृतिक जीवन-क्षेत्रो मे एक सक्रिय शक्ति है और उन्हे समाजवादी समाज के नागरिको के नाते सभी अधिकार पुरुषो के बराबर प्राप्त है। फिर भी अनेक स्त्रिया घर और बच्चो की देखभाल मे लगी रहती है, जिससे उनके लिए सार्वजनिक जीवन मे सक्रिय भाग लेना कठिन होता है।

ऐसी परिस्थितिया पैदा की जानी चाहिए, जिनसे सभी स्त्रिया उत्पादक और समाजोपयोगी क्रिया-कलापो मे अपने अधिकारो, ज्ञान और प्रतिभा का अधिक से अधिक उपयोग कर सके। छात्रावास-स्कूलो, किडरगार्टनो, शिशु-गृहो, सार्वजनिक भोजनालयो और अन्य सार्वजनिक

सुख-सुविधाओ का प्रसार करके हम स्त्रियो के लिए ये स्थितिया उत्पन्न कर रहे है।

(१९५९–१९६५ के लिए सोवियत सघ के आर्थिक विकास के लक्ष्याक। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की असाधारण २१वी काग्रेस, शार्टहैण्ड रिपोर्ट, खण्ड १, पृष्ठ ६०)

इस जनतत्र मे एक वास्तविक सास्कृतिक क्रान्ति सम्पन्न की गई है। आप खुद निर्णय करे। १९१७ से पहले आजरबैजान की आबादी मे केवल १० फीसदी लोग पढ-लिख सकते थे। शिक्षा मुख्यत आबादी के सम्पन्न हिस्से का विशेषाधिकार थी। आजरबैजानी स्त्रियो की स्थिति खास तौर से कठिन थी। अपने बुर्के द्वारा ससार की निगाहो से छिपी, वे अज्ञान, असस्कृति तथा निरक्षरता का शिकार थी। आखिरश यह एक सचाई है कि १९०५ मे सिर्फ २१ आजरबैजानी लडकिया स्कूल मे पढती थी। येलिजवेतपोल नगर (आज का कीरोवावाद) के लडकियोवाले माध्यमिक स्कूल मे १८८५ और १९०६ के बीच केवल तीन आजरबैजानी लडकियो का दाखिला हुआ था। उनमे से एक स्थानीय खान की बेटी थी, दूसरी जेनरल की बेटी थी और तीसरी किसी सरकारी पदाधिकारी की लडकी थी।

आज आजरबैजान एक ऐसा जनतत्र है, जिसकी आबादी के १०० फीसदी लोग पढ-लिख सकते है। सोवियत सघ के अन्य भागो की तरह ही आपके यहा सात साल की पढाई सार्विक है और माध्यमिक शिक्षा का विस्तृत पैमाने पर विकास किया गया है। जनतत्र मे ४,३०० स्कूल है, जिनमे ६,८५,००० विद्यार्थी भर्ती है और उन विद्यार्थियो मे लगभग ५० फीसदी लडकिया है।

सोवियत सत्ता ने औरतो के लिए शिक्षा, राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था, विज्ञान तथा सस्कृति के हर क्षेत्र के सृजनात्मक कार्य से सम्बन्धित सार्वजनिक तथा राजकीय क्रियाशीलताओ मे सक्रिय भाग लेने के विस्तृत मार्ग खोल दिए। स्थानीय सोवियतो मे १३,३०० औरते चुनी गई है, आजरबैजानी जनतत्र तथा नाखिचेवान स्वायत्त जनतत्र की सर्वोच्च सोवियत

के लिए ११७ औरते चुनी गई है और सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत मे १६ औरते इस जनतत्र का प्रतिनिधित्व करती है। ये सारी बाते सोवियत सत्ता द्वारा पूर्व की स्त्रियो की मुक्ति तथा उनके लिए सच्ची सामाजिक समानता की स्थापना के उल्लेखनीय साक्ष्य है।

> (आजरबैजानी सोवियत समाजवादी जनतत्र तथा आजरबैजानी कम्युनिस्ट पार्टी के ४० साल। सोवियत सत्ता और आजरबैजानी कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना के ४०वे वार्षिकोत्सव पर हुई बाकू की एक सभा मे किया गया भाषण। २५ अप्रैल १९६०। 'सोवियत सघ की विदेश-नीति (१९६०)' शीर्षक सग्रह, खण्ड १, पृष्ठ ४०९–४१०)

लेनिनवादी कोम्सोमोल सगठन (तरुण कम्युनिस्ट लीग), जिसमे १८० लाख युवक और युवतिया है, कम्युनिज्म के लिए सघर्ष मे पार्टी का विश्वसनीय सहायक है। २०वी पार्टी काग्रेस के निर्णयो के अनुसार हमारे कोम्सोमोल सगठनो ने आर्थिक और सास्कृतिक निर्माण-कार्य मे सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए युवक समुदाय को खीचने मे बहुत काम किया है।

हमारे युवक समुदाय ने परती जमीनो मे खेतीबारी, कृषि-उत्पादन की वृद्धि और उद्योग का विस्तार करने मे शानदार कारगुजारी दिखाई है। आगामी कुछ वर्षो के अन्दर बडी औद्योगिक निर्माण-परियोजनाओ के लिए १० लाख स्वयसेवको को भर्ती करने मे कोम्सोमोल की पहलकदमी वस्तुत. प्रशसनीय और समर्थनीय है। श्रम मे हमारे युवको और यवतियो की अनेक उपलब्धिया यह प्रमाणित करती है कि उनकी कम्युनिस्ट चेतना का निरतर विकास हो रहा है और देश के हित के लिए वे अपनी सारी शक्ति लगा देने को तैयार है। कोम्सोमोल सगठन अपने गौरवपूर्ण कार्यो से समस्त जनता का सम्मान और स्नेह प्राप्त कर चुका है।

हमारी पार्टी ने आगामी सात वर्षो के लिए कम्युनिस्ट निर्माण का जो उत्साहवर्द्धक कार्यक्रम वनाया है, वह युवक समुदाय को अपनी रचनात्मक पहलकदमी और सरगर्मी का इस्तेमाल करने के लिए व्यापक अवसर प्रदान करता है।

इक्कीसवी पार्टी काग्रेस से पहले के महीनो मे कोम्सोमोल ने एक नया देशभक्तिपूर्ण आन्दोलन — कम्युनिस्ट श्रम-ब्रिगेडो का आन्दोलन — चलाया था।

पार्टी को विश्वास है कि लेनिनवादी कोम्सोमोल, हमारा गौरवशाली सोवियत युवक-समुदाय सप्तवर्षीय योजना की सफल पूर्त्ति मे अगली पातो मे दिखाई पडेगा।

(१९५९—१९६५ के लिए सोवियत सघ के आर्थिक विकास के लक्ष्याक। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की असाधारण २१वी काग्रेस, शार्टहैण्ड रिपोर्ट, खण्ड १, पृष्ठ ११८—११९)

हम सभी लोग पार्टी के लडाकू सहायक, अपनी गौरवशाली **लेनिनवादी तरुण कम्युनिस्ट लीग** (कोम्सोमोल) के काम को बहुत सराहते है। उसके साथ हम लोगो मे से बहुतो के जीवन सम्बन्धित है। बहुतेरे कम्युनिस्टो की शिक्षा कोम्सोमोल मे ही हुई है। कोम्सोमोल हमारा भविष्य और हमारी सुरक्षित शक्ति है। समाजवादी निर्माण की सभी मजिलो मे सोवियत युवको ने, कोम्सोमोल ने पार्टी द्वारा सौपे गये कामो की स्पष्ट समझ का परिचय दिया है। अपने काम से उन्होने यह साबित कर दिया है कि वे महती क्रातिकारी परम्पराओ के योग्य उत्तराधिकारी है और अपने माता-पिताओ के गौरवशाली हेतु को आगे बढा रहे है।

कोम्सोमोल के, सोवियत युवको के सभी शानदार कारनामो को गिनाना कठिन है। हमारी जनता को अपने युवको पर गर्व है और उसका गर्व उचित ही है।

नौजवान लेनिनवादी किशोर पायनियर सगठन मे निरन्तर तैयार किए जा रहे है और पार्टी ने इन नौजवान लेनिनवादियो को बडी सावधानी और प्यार के साथ पढाने-सिखाने और जीवन मे सभी सभावित कठिनाइयो का सामना करने की शिक्षा देने का काम कोम्सोमोल को सौपा है।

हमे हरगिज यह नही भूलना चाहिये कि पुरानी दुनिया हमारे मार्ग मे पुराने विचारो तथा आदतो के रोडे अटकाने की कोशिश करती रहती

है। हमे इस वात को हरगिज नजरन्दाज नही करना चाहिये कि कुछ नौजवान पुराने जमाने की गदगी से प्रभावित है, वे कूपमडूकता और पूजीवादी विचारधारा के भ्रष्टकारी प्रभाव का शिकार हो जाते है।

नौजवानों को क्रान्तिकारी संघर्ष की वीरतापूर्ण परम्पराओं, मजदूरों, किसानो और बुद्धिजीवियो द्वारा क़ायम किये गये निष्ठामय श्रम के आदर्शों और मार्क्सवाद-लेनिनवाद के महान् विचारों की शिक्षा देना लेनिनवादी तरुण कम्युनिस्ट लीग का मुख्य कार्यभार है।

नवयुवको के सामने शानदार सभावनाए, वहुत महान् और आकर्षक लक्ष्य उन्मुक्त हो रहे है। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी का कार्यक्रम उनके सामने भविष्य के दरवाजे पूरी तरह खोल रहा है। कम्युनिज्म का निर्माण—यह कितना महान् और शानदार लक्ष्य है! परन्तु कम्युनिज्म का निर्माण करने का मतलव सबसे पहले और सबसे वढकर यह है कि अर्थ-व्यवस्था का विकास किया जाए, भौतिक तथा सास्कृतिक सम्पदा का उत्पादन वढाया जाए और हर व्यक्ति मे कम्युनिस्ट समाज के सदस्य की विशेषताए पैदा की जाए। युवको को हमारी प्राकृतिक सम्पदा को विकसित करने, फैक्टरियो, राजकीय फार्मो, कारखानो तथा नगरो का निर्माण करने देने के लिए उठ खड़ा होना होगा। भूगर्भ मे छिपी सम्पदा मास्को या लेनिनग्राद के निकट नही, वल्कि तैगा मे, पर्वतो और रेगिस्तानो मे है। इस सम्पदा को जनता की सेवा मे लगाने के लिए भूगर्भ मे से उसका निकाल जाना लाजिमी है।

मास्को और लेनिनग्राद के, कीयेव और गोर्की के नौजवानो को, पुराने आवाद शहरो मे रहनेवाले नौजवानो को जनता के लिए नयी सम्पदा उपलब्ध करने के मुहिम मे साहसपूर्वक जुट जाना चाहिये। जहा भी मनुष्य और उसका श्रम है, वहा हर चीज होकर रहेगी। जैसा कि रूसी कवि नेक्रासोव ने एक वार कहा था· "मनुष्य अपने सकल्प और अपने श्रम से सचमुच चमत्कार कर सकता है!" यह परिस्थिति नेक्रासोव के जमाने मे थी, जव मनुष्य गैती और फावड़े से, आरी और कुल्हाड़े से काम करता था। आज सोवियत नौजवान ठोस ज्ञान और आधुनिकतम मशीनो से लैस होकर देश के निर्माण-स्थलो की ओर जा रहे है। उन्होने

हमारे देश मे बहुत सा अच्छा काम किया है और वे कम्युनिस्ट निर्माण की महान योजनाओ से प्रेरणा प्राप्त कर भविष्य मे और भी अधिक काम करेगे।

पार्टी को कोम्सोमोल मे, सोवियत युवको मे विश्वास है। वह हमारे नौजवानो का आवाह्न करती है आगे बढो, कम्युनिस्ट निर्माण के आस्थानो मे अपनी अपनी जगहे सभालो।

(सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २२वी काग्रेस मे पार्टी की केन्द्रीय समिति की रिपोर्ट। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २२वी काग्रेस, शार्टहैण्ड रिपोर्ट, खण्ड १, पृष्ठ १२०–१२१)

अब, साथियो, मुझे सोवियत ट्रेड-यूनियनों के बारे मे चन्द बाते कहने की अनुमति दीजिए। उनकी सदस्य-सख्या लगभग ५,५०,००,००० है। यह एक विराट शक्ति है। सोवियत ट्रेड-यूनियने हमारे देश के जीवन मे एक बहुत बडी भूमिका अदा कर रही है। वे राज-काज की पाठशाला है, आर्थिक प्रबध की पाठशाला है, या सक्षेप मे कहे कि वे कम्यूनिज्म की पाठशाला है।

इसका व्यावहारिक अर्थ यह है कि सोवियत मेहनतकश जनता के अधिकाधिक बडे समुदाय उत्पादन-प्रबन्ध तथा राज-काज मे खीचे जा रहे है। सोवियत ट्रेड-यूनियनो की दफ्तर तथा फैक्टरी कमिटियो को काफी अधिकार प्राप्त है। मिसाल के लिए, उद्यमो के सचालको को उन्हे निश्चित कालान्तर के बाद इस बात की रिपोर्ट देना होती है कि उत्पादन-योजनाओ तथा सामूहिक राजीनामो को किस प्रकार कार्यान्वित किया जा रहा है। वे प्रबन्ध-विभाग से माग करती है कि ट्रेड-यूनियनो द्वारा पाई गई खामियो को दूर किया जाए। प्रबन्ध-विभाग ट्रेड-यूनियनो की स्वीकृति के बगैर न तो निर्खबन्दी कर सकता है और न काम का कोटा लगा सकता है।

सोवियत ट्रेड-यूनियनें इस बात की निगहबानी करती है कि प्रबन्ध-विभाग श्रम-कानूनो तथा श्रम-सुरक्षा के सभी नियमो और प्रतिमानो का

पालन करता है अथवा नही। ट्रेड-यूनियनो के खास तकनीकी इन्सपेक्टरो को अधिकार प्राप्त है कि वे उचित आदेश दे सके, यहा तक अगर यह सिद्ध हो जाए कि कही काम करने की स्थितिया मजदूरो के स्वास्थ्य के लिए खतरनाक है तो उन्हे यह भी अधिकार है कि वे उस फैक्टरी के किसी विभाग, किसी कार्यालय, यहा तक कि पूरी फैक्टरी को भी अस्थायी तौर से बन्द करने का आदेश जारी कर दें। इससे भी अधिक, मै आपको बताऊ कि इन्सपेक्टरो के आदेशो की उपेक्षा करनेवाले सचालक को महंगा मोल चुकाना पडता है।

फैक्टरी या दफ्तर का कोई कर्मचारी ट्रेड-यूनियन कमिटी की रजामन्दी के बगैर अपने काम से हटाया नही जा सकता। किसी को नेतृत्वकारी पदो पर नियुक्त करने मे भी प्रवन्ध-विभाग को ट्रेड-यूनियन कमिटी की राय को ध्यान मे रखना पडता है।

सोवियत ट्रेड-यूनियनें सामाजिक बीमा के कार्य मे बडी भूमिका अदा करती है। पहली बात तो यह कि हमारे देश मे सामाजिक बीमा के अन्तर्गत निरपवाद रूप से सभी मजदूर और दफ्तरी कर्मचारी आते है, जिसमे लगनेवाला धन सम्पूर्णत राजकीय कोष से आता है। तात्पर्य यह कि कर्मचारियों की आमदनी मे से उक्त प्रयोजन के लिए कोई भी कटौती नही की जाती। पुरुषो को बुढापे का पेन्शन ६० साल और स्त्रियो को ५५ साल की उम्र होने पर दिया जाता है। इसके अलावा कठिन मेहनत के कामो मे लगे लोगो के लिए उम्र की यह योग्यता काफी कम रखी गई है। सामाजिक बीमा के लिए निर्धारित विपुल धन-राशि पर ट्रेड-यूनियनो का पूर्ण नियन्त्रण है। सिर्फ इस साल के भीतर इस मद मे ७० अरब रूबल की रकम खर्च होगी।

हमारी फैक्टरियो मे विशेष स्थायी उत्पादन-समितियो की स्थापना की गई है। ये समितिया, जो कर्मचारियो की आम सभा द्वारा चुनी जाती है, ऐसी महत्वपूर्ण उत्पादन-समस्याओ पर बहस करती है, जैसे कि श्रम-संगठन, मजदूरी, मानकीकरण, नई तकनीको, स्वचलन, मशीनीकरण आदि की समस्याए।

जैसा कि आप देखते है, हमारे देश के उद्यमो की प्रवन्ध-व्यवस्था मे स्वय मजदूरो का बडा हाथ है और वे बेहद महत्वपूर्ण उत्पादन-समस्याओ

पर अपना असर डालते हैं। इससे हमारी पार्टी की लेनिनवादी लाइन स्पष्ट उजागर हो जाती है, जिसका लक्ष्य महत्वपूर्ण राजकीय कार्यों को अधिकाधिक ट्रेड-यूनियनो तथा दूसरे सामाजिक सगठनो के हाथो मे क्रमश: अन्तरित करना है। दूसरी बात यह कि हमारे देश के अनेक स्वास्थ्य-गृह भी, जहा मेहनतकश जनता विश्राम करने जाती है, ट्रेड-यूनियनो के मातहत है। ट्रेड-यूनियनो के ही तहत बच्चो के आरामगाह, व्यायाम तथा खेल-कूद और पर्यटन के विभाग भी है। इन बातो के अलावा, अखिल सघीय गृह-मन्त्रालय के भग कर दिए जाने के बाद से ट्रेड-यूनियनो ने सार्वजनिक व्यवस्था कायम रखने के अनेक कार्य अपने जिम्मे ले लिए है।

कुछ पश्चिमी लोग कहते है ये सारी बाते ठीक, लेकिन सोवियत ट्रेड-यूनियनें हडतालो का सगठन नही करती, जिसका अर्थ यह है कि वे मजदूरो के हितो की रक्षा प्रभावशाली ढग से नही कर सकती। लेकिन ऐसा कहना मामले को सिर के बल खडा कर देने के समान है।

पूजीवादी देशो मे ट्रेड-यूनियने पूजीपतियो और मजदूरो के तीव्र पारस्परिक विरोध के वातावरण मे काम करती है। वहा पर मजदूर काम के कम घटो, बेहतर मजदूरी, बीमा इत्यादि के मामलो मे अपने अधिकारो की रक्षा एकमात्र सघर्ष के जरिए, हडताल करके ही कर सकते है। कोई ट्रेड-यूनियन जितना ही बेहतर सगठित होती है, मजदूर जितना ही बेहतर सगठित होते है, उनमे जितना ही अधिक एका होता है और वे जरूरत होने पर हडताल करके अपने अधिकारो की रक्षा करने के लिए जितना ही बेहतर तैयार होते है, उतने ही बेहतर वे नतीजे हासिल करते है। समाजवादी समाज मे बात बिलकुल ही और होती है, जहा वर्गों के बीच शत्रुतापूर्ण विरोधो का अस्तित्व नही होता, जहा मेहनतकश जनता अपने देश का मालिक होती है, जहा वह देश का शासन करती है।

यही कारण है कि मजदूर कभी अपने ही खिलाफ हडताल नही करेंगे। आखिरकार अपने लिए काम करनेवाला आपके देश का खेतिहर तो कभी हडताल नही करता। यही बात हमारे मजदूरो पर भी लागू होती है। वे अपने ही खिलाफ हडताल नही करते, क्योकि फैक्टरिया, मिले, जमीन और जमीन पर जो कुछ भी है वह सब मेहनतकश जनता

का है। हमारी सरकार मेहनतकश जनता की इच्छा की अभिव्यक्ति करती है, वह मजदूर वर्ग की इच्छा की अभिव्यक्ति करती है।

हमारी मेहनतकश जनता क्यो हडताल करे जबकि कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार ट्रेड-यूनियनो की सरगर्मियो मे उनका पूरी तरह समर्थन करती है, जबकि वे निरन्तर उनके हितो की हिफाजत करती है, जबकि सोवियत समाजवादी जनतत्र अपने स्वभाव से ही राज्य के शासन मे, फैक्टरियो और मिलो के प्रबन्ध मे, समूची राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था के प्रशासन मे जन-समुदायो की शिरकत की अवधारणा करता है?

साथियो, मै आपसे एक सवाल पूछू। क्या किसी मेहनतकश इन्सान के लिए हडताल करने का कोई भी कारण है, अगर सरकार हर व्यक्ति के लिए रोजगार की व्यवस्था करती हो अगर वह माध्यमिक स्कूलो मे, बहुसख्यक विश्वविद्यालयो और इजीनियरिग सस्थानो मे, सान्ध्य-स्कूलो तथा पत्र-व्यवहार द्वारा शिक्षा देनेवाली उच्च सस्थाओ मे मुफ्त शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार प्रदान करती हो, जहा एक मजदूर आदमी काम और पढाई को साथ साथ चला सकता है? फैक्टरियो तथा दफ्तरो के प्रबन्ध-विभाग उन विश्वविद्यालयो के विद्यार्थियो को इम्तहान के समय विशेष छुट्टी देने के लिए बाध्य है, जो पत्र-व्यवहार द्वारा शिक्षा देते है।

क्या मेहनतकश इन्सान हडताल करने की बात सोचेगा, अगर उसे मुफ्त डाक्टरी सहायता के अधिकार प्राप्त हो, अगर उसे बीमारी की छुट्टियो का वेतन मिलता हो और देश मे लाखो-लाखो श्रमजीवी जनता के लिए नए मकान बनाए जा रहे हो? इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि सप्तवर्षीय योजना की अवधि मे डेढ करोड मकान बनाए जाने को है, और हमारे देश का मेहनतकश इन्सान मकानो के बेहद किराए के बोझ से दबा नही है, क्योकि जो किराया वह अदा करता है वह उसके परिवार के बजट का लगभग चार या पाच फीसदी मात्र होता है।

(सयुक्त आस्ट्रियाई ट्रेड-यूनियन के प्रतिनिधियो के सामने किया गया भाषण। २ जुलाई १९६०। 'सोवियत सघ की विदेश-नीति (१९६०)' शीर्षक सग्रह, खण्ड २, पृष्ठ १०९–१११)

सार्वजनिक शिक्षा और वैज्ञानिक तथा सास्कृतिक विकास के क्षेत्र मे सोवियत सघ की महत्वपूर्ण उपलब्धियो को सारा ससार स्वीकार करता है। पिछले साल की आम मर्दुमशुमारी मे दिलचस्प तथ्य प्राप्त हुए। देश मे उच्च, अपूर्ण उच्च तथा विशिष्ट माध्यमिक शिक्षा-प्राप्त लोगो की सख्या १३४ लाख है और ७ से १० साल तक स्कूलो मे पढे हुए लोगो की सख्या ४५३ लाख है। सन् १६३६ मे १००० की आबादी पीछे ६ व्यक्ति पूर्ण उच्च शिक्षा-प्राप्त तथा ७७ व्यक्ति माध्यमिक शिक्षा-प्राप्त थे, किन्तु १६५६ मे उक्त सख्याए बढकर क्रमश १८ और २६३ हो गई। यह खुशी की बात है कि उच्च शिक्षा-प्राप्त लोगो मे ४६ फीसदी और माध्यमिक शिक्षा-प्राप्त लोगो मे ५३ फीसदी औरते है।

पहले के पिछडे हुए जनतत्रो मे उच्च तथा माध्यमिक शिक्षा-प्राप्त लोगो की सख्या काफी बढ गयी है। मिसाल के लिए उज्बेकिस्तान मे १००० की आबादी पीछे उच्च शिक्षा-प्राप्त लोगो की सख्या गत बीस वर्षों मे २ से बढकर १३ और माध्यमिक शिक्षा-प्राप्त लोगो की सख्या ३६ से २३४, कजाखस्तान मे क्रमश ५ से १२ और ६० से २३६, ताजिकिस्तान मे २ से १० और २७ से २१४, तुर्कमनिस्तान मे ३ से १३ और ४६ से २५६, आजरबैजान मे ७ से २१ और ७३ से २६१ हो गई है, बेलोरूस मे १००० की आबादी पीछे उच्च शिक्षा-प्राप्त लोगो की सख्या ४ से बढकर १२ और माध्यमिक शिक्षा-प्राप्त लोगो की सख्या ६७ से २२५ हो गई है। ये आकड़े सोवियत समाजवादी जनतत्रो मे बढते हुए सास्कृतिक स्तर तथा जातीय कार्यकर्ताओ की सख्या-वृद्धि का एक ज्वलन्त चित्र प्रस्तुत करते है। वे जातियो के सम्बन्ध मे लेनिन की नीति की विजय का साक्ष्य है।

राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था, विज्ञान तथा सस्कृति के हर विभाग के लिए उच्च कौशल-सम्पन्न कार्यकर्ताओ की प्रशिक्षा पर कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार बहुत ध्यान देती हैं। सोवियत सघ की उच्च शिक्षा-सस्थाओ मे दाखिला ब्रिटेन, फ्रान्स, फेडेरल जर्मन जनतत्र और इटली मे होनेवाले कुल दाखिलो की अपेक्षा लगभग चौगुना है। इजीनियरो

की प्रशिक्षा मे सोवियत सघ बहुत दिनो से सयुक्त राज्य अमेरिका की अपेक्षा आगे बढा हुआ है। सन् १९५८ मे सोवियत सघ मे अतिम परीक्षा पास करके ९४ हजार इजीनियर निकले, जबकि सयुक्त राज्य अमेरिका मे केवल ३५ हजार। वैज्ञानिको तथा अनुसन्धानकर्ताओ की सख्या सोवियत सघ मे ३ लाख से भी ज्यादा है, जो क्रान्ति-पूर्व के रूस की तुलना मे ३० गुनी अधिक है।

समाजवाद जन-समुदायो के लिए शिक्षा के, सस्कृति के दरवाजे खोल देता है। इस बात मे पूजीवाद के ऊपर उसकी महान वरिष्ठता निहित है। प्राथमिक स्कूलो से लेकर उच्च शिक्षा-सस्थाओ तक निश्शुल्क सार्वजनिक शिक्षा की एक व्यापक पद्धति की कल्पना केवल समाजवादी परिपार्श्व मे ही की जा सकती है और वह हमारे देश मे तकनीकी प्रगति तथा विज्ञान की उन्नति का विश्वसनीय आधार है, जिनकी उपलब्धियो पर सोवियत जनता को उचित ही गर्व है।

(निरस्त्रीकरण—सबल शाति और देश देश के लोगो की भरपूर मित्रता का मार्ग है। सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के चौथे अधिवेशन मे पेश की गई रिपोर्ट। १४ जनवरी १९६०। 'सोवियत सघ की विदेश-नीति (१९६०)' शीर्षक सग्रह, खण्ड १, पृष्ठ १०—१२)

हमे इस बात पर गर्व करने का पूरा अधिकार है कि सोवियत समाज ससार मे सर्वाधिक उच्च शिक्षित समाज बन गया है और ज्ञान के अधिक महत्वपूर्ण क्षेत्रो मे सोवियत विज्ञान को अग्रणी स्थान प्राप्त है।

जब ससार के प्रथम सोवियत कृत्रिम उपग्रह ने हमारे ग्रह की परिक्रमा की, तो सयुक्त राज्य अमेरिका मे वहा की शिक्षा-पद्धति की जाच करने के लिए एक विशेष आयोग की स्थापना की गयी। दोनो पद्धतियो की तुलना करने के बाद उक्त आयोग इस निर्णय पर पहुचा कि शिक्षा की सोवियत पद्धति श्रेष्ठतर है। परन्तु उसी समय हमारी पार्टी ने स्कूली शिक्षा का पुनर्गठन करने का फैसला किया, ताकि हर छात्र को विज्ञान की बुनियादी बातो का और अधिक ठोस ज्ञान कराया जा सके

और जीवन के साथ स्कूल का अधिक घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित किया जा सके।

इस पुनर्गठन के अनुभव से इस बात की पुष्टि हो चुकी है कि पार्टी की कार्रवाई समयोचित तथा आवश्यक थी। कुल मिलाकर यथार्थ जीवन तथा उत्पादन के साथ स्कूल के सम्बन्ध दृढ हुए है और छात्रो के श्रम-प्रशिक्षण मे सुधार हुआ है। माध्यमिक स्कूलो के स्नातक अर्थ-व्यवस्था मे सफलतापूर्वक कार्य कर रहे है। मजदूर और देहाती नौजवानो को शिक्षा देनेवाले स्कूलो की सख्या साल-बसाल बढती जा रही है। लाखो नौजवान अपने खाली समय मे पढ रहे है।

इस क्षेत्र मे बहुत सफलता प्राप्त की गयी है। परन्तु स्कूली शिक्षा के पुनर्गठन के बारे मे नौकरशाही रवैया प्रगट करनेवाले कुछ तथ्य भी है। शिक्षा-क्षेत्र के सभी कार्यकर्ताओ ने पोलीटेक्निकल शिक्षा के क्षेत्र मे अपने कार्यभार नही समझे है।

हमारे देश मे नये प्रकार के शिक्षा-सस्थान—बोर्डिंग स्कूल और दिन भर बच्चो की देखभाल करनेवाले स्कूल—कायम किए गए है और उन्हे सार्वजनिक मान्यता प्राप्त हुई है। इन शिक्षा-सस्थाओ मे लगभग १५,००,००० विद्यार्थी पढ रहे है। १९६५ मे सिर्फ बोर्डिंग स्कूलो मे पढनेवाले बच्चो की सख्या २५ लाख होगी।

सोवियत सघ मे आठ साल की अनिवार्य शिक्षा लागू कर दी गयी है और जो लोग पूरी माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करना चाहते है उन सब के लिए वैसा करने की आवश्यक परिस्थितिया मौजूद है। शिक्षा के क्षेत्र मे अगला कार्यभार सबके लिए अनिवार्य माध्यमिक शिक्षा लागू करना है।

कम्युनिस्ट समाज के व्यक्ति को शिक्षित करने का काम स्कूलो पर नयी और ज्यादा बडी जिम्मेदारिया आयद करता है। स्कूलो को आधुनिक विज्ञान और उत्पादन के तेज विकास के साथ कदम मिलाकर चलना चाहिए। शिक्षको के प्रशिक्षण का प्रसार करना होगा, ताकि सभी स्कूलो के लिए काफी शिक्षक उपलब्ध हो। शिक्षको का हर प्रकार से लिहाज और सम्मान किया जाना चाहिए। स्कूलो के पुनर्गठन और छात्रो के ठोस ज्ञान तथा आवश्यक योग्यता प्राप्त करने मे फैक्टरियो तथा सामूहिक

फार्मो को सहायता करना होगी। अधिक स्कूल बनाने होगे ताकि पालियो मे पढाई का तरीका खत्म किया जा सके। इस बात को देखते हुए यह कार्यभार बहुत बडा है कि १९६५ मे लगभग ४३० लाख बच्चे स्कूलो मे पढ रहे होगे।

स्कूलो के पुनर्गठन के साथ साथ उच्च तथा विशिष्ट माध्यमिक शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण का भी विकास हो रहा है। इस क्षेत्र मे भी उद्देश्य यही है कि शिक्षा तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण को जीवन के, उत्पादन के अधिक निकट लाया जाये। इस वर्ष देश की उच्च शिक्षा-सस्थाओ मे दिन की पढाई के लिए भरती किये गये छात्रो मे से आधे से ज्यादा को उत्पादन का व्यावहारिक अनुभव है। पिछले पाच साल मे हमारे साध्य-विद्यालयो तथा पत्र-व्यवहार द्वारा शिक्षा देनेवाली सस्थाओ मे लगभग पाच लाख विशेषज्ञो ने उच्च शिक्षा पूरी की है।

सोवियत सघ संयुक्त राज्य अमेरिका की तुलना मे तीन गुने अधिक इजीनियर प्रशिक्षित करता है। हमारे देश मे दिमागी काम करनेवाले लोग दो करोड से ज्यादा हैं। जब इन आकडो की घोषणा की गयी तो समाजवाद के उन शत्रुओ मे बौखलाहट फैल गयी, जो अक्सर हमारे समाज को पिछडा हुआ और हमारे सास्कृतिक स्तर को नीचा कहते थे। अब वे एक दु.खद पुनर्मूल्याकन करने तथा कभी कभी मूर्खतापूर्ण मनगढ़न्तो तक का सहारा लेने को बाध्य है। लोगों को बेवकूफ बनाने के लिए उन्होने यह किस्सा फैलाना शुरू किया है कि सोवियत सघ मे शिक्षित लोगो की सख्या जितनी ही अधिक होगी, उतनी ही अधिक यह सभावना होगी कि वे कम्युनिज्म से विमुख हो जाये।

हम इन पूजीवादी विचारधारा-निरूपको से क्या कह सकते हैं? वे अपनी सरकारो से सार्वजनिक शिक्षा के लिए ज्यादा रकम मजूर करने की माग करे। उनके तर्क के अनुसार तो समाज जितना ही अधिक सुशिक्षित होगा, उतनी ही ज्यादा मजबूती के साथ वह पूजीवाद से चिपका रहेगा। पर इस प्रकार की मनगढन्त बातो पर अब कोई विश्वास नही करता, और सबसे कम विश्वास तो वे लोग करते हैं जो उन्हे गढते हैं। कम्युनिज्म सबको ज्ञान देता है; वह अपने प्रगतिशील आन्दोलन

के लिए जन-समुदायो के इसी ज्ञान से, उनके उच्च सांस्कृतिक स्तर से शक्ति और विश्वास प्राप्त करता है।

सोवियत विज्ञान का फलना-फूलना इस बात का स्पष्ट साक्ष्य है। हमारे यहा साढे तीन लाख से अधिक वैज्ञानिक कार्यकर्ता है। देश मे लगभग चार हजार वैज्ञानिक सस्थाए है और विशेष रूप से उल्लेखनीय बात यह है कि सघीय जनतन्त्रो मे पिछले पाच-छ साल के भीतर वैज्ञानिक सस्थाओ की सख्या मे तेजी से वृद्धि हुई है। देश के पूर्वी भाग मे वैज्ञानिक अनुसधान-कार्य के विकास मे विज्ञान अकादमी की साइबेरियाई शाखा बहुत बडी भूमिका अदा कर रही है।

सोवियत वैज्ञानिक अपने देश के प्रति अपने कर्त्तव्य की श्रेयस्कर ढग से पूर्ति कर रहे है। भौतिकी, गणित और कैबरनेटिक्स के विकास मे, तेज रफ्तार से हिसाब लगानेवाली मशीनो के निर्माण मे, शृखलाबद्ध प्रतिक्रियाओ के रासायनिक सिद्धान्त और पालीमरो के रसायन की विशद व्याख्या मे, जीवशास्त्र मे, बडे बडे खनिज भडारो के अनुसन्धान तथा पूर्वेक्षण मे, स्वचलन तथा दूरनियत्रिकी के विकास मे, रेडियो-इजीनियरिंग तथा इलेक्ट्रोनिक्स मे, धातु-विद्या, मेकेनिकल इजीनियरिंग तथा विज्ञान के दूसरे क्षेत्रो मे हमारे वैज्ञानिको की उपलब्धिया दूर दूर तक ख्याति प्राप्त कर चुकी हैं। सामाजिक विज्ञानो के क्षेत्र मे भी सोवियत वैज्ञानिको को अनेक उपलब्धियो का श्रेय प्राप्त है।

सोवियत वैज्ञानिक आज की एक बुनियादी समस्या – ताप-नाभिक प्रक्रियाओ को नियत्रण मे रखने की समस्या – पर व्यापक अनुसन्धान करने मे लगे हुए हैं। उनकी तहकीकातो तथा अन्य देशो के वैज्ञानिको के साथ उनके सहयोग को व्यापक मान्यता प्राप्त हुई है। हमारे देश मे ताप-नाभिक प्रक्रियाओ के अनुसन्धान की अभिवृद्धि से मनुष्य के हित के लिए नाभिक ऊर्जा के शातिमय उपयोग की समस्या तेजी से हल होगी। अतरिक्ष की खोज मे सोवियत विज्ञान द्वारा प्राप्त की गयी सफलताओ ने मनुष्य के वैज्ञानिक ज्ञान की प्रगति मे एक शानदार युग का श्रीगणेश किया है। ससार मे पृथ्वी का पहला कृत्रिम उपग्रह सोवियत सघ ने छोडा था। सबसे पहले सोवियत अतरिक्ष-राकेटो ने पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति को पराभूत करके अन्तर्ग्रहीय विस्तार मे प्रवेश किया था। सबसे

पहले हमने ही चन्द्रमा पर अपनी ध्वजा स्थापित की और उसके अदृश्य पक्ष का फोटो लिया। इस बाइसवी काग्रेस के प्रतिनिधि, सोवियत नागरिक यूरी गगारिन तथा गेर्मन तितोव ने सबसे पहले मनुष्य की क्रीडा-भूमि पृथ्वी को छोडने का साहस करके अतरिक्ष मे विजयिनी उडान भरने का पराक्रम किया था।

हमे सोवियत विज्ञान की महती सफलताओ पर गर्व करने का पूरा अधिकार है। साथियो, मुझे अनुमति दीजिए कि इस गौरवमय मच से सभी सोवियत वैज्ञानिको के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करू और अपनी सोवियत भूमि के गौरव तथा कम्युनिज्म की विजय के हेतु उनकी नयी और बडी विजयो की कामना करू।

अतरिक्ष की विजय मे सोवियत सघ की सफलताओ ने पूजीवादी जगत को समाजवादी समाज की उपलब्धियो के बारे मे, सोवियत सघ मे विज्ञान तथा उद्योगो के प्रगति के बारे मे अपनी राय बदलने पर मजबूर कर दिया है। उदाहरण के लिए, अमेरिकी राजपुरुष चेस्टर बोल्स ने कहा कि "पहला सोवियत स्पूत्निक छोडे जाने के समय तक अमेरिका की औद्योगिक, सैनिक तथा वैज्ञानिक वरिष्ठता के बारे मे प्राय किसी ने भी सदेह नही प्रकट किया था। तभी अचानक स्पूत्निक पृथ्वी का चक्कर लगाने लगा और लाखो लोग अपने आप से पूछने लगे कि कही अन्ततोगत्वा कम्युनिज्म की ही विजय तो नही नियत है?"

यही नियति है, श्री बोल्स, यही नियति है। यहा तक कि आपके हमराय जर्मन राकेट विशेषज्ञ वेर्नहेर फॉन ब्राउन को भी, जो इस समय अमेरिका मे काम कर रहे है, यह मानना पडा कि "रूसियो ने अपने दर्शन के आधार पर एक ऐसी व्यवस्था का निर्माण किया है जो उनके लिए इन सफलताओ की जमानत करती है। दुर्भाग्यवश जिस व्यवस्था मे हम रह रहे है उसमे रूस जैसी सफलताए प्राप्त करना सभव नही है"। साथियो, बात इससे बेहतर ढग से नही कही जा सकती थी।

आज जबकि हमारा देश कम्युनिस्ट निर्माण की शानदार योजनाए कार्यान्वित कर रहा है, सोवियत विज्ञान के सामने नये और महानतर कार्यभार है। वैज्ञानिक अनुसधान का काम और भी उद्देश्यपूर्ण ढग से किया जाना चाहिए, नौजवानो को और व्यापक रूप से विज्ञान के क्षेत्र

मे प्रवेश करने का अवसर दिया जाना चाहिये। हमारा कार्यभार यह है कि हम विज्ञान तथा तकनीक के सभी बुनियादी क्षेत्रो मे प्रमुख स्थान प्राप्त कर ले।

साथियो, अपने उच्चाशयी विचारो के कारण सोवियत साहित्य तथा कला को सारे संसार मे अत्यधिक प्रतिष्ठा प्राप्त है। सोवियत लेखको, स्वरकारो और चित्रकारो की कला को, सिनेमा तथा नाट्य-कला के साधको की कला को बहुत सराहा गया है। पिछले कुछ वर्षो मे साहित्य तथा कला की ऐसी नयी कृतिया सृजित हुई हैं, जिनमे समाजवादी यथार्थ का सच्चा तथा सप्राण चित्रण हुआ है।

हमारी कला की उपलब्धिया तथा उसकी परम्पराए अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। वे मानवजाति की सौन्दर्यानुभूति के विकास मे एक महत्वपूर्ण मजिल का परिचय देती हैं। हमारे देश के अनुभव ने सिद्ध कर दिया है कि कला मे उन्मुक्त सृजनात्मक प्रयास के लिए, सास्कृतिक मूल्यो के सृजन मे जन-समुदायो की सक्रिय सहभागिता के लिए केवल समाजवाद ही व्यापकतम अवसर प्रदान करता है। सोवियत कला मानवजाति के आध्यात्मिक कोषागार को समृद्ध बना रही है, वह कम्युनिस्ट सस्कृति की विजय का मार्ग आलोकित कर रही है।

व्ला० इ० लेनिन ने कहा था कि कम्युनिस्ट समाज मे सार्विक सस्कृति का मार्ग पूजीवादी उत्पीडन से मुक्ति प्राप्त कर लेनेवाली हर जाति की राष्ट्रीय सस्कृति के विकास के बीच से होकर ही गुजरता है। समाजवादी जाति-समुदाय के अदर पारस्परिक आदान-प्रदान के फलस्वरूप ऐसी नयी विशेषताए उत्पन्न और विकसित होती है तथा सब को लाभान्वित करती है, जो समूची सोवियत सस्कृति की सम्मिलित विशेषताए है। हमारा कार्यभार यह है कि समाजवादी सस्कृतियो की अतर्राष्ट्रीय एकता के विकास को विवेकपूर्ण समर्थन तथा प्रोत्साहन प्रदान करे। जनता आशा करती है और उसे यह पूरा विश्वास है कि हमारे लेखक और कलाकार ऐसी कृतियो की रचना करेगे जिनमे वे समाज के क्रान्तिकारी रूपातरण के वर्तमान वीरतापूर्ण युग का उपयुक्त ढग से चित्रण करेगे। पार्टी का दावा है कि कला का सर्वोपरि कर्त्तव्य जीवन के सकारात्मक दृष्टान्तो का चित्रण करके जनता को शिक्षित करना है, उसे कम्युनिज्म

की भावना मे दीक्षित करना है। सोवियत साहित्य तथा कला की शक्ति, समाजवादी यथार्थवादी पद्धति की शक्ति इस बात मे निहित है कि वे जीवन मे जो कुछ सबसे महत्त्वपूर्ण और निर्णयात्मक है, उसका सचाई के साथ चित्रण करते हैं। सोवियत जनता की सौंदर्यानुभूति सबधी शिक्षा की ओर, उसकी कलात्मक रुचि को निखारने की ओर गभीरतापूर्वक ध्यान दिया जाना चाहिये। कुरुचि जिस रूप मे भी सामने आये, चाहे वह रूप-विधान के लिए सनक की शक्ल मे हो या कला मे, जीवन मे और घर मे "सौंदर्य" की किसी भोडी धारणा के रूप मे हो, उसके खिलाफ डटकर सघर्ष किया जाना चाहिए।

जीवन मे सबसे सुन्दर वस्तु मनुष्य का श्रम है और नये मानव को, श्रमिक मानव को, उसकी आध्यात्मिक रुचियो की समृद्धि को, ह्रासोन्मुख के खिलाफ उसके सघर्ष को सचाई के साथ चित्रित करने से बढकर उदात्त कार्य और क्या हो सकता है! हमे सोवियत जनता को रोचक कृतिया देनी चाहिये, जिनमे कम्युनिस्ट श्रम का रोमास उद्घाटित हो, जो अपने लक्ष्यो की प्राप्ति मे उसकी पहलकदमी तथा दृढता को प्रेरणा दे।

हमारी पार्टी को विश्वास है कि सोवियत साहित्य तथा कला सोवियत जनता के विश्वसनीय हथियार और अच्छे, सूझ-बूझ भरे परामर्शदाता बने रहेगे!

(सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २२वी कांग्रेस मे पार्टी की केन्द्रीय समिति की रिपोर्ट। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २२वी काग्रेस, शार्टहैण्ड रिपोर्ट, खण्ड १, पृष्ठ ८८–९२)

जातियो की मित्रता और संहति हमारे देश के विकास का वस्तुपरक नियम है

पार्टी की जातीय नीति की बुनियाद महान लेनिन की यह शिक्षा रही है और है कि "विभिन्न जातियो के हितो का बेहद ख़याल रखने से ही टकराव का कारण दूर हो सकता है. आपसी अविश्वास मिट

सकता है।"* सोवियत सघ की समस्त जातियो को बिरादराना दोस्ती के बन्धन द्वारा एक करने मे, जारशाही रूस मे कायम उनके आपसी अविश्वास को दूर करने मे हमारी पार्टी को ठीक इसी लिए सफलता मिली कि उसने उन जातियो के हितो, उनकी विशिष्ट जातीय चारित्रिकताओ तथा आकाक्षाओ का सदा ही गभीर ध्यान रखा। इसके साथ ही पार्टी ने सभी जातियो के मेहनतकशो को समाजवादी एकता की भावना और समूचे देश के हित-चिन्तन की शिक्षा दी। इसके फलस्वरूप पुराने रूस की दबी और पिछडी हुई जातियो ने अपने विकास मे बेहद प्रगति की है और सोवियत सघ की जातियो के दोस्ताना परिवार मे बराबरी का स्थान प्राप्त किया है।

(सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २०वी काग्रेस मे पार्टी की केन्द्रीय समिति की रिपोर्ट। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २०वी काग्रेस, शार्टहैण्ड रिपोर्ट, खण्ड १। मास्को, 'गोस्पोलीतइज्दात' प्रकाशन गृह, १९५६, पृष्ठ ८७)

ट्रान्स-काकेशियाई जनतन्त्रो की मिसाल, मध्य एशियाई जनतन्त्रो की मिसाल और रूस के सभी भूतपूर्व सरहदी जातीय इलाको की मिसाल से प्रगट है कि महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति ने, हमारे देश मे समाजवाद की विजय ने छोटी जातियो को शोपको और विदेशी उत्पीडको द्वारा नेस्तनाबूद किए जाने से बचा लिया। समाजवाद ने छोटी-बडी सभी जातियो की समानता और मित्रता के आधार पर हमारे देश की सभी जातियो के लिए सच्ची प्रगति के रास्ते खोल दिए।

हमे अपने देश की सभी जातियो की दोस्ती की हिफाजत और उसका विकास करना चाहिए, हमे उन ट्रान्स-काकेशियाई जनतन्त्रो की जातियो की दोस्ती का विकास करना चाहिए जिनके आप प्रतिनिधि है। हमारी दोस्ती ऐसे मेहनतकश लोगो की बिरादराना दोस्ती है जिनके हित एक है, हेतु एक है, लक्ष्य एक है। हमारी दोस्ती को मार्क्सवाद-लेनिनवाद

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, चौथा रूसी सस्करण, खण्ड ३३, पृष्ठ ३४९।

के विचारो से प्रेरणा मिली है। वह समाजवाद और कम्युनिज्म की विजय के सघर्ष मे और अधिक सवल हो रही है।

जातियो की सहृति, एकता, दोस्ती और उनका सहयोग एक महान उपलब्धि है, वह उन देशो के विकास का वेहद महत्त्वपूर्ण वस्तुपरक नियम है, जिन्होने समाजवादी निर्माण का रास्ता अख्तियार किया है। अनेक यूरोपी और एशियाई देशो के लोग, जिनकी कुल सख्या १ अरब से भी अधिक है, मार्क्सवाद-लेनिनवाद के झडे के नीचे एक नए, समाजवादी जीवन का निर्माण कर रहे हैं। समाजवादी देशो की महान सफलताए ससार के घटना-चक्र को अधिकाधिक प्रभावित कर रही हैं। वे सभी देशो की मेहनतकश जनता को शान्ति, जनवाद तथा सामाजिक प्रगति के सघर्प मे प्रेरणा प्रदान कर रही हैं।

नवम्वर १९६० मे हुए कम्यनिस्ट और मजदूर पार्टियो के सम्मेलन ने प्रवल समाजवादी खेमे के सभी देशो की महान एकता तथा विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन की घोर सहृति को प्रगट कर दिया। इसमे सदेह की गुजाइश नही है कि कार्यक्रम सम्वन्धी मार्क्सवादी-लेनिनवादी दस्तावेजो से लैस समाजवादी देशो के लोग, पूरा का पूरा विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन, राप्ट्रीय मुक्ति-आन्दोलन के योद्धा और पूजीवादी देशो के मेहनतकश लोग सभी राष्ट्रो के सुख और उज्ज्वल भविष्य के सघर्ष मे नई सफलताए प्राप्त करेगे।

विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन की एक जगजू टुकडी, हमारी लेनिनवादी पार्टी ने सोवियत जनता को समाजवादी अन्तर्राप्ट्रीयतावाद की, अन्तर्राप्ट्रीय दोस्ती और भाईचारे की भावना की शिक्षा दी है और देती रहेगी। जातियो की मजबूत और अटूट दोस्ती मे ही हमारी शक्ति निहित है। उसी मे समाजवादी राज्य की सामर्थ्य का स्रोत निहित है, कम्युनिज्म की भावी विजयो की जमानत निहित है।

(हमारी शक्ति और कम्युनिज्म की भावी विजयो की जमानत जातियो की मजबूत और अटूट दोस्ती मे निहित है। त्बिलीसी मे ट्रान्स-काकेशियाई जनतन्नो के अग्रणी कृपि-कार्यकर्ताओ के एक सम्मेलन मे किया गया भाषण। ७ फरवरी १९६१। 'सोवियत सघ मे कम्युनिज्म का निर्माण और खेतीवारी का विकास' शीर्पक सग्रह, खण्ड ४, पृष्ठ ४४७-४४८)

हमारे देश मे सम्पन्न की गई सास्कृतिक क्रान्ति का सोवियत सघ के पूर्वी भाग की जातियो के, मिसाल के तौर पर कजाख जाति के जीवन पर खास तौर से लाभदायक प्रभाव पडा है। यहा पर मैं फिर चन्द आकडे उद्धृत करना चाहता हू, जो स्वतः समाजवादी व्यवस्था के प्रशस्ति-गान की तरह होगे।

क्रान्ति से पहले कजाख लोग प्रायः पूर्णतः निरक्षर थे। कजाख-क्षेत्रो मे उच्च शिक्षा प्रतिष्ठान नही थे, कजाख डाक्टर नही थे, इजीनियर नही थे, कृषि-विज्ञानी नही थे। आज १००० की आबादी पीछे २५१ आदमी और प्रति १००० काम से लगे लोगो मे से ४४८ आदमी उच्च तथा माध्यमिक शिक्षा प्राप्त हैं। कजाखस्तान मे एक विज्ञान अकादमी है, एक राजकीय विश्वविद्यालय है, अनेक अनुसधान तथा उच्च शिक्षा प्रतिष्ठान है, जो सभी उपयोगी ढग से काम कर रहे हैं।

पिछले चन्द वरसो मे, साथियो, आपके जनतन्त्र मे नौजवानो की एक जबर्दस्त बाढ आई है। पार्टी के आह्वान के जवाब मे जोश से लबरेज, बडे बडे और कठिन कार्यभारो की पूर्ति मे समर्थ लाखो युवक-युवतिया लेनिनवादी तरुण कम्युनिस्ट लीग की नियुक्ति पर परती धरती को अपनाने और अति महत्वपूर्ण परियोजनाओ का निर्माण करने के लिए आयी। मुझे बताया गया है कि आज कजाखस्तान मे तरुण कम्युनिस्ट लीग के ८ लाख सदस्य है और लगभग १० लाख और उसी उम्र के लोग है। इसका अर्थ यह है कि कजाखस्तान का प्राय हर पाचवा निवासी नौजवान है। पार्टी सगठनो को नौजवानो की पहलकदमी और उत्साह का, उनकी श्रम तथा ज्ञान की प्यास का समर्थन और विकास करना चाहिए। पार्टी की रहनुमाई मे सोवियत नौजवान कम्युनिज्म की विजय के लिए कमाल के काम करने की क्षमता रखते हैं।

जरा यह तो सोचिए, साथियो, कि आज कजाखस्तान मे १ लाख ७८ हजार इजीनियर, टेक्नीशियन और कृषि-विज्ञानी है, ६३ हजार डाक्टर तथा माध्यमिक शिक्षा प्राप्त अस्पताली कर्मचारी है एव लगभग १ लाख ५० हजार शिक्षक, अनुसन्धान-कार्यकर्ता और अन्य सास्कृतिक काम करनेवाले हैं। लेखको तथा अन्य प्रकार के अलाकारो का एक बडा समूह अपनी जनता का कल्याण-साधन, अपने देश का विकास और समृद्धि-साधन

कर रहा है। सोवियत समाजवादी रास्कृति की सफलताओ की वात करने मे हम अकेले नही है। उनका उल्लेख हमारे कुछ पश्चिमी अतिथि भी करते है, यद्यपि अधिकतर अनिच्छापूर्वक ही। लेकिन जब प्राय सम्पूर्णत. निरक्षरता-ग्रस्त एक देश सोवियत सत्ता के सालो मे ही ऐसी अद्भुत छलाग मारकर विज्ञान तथा सस्कृति की चोटियो पर पहुचा है, तो वे और कह ही क्या सकते है।

हमारे राज्य के निर्माण की हर मजिल पर कम्युनिस्ट पार्टी ने जातियो के प्रश्न पर विशेष रूप से ध्यान दिया। हमारी पार्टी जानती थी कि वरावरी की जातियो की स्वतत्र एकबद्धता मे न तो महान शक्ति की अधराप्ट्रवादिता की गुजाइश है और न स्थानिक राष्ट्रवादिता की ही। वह जानती थी कि समाजवादी और कम्युनिस्ट निर्माण के महान कार्यभार की उचित पूर्ति केवल सर्वहारा-अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के आधार पर, केवल जातियो की मित्रता के आधार पर ही की जा सकती है।

'तुर्किस्तान के कम्युनिस्ट साथियो के नाम' व्लादीमिर इल्यीच लेनिन के उस अद्भुत पत्र को याद कीजिए।

"हम यह वात विना किसी अतिशयोक्ति के कह सकते है कि तुर्किस्तान की जातियो के साथ उचित सम्बन्धो की स्थापना का", लेनिन ने लिखा था, "आज रूसी समाजवादी सघात्मक सोवियत जनतन्त्र के लिए विराट, विश्वव्यापी ऐतिहासिक महत्व है।

"कमजोर तथा आज तक उत्पीड़ित जातियो के प्रति सोवियत मजदूर-किसान-जनतत्र के वर्ताव का समूचे एशिया के लिए, ससार के सभी उपनिवेशो के लिए, कोटिश जनता के लिए व्यावहारिक महत्व है।"*

पत्र मे इस बात पर जोर दिया गया था कि जातियो मे दोस्ताना, साथियो जैसा सम्वन्ध कायम करने की अपनी योग्यता हमे कार्यत सिद्ध करनी चाहिए। कम्युनिस्ट पार्टी ने इस माग की, महान लेनिन की इस आज्ञा की व्यावहारिक रूप मे पूर्ति की है।

सभी सोवियत जनतत्रो की अर्थ-व्यवस्था तथा सस्कृति का फलना-

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाएं, चौथा रूसी सस्करण, खड ३०, पृष्ठ ११७।

फूलना, लेनिन की जातीय नीति की विजय की ज्वलन्त अभिव्यक्ति है। यह सम्मेलन, जिसमे कजाखस्तान तथा अन्य सभी मध्य एशियाई जनतत्रो की जातियो के प्रतिनिधि शरीक है, हमारी उन सभी जातियो की बिरादराना दोस्ती का अच्छा साक्ष्य है, जिनका लक्ष्य एक है, जिनकी राह एक है।

मुझे पूरब के अनेक देशो मे जाने का मौका मिल चुका है, जहा सदियो के औपनिवेशिक उत्पीडन के फलस्वरूप जनता अपने श्रम की बरकत, आधुनिक विज्ञान तथा सस्कृति की बरकत का उपभोग करने के सुयोग से वचित थी। यह सच नही है कि कुछ देशो की जनता मे विशेष, जन्मजात योग्यताए है और दूसरे देशो की जनता मे उनका अभाव है। शोपण तथा औपनिवेशिक उत्पीडन की व्यवस्था को न्यायोचित ठहराने और उसे कायम रखने के लिए प्रतिक्रियावादी, नसल-परस्त, उपनिवेशवादी ही इस तरह की बात कहते है। एक नसल से दूसरी नसल की वरिष्ठता के सम्बन्ध मे वे नाना सिद्धान्तो की ईजाद करते है और उन्हे दकियानूनो के दिमाग मे ठूसने की कोशिश करते है। साम्राज्यवादियो द्वारा फैलाई गई इस नीति से अधिक गर्हित तथा मानव-विद्वेषी नीति और विचारधारा दूसरी कोई नही है।

औपनिवेशिक शासन का युग अतीत के गर्भ मे तिरोहित होता जा रहा है। जागृत पूर्व अपने कन्धो को सीधा कर रहा है। सदियो की गुलामी की जजीरो को तोडकर फेकते हुए अफ्रीका उबल रहा है। लैटिन अमेरिका की जनता, जिसे क्रान्तिकारी क्यूबा रास्ता दिखा रहा है, आन्दोलित हो उठी है। इन सारे देशो की जनता सोवियत भूमि को, यूरोप तथा एशिया के समाजवादी देशो को आशा भरी निगाहो से देखती है। वह सोवियत सघ के पूर्वी जनतंत्रो को विशेष सराहना की दृष्टि से देखती है और उसमे इस बात की चेतना अधिकाधिक भरती जा रही है कि मध्य एशिया तथा कजाखस्तान की जनता के लिए समाजवाद ने ही तीव्र आर्थिक, राजनैतिक तथा सास्कृतिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त किया था।

यही कारण है कि आजादी और स्वावलम्बन के लिए लडनेवाले देशो के लोग अपने बेहतर भविष्य की आशा को समाजवादी विचारो के

साथ जोडते हैं। अब साम्राज्यवादियो की चालो, उनकी जोरशोर की उदारतावादी लफ्फाजी, "सहायता" के मीठे मीठे वादो से वे लोग धोखा नही खा सकते, जो अपनी आजादी की हिफाजत कर रहे है।

कजाखस्तान और दूसरे पूर्वी जनतत्रो तथा समूची सोवियत भूमि के तेज विकास का अन्तर्राष्ट्रीय महत्व इसी बात मे निहित है। समाजवादी देशो द्वारा बढाया जानेवाला हर अग्रसर कदम पूजीवाद के साथ प्रतियोगिता मे समाजवाद की विजय को नजदीक ला रहा है।

साथियो, हमे निश्चित विश्वास है कि समाजवाद और पूजीवाद की इस शान्तिमय आर्थिक प्रतियोगिता मे हमारा देश यह सिद्ध कर देगा कि समाजवाद ही जनता को अधिक भौतिक तथा आध्यात्मिक वरकते पहुचा सकता है और पहुचाएगा। इसी महान लक्ष्य के नाम मे समस्त सोवियत जनता उद्योग तथा कृषि मे श्रम-उत्पादकता को बढाते हुए बेगरजी से काम कर रही है। हम अपनी उपलब्धियो पर सन्तोष करके नही बैठ सकते। हमे एक के वाद दूसरी वाधाओ को पार करते हुए जरूर ही आगे वढते रहना चाहिए।

(परती भूमि के विकास की नई मजिल और कजाखस्तान की कृपि के कार्यभार। आल्मा-आता नगर मे कजाखस्तान के अग्रणी खेतिहरो के एक सम्मेलन मे किया गया भाषण। २१ मार्च १९६१। 'सोवियत सघ मे कम्युनिज्म का निर्माण और खेतीबारी का विकास' शीर्षक सग्रह, खण्ड ५, पृष्ठ २६५–२६७)

पूंजीवाद के साथ आर्थिक प्रतियोगिता में समाजवाद की विजय निश्चित है

साथियो, आपको याद होगा कि सबसे पहली पचवर्षीय योजनाओ के समय भी हमारी औद्योगिक वृद्धि की रफ्तार सयुक्त राज्य अमेरिका के बनिस्बत तेज थी। पर उत्पादन के स्तर मे जो पर्याप्त अतर था

उसका तो कहना ही क्या, कुल वृद्धि मे भी हम उसमे वहुत काफी पीछे थे। हाल के वर्षो में हमारा देश वृद्धि की रफ्तार के मामले में तो सयुक्त राज्य अमेरिका से वहुत आगे रहा ही है, उसने कई महत्वपूर्ण चीजो की कुल उत्पादन-वृद्धि में भी उस देश से आगे निकलना शुरू कर दिया है। अब सवाल रह गया है उत्पादन-स्तरो के अतर को तेजी से खत्म करने का, उद्योग और कृषि-उत्पादनो मे सोवियत सघ के ससार मे प्रथम स्थान प्राप्त करने का।

मै कुछ तथ्य पेश करूगा १९५६ से १९६१ तक की मुद्दत मे सोवियत सघ की वार्षिक औद्योगिक वृद्धि की रफ्तार औसतन १० २ प्रतिशत थी और सयुक्त राज्य अमेरिका की २ ३ प्रतिशत, जनसख्या के प्रति व्यक्ति के हिसाव से कारखानो के वने हुए माल का औसत वार्षिक उत्पादन सोवियत सघ मे ८ २ प्रतिशत वढा और सयुक्त राज्य अमेरिका मे ० ६ प्रतिशत, पिछले छ वर्षो मे सोवियत सघ मे धन-विनियोग मे औसत वार्षिक वृद्धि १२ प्रतिशत हुई है और सयुक्त राज्य अमेरिका मे कोई वृद्धि नही, वल्कि उल्टे कुछ कमी ही हुई है।

अब, कुल उत्पादन-वृद्धि और उत्पादन-स्तर के अतर को खत्म करने के सम्वन्ध मे क्या स्थिति है? पिछले छ वर्षो के भीतर हमारे देश मे इस्पात का उत्पादन २ करोड ६० लाख टन वढा है और सयुक्त राज्य अमेरिका का डेढ करोड टन घटा है, सोवियत सघ मे साढे नौ करोड टन अधिक तेल निकाला गया है और सयुक्त राज्य अमेरिका मे लगभग २ करोड टन अधिक।

आज सोवियत सघ का औद्योगिक उत्पादन सयुक्त राज्य अमेरिका के उत्पादन के ६० प्रतिशत से अधिक है। नीचे कुछ अधिक महत्वपूर्ण चीजो के उत्पादन से सवधित १९६१ के आकडे (प्राथमिक अनुमान) दिये जा रहे है.

	सोवियत सघ	सयुक्त राज्य अमेरिका	अमेरिका की तुलना मे सोवियत सघ %
कच्चा लोहा – लाख टन	५११	६२०	८२
इस्पात – लाख टन	७१०	६१०	७८
कोयला, तेल, गैस तथा अन्य ईंधन (साकेतिक ईंधन के रूप मे) – लाख टन	७,२४०	१४,३००	५१
बिजली (जेनरेटरो से प्राप्त) – अरब किलोवाट घटा	३०६	८७२	३५
उद्योगो मे बिजली की खपट – अरब किलोवाट घटा	२१३	४२५	५०
सीमेंट – लाख टन	५१०	५४०	६४
सूती कपडा (बिना ब्लीच किया हुआ) – अरब वर्ग मीटर	५.३	८.५	६२
ऊनी कपडा – लाख मीटर लम्बाई	३,५३०	२,७००	१३१
चमडे के जूते – लाख जोडे	४,४३०	६,१००	७३
दानेदार शक्कर – लाख टन	६५	३७	१७५

मैं आपको याद दिलाऊ कि अभी दस-ग्यारह साल पहले तक सोवियत औद्योगिक उत्पादन सयुक्त राज्य अमेरिका के उत्पादन के ३० प्रतिशत से भी कम था। इस समय सोवियत सघ खनिज लोहा तथा कोयला निकालने मे, कोक, लोहे-कक्रीट के जमाए हुए सामान, डीजेल और बिजली के भारी रेलवे इजन, चिरी लकडी के सामान, ऊनी कपडे, शक्कर, मक्खन, मछली और वहुत सी दूसरी चीजो के उत्पादन मे सयुक्त राज्य अमेरिका से आगे निकल गया है।

अब ससार के औद्योगिक उत्पादन के पाचवें भाग से अधिक, अर्थात् ब्रिटेन, फ्रास, इटली, कनाडा, जापान, वल्जियम और नीदरलैंड्स के कुल उत्पादन से अधिक, हमारा देश पैदा करता है। लेकिन ये सभी बहुत विकसित देश हैं, जिनकी कुल मिलाकर २८ करोड आवादी है। फिर भी औद्योगिक उत्पादन की कुल मात्रा मे २२ करोड आवादीवाले हमारे देश का उनसे आगे निकल जाना यह सावित करता है कि समाजवादी अर्थ-व्यवस्था कितनी तेज़ी से और कितने निश्चयात्मक ढग से आगे वढ रही है।

सप्तवर्षीय योजना की पूर्ति हमारे देश को एक ऐसे स्तर पर पहुचा देगी कि आर्थिक दृष्टि से सयुक्त राज्य अमेरिका से आगे निकल जाने मे फिर वहुत ही थोडा समय लगेगा। **बुनियादी आर्थिक कार्यभार को पूरा करके सोवियत संघ संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ शांतिमय प्रतियोगिता में एक विश्वव्यापी ऐतिहासिक विजय प्राप्त करेगा।**

(सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २२वी काग्रेस मे पार्टी की केन्द्रीय समिति की रिपोर्ट। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २२वी काग्रेस, शार्टहैंड रिपोर्ट, खण्ड १, पृष्ठ ६० – ६१)

सोवियत सघ का औद्योगिक उत्पादन १९६० मे अमेरिका के उत्पादन का ६० प्रतिशत था। हमारे देश के औद्योगिक उत्पादन की वार्षिक वृद्धि की रफ्तार पिछले १६ साल के दर्मियान औसतन १० ६ प्रतिशत रही है। मगर सोवियत औद्योगिक उत्पादन हर साल १० प्रतिशत

बढता रहे, तो १९६६ मे सोवियत सघ का उत्पादन वर्तमान अमेरिकी उत्पादन से ६ प्रतिशत अधिक हो जाएगा और १९७० मे ५६ प्रतिशत अधिक।

सयुक्त राज्य अमेरिका के औद्योगिक उत्पादन मे १० साल के भीतर ५६ प्रतिशत बढती के लिए उसमे ४.५ प्रतिशत सालाना वृद्धि होना लाजिमी है। लेकिन अगर अमेरिकी ४ ५ प्रतिशत सालाना की बढती करने मे सफल भी हो जाए, जैसा कि श्री केनेडी चाहेगे, तो १९७० मे हम उनके बराबर पहुच जाएगे।

अगर अमेरिकी अपने युद्ध-पश्चात के औसत के अनुसार औद्योगिक उत्पादन मे २ प्रतिशत की रफ्तार से ही वृद्धि करना जारी रखते है, तो सोवियत सघ सयुक्त राज्य अमेरिका को १९६७ मे ही पीछे छोड देगा। अगर अमेरिकी औद्योगिक उत्पादन ३ प्रतिशत सालाना की रफ्तार से बढे, तो हम अमेरिका को १९६८ मे पीछे छोड देगे।

(सैनिक अकादमियो के स्नातको के लिए सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति तथा सोवियत सघ की मन्त्रि-परिषद द्वारा आयोजित एक स्वागत-समारोह मे किया गया भाषण। ८ जुलाई १९६१। 'कम्युनिज्म – जनता के लिए शान्ति और सुख' शीर्षक सग्रह, खण्ड १, पृष्ठ २७२)

आप जानते है कि गृह-युद्ध और सोवियत रूस के खिलाफ दखलन्दाजी के दर्मियान हथियारबन्द टक्कर मे हार हो जाने के बाद, विश्व-साम्राज्यवाद ने सघर्ष को हटाकर आर्थिक मोर्चे पर ले जाने का निश्चय किया। एक लम्बी मुद्दत तक साम्राज्यवादियो ने सोवियत देश को मान्यता प्रदान करने से इनकार किया। उन्होने हमारे साथ व्यापार करने से इनकार किया। उन्होने हमारी नाकाबन्दी की। आज दूसरे विश्व-युद्ध के बाद भी वह नीति जारी रखी जा रही है। सयुक्त राज्य अमेरिका हमारे साथ व्यापार नही करता। वहा एक कानून के द्वारा अमेरिकी फर्मो को हमारा माल खरीदने की मनाही कर दी गई है। दीवाने प्रतिक्रियावादी उन फर्मो के खिलाफ एक हगामा खड़ा कर देते है, जो

हमारे हाथ ऐसे माल तक बेचती है, जिनपर फेहरिस्त के मुताविक पावन्दी नही आयद है।

लेकिन इससे अमेरिकियो को क्या लाभ हुआ है? आज सयुक्त राज्य अमेरिका के व्यापार जगत मे ऐसी शक्तिया पैदा हो गई है, जो सोवियत सघ तथा अन्य समाजवादी देशो के खिलाफ आर्थिक नाकेबन्दी की नीति की असफलता को स्वीकार करती है। अमेरिकी व्यापारिक क्षेत्र के प्रतिनिधि अधिकाधिक प्रायिकता के साथ यह कहते है कि इस नीति को वदलने की आवश्यकता है।

साम्राज्यवादियो का खयाल था कि दूसरे विश्व-युद्ध के वाद हमारे देश को सम्हलने मे बहुत दिन लगेगे। उन्होने यह उम्मीद पाल रखी थी कि सयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रान्स तथा दूसरे वडे पूजीवादी देश सोवियत सघ को अपनी इच्छा के सामने झुकाने मे कामयाव हो जाएगे। लेकिन उनकी उम्मीदो पर पानी फिर गया।

मै सोवियत सघ के आर्थिक विकास मे हुई प्रगति को प्रगट करनेवाले आकडे बताना चाहता हू। मेरा इरादा इस सम्बन्ध मे कोई विशेष रूप से नई बात कहने का नही है, क्योकि हमारी नीति खुली हुई है और आप हमारी आर्थिक वृद्धि के आकडे जानते है। लेकिन कहावत है कि पुनरावृत्ति ज्ञान की जननी है। पहले कई अवसरो पर मै अपने देश के विकास की रफ़्तार के आकडे पेश कर चुका हू और सदा ही सोवियत आर्थिक अभिवृद्धि के आकडे देखते हुए जैसे हम वस्तुत: कम्युनिज्म की गूज सुनते है, अपनी अग्रगामिता की दृढ गति की गूज सुनते है।

ये रहे सोवियत सघ के युद्धोत्तर आर्थिक विकास के कुछ तथ्य।

युद्ध-पश्चात के १८ वर्षो मे सोवियत जनता ने पार्टी के नेतृत्व मे शानदार सफलताए प्राप्त की है। वृद्धिमान उत्पादन की निम्न-लिखित मिसालो से कुछ मुख्य आर्थिक क्षेत्रो मे हमारी बढती की रफ़्तार पर रोशनी पडती है·

इस्पात—१९४५ मे १२३ लाख टन से बढकर १९६२ मे ७६३ लाख टन,

कच्चा लोहा—८८ लाख टन से बढकर ५५३ लाख टन;

रोल्ड स्टॉक—८५ लाख टन से ५६२ लाख टन;

तेल—१६४ लाख टन से १,८६२ लाख टन;

कोयला—१,४६० लाख टन से ५,१७० लाख टन;

सीमेंट —१८ लाख टन से ५७३ लाख टन;

बिजली—४३ अरब कीलोवाट घटे से ३६६ अरब कीलोवाट घटे तक।

साथियो, ये उल्लेखनीय आकड़े है, हैरतगेज नतीजे है।

आपको याद होगा कि युद्ध के शीघ्र ही बाद एक चुनाव-भाषण मे स्तालिन ने ६०० लाख टन इस्पात और ६०० लाख टन तेल के वार्षिक उत्पादन का लक्ष्य निर्धारित किया था। उनके खयाल मे वह बहुत ऊचा लक्ष्य था। आज हम स्तालिन के भाषण मे निर्धारित सीमा से काफी आगे निकल गए है। लेकिन उत्पादन तथा वितरण की कम्युनिस्ट रीति मे सक्रमण के लिए परिस्थितिया पैदा करने के निमित्त हमे फिर भी सख्त मेहनत करनी चाहिए। जनता द्वारा जबर्दस्त प्रयास और निष्ठामय श्रम कम्युनिज्म मे सक्रमण की माग है।

लेकिन कुछ लोगो का ख़याल है कि यह अपेक्षाकृत आराम के साथ और जल्दी किया जा सकता है। किसी को कम्युनिज्म के साथ खिलवाड नही करना चाहिए· सामाजिक विकास के अपने नियम है, उन्हे जानना चाहिए और उन्हे ध्यान मे रखना चाहिए। जो कोई भी विकास के वस्तुपरक नियमो की उपेक्षा करने की ठानेगा, उसे ख़ुद जीवन द्वारा इसकी सज़ा भुगतना पडेगी।

हमारी पार्टी तथा सोवियत जनता मार्क्सवादी-लेनिनवादी शिक्षा को कम्युनिस्ट निर्माण के अपने महान प्रयासो का आधार बना रही हैं और विकास की हर मजिल पर देश मे कायम परिस्थितियो को ध्यान मे रखकर चलती है। जिन आकडो की सूची मैंने ऊपर प्रस्तुत की है, वे हमारी उल्लेखनीय आर्थिक सफलताओ की ज़ोरदार घोषणा करते है। हम सभी, समूची पार्टी और समस्त जन इन सफलताओ पर ख़ुशी मनाते है। क्या कोई आदमी, जिसकी हमारे सम्मिलित हेतु के साथ हमदर्दी है, यह कह सकता है कि यह ख़ुशी असलियत पर महज़ रोगन चढ़ाना है?

निस्सन्देह, तमाम बडी सफलताओ के वावजूद हमारी खामिया भी है। लेकिन केवल खराबियो पर ही ध्यान नही केन्द्रित किया जाना चाहिए। हमे लडाई का समूचा दृश्य, महान आक्रमण का दृश्य देखना चाहिए और देखनी चाहिए विजय। इस आक्रमण मे कौन विजयी है और कौन पराजित? हमारी पार्टी और जनता विजयी है। तव पराजित कौन है? पूजीवादी जगत पराजित है।

साथियो, याद कीजिए व्ला० इ० लेनिन ने १६२२ मे कोमिन्टर्न की चौथी काग्रेस मे हमारे समाजवादी उद्योग के विकास की दिशा मे उठाए गए पहले कदम के बारे मे कितने गर्व के साथ घोपणा की थी। उन्होने कहा "हमने भारी उद्योगो को स्वावलम्वी वनाने के लिए आवश्यक धन हासिल कर लिया है। यह सच है कि अव तक हम जो धन हासिल कर पाये है वह मुश्किल से दो करोड स्वर्ण रूबल से अधिक होगा, लेकिन, जो कुछ भी हो, यह धन उपलब्ध है और वह एकमात्र हमारे भारी उद्योगो के निर्माण के लिए निर्धारित कर दिया गया है।"

तब से आज तक हम कितना रास्ता तय कर चुके है! सप्तवर्षीय योजना की मुद्दत के महज पहले चार वर्षो मे ही हमने ३,७०० वडे पैमाने के नए औद्योगिक कारखानो का निर्माण किया है। इन चार वर्षो मे राज्य द्वारा किया गया कुल पूजी-विनियोग (केन्द्रीकृत और केन्द्रीकृत नही) १२६ अरब रूबल था। राज्य का वुनियादी परिसम्पद इस मुद्दत मे १०० अरब रूबल या ५० प्रतिशत बढ गया है। हमारा परिसम्पद चार साल मे ५० प्रतिशत बढ गया है! साथियो, क्या यह महज रोगन चढाना है? नही, यह हमारी जनता का श्रम और पसीना है, यह जनता का वीरतापूर्ण कार्य है। सोवियत जनता यह अच्छी तरह जानती है कि जब तक वह कठिन परिश्रम नही करेगी तब तक कठिनाइयो पर कावू नही पाएगी और न कम्युनिस्ट भविष्य के प्रकाशमय मार्ग पर पहुच सकेगी।

मै नही जानता साथियो, हो सकता है कि यह मेरी कमजोरी हो, लेकिन जब मै देश मे सफर करता हू और अपनी जनता को देखता हू, जब मै फैक्टरियो मे, सामूहिक और राजकीय फार्मो पर जाता हू, तो सदा ही मेरा मन वह सब कुछ देखकर तरगित और आनदित हो उठता

है, जो जनता ने सोवियत सत्ता के वर्षो मे सम्पन्न किया है। विदेशो से सोवियत सघ मे आनेवाला कोई भी, यहा तक कि पूजीपति भी, हमारी तेज वढती की सराहना किए बगैर नही रह पाता। सयुक्त राज्य अमेरिका के फार्मर रास्वेल गार्स्ट ने, जिनसे हाल मे ही मेरी फिर मुलाकात हुई थी, मुझसे कहा

"जव मैं पहले पहल सोवियत सघ आया और मास्को की सडको पर घूमा तो देखा कि सडक पर चलनेवाले दूसरे लोगो की अपेक्षा मेरी पोशाक वेहतर थी। लेकिन जब इस वार आपकी सडको पर घूमने लगा तो देखा कि शायद मेरी पोशाक उन सब पोशाको से वदतर थी जो आपके लोग पहने हुए थे।"

उन्होने ठीक ही देखा, साथियो!

कम्युनिस्ट निर्माण मे हमारी सफलताए मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचारो के मूर्तिमान रूप हैं।

मेरे कहने का अर्थ यह नही है कि हमने सब कुछ हल कर लिया है और हमारे पास किसी बात की कमी नही है। मै केवल यह कहना चाहता हू कि कम्युनिस्ट निर्माण मे हमारी उल्लेखनीय सफलताए साफ साफ जाहिर करती हैं कि हम सही और यथार्थपरक रास्ते पर है। अगर आज हमारे पास कोई चीज नाकाफी है, तो हमे ठीक ठीक समझना चाहिए कि ऐसा क्यो है, हमे सिर्फ आज का दिन ही नही देखना चाहिए, बल्कि देखना चाहिए कि कल क्या था और कल क्या होगा। अगर हम तुलना करे कि हमने किस चीज से शुरू किया था, हमारे पास क्या था, उससे हमने क्या निर्मित किया, इस समय हमारे पास क्या है, तो हम देखेंगे कि हमारा देश कितनी तेजी और कितनी निश्चयता के साथ अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो रहा है और वह उस लक्ष्य तक पहुच कर रहेगा। यही मुख्य वात है!

यह कहने के लिए वहुत वुद्धि की जरूरत नही है कि उत्पादन जितना ही अधिक होगा उतना ही अच्छा होगा। यह वात हर कोई जानता है। लेकिन अधिक औद्योगिक चीजो और कृषि-उत्पादनो की सर्जना करने के लिए वुद्धि की आवश्यकता है। अगर आप सभव से

अधिक हासिल करने का प्रयत्न करते है, तो सभव है कि जो कुछ आपको हासिल है आप उसे भी खो दे।

मिसाल के लिए, हमारी पार्टी के कार्यक्रम मे २० साल के लिए आर्थिक विकास के लक्ष्याक निर्धारित किए गए है। क्या उन्हे बीस साल के बजाए पाच या दस साल मे उपलब्ध कर लेना बेहतर नही होगा? बेशक, होगा। लेकिन पाच या दस साल मे वैसा करना असभव है, क्योकि वह केवल चाहने पर ही नही निर्भर है। उसके लिए इच्छामूलक, आत्मपरक दृष्टिकोण की नही, बल्कि वस्तुपरक वैज्ञानिक दृष्टिकोण की जरूरत है, एक ऐसे दृष्टिकोण की जरूरत है जो सभी यथार्थ सभावनाओ को ध्यान मे रखे। मा भी जब अपने बच्चे को स्वादिष्ट खाना देती है तो उससे कहती है जल्दीबाजी न करो वरना गले मे अटक जाएगा। हम जानते है कि मा बच्चे का कल्याण चाहती है!

किसी देश के आर्थिक विकास मे अयथार्थ कार्यभार नही निर्धारित करने चाहिए। जितना व्यावहारिक रूप से शक्य है उससे अधिक काम हाथ मे नही लेना चाहिए। आप अगर अधिक काम हाथ मे लेगे, तो थककर चूर हो जाएगे और लुढकते हुए पीछे आ जाएगे। जीवन आपको पीछे फेक देगा।

हमे जरूर तेज रफ्तार से आगे बढना चाहिए। लेकिन अर्थ-व्यवस्था को, गिरावो तथा असफलताओ से बचाते हुए एक योजना के अनुसार विकसित करना होगा। वैसा करने के लिए हमे ठढे दिमाग से अपने साधनो को तौलना चाहिए और उनका होशियारी से उपयोग करना चाहिए।

खनिज लोहा, मक्खन, चीनी, ऊनी कपडे, धातु-कर्म की मशीनो और चिरी लकडी के समष्टिगत उत्पादन और फी आदमी उत्पादन— दोनो ही लिहाज से हमारा देश सयुक्त राज्य अमेरिका से अभी ही आगे निकल चुका है। हमने कोयला और सीमेन्ट के उत्पादन मे सयुक्त राज्य अमेरिका को पीछे छोड दिया है। इस्पात के उत्पादन मे हम शीघ्र उसके बराबर पहुच जाएगे। वह समय अब दूर नही है जबकि हम सभी औद्योगिक चीजो के उत्पादन मे न सिर्फ सयुक्त राज्य अमेरिका के बराबर पहुच जाएगे, बल्कि पूजीवादी जगत के उस मान्यता-प्राप्त नेता को पीछे छोड देंगे।

हथियारबन्द हमले द्वारा सोवियत सघ को पराजित करने के साम्राज्यवादी प्रयत्नो को हमने नाकाम कर दिया। अब आर्थिक प्रतियोगिता मे सोवियत सघ को पराजित करने की साम्राज्यवादी आशाओ पर भी पानी फिर रहा है।

युद्ध के द्वारा हमारी शक्ति को अवरुद्ध करने की सभावना मे साम्राज्यवाद का विश्वास खत्म हो गया है, क्योकि युद्ध से सम्पूर्ण पूजीवादी व्यवस्था के निश्शेष हो जाने का खतरा है। साम्राज्यवादी यह समझने लगे है कि अब वह जमाना नही रहा जब हिटलर ने आसानी और तेजी से उराल तक पहुच जाने की अपनी पागलपन भरी योजना पकाई थी। अब तो प्रतिशोध-कामियो ने एक कदम उठाया नही कि उनकी हथियारबन्द दुस्साहसिकता के पहले चन्द घटो मे ही उनका नामोनिशान सफहे-हस्ती से मिटा दिया जाएगा। मैने पश्चिमी जर्मनी के निवासियो से एकाधिक बार बाते की है। उन्होने मुझे बताया कि सोवियत सघ के खिलाफ दुस्साहसिक कदम उठाने मे जो घोर खतरा है उसे पश्चिमी जर्मनी के ६५ फीसदी निवासी समझते है और जो ५ फीसदी नही समझते, वे मानसिक रुग्णता के शिकार है। पश्चिमी जर्मनी के अत्यधिक बहुसख्यक लोग यह अच्छी तरह जानते है कि सोवियत सघ तथा अन्य समाजवादी देशो के खिलाफ युद्ध छेडने का अर्थ विनाश को प्राप्त होना है।

इससे नतीजा यह निकलता है कि हमें शस्त्रास्त्र की शक्ति द्वारा कुचल देने की साम्राज्यवादी योजना नाकाम रही। तब, जैसा कि मै पहले कह चुका हूं, उन्होने आर्थिक ढग से हमारा गला घोट देने की कोशिश की। उन्होने समाजवादी देशो को एकलित कर देने, उनके आर्थिक विकास को असफल कर देने के लिए सब कुछ किया। लेकिन ये साम्राज्यवादी कुचक्र भी नाकाम रहे। साम्राज्यवादियो ने समाजवादी देशो की कमजोरी और गरीबी के किस्से गढे। पूजीवादी जगत के कुछ लोग इन किस्सो पर विश्वास करते हैं। मै एक बार पहले भी एक पूरबी राजकुमार से अपनी बातचीत की कहानी सुना चुका हू। सोवियत सघ के बारे मे अपनी धारणाओ की बात करते हुए उन्होने कहा· "श्री ख्रुश्चोव, जब मै रूस जाने को था, तब मुझे वैसा न करने की सलाह दी गई। मुझे बताया गया कि आपके यहा कम्युनिज्म है। मै गया और

मैंने देखा कि आपके यहा कम्युनिज्म बिलकुल नही है। कम्युनिज्म तो हमारे यहा है—हमारे देश मे हर व्यक्ति नगा फिर रहा है।" इस प्रकार आप देखते है कि साम्राज्यवाद के विचारधारा-निरूपक कम्युनिज्म के बारे मे लोगो के दिमाग मे क्या धारणाए भर रहे है।

आर्थिक विकास मे हमारी विपुल सफलताए साम्राज्यवादियो की कुत्सा भरी मनगढन्तो को चकनाचूर कर देती है। वे समाजवादी व्यवस्था की महान् वरिष्ठता को प्रदर्शित करती है। वे इस बात की पुष्टि करती है कि मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त, हमारी विचारधारा सही है। वे हमारी सामाजिक व्यवस्था की वरिष्ठता की पुष्टि करती है। वे साम्राज्यवादी विचारधारा-निरूपको के झूठेपन का पर्दाफाश करती है, जिन्होने यह सिद्ध करने की कोशिश की कि पूजीवाद सर्वाधिक उत्पादनशील पद्धति है और निजी मिल्कियत, निजी उद्यम, निजी पहलकदमी आर्थिक विकास की सबसे प्रबल प्रेरणाए है।

फिर भी हम कम्युनिस्टो ने, सोवियत जनता ने सारे ससार के सामने यह सिद्ध कर दिया कि मेहनतकश जनता द्वारा सत्ता पर अधिकार किए जाने के बाद इतिहास की एक छोटी सी मुद्दत मे ज़ारशाही रूस जैसा आर्थिक दृष्टि से पिछडा हुआ देश भी अपने उत्पादन को बेहद ऊचे उठा सकता है। औद्योगिक उत्पादन के लिहाज से उसने आगे बढकर ससार मे दूसरा स्थान प्राप्त कर लिया है और वह समय दूर नही है जब वह आग निकलकर पहले स्थान पर पहुच जाएगा।

साथियो, हम जब आर्थिक प्रतियोगिता मे विजय की बात करते है, तो हमारा मतलब सिर्फ सीमेन्ट और धातु से ही नही होता। हमारा मतलब राजनीति से है, अपने विचारो की शक्ति से है, मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त की शक्ति से है, उस सिद्धान्त पर आधारित नियोजित अर्थ-नीति की वरिष्ठता से है, पूजीवादी व्यवस्था के मुकाबले समाजवादी व्यवस्था की श्रेष्ठता से है।

प्रतिस्पद्धा के निर्मम नियमो को पूजीवादी जानते है जब कोई फर्म किसी दूसरी फर्म से आगे निकल जाती है, तब मजबूत फर्म कमजोर फर्म को हजम कर जाती है। अर्थ-व्यवस्था के क्षेत्र मे दोनो पद्धतियो की प्रतियोगिता साम्राज्यवादियो मे और अधिक भय पैदा कर रही है। वे

देखते है कि समाजवाद की तेज बढोतरी पूजीवाद के स्तम्भो की जड अधिकाधिक खोदती जा रही है, वह इतिहास द्वारा नियत पूजीवाद के विनाश को निकट ला रही है।

व्ला० इ० लेनिन ने, हमारी पार्टी ने यह निष्कर्ष निकाला है कि महान् अक्तूबर क्रान्ति के बाद से ससार दो विरोधी व्यवस्थाओ – पूजीवादी और समाजवादी व्यवस्थाओ – मे विभाजित हो गया है। वस्तुत. विद्यमान इस तथ्य की उपेक्षा नही की जा सकती।

समाजवादी व्यवस्था के अस्तित्व मे आने के बाद से ही समाजवादी ससार और पूजीवादी ससार मे प्रतियोगिता चलती रही है। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे यह प्रश्न हल होता रहा है कि कौनसी पद्धति इस प्रतियोगिता मे अपने को जमा लेगी और कौन पराजित होकर दूसरी व्यवस्था के लिए मैदान छोड देगी। विभिन्न व्यवस्थाओवाले राज्यो के शातिमय सह-अस्तित्व का अर्थ अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे वर्ग-सघर्ष का ढीला किया जाना किसी प्रकार नही है। चूकि वर्ग-सघर्ष कायम है, इसलिए विचारधारा के क्षेत्र मे शान्तिमय सह-अस्तित्व असभव है। विचारधारा के क्षेत्र मे शान्तिमय सह-अस्तित्व की जो कोई भी हिमायत करता है, वह चाहे पसन्द करे या न करे समाजवाद के साथ गद्दारी कर रहा है, कम्युनिस्ट हेतु के साथ गद्दारी कर रहा है।

जो कोई भी विभिन्न व्यवस्थाओवाले राज्यो के शान्तिमय सह-अस्तित्व के उसूलो से, शातिमय प्रतियोगिता के उसूलो से इनकार करता है, वह मजदूर वर्ग की क्रान्तिकारी शक्ति मे, मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचारो की प्रबल क्षमता मे अविश्वास प्रगट करता है।

तथ्यो से इनकार मुमकिन नही है। कम्युनिस्ट निर्माण मे हमारी सफलताओ के तथ्य सारे ससार को मालूम है और उन्हे न छिपाया जा सकता है और न उनसे इनकार किया जा सकता है। कम्युनिज्म के प्रबल भौतिक तथा तकनीकी आधार का निर्माण करनेवाली हमारी जनता का श्रम एक ऐसा जबर्दस्त तत्व है जो सारे ससार के लोगो के मन पर प्रचण्ड प्रभाव डाल रहा है। कम्युनिस्ट निर्माण मे सोवियत सघ की सफलताए, अन्य समाजवादी देशो की सफलताए अपनी क्षमताओ के प्रति सभी देशो के मजदूर वर्ग के विश्वास को सुदृढ कर रही हैं। ये सफलताए

उत्पीडित जातियो को आजादी के लिए सघर्ष करने के लिए प्रोत्साहित कर रही हैं, वे ससार के विभिन्न देशो के बुद्धिजीवियो के मन को प्रभावित कर रही है और साम्राज्यवाद की शक्तियो के खिलाफ समाजवाद के लिए लडनेवालो को उनके विचारधारात्मक सघर्ष मे प्रेरणा प्रदान करती हैं।

सोवियत जनता कम्युनिज्म का निर्माण करके समस्त मानव-जाति के भविष्य का पथ आलोकित कर रही है और इस प्रकार सभी देशो की मेहनतकश जनता के प्रति वह अपने अन्तर्राष्ट्रीयतावादी कर्त्तव्य का पालन कर रही है।

(मार्क्सवाद-लेनिनवाद हमारी पताका है, हमारे सघर्ष का अस्त्र है। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की प्लीनरी मीटिंग मे किया गया भाषण। २१ जून १९६३। मास्को, 'गोस्पोलीतइज्दात' प्रकाशन गृह, १९६३, पृष्ठ १६–२३)

दूसरे समाजवादी देशो की जनता सोवियत जनता के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर समाजवाद की बुनियादी आर्थिक समस्या को हल करने के लिए निष्ठापूर्वक काम कर रही है। वह समय अब दूर नही है, जबकि भौतिक उत्पादन के क्षेत्र मे, मानवीय प्रयास के इस निर्णयात्मक क्षेत्र मे पूजीवाद पराजित हो जाएगा और समाजवाद बढकर पहले स्थान पर पहुच जाएगा। सोवियत राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था के विकास की सप्तवर्षीय योजना की पूर्त्ति तथा अतिपूर्ति के फलस्वरूप और उसी प्रकार लोक-जनतन्त्रो के आर्थिक विकास की तेज रफ्तार के कारण विश्व समाजवादी व्यवस्थावाले देश ससार के औद्योगिक उत्पादन का आधा से अधिक उत्पादित करने लगेंगे।

(विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन की नई विजयो के लिए। 'कम्युनिज्म – जनता के लिए शान्ति और सुख' शीर्षक सग्रह, खण्ड १, पृष्ठ २३ – २४)

युद्ध-पूर्व के स्तर की तुलना मे समाजवादी राष्ट्र-मण्डल के देशो ने अपना कुल औद्योगिक उत्पादन लगभग सात गुना बढ़ा लिया है, जबकि पूजीवाद के देशो मे बढ़ती ढाई गुना से भी कम हुई है। अर्थशास्त्रियो के प्राथमिक तख़मीनो से प्रगट है कि १९८० तक दुनिया के औद्योगिक उत्पादन का दो-तिहाई भाग विश्व समाजवादी व्यवस्था से प्राप्त होगा।

कुछ लोग कहते है कि आकडे नीरस होते है। मगर हमारी व्यवस्था की वृद्धि प्रगट करनेवाले आकडो का हवाला देना सुखद है और मेरा ख्याल है कि उनको सुनना भी सुखद है। मुझे याद है कि अपनी युवावस्था मे हम एक गीत गाया करते थे, "दौड़ो, आगे बढो भाप के इजन! लक्ष्य कम्युनिज्म है।" आज हम और समूची समाजवादी व्यवस्था भाप के इजन पर नही, बल्कि शक्तिशाली बिजली-इजन पर तेज रफ्तार से आगे बढ़ रहे हैं। इस बात में कोई सदेह नही हो सकता कि हमारी समाजवादी एक्सप्रेस गाडी पूजीवाद की गाडी को पछाड देगी और उससे आगे निकल जाएगी। अब पूजीवाद मे न तो सामर्थ्य है और न खीचने की शक्ति!

(सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम के बारे में। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २२वी काग्रेस , शार्टहैंड रिपोर्ट, खण्ड १, पृष्ठ २२५)

समाजवाद और कम्युनिज्म की विजय के लिए संघर्ष करने मे हमे अब भी बडी लडाइयो का सामना करना है। सालहा-साल हम अपने शामिल घर की बुनियादे मजबूत और सहत करते जा रहे है। वह दुनिया मे अधिकाधिक ऊचा उठता जा रहा है। आज भी साम्राज्यवादी खेमा हमारी शक्तियो की परवाह करने के लिए मजबूर है, वह इस तथ्य की परवाह करने के लिए मजबूर है कि आलीजाह विश्व मजदूर वर्ग और उसका हिरावल दस्ता, समाजवादी देशो का मजदूर वर्ग विकसित हो रहा है, शक्ति-संचय कर रहा है।

ये शक्तिया उस समय तक बढ़ती रहेंगी, अपनी प्रगति को तेज करती रहेगी, जब तक कि कम्युनिज्म के विचारो की पूर्ण विजय नही

उपलब्ध होती, जब तक कि सारे ससार मे सुख और समृद्धि की विजय नही होती, जब तक कि हमारा लाल निशान सारी दुनिया मे फहराने नही लगता।

वह घडी आएगी साथियो, हमे इस बात का दृढ विश्वास है।

समाजवादी देशो की अर्थ-व्यवस्था की अभिवृद्धि हो रही है, वह शक्ति-सपन्न हो रही है और प्रगति की रफ्तार मे वह पूजीवादी जगत को बहुत पीछे छोडती जा रही है। समाजवादी देशो का औद्योगिक उत्पादन १९५७ की अपेक्षा १९६२ मे ७० फीसदी अधिक था। उसी मुद्दत मे पूजीवादी देशो मे हुई बढती केवल २५ फीसदी थी। इस समय समाजवादी देशो का औद्योगिक उत्पादन आर्थिक दृष्टि से विकसित पूजीवादी देशो के उत्पादन के ६४ फीसदी के बराबर है। आपके जनतत्र की मेहनतकश जनता तथा जनवादी पोलैण्ड, चेकोस्लोवाकिया, चीनी लोक-जनतत्र, हगरी, रूमानिया, बुल्गारिया के, सभी समाजवादी देशो के मजदूर, किसान और बुद्धिजीवी समाजवादी अर्थ-व्यवस्था के विकास मे भारी योगदान कर रहे है।

(जर्मनी की समाजवादी एकता पार्टी की छठी काग्रेस मे किया गया भाषण। १६ जनवरी १९६३। मास्को, 'गोस्पोलीतइज्दात' प्रकाशन गृह, १९६३, पृष्ठ २१–२२)

सयुक्त राज्य अमेरिका के साथ आर्थिक प्रतियोगिता मे सोवियत सघ की विजय और पूजीवादी व्यवस्था के ऊपर पूरी की पूरी समाजवादी व्यवस्था की विजय इतिहास के राजपथ का एक बडा मोड होगी। वह ससार के मजदूर वर्ग के आन्दोलन पर और भी अधिक क्रान्तिकारी प्रभाव डालेगी। वैसा होने पर बड़ा से बड़ा शक्की भी यह स्पष्ट देख लेगा कि केवल समाजवाद ही मानव के सुख की सारी आवश्यकताओ की उपलब्धि कर सकता है और तब वह समाजवाद का वरण करेगा।

आज पूजीवाद के साथ आर्थिक प्रतियोगिता मे समय बचाना सबसे महत्वपूर्ण बात है। जितना ही तेज हमारा आर्थिक विकास होगा, आर्थिक और राजनैतिक दृष्टि से हम जितना ही अधिक मजबूत होगे, उतना ही

ऐतिहासिक विकास की धारा और गति पर, ससार के भविष्य पर समाजवादी शिविर का अधिक प्रभाव होगा।

(विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन की नई विजयो के लिए। 'कम्युनिज्म – जनता के लिए शान्ति और सुख' शीर्षक सग्रह, खण्ड १, पृष्ठ २४)

कुछ दिन हुए, सुविख्यात अगरेजी लेखक एच० जी० वेल्स की पुस्तक 'धुधलके मे छिपा रूस' मैने दुबारा पढी, जिसमे व्ला० इ० लेनिन के साथ लेखक की बातचीत का विवरण शामिल है। एच० जी० वेल्स ने लेनिन को घोर दिवा-स्वप्नद्रष्टा कहा था। इस पुस्तक के पढने से आपका मन अपने देश और अपनी जनता के लिए, कम्युनिस्ट पार्टी के लिये गर्व से भर उठता है। अतीत के पृष्ठ वर्त्तमान के गौरव को अत्यन्त ज्वलन्त रूप से उजागर करते है।

जिस समय मजदूर और किसान नगे और भूखे थे, उस समय जब लेनिन ने कहा कि हम सारे देश का बिजलीकरण करेगे, तो पूजीपति वर्ग को हसी आई थी। ये कम्युनिस्ट किस किस्म के लोग है ? देश भूखा था, वह तबाही मे मुब्तला था, लेकिन पार्टी और लेनिन यह सोच रहे थे कि हम आर्थिक दृष्टि से सर्वाधिक विकसित पूजीवादी देशो की वरावरी पर किस तरह पहुच जाए। हमसे कहा गया तुम एक पिछडे हुए, अर्द्ध-वर्बर देश हो और फिर भी तुम सर्वाधिक विकसित पूजीवादी देशो की वरावरी पर पहुचना चाहते हो ।

लेकिन साल गुजरते गए, देश अधिकाधिक शक्तिशाली होता गया और हमारी वहादुर जनता एक के बाद दूसरी विजय प्राप्त करती गई। तव लोगो ने हमारे ऊपर हसना बन्द कर दिया। आज हमारा देश पूजीवादी जगत मे भय पैदा करता है। वे हमसे बेशक इस कारण नही डरते कि सोवियत सघ सैनिक दृष्टि से सर्वाधिक बलवान देश है, वल्कि इस कारण डरते है कि समाजवाद जनता के लिए वेहतर जीवन प्रस्तुत करता है। इस बात मे मेहनतकश जनता को खीचने की महती शक्ति है।

आज विदेशो मे यह कहनेवाले कम ही लोग होगे कि हम दिवा-स्वप्नदर्शी है। यहा तक कि अनेक पूजीवादी नेता हमारे देश के प्रति वर्गीय घृणा मे अन्धे होते हुए भी साल गिनते रहते है कि कब हम आबादी के फी आदमी पीछे उत्पादन मे सयुक्त राज्य अमेरिका की बराबरी पर पहुच जाएगे।

पिछले दिनो कुछ विदेशी नेता पूछा करते थे श्री ख्रुश्चोव, क्या आप सचमुच आर्थिक दृष्टि से अमेरिका की बराबरी पर पहुच जाने का इरादा रखते है? आज यह सवाल कोई नही पूछता। अब वे पूछते है श्री ख्रुश्चोव, आपका क्या खयाल है, कब सोवियत सघ अमेरिका की बराबरी पर पहुच जाएगा? यह एक बिलकुल ही भिन्न सवाल है, बिलकुल ही भिन्न बात है।

वे अब इस बात मे सन्देह नही करते कि सोवियत सघ सयुक्त राज्य अमेरिका की बराबरी पर पहुच जाएगा। अब उन्हे यह सवाल परेशान करता है कि ऐसा कब होगा। यह रहा जवाब, जो मैने दिया था. आप इसे अपने नोट-बुक मे लिख लीजिए कि हम आबादी के फी आदमी पीछे औद्योगिक उत्पादन मे आपकी बराबरी पर १९७० मे पहुच जाएगे, हम आपकी बराबरी पर पहुच जाएगे और फिर आगे बढेगे।

(सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की जनवरीवाली प्लीनरी मीटिग के फैसलो की सफलतापूर्वक तामील करे। उक्राइना की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की प्लीनरी मीटिग मे किया गया भाषण। २८ जनवरी १९६१। 'सोवियत सघ मे कम्युनिज्म का निर्माण और खेतीबारी का विकास' शीर्षक सग्रह, खण्ड ४, पृष्ठ ३९६–३९७)

समाजवादी जनतत्र ही सच्चा जन-राज्य है

मै समाजवादी जनतत्र तथा पूजीवादी जनतत्र के बारे मे चन्द शब्द कहना चाहता हू। हमे इस सवाल पर लौटकर बार बार इसलिए आना पडता है कि पश्चिमी देशो के मजदूरो, किसानो और सामान्यत मेहनतकश

लोगो के दिमाग मे इस सम्बन्ध मे काफी उलझन है। पूजीवादी प्रचार जनता को समाजवादी जनतन्त्र के बारे मे सही खयाल बनाने से रोकने के लिए हर तरह से कोशिश करता है।

समाजवादी और पूजीवादी जनतन्त्र की तुलना के लिए इतिहास प्रचुर सामग्री प्रस्तुत करता है। वस्तुपरक ढग से, बिना किसी पूर्वाग्रह के यह निर्णय करना है कि किस प्रकार का जनतन्त्र जनता के बुनियादी हितो के उपयुक्त है, राष्ट्रो की मैत्री को सहृत करता है और विश्व-शान्ति की अभिवृद्धि करता है। क्या पूजीवादी जनतन्त्र ऐसा करता है? नही, वह नही करता।

पूजीवादी जनतन्त्र के अन्तर्गत सत्ता यथार्थत शोषको के एक छोटे से गुट के हाथो मे होती है, जो अपने विशेषाधिकारो को कायम रखने और उन्हे सहृत करने, लाखो लाखो मेहनतकशो को उत्पीडित करने तथा कमजोर राष्ट्रो को लूटने से गरज रखते है। पूजीवादी जनतन्त्र मानवता के लिए उस अन्धी गली से निकलने की राह नही खोलता, जिसमे उसे पूजीवाद ने पहुचा दिया है। वह पूजीवादी समाज के अन्तर्विरोधो पर पर्दा डालने की कोशिश करता है। पूजीवादी जनतन्त्र को हम इसी कारण जन-समुदायो को धोखा देने के लिए पूजीवादी शासक-वर्गो द्वारा वाछित एक साधन समझते है।

समाजवादी जनतन्त्र इससे बहुत ही भिन्न चीज है। वह जनता की सच्ची सत्ता की, राज्य के शासन तथा अर्थ-व्यवस्था के सचालन से सम्बन्धित सभी मामलो का निर्णय करने मे मेहनतकश जनता की अमली शिरकत की ज़मानत करता है। समाजवादी देशो मे मजदूर, किसान और मेहनतकश लोग अपने भाग्य के सचमुच मालिक है। वे अपने लिए तथा अपने बच्चो के लिए एक नए जीवन का निर्माण कर रहे है और उस महान लक्ष्य के लिए निष्ठापूर्वक काम कर रहे है। समाजवादी जनतन्त्र देश के शासन और अत्यधिक महत्वपूर्ण राजनैतिक तथा आर्थिक समस्याओ के हल करने मे, बेहद बडे पैमाने पर मेहनतकश जनता की शिरकत की जमानत करता है।

समाजवादी देशो के मेहनतकश लोग और भी अधिक प्रभावशाली ढग से समाजवाद तथा कम्युनिज्म का निर्माण करने के लिए भाषण-

स्वातन्त्र्य और अखबारो की आजादी का व्यापक इस्तेमाल करते है। ऐसा करने मे वे अपने ही हितो को, लाखो करोडो जनता के हितो को आधार बनाकर चलते है।

(लिप्जिग मे ७ मार्च १९५९ को हुए नवे अखिल जर्मन मजदूर सम्मेलन मे किया गया भाषण। 'शस्त्रहीन ससार ही युद्ध मुक्त ससार है' शीर्षक सग्रह, खण्ड १, पृष्ठ १८४–१८५)

सभी देशो और राष्ट्रो के मजदूर वर्गीय एकता के सूत्र मे बधे भाई है। वे विश्व सर्वहारा वर्ग की प्रबल सेना है, जिसके ऊपर मानवता को कम्युनिज्म मे पहुचाने का महान ऐतिहासिक ध्येय आश्रित है।

मजदूर वर्ग जन-समुदायो की युग युग की आकाक्षाओ की अभिव्यक्ति करता है और आजादी के आन्दोलन मे असीम ओज, कृत-निश्चयता तथा समस्त कठिनाइयो और कठोरताओ पर विजय पाने की योग्यता भरता है।

सत्ता ग्रहण करने के बाद मजदूर वर्ग की भूमिका खास तौर से महान बन जाती है। हम सभी अपने शामिल तजरबे से जानते है कि नए जीवन के निर्माण मे, समाजवाद के निर्माण मे, जिसमे पुराने ससार की शक्तिया हर सभव तरीके से बाधा डाल रही है, कितने प्रबल प्रयास की आवश्यकता होती है।

जहा पूजीवादी व्यवस्था अब भी कायम है, वहा उसे स्थायी बनाने और जहा मजदूर वर्ग ने सत्ता ले ली है, वहा उसे छीनने के प्रयत्नो मे प्रतिक्रियावादी शक्तिया सबसे पहले अपना हमला मजदूर वर्ग की सत्ता के खिलाफ, सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व के खिलाफ शुरू करती है। वे सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व को एक किस्म के हौवे के रूप मे चित्रित करने की कोशिश कर रही है। उनका कहना है कि वह अत्यन्त कठोर सत्ता है। वास्तव मे वह शोषको के लिए, मेहनतकश जनता के शत्रुओ के लिए किसी भी रूप मे कोमल सत्ता नही है। लेकिन जहा तक मेहनतकश जनता, समची जनता का सम्बन्ध है, उसके लिए सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व उसकी अपनी राज्यसत्ता है, जो बहुसख्यको को हर प्रकार की जनवादी आजादी प्रदान करती है। उसके बगैर मेहनतकश जनता

शोपको से अपने को मुक्त करने और अपनी आजादी हासिल करने में कभी समर्थ न हुई होती।

सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व क्या है? पूजी की सत्ता का तख्ता उलटने, मेहनतकशो की राज्यसत्ता उपलब्ध और सहृत करने तथा कम्युनिरट समाज का निर्माण करने के सघर्ष में मजदूर वर्ग का नेतृत्व ही सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व है।

मजदूर वर्ग सबसे अधिक अग्रसर और क्रान्तिकारी वर्ग है। उसके हित मेहनतकश जनता के सभी दूसरे हिस्सो के हितो के साथ मेल खाते है। मजदूर वर्ग की विजय किसानो को जमीदारो और कुलको की गुलामी से मुक्त करती है, निम्न-पूजीपति वर्ग को पूजीवादी इजारेदारियो के जुल्म से निजात दिलाती है। वह विजय बुद्धिजीवियो के सामने शोपको के लिए नही, वल्कि जनता के लिए सास्कृतिक मूल्यो की सर्जना करने के सुखद सुयोग प्रस्तुत करती है।

यह है वह आधार जिसके ऊपर मेहनतकश जनता के गैर-सर्वहारा हिस्सो के साथ मजदूर वर्ग का सहमेल उसके अपने ही नेतृत्व में गठित होता है और यही सहमेल सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व का सार है।

जैसा कि मेहनतकश जनता के महान नेता और शिक्षक व्ला० इ० लेनिन ने बारम्बार समझाया था, शोपको के प्रतिरोध को पूर्णत चकनाचूर करने के लिए, पूजीवाद को बहाल करने के उनके सभी प्रयत्नो को नाकाम करने के लिए और समाजवादी व्यवस्था को एक वार ही हमेशा के लिए स्थापित करने और उसे ठोस बनाने के लिए, सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व मेहनतकश जनता के दूसरे हिस्सो के साथ, मुख्यत· किसानो के साथ सर्वहारा वर्ग के वर्गीय सहमेल का एक विशेष रूप है।

हमारे दुश्मनो का यह दावा सरासर झूठ है कि सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व जोरो-जबर्दस्ती के सिवा और कुछ भी नही है।

पूजीपति, जमीदार और उनके गुर्गे जनता की इच्छा का प्रतिरोध करते है और समाजवादी आधार पर अपने जीवन का निर्माण करने के लिए जन-समुदायो द्वारा किए जानेवाले प्रयत्नो मे अडगा लगाते हैं। तव क्या किया जाए? क्या जनता को शोषको के, समाज के एक नगण्य

अल्पमत के प्रतिरोध को कुचल देने का अधिकार नही है, ताकि मेहनतकश बहुमत की इच्छा और आकाक्षाओ की विजय हो?

हमारे देश मे मजदूरो और मेहनतकश किसानो ने बहुत दिन पहले अक्तूबर १९१७ मे शोषको के शासन का तख्ता पलट दिया था। फिर भी अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया के साथ मिलकर जमीदारो और पूजीपतियो ने पुरानी व्यवस्था को वहाल करने की कोशिश की। उन्होने गृह-युद्ध शुरू कर दिया, दखलन्दाजी शुरू कर दी। हम क्या कर सकते थे? क्या हम उस समय जनवाद के सम्बन्ध मे भलमनसाहत की भाषा मे उन्हे समझाते-बुझाते, जबकि वे हजारो बेहतरीन मजदूरो और किसानो को गोलियो के घाट उतार रहे थे? या कि हमे जनता के हित मे दुश्मनो के प्रतिरोध को कुचल देना था? हम अपनी समाजवादी उपलब्धियो की हिफाजत एकमात्र इसी कारण कर सके कि मजदूर वर्ग ने, हमारे देश की मेहनतकश जनता ने हमारे वर्ग-शत्रु के प्रतिरोध को कुचल देने मे आगा-पीछा नही किया।

या फिर १९५६ की मिसाल लीजिए, जबकि मुट्ठी भर फासिस्ट षड्यन्त्रकारियो और उनके टुकडखोरो ने विदेशी साम्राज्यवादी प्रतिक्रिया की प्रेरणा से और उसकी रहनुमाई मे हथियारो की ताकत से हगरी के मजदूर वर्ग को, यहा की आम मेहनतकश जनता को सत्ता से वचित करना और आपके देश मे पूजीवादी व्यवस्था को वहाल करना चाहा था। क्या आप उसे मजूर कर सकते थे? क्या आपका लोक-जनतन्त्र, जो आप जानते है कि सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व का ही एक रूप है, फासिस्ट अशको के खूनी उत्पात के फूट पडने पर उसे वर्दाश्त कर सकता था? बेशक, नही! षड्यन्त्रकारियो के विद्रोह को कुचल दिया गया। हगरी के मजदूर और किसान, उसकी मेहनतकश जनता अपनी शक्तियो को सघटित करने और सोवियत सेनाओ की सहायता से प्रतिक्रान्तिकारी षड्यन्त्रकारियो को चकनाचूर कर देने मे कामयाब हो गई। उन्होने प्रतिक्रान्तिकारियो को यह इजाजत नही दी कि वे हगरी को उसके सही समाजवादी रास्ते से भटका दे।

हगरी की जन-सत्ता ने जब बगावत के बाद उक्त जन-विरोधी बलवे के सरगनो का दमन किया, तब पूजीवादी प्रचार ने उस फासिस्ट

आतक और बगावत के नग्न नृत्य को "जनवाद के प्रस्फुटन" के रूप मे चित्रित किया और चीख-पुकार मचाई कि हगरी मे जोरो-जुल्म हो रहा है। हर ईमानदार मजदूर जानता है कि दर्जन भर सरगनो को कैद कर देना जनता के हितो को खतरे मे डालने से बेहतर है।

जब फासिस्ट बलवाई, प्रतिक्रान्तिकारी, समाजवादी निर्माण के प्रति वफादार मजदूरो और ईमानदार लोगो की पिटाई करते रहे, तब तो साम्राज्यवादी प्रतिक्रियावादी अनुमोदन की मुद्रा मे देखते और उनका समर्थन करते रहे। लेकिन जब हगरी की क्रान्तिकारी शक्तियो ने फासिस्ट षड्यन्त्रकारियो के खिलाफ दृढ-निश्चयी कार्रवाई की और हगरी के क्रान्तिकारी मजदूरो और किसानो की सरकार की नीति को सक्रिय रूप से लागू किया, तब सारे ससार के साम्राज्यवादी प्रतिक्रियावादियो ने हगरी मे जोरो-जुल्म का रोना-पीटना शुरू कर दिया। इन सारी बातो से प्रगट है कि प्रतिक्रियावादी मेहनतकश जनता पर पूजीपतियो के शासन को स्थायी बनाने की कोशिश करते हुए अपनी जन-विरोधी वर्गीय नीति को चलाने मे कैसे कैसे गदे तरीके इस्तेमाल करते है।

प्रिय साथियो, मुझे अनुमति दीजिए कि मैं व्ला० इ० लेनिन द्वारा २७ मई १९१९ को लिखे गए एक लेख, 'हगरी के मजदूरो का अभिनन्दन' का एक अश पढकर सुनाऊ। उन्होने लिखा था सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व का "मतलब ही यह है कि शोषको के, पूजीपतियो के, जमीदारो तथा उनके गुर्गो के विरोध को कुचलने के लिए निर्ममतापूर्ण कठोरता, तेजी तथा दृढता के साथ बल का प्रयोग किया जाये। जो भी इस बात को नही समझता वह क्रातिकारी नही है और उसे सर्वहारा वर्ग के नेता या परामर्शदाता के पद से हटा दिया जाना चाहिये।

"परतु", लेनिन ने आगे लिखा, "सर्वहारा अधिनायकत्व का सार-तत्त्व केवल बल-प्रयोग मे, यहा तक कि मुख्यत बल-प्रयोग मे भी नही निहित है। श्रमिक जनता के आगे बढे हुए दस्ते का, उसके हिरावल दस्ते का, उसके एकमात्र नेता उस सर्वहारा वर्ग का सगठन तथा अनुशासन ही उसका मर्म है जिसका उद्देश्य समाजवाद का निर्माण करना है ."

सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व की व्यापक सृजनात्मक कार्यकारिता है। वह नए, समाजवादी सामाजिक व्यवस्था की स्थापना का साधन है,

समाजवादी आर्थिक प्रणाली के निर्माण तथा विकास का साधन है, प्रगतिशील सस्कृति और मानव के जीवन तथा सुख के लिए अनिवार्य भौतिक प्रचुरता की उपलब्धि का साधन है।

(सोवियत पार्टी और सरकार के प्रतिनिधि-मडल की हगरी-यात्रा के समय चेपेल लोहा और इस्पात कारखाने की एक सभा मे किया गया भाषण। ९ अप्रैल १९५८। 'पूजीवाद के साथ शान्तिपूर्ण प्रतियोगिता मे विजय के लिए' शीर्षक सग्रह। मास्को, 'गोस्पोलीतइज्दात' प्रकाशन गृह, १९५९, पृष्ठ २३८–२४१)

सोवियत संघ में एक ही पार्टी क्यो है?

समाजवाद के विरोधी दावा करते है कि सोवियत सघ मे जनवाद इसलिए नही है कि हमारे यहा कम्युनिस्ट पार्टी केवल एक राजनीतिक पार्टी ही है। हा, वास्तव मे हमारे यहा एक ही पार्टी का अस्तित्व है। मगर क्यो? इसका कारण है हमारे समाज की ठोस एकता, जिसमे वहुत दिनो से शोषक वर्ग नही है, आदमी द्वारा आदमी का शोषण नही है। न हमारे यहा विशिष्ट वर्ग-हितोवाले कोई मध्यवर्ती सामाजिक दल या स्तर ही है।

सोवियत समाज मेहनतकश जनता का समाज है–मजदूरो, किसानो और जनता के वीच से निकले वुद्धिजीवियो का समाज है, जो हितो के एकत्व द्वारा, प्रयोजनो के एकत्व द्वारा एकतावद्ध है। एक पार्टी, कम्युनिस्ट पार्टी सोवियत जनता के हितो की अभिव्यक्ति और रक्षा करती है। यही कारण है कि हमारे देश मे कोई और पार्टिया नही है।

पूजीवादी समाज मे कई पार्टिया क्यो होती है? इसलिए कि वह विभिन्न वर्गो मे विभाजित है। कुछ उत्पादन के साधनो के मालिक है, जवकि कुछ के पास केवल उनकी श्रम-शक्ति है। यही कारण है कि पूजीपति वर्ग की अपनी राजनीतिक पार्टी है, जमीदारो की अपनी है और मजदूर वर्ग अपनी पार्टी अलग वनाता है। मेहनतकश किसान भी, जो जमीदारो द्वारा उत्पीडित है, सगठित होने और सघर्ष के साधनो को विकसित करने के लिए अपनी पार्टी वनाने के लिए वाध्य होते है। इजारेदार पूजी से अपना वचाव करते हुए निम्न-पूजीवादी वर्ग भी अपने राजनीतिक सगठन वनाने को

मजबूर है। अपने हितों की रक्षा करने के लिए बुद्धिजीवी भी अपने राजनीतिक संगठन कायम करने की कोशिश करते है। विभिन्न वर्गो और सामाजिक स्तरो से बने हुए समाज के विकास का ऐसा ही नियम है। अनेक पार्टियो के अस्तित्व का यही कारण है।

(भारतीय ससद मे किया गया भाषण। ११ फरवरी १९६०। 'सोवियत सघ की विदेश-नीति (१९६०)' शीर्षक सग्रह, खण्ड १, पृष्ठ ७६)

कभी कभी हमारे खिलाफ यह शिकायत की जाती है कि हमारे देश मे केवल एक ही पार्टी है। लेकिन इस तरह का तर्क केवल वे ही लोग पेश कर सकते है जो सोवियत यथार्थ की जानकारी नही रखते, जो वर्ग, पार्टी और जनता जैसी मामूली धारणाओ के बारे मे बहुत कम जानते है। क्षण भर के लिए मान ले कि हमारे देश मे कुछ पार्टिया पैदा हो जाती है, तो क्या हम यह पूछ सकते है कि वे किसका प्रतिनिधित्व करेगी, किसके हितो की अभिव्यक्ति करेगी? आखिरकार किसी पार्टी का अस्तित्व, चाहे वह बडी हो या छोटी, हवा मे तो नही होता। वह एक न एक वर्ग का, एक न एक सामाजिक स्तर का प्रतिनिधित्व और उसके हितो की अभिव्यक्ति करती है। लेकिन हमारे यहा विरोधी वर्ग नही है। इसलिए हमारे देश मे अनेक पार्टियो के होने का कोई कारण नही है। जी हा, यह बिलकुल सच है कि हमारे यहा एक ही पार्टी, कम्युनिस्ट पार्टी है और वह समस्त मेहनतकश जनता के हितो की अभिव्यक्ति करती है।

(फ्रान्सीसी टेलीविजन पर किया गया भाषण। २ अप्रैल १९६०। पूर्वोक्त प्रकाशन, पृष्ठ ३७५)

समाजवाद तमाम मेहनतकश जनता के सुख-स्वातन्त्र्य का वाहक है

जिन देशो ने समाजवाद का लाल झडा फहरा दिया है, उन्हे पूजीवाद ने हमेशा के लिए खो दिया है। इतना ही नही, हर गुजरनेवाले साल के साथ, हमारे विकास की नई सफलताओ के साथ सभी देशो की

जनता के मन पर समाजवाद के विचार का अधिकाधिक प्रभाव पड़ेगा। हमारे देशो के उदाहरण से उसके लिए यह बात अधिकाधिक स्पष्ट होती जा रही है कि केवल समाजवाद और कम्युनिज्म ही जनता के लिए सच्चा सुख-स्वातन्त्र्य प्रस्तुत करते हैं।

पूजीवादी विचारधारा-निरूपक हर प्रकार से जनता को इससे उल्टी बात का यकीन दिलाना चाहते हैं। वे यह सिद्ध करना चाहते हैं कि पूजीवादी दुनिया ही आजाद दुनिया है। वे कहते हैं कि उनके यहा आज़ादी है, जबकि समाजवादी देशो मे कोई आजादी नही है।

जी हा, हमे इस बात का गर्व है कि हमारे देशो मे जनता के शोपको तथा लुटेरो के शासन के लिए आजादी नही है, पूजीपतियो और इजारेदारो के लिए शोपण की आजादी नही है। हमारे देश मे मेहनतकश जनता के लिए आजादी है और हमेशा रहेगी, ताकि जनता खुद अपने राज्य को मज़बूत बनाये, अपनी बल-वृद्धि करे, अपनी अर्थ-व्यवस्था को उन्नत बनाये और अपनी सस्कृति का विकास करे। समाजवादी देशो ने हर नागरिक के लिए काम करने, पढने, अपनी जानकारी बढाने और विज्ञान तथा सस्कृति का विकास करने की सभावना पैदा कर दी है। इसके लिए हमारे देशो मे सभी नागरिको को पूरी आजादी है। इस आजादी का न केवल कानूनी एलान ही किया गया है, बल्कि उसे व्यवहार मे सुनिश्चित भी बनाया गया है। इस प्रयोजन के लिए राज्य बडी बडी रकमे निदिष्ट करता है और नि शुल्क शिक्षा की व्यवस्था करता है। इस प्रयोजन के लिए उसने आम और तकनीकी स्कूलो तथा उच्च शिक्षा-सस्थाओ का एक विस्तृत जाल बिछा रखा है, उसके पास शिक्षको तथा अध्यापको की एक बडी सेना है। जैसा कि कहा जाता है, केवल यही सभव नही है कि एक बुद्धिमान आदमी पढे-सीखे, बल्कि यह भी सभव नही है कि एक काहिल आदमी पढने से जान चुरा सके, क्योंकि हमारा समूचा समाज यह चाहता है कि हर व्यक्ति पढे-लिखे।

(बुल्गारिया के ओव्नोवा नामक ग्राम मे हुई एक मैत्री-सभा मे किया गया भाषण। १८ मई १९६२। 'युद्ध को रोके, शान्ति की रक्षा करे!' शीर्षक सग्रह। मास्को, 'गोस्पोलीतइज्दात' प्रकाशन गृह, १९६३, पृष्ठ ८४)

हमारी पार्टी जीवन के सभी क्षेत्रो मे सामाजिक सम्बन्धो के विकास के लिए काम करती रही है और भविष्य मे भी करती रहेगी। नये सम्बन्धो के निर्माण का, मित्रता, भाईचारे, पारस्परिक सहायता तथा सामूहिकता के सम्बन्धो के निर्माण का व्यापक क्षेत्र न केवल अर्थनीति तथा राजनीति, वल्कि जनता के प्रतिदिन का जीवन, उसकी सस्कृति, उसकी मनोदशा और सामाजिक चेतना भी प्रस्तुत करती है। व्यक्ति की वास्तविक स्वतन्त्रता तथा उसका सर्वतोमुख विकास, वैयक्तिक एव पूरे समाज के हितो का सामजस्यपूर्ण मेल, लोगो के बीच नये सवन्धो के आधार पर समाजवादी समाज मे ही सभव है।

हमारे विचारधारात्मक शत्रु वारम्वार इस वात पर जोर देते रहते है कि कम्युनिज्म मे समाज के साथ व्यक्ति की अनिवार्यत. टक्कर होती है और व्यक्ति का व्यक्तित्व कुचला जाता है। यह सच है कि समाजवाद के शत्रु भौतिक उत्पादन के क्षेत्र मे हमारी सफलताओ को स्वीकार करते है, परतु इसके साथ ही यह दावा भी करते है कि वे व्यक्ति की स्वतन्त्रताओ तथा अधिकारो का हनन करके ही उपलब्ध की गयी है। साम्राज्यवादी अपने ही मापदड से चीजो को नापते है। उनके लिए वैयक्तिक स्वतन्त्रता का अर्थ है अराजकतापूर्ण ढग से वैयक्तिक हितो को सार्वजनिक हितो के खिलाफ, व्यक्ति को समाज के खिलाफ खडा करना। उनकी नैतिक सहिता है "खा जाओ, वरना कही कोई तुम्हे न खा जाये।"

वही समाज-व्यवस्था वास्तविक सुख-स्वातत्र्य की कसौटी है, जो मनुष्य को शोषण के जुल्म से मुक्त करती है, उसे व्यापक लोकतान्त्रिक अधिकार और उपयुक्त परिस्थितियो मे जीने का अवसर प्रदान करती है, वह व्यवस्था जो मनुष्य मे भविष्य के प्रति विश्वास पैदा करती है, उसकी वैयक्तिक योग्यताओ तथा प्रतिभाओ को उन्मुक्त करती है और जिसमे वह यह अनुभव करता है कि उसका श्रम सारे समाज के हित के लिए है। समाजवाद ऐसी ही समाज-व्यवस्था है। **समाजवादी व्यवस्था द्वारा सृजित मूल्यो में सबसे महान कम्युनिज्म का सक्रिय निर्माता नया मानव** है। सोवियत जनता नित नये प्रमाणो से यह सावित कर रही है कि नए समाज का सचमुच स्वतन्त्र मनुष्य क्या कुछ करने की क्षमता रखता है।

साम्राज्यवाद के विचारधारा-निरूपक पूजीवाद की दुनिया को

"आजाद दुनिया" कहते है। परतु सोवियत सघ मे जो वास्तविक आजादी, आर्थिक उन्नति, खुशहाली, सस्कृति और व्यक्ति का विकास उपलब्ध किया गया है, उसके बदले मे देने के लिए पूजीवाद के पास क्या है? धनवानो के लिए निर्धनो के शोषण तथा लूट की आजादी, करोडो लोगो के लिए काम से वचित रहने की "आजादी", बढते हुए टैक्स, हथियारबदी की बेलगाम होड, वर्ण-भेद, थैलीशाहो की तानाशाही, लोकतात्रिक सगठनो पर पावदी? उनकी दुनिया और चाहे जो कुछ हो, आजाद दुनिया नही है, वह गुलामी और शोषण की दुनिया है।

साम्राज्यवादी विचारधारा-निरूपक पूजीवादी दुनिया को "खुला समाज" और सोवियत सघ को "वन्द समाज" कहते है। हम बिल्कुल मानते है कि हमारा समाजवादी राज्य इजारेदार पूजी द्वारा शोषण तथा लूटमार के लिए बन्द है, वह बेरोजगारी के लिए, लूट के लिए, पतन के भ्रष्टकारी विचारधारा के लिए बद है। साम्राज्यवादी महानुभाव बेशक चाहते है कि हमारे समाजवादी समाज के दरवाजे जासूसी के लिए खुले हो। परतु हमारे दरवाजे समाजवाद के खिलाफ ध्वसात्मक कार्रवाइयो के लिए मजबूती से बद है।

हमारा समाज उन सभी विदेशियो के लिए खुला है जो हमारे यहा खुले दिल से आते है। वह ईमानदाराना व्यापार के लिए, वैज्ञानिक, तकनीकी तथा सास्कृतिक उपलब्धियो और सही समाचारो के आदान-प्रदान के लिए खुला है। अगर "लौह आवरण" की बात की जाए तो वह "आवरण" निश्चय ही पूजीवादी दुनिया मे है, जो कहने को तो अपने को "आजाद दुनिया" कहती है, पर महज़ डर के मारे कभी-कभी सोवियत बावर्चियो या शतरज-खिलाड़ियो तक के लिए अपने दरवाजे वद कर लेती है। यह एक ऐसे राज्य की मिसाल है, जो अपने आपको सबसे अधिक "खुला हुआ" कहता है, लेकिन जो सोवियत नर्तको को अपने यहा आने देने से डर गया था। शायद उसको डर हुआ कि रूसी नर्तको के कदमो के नीचे कही पूजीवादी दुनिया की नीव धसक न जाये।

(सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २२वी काग्रेस मे पार्टी की केन्द्रीय समिति द्वारा पेश की गई रिपोर्ट। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २२वी काग्रेस, शार्टहैड रिपोर्ट, खण्ड १, पृष्ठ ९७–९८)

हमारे समाजवादी जनतन्त्र का बल तथा गौरव केवल इस बात मे ही नही है कि विधायी निकायो की गठन का निर्णय करने मे जनता खुद प्रत्यक्ष भाग लेती है, बल्कि इस बात मे भी है कि हमारे विधायी निकायो की सारी सरगर्मिया जनता का हित-साधन करती है। मजदूर, सामूहिक खेतिहर, बुद्धिजीवी, हमारे देश की तमाम मेहनतकश जनता मार्क्सवाद-लेनिनवाद के झडे के नीचे, महान लेनिन द्वारा स्थापित कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व मे कम्युनिस्ट समाज का निर्माण करने के लिए काम कर रही है। कम्युनिस्ट पार्टी की तमाम सरगर्मियो से साबित होता है कि उसने हमेशा जनता की सेवा की है और वाछित लक्ष्य, कम्युनिज्म की ओर उसका नेतृत्व करती हुई आज भी उसकी सेवा कर रही है।

समाजवादी जनतन्त्र ने ही सोवियत जनता को अपने शोषको को चुनने और बेरोजगार रहने के हक, भूखो मरने या पूजी के उजरती गुलाम बनने के हक जैसी "आजादी" से आजाद किया है। हमारी जनता आजादी का वैसा अर्थ नही समझती। हम आजादी को शोषको अथवा शोषण से रहित जनता के मानवोचित जीवन का अधिकार, सच्ची राजनैतिक समानता का अधिकार, विज्ञान तथा सस्कृति की समस्त उपलब्धियो के उपभोग का अधिकार समझते है। हम बेरोजगारी और गरीबी की विभीषिका से, नस्ली, जातीय और सामाजिक उत्पीडन से जनता की मुक्ति को आजादी समझते है।

(मास्को के कालीनिन निर्वाचिन-क्षेत्र के निर्वाचिको की सभा मे किया गया भाषण। १४ मार्च १९५८। 'पूजीवाद के साथ शान्तिपूर्ण प्रतियोगिता मे विजय के लिए' शीर्षक सग्रह, पृष्ठ १२६)

सामाजिक न्याय की व्यवस्था

हमारे राज्य का सविधान वस्तुत सर्वाधिक जनवादी है। वह गुप्त मतदान द्वारा सार्वत्रिक, प्रत्यक्ष और समान मताधिकार की जमानत करता है। वह काम, शिक्षा और आराम के अधिकारो की जमानत करता है।

क्रांति से पूर्व हमारे देश मे पूजीवाला बुद्धिमान समझा जाता था। हमने ही पहले पहल अपनी धरती पर यह न्यायसम्मत नियम स्थापित किया है कि समाज मे वही यशस्वी होगा, जो अच्छी तरह काम करेगा

हमारे देश मे उत्तराधिकार-स्वरूप न तो पूजी मिलती है और न महत्वपूर्ण पद मिलते हैं। सोवियत समाज मे सभी लोग वास्तविक स्वतन्त्रता का उपभोग करते हैं।

हमारे पास जो एक मात्र चीज़ नही है, वह दूसरो के श्रम के शोषण की, कारखानो और बैंको के व्यक्तिगत स्वामित्व की आज़ादी है।

हम पुरानी पीढी के लोगो ने पूजीवादी परिस्थितियो मे अपने जीवन का श्रीगणेश किया था। लेकिन हम समाजवादी मार्ग को अधिक न्यायसम्मत क्यो समझते है ? सदियो तक मानव-जाति ऐसी परिस्थितियो मे विकसित होती रही, जिनमे बहुसख्यको की सृजित सपत्ति को अल्पसख्यक हथिया लेते थे और लोग हमेशा एक ऐसे बेहतर सामाजिक सगठन की तलाश मे रहते थे, जिसमे मानव द्वारा मानव का शोषण न हो।

हम मार्क्स, एगेल्स और लेनिन के कृतज्ञ है, जिन्होने वैसे समाज का पथ प्रशस्त किया और हम उन पथ पर खडे हो गए। फिर हमारे बाद उस पथ पर यूरोप और एशिया के अनेक राष्ट्र चल पडे। सत्ता हाथ मे लेने के बाद मेहनतकश जनता ने दूसरो की कीमत पर मुनाफा कमाने की लालसा का अन्त कर दिया है। मनुष्य का लोभ भयानक वस्तु है। क्या कभी ऐसा भी हुआ है कि लखपती करोडपती बनना न चाहे ?

मै चाहता हू कि मेरी बाते सही सही समझी जाये। एक बात तो यह है कि किसी के पास जूतो का एक जोडा हो और वह दो या तीन जोडे और हासिल करने चाहे, उसके पास एक सूट हो और वह कुछ और सूट हासिल करना चाहे, उसके पास घर हो और वह अपने लिये बेहतर घर बनाना चाहे। यह न्यायसगत इच्छा है। समाजवाद लोगो की रुचियो या आवश्यकताओ को सीमित नही करता। लेकिन यह बात बिल्कुल दूसरी है कि किसी के पास एक फैक्टरी हो और वह दो फैक्टरिया चाहे, उसके पास एक मिल हो और वह दस मिलो का मालिक

बनना चाहे। यह बात बिल्कुल साफ है कि कोई एक आदमी अपने समस्त परिवार के साथ मिलकर, अनेक जन्मो मे भी अपने श्रम द्वारा एक अरब डालर तो दरकिनार दस लाख डालर भी नही कमा सकता। वह दूसरो के श्रम को हडप कर ही ऐसा कर सकता है। लेकिन यह निश्चय ही मनुष्य के सदसद्-विवेक के विरुद्ध है। जैसा कि आप जानते हैं, बायबिल मे भी कहा गया है कि जब व्यापारियो ने मदिर को सूदखोरो और लेन-देन करनेवालो का घर बना दिया, तब ईसा ने एक कोडा लिया और उन्हे भगा दिया।

इसलिए अगर धार्मिक लोग अपनी नैतिक सहिता के अनुसार पृथ्वी पर शान्ति और अपने पडोसी के प्रति प्यार के उसूलो पर चलते है, तो उन्हे नई, समाजवादी व्यवस्था का विरोध नही करना चाहिए, क्योकि यह एक ऐसी व्यवस्था है जो समाज मे अधिक से अधिक मानवीय तथा वस्तुत. न्यायसगत सम्बन्धो की स्थापना करती है।

(सयुक्त राज्य अमेरिका के टेलीविजन पर किया गया भाषण। २७ सितम्बर १९५९। 'शस्त्रहीन ससार ही युद्ध मुक्त ससार है' शीर्षक सग्रह, खण्ड २, पृष्ठ २८३–२८५)

३. विश्व समाजवादी व्यवस्था

समाजवादी देशों के लक्ष्य और हित एक है

समाजवाद के एक देश की सीमाओ से बाहर निकलते ही विश्वव्यापी पैमाने पर नए समाज के निर्माण के निमित्त सघर्ष मे मेहनतकश जनता के शरीक होने की एक ऐसी प्रक्रिया चल रही है, जो मानवता के इतिहास मे अद्वितीय है। सच पूछिए तो यह प्रक्रिया अभी पिछले १५ साल के दौरान ही शुरू हुई है, जबकि राष्ट्रो के बीच नए सम्बन्धो की बुनियाद बनी है और समाजवादी देशो के सर्वतोमुख सहयोग के नए रूप पैदा हुए है। समाजवादी देशो मे अब भी वर्ग है, लेकिन वे मित्र वर्ग है, राष्ट्रीय विशेषताए बहुत दिन तक कायम रहेगी और सच तो यह है कि राष्ट्रो के फलने-फूलने के लिए अत्यन्त अनुकूल परिस्थितिया पैदा हो रही है। इससे यह नतीजा निकलता है कि राष्ट्रीय और किसी हद तक वर्गीय हित तथा भेद अभी कायम है। इसके साथ ही वर्गीय अथवा राष्ट्रीय सम्बन्धो के लिहाज के बगैर मुख्य और निर्णायक बातो का, उन बातो का महत्व दृढतापूर्वक बढ रहा है जो नए जीवन के निर्माण मे भाग लेनेवाले सभी लोगो मे एकता और अपनत्व पैदा करती है—यानी एक विश्वव्यापी पैमाने पर समाजवाद और कम्युनिज्म की विजय और संहति के सघर्ष मे लोगो के सम्मिलित हितो और उनकी सम्मिलित मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचारधारा का महत्व दृढतापूर्वक बढ रहा है।

मार्क्सवादी-लेनिनवादी शिक्षा तथा सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद की चट्टानी बुनियाद पर कायम राजनैतिक उद्देश्यो तथा हितो की यह महान

एकता विश्व समाजवादी व्यवस्था के स्थायित्व की जमानत है, वह उन शानदार सफलताओ की जमानत है जिन्हे उपलब्ध करना समाजवाद की नियति है।

(विश्व समाजवादी व्यवस्था के विकास के फौरी सवाल। 'युद्ध को रोकें, शाति की रक्षा करे!' शीर्षक सग्रह, पृष्ठ ३२६)

विरादराना सहयोग और आपसी सहायता

समाजवाद की दिशा मे समाजवादी देशो की अच्छी प्रगति के लिए आपसी सहायता और समर्थन एक निर्णायक शर्त है। जो अन्तर्राष्ट्रीय सर्वहारा एकता, समाजवादी अन्तर्राष्ट्रीयतावाद समाजवादी खेमे के देशो के आपसी सम्बन्धो की राजकीय नीति का आधार बन गया है, उसके प्रति वफादारी नए समाज के निर्माताओ की मानसिक गठन का अपरिहार्य अश है।

समाजवादी व्यवस्था के अन्तर्गत हमारे जन-समुदायो की मैत्री वस्तुत समस्त मेहनतकश जनता के लिए अभिप्रेत बन गई है। समाजवादी देशो की विरादराना दोस्ती, उनकी आपसी मदद और हिमायत उनके पारस्परिक सम्बन्धो के हर पहलू को निर्धारित करती है। हमारी जनता के जीवन का कोई पहलू या क्षेत्र ऐसा नही है, जो समाजवादी देशो की मित्रता तथा सहयोग से, उनकी पारस्परिक सहायता और समर्थन से लाभान्वित न होता हो।

बराबरी के राज्यो के विरादराना समुदाय मे समाजवादी देशो की एकबद्धता एक प्राणमूलक आवश्यकता है। इन देशो की जनता नई दुनिया के निर्माण मे एक दूसरे की मदद और हिमायत करने के लिए, मिल-जुलकर साम्राज्यवादी कुचक्रो से समाजवादी उपलब्धियो की रक्षा करने के लिए अपने प्रयत्नो को सयुक्त कर रही है।

यह स्वाभाविक ही है कि समाजवादी देशो मे सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक व्यवस्था की एकरूपता, मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचारधारा की एकरूपता और समाजवाद तथा शाति की विजय के सघर्ष में लक्ष्यो

की एकरूपता के आधार पर कायम इस राष्ट्र-मडल, और देश देश की जनता की स्वतन्त्रता तथा स्वावलबिता के खिलाफ, शाति और समाजवाद के खिलाफ आक्रमण करने के इच्छुक साम्राज्यवादी गुटो के बीच कुछ भी मुश्तरक नही है।

इतिहास के सबको से प्रगट है कि समाजवादी खेमे के देशो का राजनैतिक सहयोग उनकी राष्ट्रीय स्वाधीनता तथा प्रभुसत्ता की यकीनी जमानत है और वह उनमे से प्रत्येक देश मे शान्तिमय समाजवादी निर्माण की योजनाओ की सफल पूर्ति के लिए आवश्यक परिस्थितिया पैदा करता है।

जीवन से भी प्रगट है कि पूरी बराबरी और आपसी मदद के उसूलो पर कायम इन देशो का आर्थिक सहयोग उनमे से प्रत्येक को अपने प्राकृतिक साधनो का समुचित और पूर्ण उपयोग करने और अपनी उत्पादन शक्तियो को विकसित करने मे समर्थ बनाता है। दूसरी तरफ वह उन्हे सभी के हित मे अपने प्रयत्नो को सयुक्त करने और समूचे समाजवादी खेमे की आर्थिक सामर्थ्य को सहत करने के उद्देश्य से विश्व समाजवादी व्यवस्था के जबर्दस्त लाभो का अच्छा से अच्छा उपयोग करने मे समर्थ बनाता है।

समाजवादी देशो का सांस्कृतिक सहयोग उनमे से हर देश की जनता के आध्यात्मिक जीवन को समृद्ध बनाता है और उनकी राष्ट्रीय सस्कृति, विज्ञान तथा तकनीक के तीव्र तथा सर्वतोमुख विकास मे प्रबल रूप से सहायक होता है।

ये सारी बाते मिलकर इस बात की यकीनी गवाही पेश करती है कि हर समाजवादी देश दूसरे सभी समाजवादी देशो के साथ अपने घनिष्ठ सहयोग और एकता से व्यापक लाभ उठाता है।

जाहिर है कि समाजवादी खेमे का कोई भी देश आपसी बिरादराना मदद और हिमायत से वचित और पूर्णत. अपने ही बल पर आश्रित रहकर इतनी कम ऐतिहासिक मुद्दत मे उन उल्लेखनीय सफलताओ की उपलब्धि नही कर सकता था, जो आज प्रत्यक्ष है।

एक मात्र एकता, सहति और सर्वतोमुखी सहकारिता के आधार पर ही समाजवादी खेमे के देश समाजवाद और कम्युनिज्म की पूर्ण विजय

की सचमुच उपलब्धि कर सकते है। जो इस बात को नही समझ सकता या नही समझना चाहता, जो इसके विपरीत काम करता है वह खुद अपनी जनता के हितो को, समाजवाद के बुनियादी हितो को चोट पहुचाता है।

समाजवादी खेमे के सभी देशो की जनता उस खेमे की शक्ति को दृढ बनाना अपना पवित्र कर्त्तव्य समझती है, जिसके सम्मिलित हितो को प्रत्येक समाजवादी देश अपने निजी हित भी समझता है।

सोवियत सघ समाजवादी खेमे को मजबूत बनाने के लिए अपनी ओर से शक्ति भर सब कुछ कर रहा है। उसने हमेशा ही सभी समाजवादी देशो की बेगरज मदद और हिमायत की है और आज भी कर रहा है। हमारी जनता इस बात को अच्छी तरह समझती है कि अपने देश को मजबूत बनाकर, उसकी अर्थ-व्यवस्था, विज्ञान तथा तकनीक का विकास करके वह केवल अपने ही हितो का नही बल्कि समाजवादी खेमे की समस्त जनता के हितो का साधन कर रही है। सोवियत सघ की शक्ति जितनी ही अधिक होगी, कम्युनिज्म के अपने पवित्र लक्ष्य की ओर उसकी प्रगति जितना ही अधिक सफल होगी, शाति तथा समाजवाद का खेमा उतना ही अधिक मजबूत और ठोस होगा, पूजीवादी दुनिया की मेहनतकश जनता के ऊपर समाजवादी विचारो का प्रभाव उतना ही अधिक यकीनी होगा।

तथ्यो को लीजिए। सोवियत सघ द्वारा पृथ्वी के कृत्रिम उपग्रह के छोडे जाने से उसकी और समूचे समाजवादी खेमे की वस्तु-स्थिति के बारे मे करोडो नए लोगो की आखे खुल गई। उससे सोवियत सघ तथा पूरे के पूरे समाजवादी खेमे की अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा और अधिक बढ गयी है। हाल के वरसो मे सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी ने मुख्य उद्योगो के विकास को तेज करने, कृषि की तीव्र अभिवृद्धि करने और मेहनतकश जनता के भौतिक तथा सास्कृतिक स्तर को और अधिक उन्नत बनाने के लिए बहुत कुछ किया है।

क्या यह सोवियत जनता का महज घरेलू मामला है? बेशक, नही। इन कार्रवाइयो का महत्व हमारे देश की सीमाओ के पार बहुत दूर तक पहुचता है, क्योकि वे सम्पूर्ण समाजवादी खेमे की शक्तियो और उसकी

अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा को सहत करने मे, समाजवाद और विश्व शान्ति को दृढ करने मे प्रवल रूप से सहायक है।

(मास्को की मेहनतकश जनता की सोवियत-चेकोस्लोवाक मैत्री-सभा मे किया गया भाषण। १२ जुलाई १९५८। 'पूजीवाद के साथ शान्तिपूर्ण प्रतियोगिता मे विजय के लिए' शीर्षक सग्रह, पृष्ठ ४४३-४४५)

उत्पादन के समेकन तथा विशिष्टीकरण द्वारा उपलब्ध अन्तर्राष्ट्रीय श्रम-विभाजन विश्व समाजवादी अर्थ-व्यवस्था के सफल विकास की एक बुनियादी शर्त है।

देशो के वीच श्रम-विभाजन एक मुद्दत से रहा है और उसके साथ समाज की उत्पादन-शक्तियो द्वारा उपलब्ध प्रगति का अटूट सम्वन्ध है। जैसा कि हम जानते है, पूजीवाद ने अपनी उन्नति के प्रारभ से ही अन्तर्राष्ट्रीय श्रम-विभाजन का अधिक से अधिक व्यापक उपयोग किया। लेकिन पूजीवाद के अन्तर्गत विभिन्न देशो की अर्थ-व्यवस्थाओ के आपसी सम्वन्ध विकृत और एकागी वन गये, जिसके फलस्वरूप साम्राज्यवादी युग मे ससार इस प्रकार विभाजित हो गया कि एक ओर उच्च विकसित औद्योगिक देशो का, शोषको का एक छोटा सा गुट है तो दूसरी ओर वहुसख्यक कम विकसित देश है, जो औपनिवेशिक शोषण तथा पराधीनता के शिकार वन गए है।

पूजीवाद के अन्तर्गत अन्तर्राष्ट्रीय श्रम-विभाजन उन राष्ट्रो को लूटने के लिए इजारेदारियो के हथियार का काम करता है, जो ऐतिहासिक कारणो से अपना आर्थिक विकास करने मे पिछड गए थे। वित्तीय तथा अन्य "सहायताओ" समेत सहस्रश आर्थिक सूत्रो द्वारा वह ऐसे देशो को वडी शक्तियो के साथ वाध देता है और इस प्रकार देशो की असमानता को वढाता तथा लाखो करोडो को पिछडेपन और गरीवी के हवाले कर देता है।

समाजवाद के अन्तर्गत अन्तर्राष्ट्रीय श्रम-विभाजन नवजीवन का निर्माण करनेवाले राष्ट्रो के वीच कायम सच्ची मित्रता, समानता और सहकारिता के सम्बन्धो की जीती-जागती अभिव्यक्ति है। समाजवादी श्रम-

विभाजन प्रगति की रफ़्तार को तेज़ करता है और पैदा होनेवाली आर्थिक कठिनाइयो पर काबू पाने मे सहायता करता है। औद्योगिक देशो तथा भूतपूर्व पिछडे देशो के बीच की आर्थिक खाई का अन्त करना, कृषिप्रधान देशो के औद्योगीकरण मे सुविधा पहुचाना, उनकी आर्थिक तथा सास्कृतिक प्रगति को तेज करना, समाजवादी देशो की स्वाधीनता को सहृत करना उसका लक्ष्य है।

समूची विश्व समाजवादी व्यवस्था के पैमाने पर अन्तर्राष्ट्रीय श्रम-विभाजन समाजवाद के आर्थिक नियमो के चेतन उपयोग पर आधारित एक योजनाबद्ध प्रक्रिया के रूप मे सगठित और विकसित किया जाता है और इस कारण उसमें उत्पादन-शक्तियो के प्रसार को तेज करने तथा समाज के भौतिक मूल्यो की वृद्धि करने की असीम सभावनाए है। अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी श्रम-विभाजन तथा उत्पादन का व्यापक विशिष्टीकरण और समेकन समाजवादी देशो की राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्थाओ के अत्यधिक फलप्रद विकास के लिए विस्तृत सुयोग प्रस्तुत करता है। विभिन्न अर्थ-व्यवस्थाए एक दूसरी की अभिपूर्ति करती हुई धीरे धीरे एक ऐसे एकसूत्रित सुव्यवस्थित आर्थिक सश्लेष मे बदल जाएगी, जिसमे प्रत्येक का अपना स्थान तथा अपनी कार्यकारिता होगी और जिसमे समाजवादी निर्माण के राष्ट्रीय कार्यभार की पूर्ति के लिए हर देश और हर जाति की और भी अधिक मजबूत बुनियाद होगी।

(विश्व समाजवादी व्यवस्था के विकास के फौरी सवाल। 'युद्ध को रोकें, शाति की रक्षा करे!' शीर्षक सग्रह, पृष्ठ ३३६ – ३३८)

हमारे आर्थिक निर्माण का पैमाना बेहिसाब बढ गया है। विश्व-विवर्तन की गति पर उसका प्रभाव कही अधिक हो गया है। आज सोवियत संघ के साथ समाजवादी खेमे की जनता समाजवाद का निर्माण कर रही है, जिसमें समस्त मानव-जाति का एक तिहाई से भी अधिक हिस्सा शामिल है।

विश्व-विवर्तन मे दो प्रवृत्तियां साफ साफ प्रगट हो गई है। पहली प्रवृत्ति है समाजवादी देशो की राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्थाओ का एक दूसरी के नजदीक आना, उनकी उत्पादन-शक्तियो के अन्तर्राष्ट्रीयकरण की प्रगतिशील प्रक्रिया। दूसरी प्रवृत्ति है पूजीवादी "एकीकरण" की, जिसका लक्ष्य वृद्धिमान विश्व समाजवादी व्यवस्था के खिलाफ सघर्ष मे विभिन्न देशो की इजारेदार पूजी के प्रयत्नो को एकबद्ध करना है। लेकिन इजारेदारियो के एकीकरण के प्रयत्नो के साथ साम्राज्यवादी अन्तर्विरोधो, रगडो और झगडो का तीखा और सगीन होना अनिवार्यत जुडा हुआ है।

केवल समाजवाद ही आर्थिक जीवन का सच्चा अन्तर्राष्ट्रीयकरण सम्पन्न कर सकता है, जो उत्पादन-शक्तियो के वर्तमान स्तर का तकाजा है। व्ला० इ० लेनिन ने जोर देकर कहा था कि एक सम्मिलित योजना के अनुसार विकसित होनेवाली एकीकृत विश्व अर्थ-व्यवस्था की दिशा मे प्रवृत्ति "पूजीवाद के अतर्गत बिल्कुल स्पष्ट रूप से व्यक्त हो चुकी है और समाजवाद के अतर्गत निश्चित रूप से उसका अपर विकास किया जाना चाहिये, उसे पूर्णता तक पहुचाया जाना चाहिये।"*

अपनी राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्थाओ को हर प्रकार से मजबूत करते हुए, समाजवादी देश शुरू से ही सर्वतोमुख आर्थिक सम्पर्को का विकास तथा पारस्परिक सहायता करते रहे है और इस मामले मे उन्हे उल्लेखनीय सफलताए प्राप्त हुई है।

आज की हालतो मे विश्व समाजवादी व्यवस्था के अस्तित्व से निकलनेवाले जबर्दस्त फायदो को इस्तेमाल करने की हमारी जिम्मेदारी बढ़ गई है। इस कारण समाजवादी देशो के बीच सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के उसूलो पर आधारित आर्थिक सहयोग के अपर विकास का विशेष महत्व है। इस बात को ध्यान मे रखा जाना चाहिए कि विश्व समाजवादी व्यवस्था तेज़ी के साथ दुनिया का प्रधान औद्योगिक केन्द्र बनती जा रही है। विश्व के उत्पादनो मे उसका हिस्सा बढकर अब तक मोटे तौर से ३७ प्रतिशत हो गया है। समाजवादी देशो का राष्ट्रीय उद्योग

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, चौथा रूसी सस्करण, खण्ड ३१, पृष्ठ १२५।

समाजवादी श्रम-विभाजन के आधार पर भविष्य मे और भी अधिक तेजी से विकसित हो सकता है। इससे भौतिक उत्पादन के क्षेत्र मे, सामाजिक जीवन के इस निर्णयात्मक क्षेत्र मे, पूजीवाद के ऊपर वरिष्ठता प्राप्त करने मे समाजवाद की गति कई गुनी तेज हो जाएगी।

विश्व समाजवादी व्यवस्था केवल समाजवादी अर्थ-व्यवस्था के प्रगतिशील तथा सामन्जस्यपूर्ण विकास की ही ज़मानत नही करती, वह कम विकसित देशो की जनता को, शाति, सामाजिक प्रगति तथा जनवाद के लिए लडनेवाली सभी शक्तियो को प्रवल समर्थन भी प्रदान करती है।

हमे नियोजित अर्थ-व्यवस्था की समाजवादी पद्धति के सभी लाभो का योग्यतापूर्वक उपयोग करना चाहिए। समेकन और विशिष्टीकरण से उद्योग की सभी शाखाओ मे आधुनिक प्रणालियो के उपयोग द्वारा वडे पैमाने पर स्वचलित उत्पादन का सगठन करना सभव होगा। विज्ञान और डिजाइन-साज़ी इस वात के लिए परिस्थितिया पैदा कर रही है कि उत्पादन मे निरन्तर नई प्रणालियो और वेहतर मशीनो का प्रवेश होता रहे और उद्योग अपनी पुरानी, घिसी-पिटी और नैतिक दृष्टि से दकियानूसी साज-सज्जा को लिए हुए ठप न होने पाए। अपने काम मे हमे इसी नियम का पालन करना चाहिए।

हमारा देश विशाल है। उसके पास अनन्त साधन है। हमारे देश की सीमाओ के भीतर यह वेशक सभव है कि हम निरन्तर प्रवहमान, नई आधुनिकतम उत्पादन-प्रणालियो को सफलतापूर्वक लागू कर सके। लेकिन हमे हरगिज केवल अपने देश और अपनी समाजवादी अर्थ-व्यवस्था के विकास की ही वात नही सोचनी चाहिए। हम विरादराना समाजवादी जनतन्त्रो से अलग रहकर और विशेषत उन जनतंत्रो से अलग रहकर अपनी अर्थ-व्यवस्था का विकास नही कर सकते, जिनके पास कच्चे माल के साधन सीमित है और जिनके यहां का औद्योगिक उत्पादन छोटे पैमाने का है। अगर हर समाजवादी देश केवल अपनी ही चिन्ता करे, तो वह अपने को कठिनाइयो मे पाएगा और उन आर्थिक नतीजो को हासिल करने मे असमर्थ रहेगा, जो वडे पैमाने के निरन्तर प्रवहमान उत्पादन से प्राप्त होते है।

जैसा कि हम सभी जानते है, उत्पादन-समेकन और श्रम-विभाजन मे अधिक लाभ देखकर पूजीवादी देशो ने भी उन्हे स्वीकार कर लिया है।

समान विचारधारा तथा राजनैतिक दृष्टिकोण रखनेवाले समाजवादी देशो के लिए अपनी समाजवादी अर्थ-व्यवस्था के लाभो का भरपूर उपयोग करना और भी अधिक जरूरी है। अब पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद के सदस्य देशो की उत्पादन-योजनाओ के घनिष्ठ एकसूत्रीकरण की आवश्यकता है। आर्थिक विकास की योजनाए बनाने मे सभी देशो के हितो को ध्यान मे रखा जाना चाहिए और उत्पादन की ऐसी शाखाए विकसित की जानी चाहिए जो वर्तमान समय मे अधिकतम लाभकर हो। कुछ समाजवादी देशो के पास अनेक कच्चे मालो और आर्थिक विकास के दूसरे आवश्यक साधनो का अभाव है। जाहिर है कि ऐसी हालतो मे वाणिज्यिक आधार पर यह या वह माल तैयार करने के लिए अन्ताराजकीय आर्थिक समितिया बनाने की जरूरत है, जिनके पूजी-निवेश मे सभी राज्यो का एक निश्चित भाग हो। बेशक समाजवादी देशो के बीच समझौते के आधार पर ही ऐसा किया जाना चाहिए।

यह आवश्यक है कि पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद के सदस्य-देशो के आर्थिक तथा सगठनात्मक प्रयत्नो को एकजुट किया जाए, ताकि उन सभी को अपनी अर्थ-व्यवस्था के विकास के लिए आधुनिक विज्ञान और इजीनियरिग की उपलब्धियो का इस्तेमाल करने का सुयोग मिले।

पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद के सदस्य-देशो की कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियो की केन्द्रीय समितियो के प्रथम सचिवो तथा सरकारी प्रमुखो की जो बैठक मास्को मे १९६२ के जून मे हुई थी, वह समाजवादी राष्ट्र-मण्डल की जनता के जीवन मे एक बडी घटना थी। पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद के सदस्य-देशो के प्रतिनिधियो को सभवत: निकट भविष्य मे ही और अधिक आर्थिक सहयोग के मार्ग पर एक दूसरा अग्रगामी कदम उठाने के लिए फिर एक शिखर सम्मेलन बुलाना पडेगा। उक्त सभी देशो के प्रतिनिधियो को मिलाकर उनका एक सम्मिलित योजना-निकाय स्थापित करने की दिशा मे हमे अधिक साहसपूर्ण कदम उठाने चाहिए। उस निकाय मे समाजवादी देशो के आर्थिक विकास को एकसूत्रित करने के उद्देश्य से ऐसे लोग शरीक किए जाने चाहिए,

जिन्हे सभी देशो के लिए सम्मिलित योजनाए तैयार करने और सगठनात्मक समस्याओ को हल करने का अधिकार प्राप्त हो।

(सोवियत सघ का आर्थिक विकास और राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था मे पार्टी-नेतृत्व। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की प्लीनरी मीटिंग मे पेश की गई रिपोर्ट। १६ नवम्बर १६६२। मास्को, 'गोस्पोलीतइज्दात' प्रकाशन गृह, १६६२, पृष्ठ १०८–१११)

हमारी पार्टी समाजवादी देशो की बिरादराना पार्टियो के अनुभव का ध्यानपूर्वक अध्ययन कर रही है, क्योकि नए समाज के निर्माण-सम्बन्धी मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त के लिए उनकी देन मूल्यवान है। समाजवादी निर्माण का सामूहिक रूप से सचित अनुभव समूचे अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन की एक मूल्यवान थाती है। बिरादराना पार्टियो द्वारा इस अनुभव का अध्ययन और उपयोग हर समाजवादी देश के विकास के लिए एक अत्यन्त महत्वपूर्ण शर्त है।

सारी मानव-जाति के लिए नए समाज का नमूना धरती के उस भाग मे सृजित हो रहा है, जिस पर विश्व समाजवादी व्यवस्था का अधिकार है। इससे सभी समाजवादी देशो की कम्युनिस्ट पार्टियो के ऊपर एक खास जिम्मेदारी आयद होती है। समाजवादी निर्माण के सामान्य नियमो और त्योही अलग-अलग देशो की विशेषताओ तथा विकास की हर मजिल की विलक्षणताओ एव आवश्यकताओ के अनुरूप उचित राजनैतिक और आर्थिक पथ-प्रदर्शन होने से हम और भी अधिक ओजपूर्वक समाजवाद की वरिष्ठताओ का उपयोग और नई सफलताएं प्राप्त कर सकते है।

विश्व समाजवादी व्यवस्था के देश एक दूसरे के अधिकाधिक निकट खिच रहे है। सभी क्षेत्रो मे उनका सहयोग बढ रहा है। यह स्वाभाविक विकास है। समाजवादी देशो के बीच कोई भी ऐसे अन्तर्विरोध न तो है और न हो सकते है, जो हल होने लायक न हो। अधिक विकसित तथा आर्थिक दृष्टि से अधिक शक्तिशाली देश आर्थिक दृष्टि से कम विकसित देशो को बेगरज बिरादराना मदद पहुचा रहे है। मिसाल

के लिए, सोवियत सहायता से बिरादराना समाजवादी देशो मे कोई ५०० औद्योगिक उद्यम और केन्द्र निर्मित किए गए है। उन देशो को दिए गए हमारे कर्ज और उधार ७ अरब ८० करोड नए रूबल तक पहुचते है। इसके साथ ही हम यह स्वीकार करना अपना कर्तव्य समझते है कि बिरादराना समाजवादी देश भी सोवियत अर्थ-व्यवस्था के विकास मे सहायता पहुचा रहे है।

इस समय विश्व समाजवादी व्यवस्था प्रभुसत्ता-सम्पन्न स्वाधीन देशो की राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्थाओ का जोड है। समाजवादी देशो की राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्थाओ के पारस्परिक सम्बन्धो का दृढतर होना समूची विश्व समाजवादी व्यवस्था के विकास का एक नियम है। यह कहने के लिए उचित कारण है कि समाजवादी देशो का अपर विकास विश्व समाजवादी अर्थ-व्यवस्था को सहत करने का रास्ता अपनाएगा। जैसा कि 'बयान' मे बताया गया है, इन देशो की कर्णधार मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टिया इस प्रक्रिया को सक्रिय रूप से आगे बढाने के अपने प्रयासो मे एकमत है। वे उत्पादन के विशिष्टीकरण तथा समेकन और श्रम के अन्तर्राष्ट्रीय विभाजन की समस्याओ का सही सही हल निकालने के लिए सयुक्त रूप से काम कर रही है। ऐसा करके वे समाजवाद की वरिष्ठता का अधिक पूरी तरह उपयोग किए जाने मे सहायता पहुचा रही है। मौजूदा दौर मे समाजवादी देशो के उत्पादन-प्रयत्नो के एकीकरण का मुख्य रूप उनकी राष्ट्रीय आर्थिक योजनाओ का एकसूत्रीकरण ही है। इस काम को पूर्णता तक पहुचाना, विशेषत इन देशो के लिए बनाई जानेवाली आर्थिक विकास की बहुकालिक योजना के सम्बन्ध मे वैसा करना सभी समाजवादी देशो के हित मे है।

विश्व समाजवादी व्यवस्था के सम्मिलित आर्थिक आधार को सहत करने और समाजवादी व्यवस्था के अन्तर्गत रहनेवाली समस्त जनता के कम्युनिज्म मे कमोबेश एक साथ ही सक्रमण के लिए भौतिक आधार पैदा करने का काम उतनी ही अधिक तेजी से आगे बढेगा, जितनी अधिक पूरी तरह प्रत्येक समाजवादी देश के आन्तरिक साधनो का उपयोग किया जाएगा, जितने बेहतर ढग से अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी श्रम-विभाजन के लाभो को काम मे लाया जाएगा। उसी आधार पर आर्थिक विकास

के स्तर हमवार होगे। इतिहास के क्रम मे पैदा आर्थिक विकास के स्तरो की असमानता का उन्मूलन करके हम साम्राज्यवाद द्वारा नियत ससार की जनता के आर्थिक और सास्कृतिक पिछड़ेपन को खत्म करने का कम्युनिस्ट रास्ता दिखा रहे हैं। इस रास्ते की प्रभावकारिता पहले पहल मध्य एशिया तथा काकेशिया की कुछ भूतपूर्व पिछडी जातियो ने प्रदर्शित की थी, जिन्होने अधिक विकसित समाजवादी जातियो, सबसे बढकर रूसी जाति द्वारा दी गई जबर्दस्त सहायता द्वारा तेजी के साथ अपने पिछडेपन पर विजय प्राप्त कर ली और जो देश के औद्योगिक दृष्टि से विकसित इलाको की बराबरी पर पहुच गई। वही प्रक्रिया आज समाजवादी व्यवस्था मे सर्वत्र घटित हो रही है।

समाजवादी देशो की संहृति, एकता, सहयोग और पारस्परिक सहायता को हर तरीके से मजबूत बनाते रहना हमारा सम्मिलित कर्तव्य है। सम्मेलन के बयान मे कहा गया है **"कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियां मेहनतकश जनता को अथक भाव से समाजवादी अन्तर्राष्ट्रीयतावाद की और राष्ट्रीयतावाद तथा अन्ध-राष्ट्रवादिता के प्रति असहिष्णुता की शिक्षा देती है। कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियों तथा समाजवादी देशो की जनता की ठोस एकता एवं मार्क्सवादी-लेनिनवादी शिक्षा के प्रति उनकी वफादारी, हर समाजवादी देश तथा समूचे समाजवादी खेमे की शक्ति और अविजेयता के मुख्य स्रोत है।"**

(विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन की नई विजयो के लिए। 'कम्युनिज्म – जनता के लिए शाति और सुख' शीर्षक सग्रह, खण्ड १, पृष्ठ २८–३०)

समान अधिकार वाले राष्ट्रों की मैत्री

राष्ट्रो की मैत्री और एकता, समाजवाद द्वारा पैदा की गई एक सर्वाधिक उल्लेखनीय घटना है। केवल समाजवाद की स्थितियो मे ही राष्ट्रो की मैत्री ऊंचा दर्जा और नया सार हासिल करती है।

नई समाज-व्यवस्था की विजय विभिन्न राज्यो की मेहनतकश जनता

के आपसी अविश्वास और शत्रुता की सामाजिक जडो का उन्मूलन करती है। वह राष्ट्रो के बीच सच्चे निकटत्व मे बाधक पूजीवादी कूडे को साफ कर देती है। लेकिन इसका अर्थ यह नही है कि महज़ समाजवाद के कायम हो जाने से ही राष्ट्र अपने आप निकटतर खिच आएंगे। नई व्यवस्था की विजय मेहनतकश जनता की दोस्ती, आपसी हिमायत और मदद के लिए जबर्दस्त गुजाइश पेश करती है। राष्ट्रो के बीच मैत्री अपने आप ही मजबूत नही होती। पूजीवाद द्वारा पैदा किए गये अविश्वास तथा विरोध के खिलाफ हमारी पार्टी के, राजनैतिक दृष्टि से चेतन समस्त मेहनतकश जनता के सघर्ष के बिना ही वह अविश्वास और विरोध तिरोधान नही होता।

पूजीवादी समाज को बडे और छोटे राज्यो के पारस्परिक सम्बन्धो की शाश्वत समस्या का सामना करना पडता है। यह समझ मे आनेवाली बात है, क्योकि पूजीवादी दुनिया मे राज्यो के आपसी सम्बन्ध इस उसूल पर चलते हैं कि मजबूत कमजोर को मारता है, एक सवारी कसता है और दूसरे पर सवारी कसी जाती है। हम यह गर्व के साथ कह सकते हैं कि समाजवादी दुनिया मे ऐसी किसी समस्या का अस्तित्व नही है। समाजवादी देशो के सम्बन्ध उनके क्षेत्र-विस्तार, उनकी जनसंख्या और उनकी आर्थिक क्षमता पर नही निर्भर होते। वे पूरी बराबरी, आपसी सम्मान, बिरादराना मदद और हिमायत के उसूल पर चलते हैं। हमारे समाजवादी परिवार में हर कोई बराबर है और हर राज्य स्वाधीनता तथा समान मताधिकार का उपभोग करता है।

(बुल्गारियाई जन-लोकतत्र मे स्थित सोवियत सघ के दूतावास मे हुए स्वागत-समारोह मे किया गया भाषण। १८ मई १९६२। 'युद्ध को रोके, शाति की रक्षा करे!' शीर्षक सग्रह, पृष्ठ ६८)

समाजवादी राष्ट्र-मण्डल की शक्ति और अजेयता का मुख्य स्रोत एकता है

समाजवाद की बढती हुई सफलताओ का पूजीवादी देशो के जन-समुदायो पर ज़बर्दस्त प्रभाव पडता है। लाखो-करोडो नए लोग कम्युनिस्ट

शिक्षा को ग्रहण कर रहे है। उसके आकर्षण की शक्ति अप्रतिरोध्य गति से बढ रही है।

पूजीवाद के विचारधारा-निरूपक अपनी निर्वीर्यता को समझकर झूठ और कुत्सा द्वारा कम्युनिज्म के प्रबल विचारो का विरोध करने की कोशिश कर रहे है। व्ला० इ० लेनिन ने ठीक ही बताया था कि "जब मजदूरो पर पूजीपति वर्ग का विचारधारात्मक प्रभाव घटने लगता है, नष्ट या कमजोर हो जाता है, तब पूजीपति वर्ग ने हर जगह और हमेशा अत्यधिक दारुण झूठ और कुत्सा का सहारा लिया हे और वह आगे भी लेता रहेगा।"*

लेकिन कोई भी झूठ समाजवाद और कम्युनिज्म की सचाई को—ससार की श्रेष्ठतम और सर्वाधिक न्यायसगत व्यवस्था को जनता से छिपा नही सकता।

नए और पुराने ससार का सघर्ष, जो बहुत बडे पैमाने पर फैल गया है, समाजवादी राज्यो की जनता को अधिक से अधिक जागरूकता प्रदर्शित करने और चौकसी के साथ अपनी पक्तियो की एकता तथा सहति की रक्षा करने को विवश करता है। एकता मे ही हर समाजवादी देश और समूचे समाजवादी राष्ट्र-मडल की शक्ति तथा अजेयता का मुख्य स्रोत निहित है।

समाजवादी खेमे की सहति की सर्वोपरि जमानत मार्क्सवाद-लेनिनवाद के महान उसूलो पर आधारित कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियो की एकता है। हम विश्वासपूर्वक कह सकते है कि मानव-समाज के इतिहास मे ऐसी पार्टिया कभी नही रही, जिन्होने वैसी एकता उपलब्ध की हो, जैसी आज कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियो के बीच कायम है।

कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियो के प्रतिनिधियो के नवम्बर १९६० मे हुए सम्मेलन ने अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट और मजदूर आन्दोलन के, पार्टियो की भ्रातृत्वपूर्ण सहति तथा सर्वतोमुख सम्पर्कों के विकास को एक नई मजिल पर पहुचाया। उसने एक बार फिर समाजवादी देशो की

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाएं, चौथा रूसी सस्करण, खण्ड २०, पृष्ठ ४५३।

बिरादराना पार्टियो की एकता और सभी कम्युनिस्ट तथा मजदूर पार्टियो की पूर्ण समानता और स्वतत्रता पर आधारित अतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के अपर विकास और सहति को प्रदर्शित कर दिया।

इसमे सदेह नही कि बिरादराना मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टियो का और अधिक ऐक्य तथा सहयोग कम्युनिस्ट निर्माण के महान लक्ष्यो के लिए, विश्व शान्ति की सहति के लिए, हमारे सघर्ष मे नई, और भी अधिक शानदार सफलताए प्रस्तुत करेगी।

(सोवियत सघ तथा कोरियाई जनता के जनवादी जनतत्र की मैत्री-सभा मे किया गया भाषण। ६ जुलाई १९६१। 'कम्युनिज्म – जनता के लिए शाति और सुख' शीर्षक सग्रह, खण्ड १, पृष्ठ २५४–२५५)

उदाहरण की शक्ति। विश्व-विवर्तन पर समाजवाद का प्रभाव

हम एक ऐसे युग मे रह रहे है जबकि मानवजाति के सामाजिक विकास ने एक विश्व-व्यापी पैमाने पर पूजीवादी व्यवस्था के स्थान पर समाजवादी व्यवस्था कायम करने का प्रश्न खडा कर दिया है। हमारा युग तीखे सघर्ष का युग है, जबकि पूजीवाद अपनी मौत की घडी को टालने के लिए अधिक से अधिक प्रयत्न कर रहा है और समाजवाद प्रबलतर होने और अपनी उपलब्धियो को सहत करने के साथ साथ राष्ट्रीय तथा सामाजिक मुक्ति की, शाति तथा प्रगति की न्यायोचित आकाक्षाओ की पूर्ति मे सभी राष्ट्रो की सहायता कर रहा है।

दोनो व्यवस्थाओ के सघर्ष मे हम कम्युनिस्टो के लिए बुनियादी सवाल यह है कि किन तरीको और साधनो से सारे ससार मे समाजवादी प्रभाव की दृढतापूर्वक वृद्धि सुनिश्चित की जाए। इस सवाल का जवाब अपने जमाने मे लेनिन ने दिया था, जिन्होने कहा कि समाजवादी समाज का और सबसे बढकर उस समाज की अर्थ-व्यवस्था का सफलतापूर्वक विकास करके ही विजयी समाजवाद ससार के घटना-चक्र पर अपना मुख्य प्रभाव

डालेगा।* यह बात एक ऐसे समय कही गई थी जब समाजवाद की विजय केवल एक देश मे, केवल रूस मे ही हुई थी। हम इन शब्दो का महत्व आज आसानी से समझ सकते है, जबकि समाजवाद के विचार देशो की एक समूची शृखला के पैमाने पर कार्यान्वित किए जा रहे है।

जीवन ने हमारे सामने यह कार्यभार प्रस्तुत किया है कि हम इतिहास की एक छोटी मुद्दा मे लोगो के सामने समाजवादी उत्पादन-प्रणाली की वरिष्ठता और उसकी असीम सभावनाओ को साबित कर दे। इस कार्यभार की पूर्ति के लिए हमे न केवल अपनी राजनैतिक बल्कि आर्थिक शक्तियो को भी सयुक्त करने की आवश्यकता है। समेकन, श्रम-विभाजन, विज्ञान और तकनीक की नई उपलब्धियो के बेहतर तथा अधिक प्रभावशाली उपयोग द्वारा समाजवादी देशो का और अधिक तेजी के साथ विकास करना हमारे लिए लाजिमी है। सभी मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टियो ने इस रास्ते को मान्यता प्रदान की है और १९५७ तथा १९६० मे हुए मास्को सम्मेलनो मे स्वीकृत नीति-सम्बन्धी दस्तावेजो मे इसके लिए आधार प्रस्तुत कर दिया गया है।

लेकिन ऐसे लोग भी है जो अपने को मार्क्सवादी कहते है और पडिताऊ दलीलो के जरिए समाजवाद और पूजीवाद की दोनो व्यवस्थाओ के बीच शातिमय आर्थिक प्रतियोगिता की आवश्यकता के बारे मे, हमारी आर्थिक सफलताओ के निर्णयात्मक महत्व के बारे मे लेनिन द्वारा निकाले गए महत्वपूर्ण निष्कर्ष को दोषपूर्ण साबित करने की कोशिश करते है। शान्तिमय सह-अस्तित्व, शान्तिमय आर्थिक प्रतियोगिता की नीति के खिलाफ बोलते हुए ये लोग घोषित करते है कि यह महज उन अर्थवादियो के सिद्धान्त की पुनरावृत्ति है, जिनके बारे मे यह विदित है कि वे मजदूर वर्ग के आर्थिक सघर्ष को ही प्रधान काम मानते थे और पूजीवाद के खिलाफ राजनैतिक सघर्ष को गौण महत्व प्रदान करते थे।

लेकिन ऐसी दलीलें वे ही लोग पेश कर सकते है, जो लेनिनवाद के सार को ग्रहण करने मे असमर्थ है।

---

*व्ला० इ० लेनिन, संग्रहीत रचनाए, चौथा रूसी सस्करण, खण्ड ३२, पृष्ठ ४१३।

दोनो व्यवस्थाओ के बीच शातिमय आर्थिक प्रतियोगिता सबधी प्रतिपत्ति और अर्थवादियो के सिद्धान्तो मे कोई भी मेल नही है। अर्थवादियो की आलोचना करते हुए लेनिन ने इस बात पर जोर दिया कि मजदूर वर्ग को महज अपनी आर्थिक दशाओ मे सुधार के लिए ही नही लडना चाहिए, बल्कि सबसे अधिक क्रान्तिकारी वर्ग होने के नाते उसे मुख्य लक्ष्य को, तानाशाही और पूजीवाद का तख्ता उलट देने के सघर्ष को भी नजरन्दाज नही करना चाहिए, क्योकि जारशाही और पूजीवाद के उन्मूलन के बिना मेहनतकश जनता की आर्थिक दशाओ मे कोई बुनियादी सुधार असभव है और पूजीपतियो तथा जमीदारो के शासन का अन्त किए बगैर पूजीवादी व्यवस्था का उन्मूलन नही किया जा सकता।

कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियो की नीति-सम्बन्धी दस्तावेजो मे वर्णित दोनो व्यवस्थाओ की शातिमय आर्थिक प्रतियोगिता वर्ग-सघर्ष को बिलकुल अस्वीकार नही करती, बल्कि उल्टे उसमे पूजीवादी देशो मे समाजवाद के लिए मजदूरो के राजनैतिक वर्ग-सघर्ष की पूर्व-कल्पना निहित है। लेकिन पूजीवादी देशो मे सामाजिक मुक्ति के निमित्त, राष्ट्रीय आजादी के सघर्ष को तीव्र बनाने के निमित्त मजदूर वर्ग के सघर्ष को विकसित करने की सर्वाधिक अनुकूल परिस्थितियो की सृष्टि आर्थिक मोर्चे पर समाजवादी देशो की सफलताओ से ही होती है। यह सत्य प्रत्यक्ष है और सभी मार्क्सवादी इसे स्वीकार करते है।

नई हालतो मे आधुनिक परिस्थिति के गभीर विश्लेषण के आधार पर विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन ने १९६० मे हुए कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियो के प्रतिनिधियो के मास्को सम्मेलन ने लेनिन के इन विचारो को आगे बढाया। सम्मेलन मे हुए निर्णयो और विचार-विनिमय का वास्तविक तात्पर्य यह है कि कम्युनिस्ट आन्दोलन विश्व-विवर्तन पर अपनी प्रभाववृद्धि के सर्वाधिक निश्चित मार्ग की खोज और उपलब्धि कर रहा है।

अक्तूबर-क्रान्ति के समय से आज तक के हमारे सघर्ष का समस्त अनुभव यकीनी तौर से यह साबित करता है कि हम अपने महान लक्ष्य की ओर जितना ही अधिक अग्रसर होते जाते है, समाजवाद और उसके विचारो की आकर्षण-शक्ति उतनी ही अधिक प्रबल होती जाती है। जीवन के तथ्यो जैसी बेहद यकीनी बातो मे परिलक्षित समाजवाद और

कम्युनिज्म के निर्माण मे प्राप्त की गई सफलताए, एक व्यवस्था के रूप मे समाजवाद की श्रेष्ठताओ तथा सभावनाओ को प्रदर्शित करती है, वे मेहनतकश जनता की राजनैतिक चेतना की गंभीरता मे वृद्धि और पूजीवादी देशो मे वर्ग-सघर्ष को तेज करती है।

यहा हमे लेनिन के शब्द याद आते है " . हमने कहा है और अब भी कहते है कि समाजवाद के पास उदाहरण की शक्ति है .. यह आवश्यक है कि उदाहरण के आधार पर, व्यवहार मे कम्युनिज्म की अर्थगर्भिता प्रदर्शित की जाए।" *

हाल के वर्षो मे सामाजिक विकास के मामले मे समाजवाद द्वारा प्रस्तुत किए गए उदाहरण की भूमिका, उसकी कायल करने की शक्ति बेहद बढ गई है। लेनिन के जमाने मे समाजवादी देशो द्वारा आर्थिक सफलता के जरिए घटनाओ की गति के प्रभावित किए जाने की बात हम कैसे कर सकते थे, जब कि उस समय अकेले रूस ने ही, वह भी युद्ध और दखलन्दाजी से तबाह हुए रूस ने, समाजवाद का रास्ता अख्तियार किया था? लेनिन ने उन दिनो लिखा था कि साम्राज्यवादी शक्तियो ने क्रान्ति द्वारा स्थापित नई व्यवस्था को "फौरन वह अग्रगामी कदम उठाने से रोक दिया, जो समाजवादियो की भविष्यवाणी को सही साबित कर देता, जो उन्हे बहुत तेजी से उत्पादक शक्तियो का विकास करने मे समर्थ बनाता, उन सारी क्षमताओ का विकास करने मे समर्थ बनाता, जिन्हे समाजवाद पैदा करता है और जो हर आदमी को यह बात स्पष्ट रूप से दिखा देती कि समाजवाद के अदर बहुत विशाल शक्तिया मौजूद है और अब मानवजाति विकास की एक ऐसी नयी मजिल पर पहुच गई है, जहा असाधारण रूप से शानदार सभावनाओ की भरमार है।" **

सोवियत सघ तथा यूरोपी लोक-जनतंत्रो ने बुनियादी तौर से उन तमाम प्रतिकूल कारणिको के प्रभावो को पराभूत कर दिया है, जो

---

*ब्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, चौथा रूसी सस्करण, खण्ड ३१, पृष्ठ ४२६।

**ब्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, चौथा रूसी सस्करण, खण्ड ३३, पृष्ठ ४५६।

सभी महत्वपूर्ण उपलब्धियो मे पूजीवाद से आगे निकलने मे समाजवाद के लिए शुरू से ही बाधक थे। इस सम्बन्ध मे सबसे पहली बात जो ध्यान मे आती है वह है उक्त कई देशो मे पूजीवाद द्वारा छोडा गया विरसा, अग्रणी पूजीवादी देशो के विकास-स्तर की तुलना मे आर्थिक तथा सास्कृतिक पिछडेपन का विरसा और गत युद्ध के कारण हुई तबाही और कुर्बानी। यह तथ्य भी महत्वपूर्ण है कि समाजवाद ने अब अनुभव सचित कर लिया है, जिसके कारण वह अनेक गलतिया करने से बच सकता है। यह बात भी अत्यन्त सारगर्भित है कि सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी ने व्यक्ति-पूजा तथा उसके नतीजो के खिलाफ दृढ सघर्ष किया, जिसे अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन ने सही तौर से समझा और जिसका समर्थन किया।

हमारे देश मे प्रतिकूल उपादानो के सफलतापूर्वक दूर किए जाने और समाजवाद के निर्माण मे प्राप्त की गई सफलताओ के कारण हम पूजीवाद के साथ प्रतियोगिता की एक नई मजिल पर पहुच गए हैं। अब इस नई मजिल से आगे बढते हुए, हम निकट भविष्य मे ही अधिक विकसित पूजीवादी देशो को उन क्षेत्रो मे भी पीछे छोड दे सकते हैं, जिनमे हम पिछडे रहे हैं। उक्त क्षेत्रो मे भौतिक कल्याण और उपभोक्ता माल-उत्पादन के क्षेत्र भी शामिल है।

समाजवाद और फिर कम्युनिज्म का सफलतापूर्वक निर्माण करते हुए, अपनी अर्थ-व्यवस्था को दृढ बनाते हुए तथा उसका प्रसार करते हुए हम साम्राज्यवादियो की किसी भी दखलन्दाजी के खिलाफ समाजवादी देशो की उपलब्धियो के लिए ठोस जमानते पैदा कर रहे हैं। समाजवाद की सैनिक शक्ति एक ऐसी ढाल है, जो विश्व-प्रगति के हेतु की विश्वसनीय ढग से रक्षा करती है। समाजवादी देशो की शक्ति ने अतीत मे फौजी कार्रवाई के जरिए समाजवादी तथा राष्ट्रीय आजादी की क्रान्तियो का अन्त कर देने का प्रयत्न करने से साम्राज्यवादियो को एकाधिक बार रोक दिया है और जब तक साम्राज्यवादी देश कठोर अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण के तहत आम तथा पूर्ण निरस्त्रीकरण के लिए नही राजी होते, तब तक समाजवादी देश अपने सैनिक बल को और मजबूत बनाने के लिए सब कुछ करते रहेगे, जो जनता की शाति-सुरक्षा की जमानत है।

समाजवाद की आर्थिक सफलताए दूसरे देशो की अर्थ-व्यवस्थाओ की अभिवृद्धि के लिए उन्हे और विस्तृत तथा अधिक विविधतापूर्ण सहायता देने की सभावनाए पैदा करती है। यह बात नवोदित राष्ट्रीय राज्यो के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। समाजवादी देशो की सहायता उन्हे साम्राज्यवादी शक्तियो पर निर्भरता से मुक्त होने और नई गुलामी के खतरे से बचने मे समर्थ बनाती है, वह उनकी प्रगति को अनुप्राणित करती है और उन आन्तरिक प्रक्रियाओ के स्वाभाविक विकास मे, यहा तक कि उनको तेज करने मे भी योगदान करती है, जो उन देशो को समाजवाद की दिशा मे जानेवाले राजमार्ग पर पहुचा सकती है। जहा तक आर्थिक दृष्टि से कम विकसित ऐसे देशो का सम्बन्ध है जो पहले ही वह रास्ता अख्तियार कर चुके है, उन्हे समाजवादी देशो की आर्थिक सहायता विकास की पूजीवादी मजिल से सम्बन्धित भारो और तकलीफो से बचाती हुई, समाजवाद की दिशा मे अग्रसर होने मे समर्थ बनाती है। इससे प्रगट है कि ऐसी वास्तविक सम्भावना पैदा हो रही है कि सभी देशो मे, वहा पर हुई क्रान्तियो के समय तक उपलब्ध आर्थिक तथा सामाजिक विकास-स्तर का कोई भी लिहाज किए बगैर, समाजवाद का निर्माण किया जाए।

अब समाजवादी राष्ट्र-मण्डल द्वारा विश्व-विवर्तन के प्रभावित किए जाने की जबर्दस्त नई सभावनाए विद्यमान है और यह बात हम कम्युनिस्टो के लिए हर्ष का ही स्रोत हो सकती है। लेकिन अन्तर्राष्ट्रीयतावादी होने के नाते हम यह भी समझते है कि यह तथ्य हमारे ऊपर महान जिम्मेदारिया आयद करता है। समाजवादी देशो और उनकी मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टियो पर इस बात का सचमुच ऐतिहासिक दारोमदार है कि इन सभावनाओ का हर देश में और हमारी पूरी विश्वव्यापी व्यवस्था के पैमाने पर पूरी तरह उपयोग किया जाए।

विश्व समाजवादी व्यवस्था को और मजबूत बनाने से, समाजवादी देशो के आर्थिक विकास को प्रबल रूप से तेज करनेवाले उनके राजनैतिक तथा आर्थिक अन्तस्सम्बन्धो को दोषहीन बनाने से सारे संसार मे घटना-चक्र पर समाजवाद का जो प्रभाव है उसमे विपुल वृद्धि होगी और इस

प्रकार समस्त मानवजाति की सामाजिक प्रगति के हेतु मे भारी योगदान होगा।

(विश्व समाजवादी व्यवस्था के विकास के बुनियादी प्रश्न। 'युद्ध को रोके, शान्ति की रक्षा करे!' शीर्षक सग्रह, पृष्ठ ३५७ – ३६१)

हम युद्ध द्वारा कम्युनिज्म के विचारो का प्रचार करने नही जा रहे है! नही! हमारे व्यावहारिक कार्य, कम्युनिज्म की ठोस सफलताएं, कम्युनिज्म के वे विचार जिन्हे हम क्रियात्मक रूप दे रहे है, मानव के मन मे मानो बस जाएगे, उसके मन को प्रेरणा प्रदान करेगे और यह प्रदर्शित करेगे कि मानव की पूर्ण मुक्ति का एक मात्र मार्ग, जनता की भौतिक तथा मानसिक आवश्यकताओ की तुष्टि का एक मात्र मार्ग कम्युनिज्म है, पूजी के शासन के खिलाफ सघर्ष है, मजदूर वर्ग की विजय है, शोषणकारी व्यवस्था के ज्वलन्त अन्यायो से मेहनतकश जनता की मुक्ति और विजय है।

समाजवादी विचारधारा की बढती हुई प्रतिष्ठा और प्रभाव से भयभीत होकर साम्राज्यवाद के वकील हमारी सफलताओ पर पर्दा डालने की, उन्हे विकृत आईने मे दर्शाने की कोशिश कर रहे है। वे सोवियत यथार्थ को झुठलाते है। लेकिन जिस तरह कोई अपनी हथेली से सूरज पर पर्दा नही डाल सकता, उसी तरह जनता से सत्य को नहीं छिपाया जा सकता। कम्युनिज्म का सत्य सारी बाधाओ को रौंदता हुआ प्रगट हो रहा है।

नव-जीवन के निर्माण मे सोवियत सघ की सफलताओ का सभी देशो की जनता के जीवन और सघर्ष पर, विकास की सम्पूर्ण ऐतिहासिक प्रक्रिया पर सदा ही अत्यधिक अनुकूल प्रभाव पडा है।

अपने समय मे पूजीवादी अर्थशास्त्री हूवर ने लिखा था कि "अगर वह समय आया जब कि पूजीवादी देशो के मेहनतकश वर्गो के बहुजन के लिए सामान्य सुख-सुविधा के मामले मे कम्युनिज्म उच्चतर जीवन-स्तर प्रस्तुत करने मे समर्थ हो जाएगा, तब एक बहुत ही सगीन परिस्थिति पैदा हो जाएगी।"

जी हा, वह समय आ गया है। समाजवाद, कम्युनिज्म समाजवादी देशो की स्थापना के प्रारभिक दिनो से ही जनता को जो निर्विवाद राजनैतिक तथा सामाजिक सुविधाए देता रहा है, उनके अतिरिक्त अब वह बहुजन को अधिकाधिक भौतिक तथा मानसिक सुख-सुविधाए भी प्रदान करने लगा है।

हमारी धरती के अधिकाधिक लोग यह समझते जा रहे है कि पूजीवाद किसी नये जीवनदायी विचार और विकास की स्पष्ट प्रत्याशा प्रस्तुत करने मे असमर्थ है। इसके विपरीत समाजवाद अर्थ-व्यवस्था, विज्ञान तथा सस्कृति को फूलने-फलने की ओर ले जाता है, जनता की प्रतिभाओ तथा सृजनात्मिका क्षमताओ के सर्वतोमुख विकास को आगे बढाता है और एक खुशहाल समाज की सर्जना करता है। ये सारी बाते बेशक साम्राज्यवादियो की स्थिति को कमजोर करती है और ससार मे समाजवादी विचारो की विजय के लिए सर्वाधिक अनुकूल अवस्थाओ की सृष्टि करती है।

(मजदूरो और दफ्तरी कर्मचारियो के टैक्सो की मसूखी और सोवियत जनता की कल्याण-वृद्धि के लिए अभिप्रेत अन्य कार्रवाइयो के बारे मे। सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के पाचवे अधिवेशन मे पेश की गई रिपोर्ट। ५ मई १९६०। 'सोवियत सघ की विदेश-नीति (१९६०)' शीर्षक सग्रह, खण्ड १, पृष्ठ ४७८ – ४७९)

जन-सत्ता की स्थापना करके पूर्वी यूरोप के लोक-जनतन्त्रो की मेहनतकश जनता सर्वाधिक प्रगतिशील समाज-व्यवस्था, समाजवाद का सफल निर्माण कर रही है। पश्चिमी यूरोप के देश राजनैतिक और सामाजिक लिहाज से पहले ही इतिहास के गुमनाम कोने मे लुढक चुके है। फिर भी वे अपने आर्थिक विकास के उच्च स्तर के घमड मे फूले हुए है। लेकिन उस लिहाज से भी समाजवादी देश अब तक पश्चिमी यूरोप के उन कई देशो की बराबरी पर पहुच गए है, जो अपने को बहुत उन्नत समझते थे। समाजवादी देशो के विकास की गति इतनी तेज है कि वे सजीदगी

के साथ फ्रान्स और इटली जैसे प्रधान पूजीवादी देशो के हमकदम चल रहे है। मेरा विश्वास है कि आर्थिक लिहाज से भी पूजीवादी देशो को गुमनाम कोने मे लुढकने मे अब बहुत दिन नही लगेगे। सक्षेप मे कहे कि पूजीवाद का भविष्य उज्वल नही है।

साथियो, यह एक उल्लेखनीय तथ्य है। समाजवादी देशो तथा पूरी अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति के विवर्तन के लिए समाजवाद की आर्थिक सफलताओ का निर्णयात्मक महत्व है। वे हमारे देशो की क्षमता-वृद्धि करती है, वे हमे अपनी जनता के जीवन-स्तर को उन्नत करने मे समर्थ बनाती है, वे हमे अपने मुख्य कार्यभार—कम्युनिस्ट समाज के निर्माण के कार्यभार—की अधिक शीघ्रतापूर्वक पूर्ति करने मे समर्थ बनाती है।

विश्व समाजवादी अर्थ-व्यवस्था के विकास का एक और भी अत्यन्त महत्वपूर्ण राजनैतिक पहलू है। हमारे देशो द्वारा हासिल की गई हर नई आर्थिक सफलता समाजवाद की प्रतिष्ठा मे, ससार की जनता को आकर्षित करने की उसकी शक्ति मे वृद्धि करती है। बहुत दिन पहले सोवियत सत्ता के प्रारभिक वर्षो मे, जब कि सोवियत सघ ही ससार मे एकमात्र समाजवादी देश था, व्लादीमिर इल्यीच लेनिन ने इस बात पर जोर देते हुए कि अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे हम अपना प्रभाव मुख्यत अपनी आर्थिक नीति द्वारा ही डालते है, बताया था कि समाजवादी हेतु के लिए आर्थिक सफलताओ का कितना महत्व है।

इस तरह अगर हमारी आर्थिक सफलताए सोवियत सत्ता के प्रारभिक वर्षो मे महत्वपूर्ण थी, तो आप आसानी से समझ सकते है कि उनका आज कितना अधिक महत्व है, जबकि समाजवाद अकेले एक देश की सीमाओ से निकलकर फैल चुका है और दो प्रतिद्वन्द्वी विश्व-व्यवस्थाए मौजूद है। जीवन हर रोज प्रदर्शित करता है कि आर्थिक विकास मे, जीवन-स्तर के उन्नयन मे, सस्कृति की प्रगति मे समाजवादी जगत की उपलब्धिया जितनी ही उच्चतर होगी, हमारी सामान्य उन्नति उतनी ही तेजी से होगी और जन-समुदायो पर कम्युनिस्ट विचारो का प्रभाव उतना ही अधिक होगा।

पूजीवादी व्यवस्था अन्तिम सासे ले रही है। वह असाध्य अन्तर्विरोधो के कारण तीन-तेरह है। पुरानी दुनिया के खभे चरचराकर ढह रहे है।

पूजीवादी व्यवस्था की चिरन्तनता का भ्रम हवा होता जा रहा है। खूसट बुढिया कराह रही है, आहे भर रही है, झल्ला रही है, हर बात से चिढ रही है। जैसी कि लोकोक्ति है "बुढिया का विस्तर कही ऊवड कही खावड।"

पूजीवादी देशो के आम लोग कटु अनुभवो से समझते जा रहे हैं कि आजाद और सुखी जीवन देना तो दरकिनार, पूजीवादी व्यवस्था पूरे के पूरे देशो और राष्ट्रो के अस्तित्व को खतरे में डाल रही है।

यही कारण है कि पूजीवादी देशो की मेहनतकश जनता अधिक प्रायिकता के साथ मुड मुडकर समाजवादी देशो की ओर देखने लगी है। अब वह ऐतिहासिक घडी दूर नही है, जब इस बात को अच्छी तरह समझकर कि पूजीवाद की नियति विनाश है और यह देखकर कि नई समाज-व्यवस्था मे ही बरतरी है, सारी दुनिया के अवाम उसे खुद ही अपने लिए सबसे ज्यादा मुनासिब और मानव-जाति के विकास के लिए एक मात्र माकूल और खुशगवार रास्ते के तौर पर चुन लेगें। सच तो यह है कि प्रस्तुत परिस्थितियो, ठोस वर्गीय शक्ति-सतुलन तथा विश्व-सर्वहारा की क्रान्तिकारी परम्परा को ध्यान मे रखकर ही हर देश की मेहनतकश जनता सत्ता पर अधिकार करने के लिए सघर्ष करेगी। इस बात के सिलसिले मे अटकलबाजी करना बेकार है कि इस या उस देश मे ऐसा कब और कैसे होगा। हम इतना जानते है कि ऐसा होना लाजिमी है, चाहे साम्राज्यवादी और उनके खुशामदी टट्टू उसके लिए राजी हो अथवा न हो, क्योकि समाजवाद मे मानव के सक्रमण की ऐतिहासिक प्रक्रिया निर्विवाद है। कम्युनिज्म की विजय निश्चित है।

(रूमानिया की मजदूर पार्टी की तीसरी काग्रेस मे किया गया भाषण। 'सोवियत सघ की विदेश-नीति (१९६०)' शीर्षक सग्रह, खण्ड २, पृष्ठ ४१–४२)

वही आदमी सच्चा मार्क्सवादी है, सच्चा लेनिनवादी है, जिसे न केवल मार्क्स-एगेल्स-लेनिन की शिक्षाओ की अच्छी जानकारी है बल्कि जो उन शिक्षाओ को व्यवहार मे भी लागू कर सकता है, जो सत्ता

के लिए, नवजीवन के निर्माण के लिए मेहनतकश जनता के संघर्ष मे हमारे महान सैद्धान्तिक हथियार के रूप मे उनका उपयोग भी कर सकता है।

हमारी पार्टी ने, हमारी जनता ने मार्क्सवाद-लेनिनवाद के झडे के नीचे सत्ता पर अधिकार किया था। लेकिन सत्ता पर एक बार अधिकार कर लेने के बाद आपके लिए यह जानना लाजिमी है कि नए और बेहतर जीवन के निर्माण के लिए, उत्पादन के सभी साधनो को जनता की सेवा मे लगाने और भौतिक तथा मानसिक कल्याण का एक ऐसा स्तर प्रतिभूत करने के लिए उसका इस्तेमाल किस प्रकार किया जाए, जिससे वास्तव मे जनता की बढती हुई आवश्यकताओ की पूर्ति हो सके। तब जो लोग अभी माक्सवाद-लेनिनवाद नही जानते है, वे भी कहेगे सचमुच यही सबसे अधिक प्रगतिशील व्यवस्था है, क्योकि यह लोगो के बारे मे फिक्र करती है, उन्हे हर प्रकार का लाभ पहुचाती है और यही वह व्यवस्था है जिसका प्रगतिशील लोगो ने सदा सपना देखा है। समाजवाद और कम्युनिज्म की ऐसी सफलताओ से हमारे बहुत से विदेशी विरोधी भी समझ लेगे कि नई सामाजिक व्यवस्था सभी को एक ऐसा जीवन-स्तर प्रदान करती है कि पूजीवाद उसकी बराबरी नही कर सकता। जो लोग यह कहते है कि वे राजनीति मे भाग लेना नही चाहते, जो यह कहते है कि वे महज अच्छे नाश्ते और दोनो वक्त अच्छे खाने की परवाह करते है, वे भी जब यह देखेंगे कि कम्युनिज्म के अन्तर्गत जीवन-स्तर पूजीवाद की अपेक्षा उच्चतर है, तब कहेगे सोचें तो सही, शायद हमने कम्युनिज्म का, कम्युनिज्म की शिक्षा का विरोध करके गलती की थी।

भौतिक मूल्यो का तेजी से बढता हुआ उत्पादन और उच्चतर जीवन-स्तर–यही मुख्य उद्देश्य है। पुरानी पूजीवादी दुनिया के खिलाफ हमारे सघर्ष मे, मार्क्स-एगेल्स-लेनिन की शिक्षाओ से उत्पन्न नए समाज को मजबूत बनाने के सघर्ष मे, लेनिन की पार्टी के नेतृत्व मे मजदूर वर्ग, मेहनतकश किसानो और हमारे बुद्धिजीवियो द्वारा अक्तूबर क्रान्ति करके

फतहयाबी के साथ शुरू किये गये महान हेतु की विजय के लिए यही हमारा मुख्य हथियार है।

(कृषि-प्रबन्ध का स्तर ऊचा बनाइए। रूसी सोवियत सघात्मक समाजवादी जनतत्र के यूरोपी भाग के उत्तरी तथा मध्यवर्ती प्रदेशो के अग्रणी कृषि-कर्मियो के सम्मेलन मे किया गया भाषण। मास्को, २३ फरवरी १९६१। 'सोवियत सघ मे कम्युनिज्म का निर्माण और खेतीबारी का विकास' शीर्षक सग्रह, खण्ड ५, पृष्ठ ४८–४९)

नई विश्व व्यवस्था विश्वासपूर्वक आगे बढ रही है। वसन्त-ऋतु के अच्छे पौधे की तरह शक्ति सचय करती हुई, वह तेजी के साथ विकसित हो रही है। गहरी और मजबूत जडो वाले किसी प्रचण्ड वृक्ष की भाति, जिसे न हवा का भय होता है न सूखे का, नये समाजवादी जगत को भी न तूफान का भय है और न कठिनाइयो का। समाजवादी खेमा एक अविजेय शक्ति बन गया है, जो आज मानव-जाति के भाग्य पर निर्णयात्मक प्रभाव डालता है। प्रसगवश कहे कि समाजवादी देशो ने चन्द्रमा के पास अपना अभिवादन-ध्वज भेजा है, जिसे उसने सद्भावना-पूर्वक आलिगनबद्ध कर लिया है।

फिर भी सच तो यह है कि समाजवादी व्यवस्था इतनी कम-उम्र है कि उसमे निहित प्रचण्ड शक्तिया वस्तुत अभी काम करना शुरू ही कर रही है। उत्पादन-शक्तियो का विकास करने मे और सकल उत्पादन तथा आबादी के फी आदमी पीछे उत्पादन मे भी, पूजीवादी देशो की बराबरी पर पहुंचने और उनसे आगे निकल जाने के लिए जो कुछ भी आवश्यक है, समाजवादी देशो के पास वह सब कुछ मौजूद है।

हमारे देशो के अवाम का जीवन हर साल बेहतर से बेहतर होता जाएगा। वे अपनी अनेकानेक सिद्धियो द्वारा ससार को चकित कर देगे और पूजीवाद के साथ शातिमय आर्थिक प्रतियोगिता मे निस्सन्देह विजयी होगे। तब पूजीवादी देशो के लाखो-करोडो नए लोग यह देखेगे कि समाजवाद और कम्युनिज्म बेहतर जीवन की जमानत करते है और

यह देखकर वे भी हमारा रास्ता अख्तियार करेगे। समाजवाद के अन्तर्गत वे केवल भौतिक कल्याण ही नही, बल्कि सच्ची आजादी और अपने तथा आनेवाली पीढियो के लिए बौद्धिक जीवन की ऋद्धिया तथा शान्ति भी उपलब्ध करेगे।

पूजीवादी देशो के साथ शान्तिमय प्रतियोगिता मे हमे जीतना होगा और हम जीतेगे। हमारा यह विश्वास केवल हमारी कामना पर ही अवलम्बित नही है। खुद जीवन ने, यूरोप और एशिया के अनेक देशो मे समाजवादी निर्माण के अनुभव ने पहले ही इसकी पुष्टि कर दी है। सोवियत सघ मे समाजवाद के निर्माण का अनुभव एक जीती-जागती मिसाल है, एक खुली हुई किताब है, जो यह बतलाता है कि किस तरह ४२ साल मे हमारी जनता ने हमारे देश को बदलकर आर्थिक क्षमता के लिहाज से ससार की दूसरी शक्ति बना दिया है, जबकि उन ४२ वर्षो मे से भी लगभग २० वर्ष हमारे ऊपर लादे गए युद्धो और युद्धोत्तर आर्थिक पुनरुत्थान मे लग गए।

आज जबकि हमारे पास प्राय एक अरब की आबादीवाला एक ऐसा विस्तृत समाजवादी खेमा है, जिसमे यूरोप तथा एशिया के अनेक राज्य शामिल है, हमारे पास स्वभावत समाजवादी और कम्युनिस्ट निर्माण के मार्ग पर तेजी के साथ अग्रसर होने की बेहद ज्यादा सभावनाए है। समाजवादी देशो की हर नई सफलता समाजवादी व्यवस्था की वरिष्ठता को स्पष्टत व्यक्त करती है। पूजीवादी प्रचार से प्रभावित, जो लोग अब भी कम्युनिज़्म से डरते है, वे भी समय के साथ उसके उच्च मानवतावादी आदर्शो को समझ जाएगे। उत्पादन का स्तर जितना ही ऊचा और जनता की खुशहाली जितनी ही अधिक होगी, मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त की महती जीवनी-शक्ति उतनी ही उजागर होगी।

साथियो, समाजवाद जनता के लिए शान्ति की जमानत करता है, जो हर खुशहाली से बडी खुशहाली है। समाजवादी खेमे की शक्तिया जितनी ही अधिक बलवती हो जाएगी, समाजवाद मे धरती पर शान्ति के हेतु की सफलतापूर्वक रक्षा करने की क्षमता उतनी ही अधिक होगी। समाजवाद की शक्तिया आज ही इतनी बलवती है कि

अन्तर्राष्ट्रीय विवादो को तय करने के साधन के रूप मे युद्ध को अमान्य कर देने की यथार्थपरक सभावनाए पैदा हो रही है।

(चीनी जन-लोकतत्र के दसवें वार्षिकोत्सव के अवसर पर पेकिंग मे हुए एक स्वागत-समारोह मे किया गया भाषण। ३० सितम्बर १९५९। 'शस्त्रहीन ससार ही युद्ध मुक्त संसार है' शीर्षक सग्रह, खण्ड २, पृष्ठ ३१८–३१९)

हमारे देश मे कम्युनिज्म के निर्माण का अर्थ यह है कि हम ससार की सभी क्रान्तिकारी शक्तियो के प्रति अपने अन्तर्राष्ट्रीयतावादी कर्तव्य की पूर्ति कर रहे है। हम लेनिन के पथ का अनुसरण कर रहे है, जिसे विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन का, समस्त प्रगतिशील मानवता का समर्थन प्राप्त है।

समाजवाद से कम्युनिज्म तक का मार्ग जमकर मेहनत करने का मार्ग है, कठिनाइयो के निराकरण का मार्ग है, अथक सघर्ष और महती सृजनात्मिका सिद्धियो का मार्ग है। लेकिन इसके साथ ही कम्युनिज्म की ओर प्रगति को केवल अन्तहीन बलिदानो की माग तथा अभावो के मार्ग के रूप मे चित्रित करना गलत है। यह जानी हुई बात है कि क्रान्तिकारी उत्साह से भरी हुई हमारी जनता ने अक्तूबर-क्रान्ति और गृह-युद्ध के वर्षों मे जबर्दस्त कुर्बानिया दी। उसने कुर्बानिया दी क्रान्ति की विजय के लिए, मेहनतकश लोगो की आजादी और बेहतर ज़िन्दगी के लिए। देशभक्ति के महान युद्ध के दौरान मे सोवियत जनता द्वारा दी गई कुर्बानिया कितनी भीषण थी, यह सभी जानते है। वे कुर्बानिया दी गई थी क्रान्तिकारी उपलब्धियो के, समाजवादी मातृभूमि की स्वतत्रता तथा स्वाधीनता के बचाव के लिए, फासिस्ट गुलामी से समस्त मानवता की रक्षा के लिए।

इस तरह, परिस्थिति का तकाजा होने पर हमारी जनता कठिनाइयो और अभावो की परवाह नही करती। वह हमारी मातृभूमि को और अधिक शक्तिशाली बनाने के महान लक्ष्य के लिए निष्ठापूर्वक काम करती है। समाजवाद के विकास की मजिल जितनी ही अधिक ऊंची होगी,

जनता को भौतिक तथा सास्कृतिक लाभ पहुंचाना उसके लिए उतना ही अधिक शक्य होगा और वह निश्चय ही पहुचाएगा। इसका अर्थ यह हुआ कि समाजवादी व्यवस्था की बरतरी अधिक बेहतर ढग से, अधिक बडे पैमाने पर और अधिक यकीनी तौर से उजागर होगी तथा समाजवाद पूजीवादी देशो के लाखो-करोड़ो दूसरे मेहनतकश लोगो की हमदर्दी हासिल कर लेगा।

वर्तमान समय मे अनेक देश समाजवाद और कम्युनिज्म का निर्माण कर रहे है। हमारे देश मे समाजवाद का निर्माण पहले ही हो चुका है। आज केवल वर्ग-चेतना के नाम पर क्रान्तिकारी आह्वान ही नही, बल्कि मुख्यत समाजवादी देशो के जन-समुदायो के तेजी के साथ उन्नत होते हुए जीवन-स्तर का उदाहरण पूजीवादी देशो के उन मेहनतकश लोगो को अधिकाधिक प्रभावित कर रहा है, जिनमे से बहुतेरे आज भी पूजीवादी तथा सुधारवादी विचारधारा की गुलामी मे मुब्तला है। समाजवादी देशो मे पूजीवादी देशो की अपेक्षा उच्चतर जीवन-स्तर की उपलब्धि गैर-समाजवादी देशो की लाखो-करोडो जनता के सामने एक बार फिर समाजवाद की बरिष्ठता को प्रदर्शित कर देगी और वह पूजीवाद पर एक और जबर्दस्त चोट होगी।

यह बात अकारण नही है कि सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम मे कम्युनिस्ट प्रचुरता के सृजन का कार्यभार निर्धारित किए जाने से सयुक्त राज्य अमेरिका के साम्राज्यवादी परेशान है। वे इस बात को बेशक साफ साफ समझते है कि जब सोवियत सघ तथा दूसरे समाजवादी देश आर्थिक दृष्टि से अत्यधिक विकसित देशो से आगे निकल जाएगे, तब साम्राज्यवादियो का किया कुछ भी कम्युनिस्ट विचारो के विजय-अभियान को नही रोक सकेगा।

समाजवाद के, कम्युनिज्म के उदाहरण की शक्ति इसलिए भी बहुत महत्वपूर्ण है कि हमारे युग मे उन एशियाई, अफ्रीकी और लैटिन अमेरिकी देशो के करोडो-करोडो लोग, जिन्होने उपनिवेशवाद के जुए को उतार फेंका है या फेंक रहे है, स्वाधीन विकास के मैदान मे निकल पड़े हैं। उन देशो की जनता के सामने विकल्प यह है कि किस मार्ग का अनुसरण किया जाए—पूजीवादी या गैर-पूजीवादी विकास के मार्ग का?

जिन देशो की जनता ने राष्ट्रीय स्वाधीनता प्राप्त कर ली है, उन्हे समाजवाद ठोस उदाहरणो द्वारा तरक्की और खुशहाली की अर्थ-व्यवस्था, नियोजित समाजवादी अर्थ-व्यवस्था की बरिष्ठता प्रदर्शित करता है। एक पिछडे देश को इतिहास की कम से कम मुद्दत मे औद्योगिक देश बना देने, बेकारी तथा गरीबी को खत्म करने, सस्कृति और शिक्षा के लाभो को सभी नागरिको की पहुच के भीतर ला देने मे केवल समाजवाद ही समर्थ है। आर्थिक तथा सास्कृतिक विकास मे, अपनी जनता के जीवन-स्तरो को ऊचा उठाने मे हमारे देश और सभी समाजवादी देशो की सफलताए जितनी ही अधिक होगी, नौ-उम्र राष्ट्रीय राज्यो की जनता के लिए समाजवाद का वरण करना उतना ही अधिक आसान होगा।

इस तरह यह प्रत्यक्ष है कि हर समाजवादी देश जो आर्थिक विकास मे, जनता के जीवन-स्तर को ऊचा करने मे व्यावहारिक सफलताए प्राप्त कर रहा है, वह मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचारो की विजय मे अपना अन्तर्राष्ट्रीयतावादी अश-दान कर रहा है, विश्व-व्यापी पैमाने पर कम्युनिज्म की विजय को निकट ला रहा है।

(कम्युनिस्ट निर्माण की वर्तमान मजिल और कृषि-प्रबन्ध को बेहतर बनाने मे पार्टी के कार्यभार। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की प्लीनरी मीटिग मे पेश की गई रिपोर्ट। ५ मार्च १९६२। 'सोवियत सघ मे कम्युनिज्म का निर्माण और खेतीबारी का विकास' शीर्षक सग्रह, खण्ड ६, पृष्ठ ३४० – ३४२)

४. कम्युनिज्म हमारा भविष्य है

कम्युनिज्म क्या है?

अतीत मे, अक्तूबर क्रान्ति से पहले हमारी जनता बहुत गरीब थी। उसने महान क्रान्तिकारी तथा वैज्ञानिक मार्क्स, एगेल्स और लेनिन द्वारा निर्धारित लक्ष्य को उपलब्ध करना तय किया, पूजीपतियो तथा ज़मीदारो के बगैर, शोषको के बगैर जीने का फैसला किया, एक ऐसे समाज के निर्माण का निश्चय किया जिसमे सभी लोग बराबर हो, सभी लोग आजाद हो, जिसमे उत्पादन के साधनो पर जनता का तथा परिश्रम के फल पर समाज का अधिकार हो और जिसमे हर आदमी अपनी मेहनत के फल का पूरी तरह उपभोग करे। इसी लिए जनता ने महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति की और सत्ता को अपने हाथ मे लिया।

हम जानते थे कि अगर हम जो कुछ पैदा करेगे वह सब खा जाएगे, तो जीवन की चिरन्तन व्यर्थता, स्थायी पिछडापन और गरीबी ही हमारी नियति होगी। इसलिए सोवियत सत्ता के प्रारभिक वर्षो में हमने अपने समस्त साधनो को नई फैक्टरियो के निर्माण मे, भारी उद्योग की सर्जना मे लगा दिया। हम जानते थे कि एक प्रबल आधुनिक उद्योग के सिवा, अर्थशास्त्रियो के कथनानुसार उत्पादन के साधनो के उत्पादन के सिवा भौतिक लाभो की अभिवृद्धि के सघर्ष मे आदमी को और कुछ भी साधन-सम्पन्न नही बनाता, और कुछ भी उसकी मेहनत आसान नही करता, और कुछ भी उसकी शक्तियो की अभिवृद्धि नही करता।

हमने ठीक वही चीज़ आज हासिल कर ली है। सच तो यह है कि अपनी आर्थिक शक्ति मे वृद्धि के लिए हम लोहा-इस्पात-मिले, कोयला-खदाने, तेल के कुए, रासायनिक कारखाने, बिजली-उत्पादन-केन्द्र अब

भी निर्मित करते जा रहे हैं। लेकिन अब हम अपने साधनो मे से बहुत अधिक अच्छे मकान बनवाने मे, खाद्य-पदार्थों के उत्पादन मे, कपडे, जूते और दूसरे उपभोक्ता माल तैयार करने मे खर्च कर सकते है।

ऐसे ही समाज को विद्वान लोग कम्युनिज्म कहते है। उस प्रकार के जीवन के लिए लडनेवाले हम कम्युनिस्टो को इस बात का गर्व है कि हम उस पार्टी के है, जो सभी शिक्षाओ मे महानतम शिक्षा, मार्क्सवाद-लेनिनवाद की रहनुमाई मे चलती है।

कम्युनिज्म क्या है? हम क्या चाहते है? वेशक, बात महज "कम्युनिज्म" शब्द की ही नही है। हम एक वेहतर जिन्दगी, धरती पर अच्छी से अच्छी जिन्दगी चाहते है। हम चाहते है कि आदमी अभावो से मुक्त होकर जिए, हम चाहते है कि उसे जिस किस्म का काम पसन्द हो वैसा काम मिले। हम नही चाहते कि इन्सान अपने भविष्य के लिए चिन्तित रहे, इस बात के लिए चिन्तित रहे कि उसका दूसरे दिन का खाना कहा से मिलेगा, उसके बच्चो का खाना कहा से आएगा, उसका घर मौसमो की कठोरता से बरी रहेगा कि नही, उसका कोई घर होगा भी अथवा नही।

क्या मेरे लिए यह कहना जरूरी है कि लोग सस्कृति के लाभो का उपभोग करे, शिक्षा प्राप्त करे, नाटक देखें, सगीत-गोष्ठियो मे शरीक हो, अजायव-घर देखे, यानी यह कि पूरी जिन्दादिली के साथ जिए, सुघड जीवन वितायें, न कि महज जीवन-यापन करे, महज जिन्दगी गुजारे?

कौन सी व्यवस्था हर व्यक्ति को वैसा जीवन दे सकती है? क्या पूजीवादी व्यवस्था वैसा कर सकती है? हम अपने अनुभव से जानते है कि पूजीवादी व्यवस्था वैसा नही कर सकती। पूजीवादी व्यवस्था के अन्तर्गत उत्पादन के साधनो पर, यानी पूजी पर केवल मुट्ठी भर लोगो का आधिपत्य होता है।

यह बिल्कुल सच है कि ये मुट्ठी भर लोग ही अच्छी तरह रहते हैं और उनसे लगे कुछ दूसरे भी वहुत बुरी तरह नही रहते। लेकिन वेहद वहुसख्यक लोगो का जीवन पूजी के स्वामियो के ऊपर अवलम्बित होता है। मालिक मेहनतकश इन्सान को काम दे सकता है, अच्छी

मजदूरी दे सकता है, लेकिन वह उसे किसी भी समय बरखास्त कर सकता है और तब मजदूर की रोजमर्रा की रोटी का ठिकाना नही रह जाता और वह कहावत के अनुसार अपनी किस्मत पर छोड दिया जाता है।

यह इन्सान के लिए भयानक बात है। इसी किस्म की ज़िन्दगी को हमारी जनता ने बदल दिया है। उसने ऐसा किया कि उत्पादन के समस्त साधन, देश की सारी सम्पत्ति सारी जनता के उपयोग के लिए जनता की सम्पत्ति बन गई।

अब हम कम्युनिस्ट समाज का निर्माण कर रहे है। आलकारिक भाषा मे कहे कि कम्युनिस्ट समाज शारीरिक तथा मानसिक श्रम के उत्पादनो से लबालब भरे हुए एक प्याले के समान है, जो हर व्यक्ति की पहुच के भीतर है। हर व्यक्ति के लिए काफी खाना, काफी कपड़े, जूते, मकान और किताबे होगी। इसी को हम कम्युनिज्म कहते हैं। हर व्यक्ति अपनी योग्यताओ के अनुसार काम करेगा–अपने लिए और हर व्यक्ति के लिए–और उसे उसकी जरूरत की सारी चीज़ें प्राप्त होगी। वह आह्लादमय तथा सृजनात्मक श्रम होगा।

कम जानकारी रखनेवाले लोग "कम्युनिज्म" शब्द से डरते ह। कुछ लोग उसे सुनकर सलीब का निशान बनाते हुए पीछे घूमकर निगाह डालते हैं और कहते है "हे भगवान, कम्युनिज्म से मेरी रक्षा करो।" ऐसे लोगो से मैं कहूगा भगवान आपको क्षमा करे, जैसे कि धर्मात्मा कहते है। आप कम्युनिज्म की बुराई इसलिए करते है कि आप नही जानते कि वह क्या चीज है।

सचाई को एक बार जान लेने पर वे लोग अपने शब्दो पर लज्जित होगे। लेकिन एक कम्युनिस्ट की हैसियत से मैं उनसे कहना चाहता हू कि इसके लिए कोई भी उन्हे दोषी नही ठहराएगा। हर व्यक्ति के विचार अपने समय पर प्रौढ होते हैं। देर-सबेर वह उन बातो को समझ जाता है, जिन्हे समझने मे पहले असमर्थ होता है। ये लोग भी लज्जित होगे, लेकिन मेरा खयाल है कि इसके लिए उन्हे कोई बुरा-भला नही कहेगा।

मैंने वास्तव मे उस जीवन के बारे मे बहुत सक्षेप मे बताया है, जिसका हम निर्माण कर रहे है। हमने कम्युनिस्ट प्रचुरता के इस विराट प्याले को अपनी मेहनत की उपजो से भरना शुरू कर दिया है।

यह काम फौरन नही पूरा किया जा सकता। हमे कठिन परिश्रम करना पडेगा, लेकिन शुरूआत कर दी गई है। हम कम्युनिज्म की ओर, मानव-समाज के विकास की उस अद्भुत मजिल की ओर दृढतापूर्वक अग्रसर हो रहे है।

(आस्ट्रियाई रेडियो और टेलीविजन पर किया गया भाषण। ७ जुलाई १९६०। 'सोवियत सघ की विदेश-नीति (१९६०)' शीर्षक सग्रह, खण्ड २, पृष्ठ १४८–१५०)

कम्युनिज्म का भौतिक और तकनीकी आधार

कम्युनिज्म के बुनियादी तौर पर निर्माण का अर्थ क्या है? उसका अर्थ यह है कि

–**आर्थिक** क्षेत्र मे कम्युनिज्म का भौतिक और तकनीकी आधार तैयार हो जाएगा। सोवियत सघ का आर्थिक स्तर अत्यन्त विकसित पूजीवादी देशो के आर्थिक स्तर से ऊचा हो जाएगा और वह फी व्यक्ति उत्पादन मे पहला स्थान प्राप्त कर लेगा, वहा ससार के सबसे ऊचे रहन-सहन का स्तर सुनिश्चित हो जाएगा और प्रचुर भौतिक तथा सास्कृतिक मूल्यो की उपलब्धि की सारी परिस्थितिया पैदा हो जायेगी,

–**सामाजिक** सम्बन्धो के क्षेत्र मे वर्गों के बीच आज भी कायम विभेदो के अवशेष समाप्त कर दिये जायेगे, सभी वर्ग कम्युनिस्ट मेहनतकश जनता के वर्गविहीन समाज मे विलीन हो जायेगे, शहर और गाव के और फिर शारीरिक तथा मानसिक श्रम के बुनियादी भेद तत्वत. मिट जायेगे, जातियो की आर्थिक और वैचारिक एकरूपता बढ जायेगी, कम्युनिस्ट समाज के मनुष्य की विशेषताए विकसित होगी जिसमे विचार-सम्बन्धी उच्चता, शिक्षा की उदारता, नैतिक शुद्धता और शारीरिक पूर्णता का सामंजस्यपूर्ण सयोग होगा;

–**राजनैतिक** क्षेत्र मे इसका अर्थ यह है कि सभी नागरिक सामाजिक कार्यो के सचालन मे भाग लेगे और सारा समाज समाजवादी जनवाद के

अत्यन्त व्यापक विकास के फलस्वरूप कम्युनिस्ट स्वशासन के उसूलो की पूरी तामील के लिए अपने को तैयार करेगा।

(सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम के बारे मे। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २२वी काग्रेस, शार्टहैड रिपोर्ट, खण्ड १, पृष्ठ १६७)

कार्यक्रम का मसौदा हमारे देश मे अभूतपूर्व शक्तिशाली उत्पादन-शक्तियो के निर्माण की, दुनिया की अग्रणी औद्योगिक शक्ति के रूप मे सोवियत सघ के विकास की शानदार रूपरेखा पेश करता है। व्ला० इ० लेनिन ने कहा था "आर्थिक दृष्टि से प्रमणित हो जाने पर ही हम कम्युनिज्म को मूल्यवान समझते है।" कार्यक्रम का मसौदा उस प्रमाण को प्रस्तुत करता है।

दो दशाब्दियो के अन्दर सोवियत संघ में कम्युनिज्म का भौतिक और तकनीकी आधार तैयार हो जायेगा। हमारी पार्टी की आम नीति का प्रधान आर्थिक कार्यभार यही है, यही उसकी आधारशिला है।

आर्थिक, सामाजिक और सास्कृतिक कार्यभारो की शृखला मे कम्युनिज्म के भौतिक और तकनीकी आधार का निर्माण ही निर्णयकारी कडी है और वही हमारे देश के विकास की अन्दरूनी और बाहरी दोनो परिस्थितियो का तकाजा है। वह हमे निम्नलिखित सबसे महत्वपूर्ण कार्यभारो की पूर्ति मे समर्थ बनाता है

पहला – अभूतपूर्व शक्तिशाली उत्पादन-शक्तियो का निर्माण और आबादी के फी आदमी उत्पादन के लिहाज से दुनिया मे प्रथम स्थान प्राप्त करना,

दूसरा – नयी व्यवस्था की विजय के लिए अन्ततोगत्वा सर्वाधिक महत्वपूर्ण और मुख्य चीज, श्रम की उत्पादकता की दृष्टि से दुनिया मे उच्चतम स्थान प्राप्त करना, सोवियत जनता को अत्यन्त उन्नत मशीनो से सम्पन्न करना तथा श्रम को आनन्द, प्रेरणा और रचनात्मक प्रयास के स्रोत मे परिवर्तित करना,

तीसरा – सोवियत जनता की सभी आवश्यकताओ की तुष्टि के लिए

भौतिक मूल्यो के उत्पादन का विकास करना, सारी जनता के लिए रहन-सहन के उच्चतम स्तर की जमानत करना तथा आवश्यकता के अनुसार वितरण की ओर सक्रमण के अन्तिम लक्ष्य के लिए सारी परिस्थितिया पैदा करना ;

चौथा – उत्पादन के समाजवादी सम्बन्धो को क्रमश. कम्युनिस्ट सम्बन्धो मे वदलना, वर्गहीन समाज वनाना, शहर और गाव के, तथा वाद मे मानसिक और शारीरिक श्रम के वुनियादी भेदो को मिटाना।

अतिम वात यह कि कम्युनिज्म का भौतिक और तकनीकी आधार निर्माण करके ही हम पूजीवाद से आर्थिक प्रतियोगिता मे जीत सकते है और देश की प्रतिरक्षा-व्यवस्था को ऐसे स्तर पर निरन्तर कायम रख सकते है कि अगर कोई आक्रमणकारी सोवियत सघ के खिलाफ, पूरी समाजवादी दुनिया के खिलाफ, तलवार उठाए तो उसे कुचल दिया जा सके।

दो दशाब्दियो मे कम्युनिज्म के भौतिक और तकनीकी आधार के निर्माण के लिए जो कुछ आवश्यक है, वह क्या हमारे पास है? हा, साथियो, है। हमारे पास प्रचण्ड रचनात्मिका शक्तिवाली सामाजिक व्यवस्था है, प्रकाण्ड उत्पादन-क्षमताए है और अनन्त प्राकृतिक साधन है। हमारे पास प्रथम श्रेणी की मशीने है और दुनिया मे सबसे उन्नत विज्ञान है। सोवियत सघ ने असाधारण कुशल कार्यकर्ता तैयार किये है, जिनमे कम्युनिस्ट निर्माण के कार्यभार को पूरा करने की योग्यता है। सोवियत जनता का नेतृत्व सघर्षो मे तपी हुई एक सूझबूझवाली पार्टी के हाथ मे है।

कम्युनिज्म के भौतिक और तकनीकी आधार की सृष्टि के लिए स्वभावत. विपुल धनराशि आवश्यक होगी। अगले वीस वर्ष मे सोवियत संघ की राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था मे कुल २० खरव रूवल की पूजी लगाने की योजना वनाई गई है। साथियो, जरा गौर तो कीजिए कि आज हमारा निर्माण-कार्य किस पैमाने पर पहुच गया है! हमे खरबो मे गिनती करना पड़ती है!

औद्योगीकरण के जमाने की तरह क्या इतने विराट साधन जुटाने के साथ कठिनाइया और कुर्वानिया नही जुडी होगी? हमारे पास उत्तर मे यह कहने के लिए कारण मौजूद है कि ऐसा नही होगा और प्रमुखतः

इस कारण नही होगा कि हमारे देश मे शक्तिशाली उद्योग का निर्माण हो चुका है।

जन-कल्याण की वृद्धि और सचयन-समस्या के हल करने मे भारी उद्योग की भूमिका अब एक नये रूप मे सामने आ रही है। हम जानते है कि भारी उद्योग मे दो तरह के कारखाने होते है—एक तो ऐसे उद्योगो के लिए उत्पादन के साधन पैदा करते है, जो उत्पादन के साधन भी पैदा करते है, और दूसरे, जो हलके और खाद्य उद्योगो के लिए, कृषि, भवन-निर्माण और सास्कृतिक तथा सार्वजनिक सेवाओ के लिए उत्पादन के साधन पैदा करते है। जिस समय हमारे भारी उद्योग अभी निर्मित ही हो रहे थे, उस समय हमे अपने साधनो को मुख्यत पहली कोटि के कारखाने विकसित करने मे ही केन्द्रित करना पड रहा था और दूसरी कोटि के कारखानो मे पूजी-विनियोग को सीमित करना पड रहा था। इस समय हम दूसरी कोटि के कारखानो मे भी पूजी-विनियोग काफी बढा सकते है, जिससे जनता द्वारा माल के उपभोग मे वृद्धि की गति बढेगी। प्रथम कोटि के कारखानो का उत्पादन १९६० की अपेक्षा १९८० मे लगभग ६ गुना और दूसरी कोटि का उत्पादन १३ गुना बढ जायेगा। इसके अलावा, हमारे भारी उद्योग जनता की बढती हुई माग को पूरा करने के लिए सास्कृतिक और घरेलू माल की अधिकाधिक मात्रा पैदा करेगे। भारी उद्योग विकसित करने मे हम लेनिन की इस प्रतिपत्ति के आधार पर आगे बढते है कि "उत्पादन के साधन अपने अस्तित्व के लिए नही तैयार किये जाते, बल्कि केवल इसलिए तैयार किए जाते है कि उपभोग की वस्तुए बनानेवाले उद्योगो की शाखाओ मे उत्पादन के साधनो की माग अधिकाधिक बढती रहती है।"

बीसवर्षीय राष्ट्रीय आर्थिक विकास योजना (आम रूपरेखा) मे उत्पादन-साधनो के उत्पादन और उपभोग-वस्तुओ के उत्पादन के विकास की दरो मे काफी बराबरी रखने की अवधारणा की गयी है। उद्योग मे उत्पादन-साधनो के उत्पादन की औसत सालाना बढती की दर १९२९-१९४० मे उपभोग-वस्तुओ के उत्पादन की बढती की दर की अपेक्षा लगभग ७० फीसदी अधिक थी, जबकि १९६१-१९८० मे उनके बीच का अन्तर लगभग २० फीसदी ही रह जायेगा।

विस्तारित पुनरुत्पादन मे भारी उद्योग-धधा हमेशा प्रमुख भूमिका अदा करता रहा है और करता रहेगा। पार्टी हमेशा उसकी बढती की फिक्र करती रहेगी, क्योकि वह भारी उद्योग को भौतिक और तकनीकी आधार के निर्माण और तेज तकनीकी प्रगति के लिए निर्णयकारी कारणिक तथा समाजवादी राज्य की प्रतिरक्षा-क्षमता की सहृति का आधार समझती है। इसके साथ ही पार्टी इसके लिए सब कुछ करेगी कि भारी उद्योग उपभोक्ता माल के दृढतापूर्वक बढते हुए उत्पादन की जमानत करे।

हम नियोजित पैमाने पर पूजी-विनियोग की क्षमता इसलिए भी रखते हैं कि समस्त सामाजिक उत्पादन तथा राष्ट्रीय आय एकदम से खूब बढ जायेगे। हम जितना ही आगे बढते है, सचयन के लिए पृथक् किये गये राष्ट्रीय आय के एक-एक प्रतिशत का "वजन" उतना ही ज्यादा होता जाता है और उसके फलस्वरूप वह धन-राशि भी अधिक होती जाती है, जिसे हम पूजी-विनियोग के लिए निर्दिष्ट कर सकते है। एक महत्वपूर्ण स्थिति और है। इजीनियरिंग के अपर विकास तथा श्रम की बढती हुई उत्पादकता की बदौलत लागत के हर रूबल पर उत्पादन-वृद्धि भी अधिक होगी।

अपने अनुभव और भविष्य के बारे मे अपने यथार्थवादी तखमीने के आधार पर, हम मोटे तौर से उत्पादन का पैमाना बताने और ठोस आकडो मे कम्युनिज्म के भौतिक और तकनीकी आधार के निर्माण की निश्चित मीयादे बताने मे समर्थ है। हमारे योजना-निकायो द्वारा किये गये कुछ तखमीने निम्नलिखित है (देखिये पृष्ठ ११९ – १२०)।

सकल सामाजिक उपज सामाजिक उत्पादन की सभी शाखाओ का सबसे अधिक सामान्य सूचक है। अगले बीस वर्षो में उसको करीब पाच गुना बढाने की योजना है। औद्योगिक उपज की बढती छ गुने से कम नही होगी और कुल कृषि उपज लगभग ३ ५ गुना बढेगी। इसका मतलब यह हुआ कि मानो आज के सोवियत सघ जैसे पाच औद्योगिक तथा दो से ज्यादा खेतिहर देश हमारी सम्पन्न धरती पर और पैदा हो जायेगे। आज पूरी गैर-समाजवादी दुनिया में जितना उत्पादन होता है, सोवियत उद्योग अगले बीस वर्षो में उसका लगभग दूना उत्पादन प्रतिवर्ष करने लगेगा।

१९६० – १९८० में सोवियत उद्योग का विकास
(१ जुलाई १९५५ की कीमतो मे)

	१९६०	१९७०	१९८०	१९६० की तुलना मे १९८० मे कितना गुना अधिक
सकल औद्योगिक उत्पादन, फैक्टरियो की थोक कीमतो मे (अरब रूबल)	१५५	४०८	९७०–१,०००	६ २ – ६.४
जिसमे शामिल हैं				
उत्पादन के साधनो का उत्पादन – समूह 'क' (अरब रूबल)	१०५	२८७	७२०–७४०	६ ८ – ७ ०
उपभोक्ता-सामान का उत्पादन – समूह 'ख' (अरब रूबल)	५०	१२१	२५०–२६०	५ – ५.२
बिजली (अरब किलोवाट घंटा)	२९२ ३	९००–१,०००	२,७००–३,०००	९.२–१० ३
इस्पात (दस लाख टन)	६५	१४५	२५०	३.८

	१९६०	१९७०	१९८०	१९६० की तुलना मे १९८० मे कितना गुना अधिक
तेल (दस लाख टन)	१४८	३९०	६९०–७१०	४ ७–४.८
गैस (अरब घन मीटर) . .	४७	३१०–३२५	६८०–७२०	१४ ४–१५.२
कोयला (दस लाख टन).	५१३	६८६–७००	१,१८०–१,२००	२ ३–२ ३४
इजीनियरिंग और धातु-शिल्प उद्योगो का उत्पादन (अरब रूबल)	३४	११५	३३४–३७५	९ ८–११
खनिज खाद (साकेतिक इकाइयो मे दस लाख टन)	१३ ६	७७	१२५–१३५	९–९.७
सश्लिष्ट राल और प्लास्टिक (हजार टन)	३३२	५,३००	१९,०००–२१,०००	५७–६३
कृत्रिम और सश्लिष्ट रेशा (हजार टन)	२११	१,३५०	३,१००–३,३००	१४ ७–१५ ६
सीमेंट (दस लाख टन)	४५ ५	१२२	२३३–२३५	५.१–५.२
कपडा (अरब वर्ग मीटर).. . . .	६ ६	१३ ६	२०–२२	३–३ ३
चमडे के जूते (दस लाख जोडे) . . .	४१९	८२५	९००–१,०००	२ १–२ ४
सास्कृतिक और घरेलू माल (अरब रूबल) .	५ ९	१८	५८–६०	९ ८–१० १

अगले बीस वर्षो मे हमारे उद्योग मे उत्पादन के साधनो का उत्पादन लगभग सात गुना बढ जायेगा। हमारे देश का बुनियादी उत्पादन-कोष आज की तुलना मे पाच गुना अधिक हो जायेगा। व्यवहारत इसका मतलब यह होगा कि हमारे उद्योग नवीनतम मशीनो से पूरी तरह लैस हो जायेगे। सोवियत सघ का उत्पादन यत्र अधिक से अधिक शक्तिशाली, अधिक से अधिक नवीन और अधिक से अधिक उन्नत होगा। नये उत्पादन-कोष का सचयन एक क्रमिक प्रक्रिया है। इसलिए उत्पादन के सभी चालू साधनो को, समस्त प्रस्तुत तकनीक की कार्य-कुशलता को अधिक से अधिक बढाते हुए उनका सर्वोत्तम उपयोग करना आवश्यक है।

सोवियत अर्थ-व्यवस्था तेज गति से विकसित होती रहेगी। आनेवाले बीस वर्षो मे औद्योगिक उपज की वार्षिक वृद्धि औसतन ९–१० फीसदी से कम नही होगी। इसका अर्थ है कि हमारे आर्थिक विकास की गति पूजीवादी देशो की तुलना मे कही अधिक बनी रहेगी।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम के मसौदे मे **कम्युनिज्म के भौतिक और तकनीकी आधार के निर्माण की बुनियादी प्रवृत्तियो** का खाका पेश किया गया है।

कम्युनिज्म के भौतिक और तकनीकी आधार के निर्माण का अर्थ है उत्पादन की तकनीक और प्रवीणता, उसके सगठन का एक नया स्तर तथा सकेन्द्रण, विशिष्टीकरण, समेकन और विलयन की प्रक्रियाओ का बढता हुआ विकास। विज्ञान अधिकाधिक प्रत्यक्ष उत्पादन-शक्ति बनता जा रहा है और उत्पादन आधुनिक विज्ञान का तकनीकी उपयोग। जैसा कि लेनिन ने बार-बार जोर देकर कहा था, नवीनतम तकनीक के बिना, नयी वैज्ञानिक खोजो के बिना कम्युनिज्म का निर्माण कभी नही किया जा सकता।

मार्क्स के शब्दो मे, श्रम के कौनसे नये साधन कम्युनिस्ट उत्पादन का हाड-मास है? वे है व्यापक मशीनीकरण और स्वचलीकरण की एक यन्त्र-शृखला। कम्युनिस्ट निर्माण की परिस्थितियो मे स्वचलीकरण इजीनियरिग के विकास के एक नये युग का सूत्रपात करता है। रासायनिक पदार्थो तथा अत्यन्त प्रभाव-क्षम नई सामग्रियो का विकास और उपयोग,

श्रम की नई वस्तुओ और रासायनिक विधियो के व्यापक इस्तेमाल उत्पादन मे बढती हुई भूमिका अदा करेंगे। धातुओ तथा अन्य सामग्रियो की, विशेषकर अत्यधिक दबावो, तापमानो और रफ्तारो के तहत उपयोग में लाई जानेवाली सामग्रियो की पायदारी और विश्वसनीयता को खूब बढाने की फौरन आवश्यकता है। भविष्य में पृथ्वी के गर्भ मे और गहरे प्रवेश तथा सागरो और महासागरो के जैव एव खनिज साधनो के उपयोग द्वारा कच्चे माल के स्रोत बहुत अधिक बढाये जायेंगे।

कार्यक्रम के मसौदे मे **सारे देश के बिजलीकरण** के महत्व की प्रधानता बतायी गयी है। व्ला० इ० लेनिन ने कहा था, "सोवियत व्यवस्था पर आधारित बिजलीकरण से हमारे देश मे कम्युनिज्म की बुनियादो की अंतिम विजय के लिए पथ प्रशस्त होगा।" पूर्ण बिजलीकरण सम्बन्धी लेनिन के विचार कम्युनिस्ट आर्थिक निर्माण के सम्पूर्ण कार्यक्रम की धुरी है।

लेनिन ने देश की अर्थ-व्यवस्था के विकास के लिए पहली व्यापक योजना—गोएलरो योजना—पेश की थी और उसे पार्टी का दूसरा कार्यक्रम कहा था। उसमे बिजली-उत्पादन को हर वर्ष ८ अरब ८० करोड़ किलोवाट घटे के हिसाब से बढाने की अवधारणा की गई थी। योजना निर्दिष्ट समय से पहले ही पूरी हो गयी थी। बहुत दिन पहले, १९४७ मे ही हमारे देश ने बिजली के उत्पादन मे यूरोप मे पहला और दुनिया मे दूसरा स्थान प्राप्त कर लिया था।

हमारे बिजली स्टेशनो की कुल क्षमता १९६० मे ६ करोड ६७ लाख किलोवाट थी।

हम शक्ति के नये स्रोतो और उसे प्राप्त करने के नये उपायो पर अधिकार प्राप्त करने की ओर बढ रहे है। विद्युत उत्पन्न करनेवाले यत्रो की कार्य-दक्षता मे भारी वृद्धि उपलब्ध करके ऊर्जा की अन्य किस्मो को सीधे विद्युत-शक्ति मे परिवर्तित करने की समस्या को हल करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

आम रूपरेखा मे विद्युत-शक्ति उत्पादन के विकास को पहला स्थान दिया गया है। १९८० मे २७ खरब से ३० खरब किलोवाट घटे तक,

अर्थात् १९६० की तुलना मे ९ या १० गुना अधिक विजली पैदा करने की अवधारणा की गयी है।

आज दुनिया के सभी देश कुल मिलाकर जितनी विजली पैदा कर रहे हैं, उससे लगभग ५० फीसदी अधिक विजली हमारा देश १९८० मे पैदा करने लगेगा। इसके परिणामस्वरूप उद्योगो मे विजली का उपयोग ८ या ९ गुना अधिक होगा।

उस समय तक सोवियत सघ न सिर्फ विद्युत-शक्ति के उत्पादन के लिहाज से वल्कि आवादी के फी व्यक्ति उत्पादित किलोवाट घंटे के लिहाज से भी सयुक्त राज्य अमेरिका से आगे वढ जायेगा।

इस वृद्धि का नतीजा यह होगा कि यातायात, कृषि और शहरो तथा गावो मे सामुदायिक सुविधाओ का वडे पैमाने पर विजलीकरण हो जायेगा।

इस प्रकार सारे देश का विजलीकरण राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था की सभी शाखाओ को उन्नत करने और तकनीकी प्रगति के मार्ग पर देश को सचालित करने मे मुख्य भूमिका अदा करेगा।

कितनी शानदार और सचमुच अवाक कर देनेवाली योजना है, साथियो! सचमुच हमारी भूमि पर कम्युनिज्म का सूर्य उदय हो रहा है!

पार्टी और जनता निर्माण की अपनी इन योजनाओ को दृढ़तापूर्वक पूरा करने के लिए कृतसकल्प है, जिनसे देश के पूर्ण विजलीकरण सम्वन्धी लेनिन के कार्यक्रम की पूर्ति की जमानत होगी।

हमारे योजना निकायो ने ताप-विजली और पन-विजली के प्रधान स्टेशनो के निर्माण की एक कच्ची योजना तैयार की है। एक-एक स्टेशन को लेकर इस योजना पर सागोपाग विचार किया जाना है। अपर तकनीकी प्रगति के कारण उसमे काफी परिवर्तन हो सकते है।

हम आगामी २० साल मे १८० शक्तिशाली पन-विजली स्टेशन और २०० ताप-विजली के ऐसे जिला स्टेशन वनाने जा रहे है, जिनमे से प्रत्येक की उत्पादन-क्षमता ३० लाख किलोवाट तक होगी। इनके अतिरिक्त हम २६० वडे ताप-और-विजली-केन्द्र भी वनाने जा रहे है।

पूर्वी साइवेरिया मे ब्रात्स्क और क्रास्नोयार्स्क के पन-विजली स्टेशनो का निर्माण पूरा कर चुकने के अलावा, हमारी योजना १९८०

तक ग्रनगारा ग्रौर येनिसेई नदियो पर सायान, उस्त-इलीम, वोगुचान, येनिसेइस्क ग्रौर ग्रोसीनोव्का त्योही निचले तुगूस्का जैसे कुछ ग्रौर वडे पन-विजली स्टेशन वनाने की है। उनमे मे प्रत्येक की क्षमता ४० लाख किलोवाट से ग्रधिक होगी।

इनके ग्रलावा हम वहा वेहद कम-खर्च ग्रौर ग्रति शक्तिशाली ताप-विजली के स्टेशनो के दो ममूह वनायेंगे, जिन्हे कान्स्क-ग्राचिन्स्क कोयला-क्षेत्र से ईंधन प्राप्त होगा। उनमे से इताल-वोगोतोल समूह क्रास्नोयार्स्क के पास ग्रौर इर्शा-वोरोदिनो समूह कास्क-ताइशेत इलाके मे होगा। प्रत्येक स्टेशन की क्षमता ३० लाख किलोवाट ग्रौर उससे ऊपर होगी।

मध्य एशिया मे भी वडे-वडे पन-विजली स्टेशन वनाये जाने है, जो विजलीकरण ग्रौर सिचाई दोनो की दृष्टि से महत्वपूर्ण होगे। उनमे वख्श नदी पर वननेवाले नूरेक ग्रौर रोगून के विजली स्टेशन तथा नारिन नदी पर वननेवाले तोक्तोगुल ग्रौर तोगुज्तोरोऊ के विजली स्टेशन भी शामिल है। इरतिश नदी के विजली स्टेशनो की शृखला समेत ग्रनेक विशाल विजली स्टेशन कजाखस्तान मे भी वनाये जाने है।

सरातोव, निचली वोल्गा ग्रौर चेवोक्सारी के पन-विजली स्टेशनो तथा कामा नदी पर दो विजली स्टेशनो के निर्माण से वोल्गा-कामा पन-विजली स्टेशनो की शृखला पूर्ण हो जायेगी। देश के यूरोपी भाग की सयुक्त विजली प्रणाली ग्रोव नदी के निचले भाग मे वननेवाले ६० लाख किलोवाट तक की क्षमतावाले एक पन-विजली स्टेशन से ऊर्जा प्राप्त करेगी। इसके ग्रलावा सरातोव, स्तालिनग्राद, गोर्की के पास ग्रौर कइविशेव – उफा – ग्रोरेनवूर्ग के क्षेत्र मे शक्तिशाली ताप-विजली के स्टेशनो का एक सिलसिला वनाने की योजना है।

सोवियत सघ के यूरोपी भाग के केन्द्र ग्रौर उसके दक्षिणी प्रदेशो मे; मास्को के दक्षिण ग्रौर उत्तर-पूर्व मे, उक्राइना के कीयेव, कीरोवोग्राद ग्रौर निकोलायेव नगरो के ग्रासपास, दोनेत्स कोयला-क्षेत्र मे, लाटविया मे ग्रौर वेलोरूस मे ताप-विजली के शक्तिशाली स्टेशन खडे हो जायेंगे। काकेशिया मे जल-साधनो तथा ऊर्जा के ग्रन्य स्रोतो का उपयोग करके विजली स्टेशनो के निर्माण का विकास किया जायेगा।

इस योजना की पूर्ति से 'वृहत्तर वोल्गा' और 'वृहत्तर द्नेप्र' की महत्वपूर्ण समस्या हल हो जायेगी। स्वाभावत इनमे काफी पूजी लगाने की जरूरत होगी। मगर वह अपेक्षाकृत थोडे समय मे लौट आयेगी। तखमीने से पता चलता है कि वोल्गा–कामा और द्नेप्र के पन-विजली स्टेशनो द्वारा सस्ती विजली का उत्पादन लगभग दूना हो जायेगा। वोल्गा-पार और दक्षिण की २ करोड हैक्टर से अधिक सूखी जमीन मौसम की नागहानियत से वरी हो जायेगी और पोलेस्ये तथा वाल्टिक क्षेत्रो मे ४० लाख हैक्टर दलदली भूमि को कृषि-योग्य वनाना सभव होगा।

तव देश के उत्तर-पश्चिमी और अन्य क्षेत्रो से और त्योंही वाल्टिक सागर से देसावर भेजे जानेवाले वहुतेरे मालो के खेवे जिब्राल्टर का चक्कर लगाने के वजाय काले सागर के वन्दरगाहो से होते हुए भूमध्य सागर और देश के दक्षिणी भागो से भेजे जानेवाले मालो के खेवे द्नेप्र, प्रीप्यात तथा नेमान होते हुए वाल्टिक सागर पहुच जाया करेगे। भूमध्य सागर के पूर्वी भाग का रास्ता घटकर लगभग आधा हो जायेगा।

पार्टी कार्यक्रम मे मशीन-निर्माण के जवर्दस्त विकास की अवधारणा की गयी है। व्यापक मशीनीकरण और स्वचलीकरण की निर्धारित योजना को पूरा करने का सिर्फ यही रास्ता है। हमे अनेक प्रकार की अत्यन्त कार्य-क्षम और कम-खर्च मशीनो, औजारो और उपकरणो तथा विभिन्न प्रकार के स्वचल और रेडियो-इलेक्ट्रानिक यत्रो के आम उत्पादन का प्रवन्ध करना होगा। हमे उद्योग, कृषि और निर्माण के लिए उन्नत मशीनो का पूरा सिलसिला विकसित करना होगा। आगामी वीस वर्षो मे हम मुख्यत देश के पूर्वी भाग मे २,८०० नये इजीनियरिंग उद्योग तथा धातु-विधायन के कारखानो का निर्माण और १,९०० पुराने कारखानो का पुनर्निर्माण करेगे। इससे हम मशीन-निर्माण और धातु-विधायन उद्योगो का कुल उत्पादन १० से ११ गुना तक वढाने मे समर्थ होगे, जिसमे स्वचल और अर्ध-स्वचल लाइनो के उत्पादन मे भी ६० गुना से अधिक वृद्धि शामिल है।

रसायन उद्योग का असाधारण महत्व हो गया है। २० वर्षो मे उसके उत्पादनो के सिलसिले का जवर्दस्त प्रसार करके उसमे १७

गुना वृद्धि करना निर्धारित है। पोलिमेरो के रसायन मे काफी प्रगति होगी। सश्लिष्ट रालो और प्लास्टिक का उत्पादन करीब ६० गुना बढेगा। उपभोक्ता सामान के उत्पादन के लिए विशेष महत्व रखनेवाले कृत्रिम और सश्लिष्ट रेशो का उत्पादन करीब १५ गुना बढेगा। खनिज खादो का उत्पादन ६ से १० गुना तक वढाया जाना है।

आम रूपरेखा मे भारी उद्योग की ईंधन और धातु-कर्म जैसी महत्वपूर्ण शाखाओ के विकास पर काफी ध्यान दिया गया है। सब प्रकार के ईंधनो का उत्पादन करीब चौगुना बढ जायेगा। बीस वर्षो मे गैस की निकासी १४ से १५ गुना तक बढ जायेगी और कोयले की निकासी १९६० के ५१ करोड ३० लाख टन से बढकर १९८० मे १ अरब २० करोड टन हो जायेगी। १९८० मे तेल की निकासी ६९–७१ करोड टन हो जायेगी। तुलना की दृष्टि से मैं बता दू कि १९६० मे सोवियत सघ ने १४ करोड, ८० लाख और सयुक्त राज्य अमेरिका ने ३४ करोड ८० लाख टन तेल निकाला था।

लोहा और इस्पात उद्योग को लगभग २५ करोड टन इस्पात प्रति वर्ष पैदा करने की क्षमता प्राप्त करना है। १९६० मे सोवियत सघ ने ६ करोड ५० लाख टन इस्पात पैदा किया था और अमेरिका ने ९ करोड टन। ९ साल के थोडे अर्से मे ही सोवियत इस्पात-उत्पादन अमेरिका के मौजूदा उत्पादन से ५ करोड ५० लाख टन बढ जायेगा। अर्थशास्त्रियो ने हिसाब लगाया है कि हम इस्पात-उत्पादन के स्तर को और अधिक ऊचा कर सकते है। लेकिन फिलहाल हमने करीब २५ करोड टन का लक्ष्य रखा है। लौह धातुओ का स्थान ले सकनेवाले पदार्थो के उत्पादन के तीव्र विकास, धातुओ के गुण में सुधार और उनका मितव्यय तथा मशीनो की डिजाइनसाजी और उन्हे बनाने मे नयी सफलताओ के कारण हम सम्भवत इससे कम इस्पात से काम चला सकेगे। ऐसी स्थिति मे धातु-उद्योग के विकास की योजनाए तदनुसार ही सशोधित कर ली जाएगी।

बिजली-इजीनियरिंग, रसायन-उद्योग, एलेक्ट्रोनिक्स, उपकरण-निर्माण, आण्विक और आतरिक्ष इजीनियरिंग तथा तीव्रगामी परिवहन जैसी तेजी से बढनेवाली शाखाओ की माग के फलस्वरूप धातु के कुल व्यय मे लौहेतर धातुओ का हिस्सा और भी बड़ा होगा। मिलावटी

लौहेतर धातुओ, दुर्लभ धातुओ और अर्ध-सवाहक सामग्रियो का उत्पादन वढाना पडेगा। अलमूनियम का उपयोग विशेष रूप से वढेगा।

तामीराती सामान का उद्योग भी तेज रफ्तार से वढाया जाना चाहिए। १९८० मे सीमेट-उत्पादन २३ करोड ५० लाख टन के लगभग होगा, या यो कहे कि २० वर्ष मे उसकी वृद्धि पाच गुनी से भी अधिक होगी।

आगामी २० वर्ष मे सभी उपभोक्ता माल के उद्योगो का उत्पादन लगभग पाच गुना वढेगा। उदाहरणार्थ, १९८० तक कपडे का उत्पादन तीन गुना से भी अधिक वढना है, जिससे वार्षिक उत्पादन २० से २२ अरव वर्ग मीटर तक पहुच जायेगा। चमडे के जूतो का उत्पादन कोई १ अरव जोडो के आसपास होगा। सास्कृतिक और घरेलू उपयोग के माल का उत्पादन, जिसकी माग तेजी से वढ रही है, दस गुना अधिक हो जायेगा। इसके लिए यह आवश्यक है कि हलके और खाद्य-उद्योगो मे पूजी-विनियोग का शीघ्र और वेहतर सगठन किया जाय और सैकडो नयी फैक्टरियो और कारखानो का निर्माण किया जाय। हमे धातु-कर्म की मशीनरी जैसी चीजो की अपेक्षा उपभोक्ता तथा गृहोपयोगी मालो की, घरेलू इस्तेमाल के औजारो और उन सभी चीजो की फिक्र किसी तरह कम नही होनी चाहिए, जिनसे सोवियत जनता का जीवन और अधिक आसान तथा आकर्षक वनता है।

साथियो, हमे इस तथ्य पर अच्छी तरह ध्यान देना चाहिए कि कम्युनिस्ट स्तर के उत्पादन की उपलब्धि के लिए श्रम-उत्पादकता निर्णयकारी है। सामाजिक श्रम की वढ़ती हुई उत्पादकता हमारी प्रगति की कसौटी और रहन-सहन के स्तर के सुधार का सवसे महत्वपूर्ण स्रोत है। इस प्रश्न को किसी भी दूसरे ढग से पेश करना कोरा मनीलोववाद* होगा।

हमारे सामने उत्पादन वढाने, प्रचुरता पैदा करने के विराट कार्यभार

---

*मनीलोव – रूसी लेखक गोगोल की प्रसिद्ध कृति 'मृत आत्माए' का एक पात्र है जिसका नाम निष्क्रिय रूप से हवाई किले वनाने का पर्यायवाची वन गया है। – सं०

है। लेकिन ऐसी हालत मे उनकी पूर्ति की गारंटी कैसे की जा सकती है, जबकि श्रमिको की सख्यात्मक वृद्धि सीमित है, जो बीस वर्ष मे करीब ४० प्रतिशत ही होगी और उसका भी काफी बडा हिस्सा अनुत्पादक क्षेत्र, मुख्यतया शिक्षा तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य मे लग जायेगा, और इसके अलावा काम के घंटो मे भी कमी होगी? इस प्रश्न का केवल एक ही उत्तर है श्रम की उत्पादकता भी तदनुकूल ही बढाना होगी। हमारे योजना-निकायो का तखमीना है कि १९६१–१९८० मे राष्ट्रीय आय की वृद्धि का नव्वे प्रतिशत से भी अधिक भाग श्रम-उत्पादकता मे वृद्धि से प्राप्त होगा। सोवियत उद्योग मे श्रम-उत्पादकता अगले १० वर्ष मे लगभग दुगुनी और २० वर्ष मे चार से साढ़े चार गुनी तक बढ जायेगी। काम के घटो मे कमी की दृष्टि से घटेवार उत्पादन की वृद्धि और भी अधिक होगी।

अगले २० वर्ष मे उत्पादन-शक्तियो के वितरण मे अपर सुधार किया जाना है। इससे हम सामाजिक श्रम मे अधिकतम किफायत करने, उत्पादन-वृद्धि की गति को बढाने और विपुल नयी प्राकृतिक सम्पत्ति को समाज की सेवा मे लगाने मे समर्थ होगे।

उत्पादन-शक्तियो के वितरण के क्षेत्र मे प्रस्ताव ये है

—सतही भण्डारो के सस्ते कोयले और अनगारा तथा येनीसेई के विशाल पन-बिजली-साधनो के आधार पर साइबेरिया मे ईंधन और ऊर्जा-उत्पादन के शक्तिशाली केन्द्रो का निर्माण करना,

—मध्य एशिया को उसकी गैस और नदियो के अपार स्रोतो के आधार पर एक प्रमुख ऊर्जा-उत्पादन-क्षेत्र बना देना,

—धातु-उद्योग के नये शक्तिशाली केन्द्र निर्माण करना, ताकि १९८० तक देश मे धातु-उद्योग के पाच अखिल सघीय केन्द्र हो जाए—उराल मे, उक्रइना मे, साइबेरिया और सुदूर पूर्व के क्षेत्रो मे, कजाखस्तान तथा सोवियत सघ के यूरोपी भाग के केन्द्रीय क्षेत्रो मे,

—सस्ती प्राकृतिक और पेट्रोलियम गैसो से सम्पन्न क्षेत्रो मे, तथा मुख्यत· उराल, वोल्गा-क्षेत्र, उक्रइना, उत्तरी काकेशिया, साइबेरिया और मध्य एशिया मे रासायनिक उद्योग और तेल-शोध उद्योग के बडे बड़े केन्द्र स्थापित करना;

–उराल से पूरब के क्षेत्रो मे उन इलाको की मशीनो और औज़ारो की अधिकाश आवश्यकता की पूर्ति के लिए शक्तिशाली मशीन-निर्माण उद्योग स्थापित करना ;

–सोवियत सघ के यूरोपी भाग के उत्तरी क्षेत्रो से पानी की अत्यधिक मात्रा को वोल्गा क्षेत्र मे ले जाने के लिए वडे पैमाने पर निर्माण-कार्य करना, मध्य कजाखस्तान, त्सेलीनी इलाका, दोनेत्स के कोयला-क्षेत्र और उराल को पानी बहुम पहुचाना, मध्य एशिया मे और वोल्गा, द्नेप्र, बुग और द्नेस्त्र नदियो पर पानी को नियत्रित करनेवाले जलागार वनाना और सिचाई तथा भूमि-सुधार द्वारा कृषि को विस्तृत पैमाने पर विकसित करना।

ऐसी है हमारे उद्योग के विकास की आम सम्भावनाए। ये सचमुच ही शानदार सम्भावनाए है। मगर हम खूव अच्छी तरह जानते है कि आज की योजना कल की वास्तविकता वन जायेगी। हमारी पार्टी और हमारी जनता का, महाबलशालिनी जनता का सकल्प इसकी जमानत है।

(पूर्वोक्त प्रकाशन, पृष्ठ १६८–१७७)

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी एक महान कार्यभार प्रस्तुत कर रही है। वह है आगामी बीस वर्ष मे किसी भी पूजीवादी देश की अपेक्षा उच्चतर जीवन-स्तर उपलब्ध करने तथा भौतिक एव सास्कृतिक मूल्यो की प्रचुरता के लिए आवश्यक परिस्थितिया पैदा करने का कार्यभार।

आगामी दस वर्षो में ही सोवियत जनता का प्रत्येक हिस्सा पर्याप्तता का उपभोग करेगा और उसकी भौतिक खुशहाली सुनिश्चित हो जायेगी। इस तरह कम्युनिज्म एक ऐसे मामले मे पूजीवाद से अपनी निर्णयात्मक श्रेष्ठता सिद्ध कर देगा, जिससे प्रत्येक व्यक्ति का निरपवाद सम्वन्ध है। **इतिहास में पहली वार अभाव का पूर्णतः और अन्तिम रूप से अन्त हो जायेगा।** नये समाज की यह भव्य उपलब्धि होगी। कोई भी पूजीवादी देश अपने लिए ऐसा लक्ष्य नही निर्धारित कर सकता।

दो बुनियादी शर्ते है जो सोवियत जनता को उच्चतम जीवन-स्तर उपलब्ध करने मे समर्थ बनाएगी। पहली शर्त है श्रम-उत्पादकता की

वृद्धि, समस्त सामाजिक उत्पादन और राष्ट्रीय आय मे ऐसी वृद्धि जो पूजीवाद की क्षमता के बाहर है। दूसरी, वढती हुई उत्पादन-शक्तियो और सामाजिक सम्पत्ति का समूची जनता के हित के लिए उपयोग। इस तरह प्रचुरता के कम्युनिस्ट कार्यक्रम का एक ठोस आधार है, जबकि पूजीवादियो की अनेकानेक "जन कल्याण" सम्बन्धी प्रचार-योजनाए जनता को छलने की महज नयी कोशिशे है।

पार्टी समझती है कि भारी उद्योग और राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था की अन्य शाखाओ के विकास को जारी रखते हुए, हम निकट भविष्य मे ही जीवन-स्तर को ऊचा उठाने की गति मे जबर्दस्त तेजी पैदा कर सकते है और हमे जरूर करना चाहिए। आबादी के हर आदमी पीछे वास्तविक आय आगामी दस वर्षो मे दुगुनी और २० वर्षो मे साढे तीन गुनी हो जायेगी। जनसख्या की वास्तविक आय की उस वृद्धि का स्रोत सोवियत सघ की **राष्ट्रीय आय** की वृद्धि होगा। राष्ट्रीय आय १६८० तक ७२०—७५० अरब रूबल सालाना, यानी मोटे तौर से १६६० की आय की अपेक्षा पाच गुनी अधिक हो जाएगी।

जनता के जीवन-स्तर को उठाने मे किन बुनियादी प्रवृत्तियो का अनुसरण करना पडेगा?

आगामी कुछ वर्षो मे **जनसंख्या के हर हिस्से को अच्छा, उच्च कोटि का भोजन मिलने लगेगा।** आगामी दस वर्षो मे आबादी के हर आदमी पीछे खाद्य-उपभोग मे निम्नलिखित वृद्धि को लक्ष्य बनाया गया है. गोश्त और गोश्त से बनी चीजो मे ढाई गुनी, दूध और दूध से बनी चीजो मे दुगुनी, मक्खन मे डेढ़ गुनी, वनस्पति तेल मे दुगुनी, अडो मे २ २ गुनी, मछली और मछली से बनी चीजो मे डेढ गुनी, चीनी मे डेढ गुनी, सब्जियो और खरबूजो-तरबजो मे २ ३ गुनी, फलो और बेरो मे करीब ५ गुनी। रोटी और आलू की खपत कुछ कम हो जायेगी। इसका अर्थ यह है कि भोजन मे सबसे अधिक पुष्टिकर और उच्च श्रेणी के खाद्यो का अश बढेगा। सार्वजनिक भोजन-सेवा ·अधिक से अधिक विकसित की जायेगी। उसका प्रसार आगामी १० वर्षों मे तिगुने से अधिक और २० वर्षो मे लगभग १३ गुना हो जाएगा। उसे धीरे धीरे

घर पर भोजन पकाने के मुकाबले तरजीह मिलने लगेगी। भोजन-सेवा प्रतिष्ठानो मे दाम लगातार कम होता जायेगा।

आगामी १० वर्षो मे सम्पूर्ण सोवियत जनता सभी उपभोग की वस्तुएं पर्याप्त मात्रा में प्राप्त कर सकेगी और उसके बाद के १० वर्षो में उपभोक्ता-मांगो की पूर्णतः तुष्टि होने लगेगी। योजना मे यह लक्ष्य रखा गया है कि २० वर्पो मे आबादी के हर आदमी पीछे वस्त्र और जूते का उपभोग लगभग साढे तीन गुना और घरेलू तथा सास्कृतिक वस्तुओ का साढे पाच गुना बढ जाएगा। फर्नीचर बनाने मे ६ गुनी से ८ गुनी तक वृद्धि होगी। बिजली की नवीनतम घरेलू मशीनो और औजारो के आधार पर गृहस्ती का बिजलीकरण हो जाएगा।

(पूर्वोक्त प्रकाशन, पृष्ठ १९६–१९८)

पार्टी ने अगले दस साल के भीतर हमारे देश को दुनिया की अग्रणी औद्योगिक शक्ति बनाने, सकल औद्योगिक उत्पादन और फी आदमी उत्पादन, दोनो ही लिहाज से अमेरिका से बाजी मार ले जाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। लगभग उसी मुद्दत मे कृषि-उत्पादन मे सोवियत सघ का स्तर सयुक्त राज्य अमेरिका के फी आदमी कृषि-उत्पादन के वर्तमान स्तर से पचास फीसदी ऊचा हो जायेगा और उसकी राष्ट्रीय आमदनी का स्तर अमेरिका की अपेक्षा अधिक हो जायेगा।

मगर यह सिर्फ पहला लक्ष्य है। हम उतने ही पर बस नही करेगे। दूसरे दस साल के दौरान में, यानी १९८० तक हमारा देश आबादी के हर आदमी पीछे औद्योगिक और कृषि सम्बन्धी उत्पादन में अमेरिका को बहुत पीछे छोड़ देगा।

(पूर्वोक्त प्रकाशन, पृष्ठ २२४–२२५)

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम ने न केवल राजनैतिक लक्ष्यो की घोषणा की है, बल्कि कम्युनिस्ट समाज के भौतिक और तकनीकी आधार के निर्माण की आवश्यकता को भी वैज्ञानिक ढग से

सिद्ध कर दिया है। अब सोवियत जनता उद्योग तथा कृषि-विकास की एक ऐसी योजना से लैस है, जिसे गहराई और व्यापकता दोनो की दृष्टि से अच्छी तरह हिसाब लगाकर तैयार किया गया है और जो हमारे देश की उत्पादन-शक्तियो के जबर्दस्त उत्थान की योजना है। कम्युनिज्म के भौतिक और तकनीकी आधार के निर्माण के लिए उत्पादन के जिस स्तर तक हमारे देश को जरूर पहुचना चाहिए, उसे पार्टी ने निश्चित कर दिया है।

इस प्रकार कम्युनिस्ट निर्माण की योजना को लाखो टन इस्पात और ईंधन मे, अरबो कीलोवाट घंटे बिजली मे, रसायन, इजीनियरिंग और हल्के उद्योगो की विकास-गति की जबर्दस्त तेजी मे, करोडो टन अनाज, लाखो टन गोश्त, दूध तथा अन्य उत्पादनो मे अभिव्यक्त किया गया है। उत्पादन के कम्युनिस्ट स्तर को निर्धारित करके पार्टी ने लाखो लोगो को यह दिखा दिया है कि जनता के लिए भौतिक कल्याण की प्रचुरता की सृष्टि के लिए किन क्षमताओ तथा सुरक्षित साधनो का उपयोग किया जाएगा।

(कम्युनिस्ट निर्माण के कार्यक्रम की पूर्ति के लिए परती भूमि-विकास का महत्व। 'सोवियत सघ मे कम्युनिज्म का निर्माण और खेतीबारी का विकास' शीर्षक सग्रह, खण्ड ६, पृष्ठ १२३–१२४)

कम्युनिज्म के भौतिक और तकनीकी आधार का निर्माण जनता के भौतिक तथा आत्मिक सुख-सुविधाओ की प्रचुरता की जमानत की मुख्य शर्त है, जिसके बिना समाजवादी वितरण की व्यवस्था के स्थान पर कम्युनिस्ट वितरण की व्यवस्था लागू करना असभव है। कार्यक्रम में उत्पादन-शक्तियो के विकास पर, कम्युनिज्म के भौतिक और तकनीकी आधार के निर्माण पर इतना अधिक ध्यान देकर क्या हमने ठीक किया है?

हम इस प्रश्न का निस्सकोच उत्तर देते है· हमारी पार्टी ने अपने कार्यक्रम मे कम्युनिज्म के भौतिक और तकनीकी आधार के निर्माण की एक सर्वांगपूर्ण दीर्घकालिक योजना को शामिल करके बिलकुल ठीक किया है, उसने लेनिनवादी भावना के साथ वैज्ञानिक ढग से काम किया है।

मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सस्थापको ने इस बात पर ठीक ही ज़ोर दिया था कि जब समाजवाद विज्ञान बन जाए, तब उसे विज्ञान की तरह बरतना चाहिए। अगर हमारे कार्यक्रम मे कम्युनिस्ट समाज के निर्माण की भूमिका के रूप मे कम्युनिज्म के भौतिक और तकनीकी आधार का निर्माण न शामिल होता, तो एक वैज्ञानिक पार्टी-कार्यक्रम की हैसियत से वह बेकार होता।

पार्टी-कार्यक्रम तैयार करने मे हमने लेनिन के आदेशानुसार काम किया है। मै एक ऐतिहासिक उदाहरण की याद दिलाऊ। 'गोएलरो' योजना को बयान करते हुए व्ला० इ० लेनिन ने बताया था "मेरी राय मे यह हमारा दूसरा पार्टी-कार्यक्रम है हमारा पार्टी-कार्यक्रम महज पार्टी-कार्यक्रम नही रह सकता। उसका विकसित होकर हमारे आर्थिक निर्माण का कार्यक्रम बन जाना लाजिमी है। अन्यथा वह पार्टी-कार्यक्रम के रूप मे भी बेकार है। उसका पूरक एक दूसरा पार्टी-कार्यक्रम, पूरी की पूरी राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था की बहाली और उसे आधुनिक स्तरो तक उन्नत करने की एक योजना बनाई जानी चाहिए।"* लेनिन ने कहा था कि "बिजलीकरण से रूस का कायाकल्प हो जाएगा। सोवियत व्यवस्था पर आधारित बिजलीकरण से हमारे देश मे कम्युनिज्म की बुनियादो की अतिम विजय के लिए पथ प्रशस्त होगा "**

इतिहास के अनुभव ने हमे दिखला दिया है कि हमारे महान शिक्षक की बात कितनी ठीक थी। 'गोएलरो' योजना, औद्योगीकरण-योजना तथा लेनिन की सामूहीकरण-योजना की बरकत से ही सोवियत भूमि मे उत्पादन के समाजवादी सम्बन्धो की जड जमी।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के नए कार्यक्रम मे यह निर्धारित करके हमारी पार्टी ने लेनिनवादी भावना के अनुसार काम किया है कि कम्युनिज्म के भौतिक और तकनीकी आधार का निर्माण करना ही हमारा मुख्य आर्थिक कार्यभार है।

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, चौथा रूसी सस्करण, खण्ड ३१, पृष्ठ ४८२।

**व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, चौथा रूसी सस्करण, खण्ड ३०, पृष्ठ ३४३।

मार्क्सवादियो का हमेशा यह विचार रहा है कि सत्ता पर अधिकार करने के बाद मज़दूर वर्ग को लाज़िमी तौर से उत्पादन-शक्तियो के विकास मे जुट जाना चाहिए। इस मार्ग की उपेक्षा करने का अर्थ है गरीबी का अन्त करने के कार्यभार को त्याग देना। इस सम्बन्ध में मार्क्स और एगेल्स ने कहा था कि उत्पादन-शक्तियो का विकास "एक नितान्त अनिवार्य व्यावहारिक शर्त इसलिए भी है, कि उसके बिना गरीबी के आम फैलाव के सिवा और कुछ भी नही होगा ..."* हमारे लिए यह बात पूर्णत: स्पष्ट है कि उत्पादन-शक्तियो के जबर्दस्त उत्थान के बिना उच्चतम सभव जीवन-स्तर की उपलब्धि के महान कार्यभार की कल्पना तक नही की जा सकती।

कम्युनिज्म के भौतिक और तकनीकी आधार की सर्जना अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। दो विश्व व्यवस्थाओ की प्रतियोगिता और सघर्ष की वर्तमान हालतो मे, आर्थिक, राजनैतिक, वैज्ञानिक और तकनीकी आदि जीवन के सभी क्षेत्रो मे साम्राज्यवाद पर शीघ्रतम विजय-प्राप्ति तथा उस विजय की सहृति के लिए समाजवाद के भौतिक साधनो को निरन्तर बढाते रहना अत्यन्त आवश्यक है। इस रास्ते को किसी भी तरह छोडने की कीमत हमे साम्राज्यवादी शक्तियो पर प्राप्त अपनी वरिष्ठता को खोकर चुकाना पडेगी, जिससे समाजवादी खेमे को, ससार भर मे क्रान्ति तथा आज़ादी की शक्तियो को ज़बर्दस्त नुकसान पहुचेगा। हमे उत्पादन-शक्तियो का ऐसा प्रबल उत्थान करना होगा, हमे समाजवादी देशो की आर्थिक तथा प्रतिरक्षात्मक शक्ति को इस प्रकार मजबूत बनाना होगा, जिससे अधिकाधिक भरोसे और पूर्णता के साथ साम्राज्यवादी आक्रमण से समाजवादी शक्तियो की हिफाजत हो सके।

सोवियत सघ और समूची समाजवादी व्यवस्था की उत्पादन-शक्तियो के प्रकाण्ड विकास की बदौलत ही आधुनिक साम्राज्यवाद विश्व समाजवादी खेमे की, समाजवाद के वर्तमान बल की परवाह करने के लिए

---

*कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एगेल्स, सग्रहीत रचनाए, रूसी सस्करण, खण्ड ३, पृष्ठ ३३।

विवश है। यह सारे ससार के प्रगतिशील लोगो की ग्राम मान्यता है कि सोवियत सघ तथा दूसरे समाजवादी देशो का बल साम्राज्यवादी ग्राक्रमण की, नए विश्व-युद्ध की मुख्य रोक का काम करता है। साम्राज्यवाद के खिलाफ सफलतापूर्वक सघर्ष करने के लिए केवल नारे ही काफी नही हैं। इस सघर्ष को सफलतापूर्वक चलाने के लिए समुचित साधनो की जरूरत है। ऐसे साधनो मे विजयी समाजवाद की भौतिक शक्तियो की भूमिका निर्णयात्मक होती जा रही है ग्रौर निरन्तर बढ रही है।

(कम्युनिस्ट निर्माण की वर्तमान मजिल ग्रौर कृषि-प्रबन्ध के सुधार मे पार्टी के कार्यभार। 'सोवियत सघ मे कम्युनिज्म का निर्माण ग्रौर खेतीबारी का विकास' शीर्षक सग्रह, खण्ड ६, पृष्ठ ३३८–३४०)

कम्युनिज्म में संक्रमण की विशेषताएं

मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सस्थापको ने जोर देकर कहा था कि कम्युनिज्म ग्रौर समाजवाद के बीच कोई दीवार खीचकर उन्हे ग्रलग नही किया गया है। कम्युनिज्म ग्रौर समाजवाद एक ही ग्रार्थिक-सामाजिक व्यवस्था की दो मज़िले है जो ग्रार्थिक विकास ग्रौर सामाजिक सम्बन्धो की परिपक्वता की मात्रा मे ही एक-दूसरी से भिन्न हैं।

समाजवाद स्वय ग्रपनी नीव पर नही विकसित होता। विश्वव्यापी ऐतिहासिक महत्व की उसकी ग्रपार उपलब्धियो के वावजूद, समाजवाद पर कई लिहाज से–ग्रार्थिक, कानूनी, नैतिक तथा लोगो की चेतना के लिहाज़ से भी–उस पुरानी व्यवस्था की छाप है, जिससे वह निकला है। कम्युनिज्म सामाजिक जीवन की एक उच्चतर ग्रौर ग्रधिक सर्वागपूर्ण मजिल है ग्रौर वह समाजवाद के पूरी तरह सुदृढ होने के बाद ही विकसित हो सकता है। कम्युनिज्म के तहत पूजीवादी व्यवस्था के सभी प्रभाव पूर्णतया नष्ट हो जाएगे।

कम्युनिज्म खुद ग्रपनी ही नीव पर विकसित होता है। यह तथ्य उसके निर्माण की विशिष्ट प्रक्रियाग्रो को पूर्वनिश्चित कर देता है। पूजीवाद से समाजवाद मे सक्रमण वर्ग-सघर्ष की परिस्थितियो मे सम्पन्न

होता है। वह सामाजिक सम्बन्धो के बुनियादी विखडन, व्यापक सामाजिक क्रान्ति और सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व की स्थापना की माग करता है। इसके विपरीत कम्युनिज्म मे सक्रमण तब होता है जब कोई शोषक वर्ग नही रह जाता, जब समाज के सभी सदस्यो—मजदूरो, किसानो और बुद्धिजीवियो—का स्वार्थ कम्युनिज्म की विजय मे ही निहित होता है और वे सचेत रूप से उसके लिए काम करते है। इसलिए स्वभावत कम्युनिज्म का निर्माण अत्यन्त जनवादी तरीको से, सामाजिक सम्बन्धो मे सुधार और विकास करने के तरीको से किया जाता है, जिसमे जीवन के पुराने रूपो की समाप्ति और नये रूपो के प्रादुर्भाव, उनके अन्तस्सम्बन्ध और पारस्परिक प्रभाव का उचित ध्यान रखा जाता है। समाज को अब वे कठिनाइया नही अनुभव होगी जो देश के अदर वर्ग-सघर्ष से पैदा हुई थी। यह सब कुछ कम्युनिज्म की ओर सक्रमण-काल मे सामाजिक विकास की रफ्तार को तेज करने मे सहायक होता है।

(सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम के बारे मे। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २२ वी काग्रेस, शार्टहैड रिपोर्ट, खण्ड १, पृष्ठ १६६)

सृजनात्मक श्रम का आनन्द

श्रम के चरित्र मे और मजदूरो के पारस्परिक सबधो मे नयी विशेषताए अधिकाधिक प्रत्यक्ष होती जा रही है। इस सम्बन्ध मे मुख्य बात यह है कि मेहनतकश जनता के अधिकाधिक बडे हिस्सो मे सचेत रूप से, अपनी पूरी योग्यता के साथ काम करने की आदत विकसित होती जा रही है। उनमे से बहुतो के लिए अब काम केवल जीविका कमाने का साधन न रहकर एक सामाजिक तकाजा, एक नैतिक कर्त्तव्य बन गया है। हमारे सामने वालेन्तीना गगानोवा का उदाहरण है, जो इस काग्रेस के अध्यक्ष-मडल के लिए चुनी गयी है। उन्होने अपनी इच्छा से एक पिछडी हुई टोली के साथ काम करने के लिए एक आगे बढी हुई टोली को छोड दिया था। उन्होने किसी निजी स्वार्थ से प्रेरित होकर नही, बल्कि हमारे सम्मिलित हेतु के प्रति कर्त्तव्य और निष्ठा की गहरी

भावना से प्रेरित होकर ऐसा किया था। गगानोवा के उदाहरण का अनेक दूसरे लोगो ने अनुसरण किया है।

सोवियत जनता की कम्युनिस्ट ढग से काम करना और रहना सीखने की इच्छा को पार्टी हमेशा प्रोत्साहन देती है। हम कम्युनिस्ट श्रम की टोलियो और तूफानी मजदूरो के आदोलन को गभीर महत्व देते है। जैसे-जैसे समय बीतता जायेगा, व्यवहार नि सदेह हमे समाजवादी प्रतियोगिता के दूसरे तथा और भी परिष्कृत रूप सुझाता जायेगा।

(सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २२ वी काग्रेस मे प्रस्तुत की गई पार्टी की केन्द्रीय समिति की रिपोर्ट। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २२ वी काग्रेस, शार्टहैड रिपोर्ट, खण्ड १, पृष्ठ ६४)

जरा याद तो कीजिए कि पहले कम्युनिस्ट सुबोत्निको की व्लादीमिर इल्यीच लेनिन ने कितनी प्रशसा की थी। वे उन्हे नए, कम्युनिस्ट अकुर समझते थे, जो अन्ततोगत्वा अपनी राह बना लेगे और सोवियत समाजवादी समाज के मेहनतकशो के जीवन मे मुख्य प्रवृत्ति की तरह जड जमा लेगे। आज उस नए, कम्युनिस्ट अकुर को कम्युनिस्ट श्रम के तूफानी मजदूरो, ब्रिगेडो और कारखानो की उपाधि प्राप्त करने के लिए होनेवाले जबर्दस्त प्रतियोगिता-आन्दोलन के रूप मे हमारे देश के जीवन मे, सोवियत जनता के जीवन मे प्रवेश करते हुए सभी देख सकते है।

यह अत्यन्त उल्लेखनीय बात है कि यह नया आन्दोलन भी मास्को-सोर्तिरोवोच्नाया डिपो से ही उठा, जहा हमारे देश मे वह पहला कम्युनिस्ट सुबोत्निक पैदा हुआ था, जिसे लेनिन ने "महान शुभारभ" कहा था।

लेनिन की तेज निगाहो ने यह देखा कि मामूली मजदूर-कम्युनिस्टो का वह सीधा-सादा उपक्रम पूजीपति वर्ग के समापन से भी बढकर महत्वपूर्ण परिवर्तन पैदा कर रहा था। उन्होने कहा कि वह मजदूरो और किसानो की अपनी प्रगतिशीलता पर विजय थी, मनहूस पूजीवादी व्यवस्था द्वारा उनके लिए विरसे के तौर पर छोडी गई पुरानी आदतो और धारणाओ के ऊपर विजय थी। लेनिन ने बताया कि चेतना की यह उथल-पुथल जितनी ही गहरी होगी और फैलेगी, कम्युनिज्म का

हेतु उतना ही अधिक अजेय बनता जाएगा। उन्होने जनता से श्रम के प्रति, समाज के लिए अपने कर्त्तव्यो के प्रति इस नई प्रवृत्ति के छोटे से छोटे अकुरो का भी पोपण करने की अपील की। लेनिन की पार्टी ने वैसा हमेशा किया है और भविष्य मे भी हमेशा करेगी। उसने श्रमिक लोगों को सम्मान और गौरव प्रदान किया है। इस प्रकार आज हम कम्युनिस्ट श्रम के तूफानी मजदूर, ब्रिगेड और कारखाने की उपाधियो के लिए होनेवाले प्रवल प्रतियोगिता-आन्दोलन मे लेनिन के इस दूरदर्शिता भरे कथन का असली रूप देखते है

"हम कम्युनिस्ट श्रम की विजय उपलब्ध करेगे।"

हम अपने रोजमर्रा के काम से लेनिन के भविष्यदर्शी शब्दो को क्रियात्मक रूप दे रहे है। कम्युनिस्ट समाज के मेहनतकश लोगो को अपने नागरिक कर्त्तव्य की, अपने श्रम के महत्व की, कम्युनिस्ट निर्माण के सम्मिलित हेतु मे अपने योगदान के महत्व की गभीर चेतना है। उसके साथ ही उनकी ऊची सस्कारिता, उनकी ज्ञान-पिपासा, एक अच्छे ढग की मानवीय बेचैनी, जो सृजनात्मक श्रम मे रत लोगो की चारित्रिकता होती है, उन्हे एक विशिष्टता प्रदान करती है। साथियो। यह बडी प्रसन्नता की बात है। कम्युनिस्ट समाज के लोगो मे सामाजिक चेतना लाजिमी है, उन्हे ऐसे सुशिक्षित और सुसस्कृत लोग बनना लाजिमी है, जिनके लिए श्रम वैसी ही प्राणमूलक आवश्यकता है जैसी नए ज्ञान की उपलब्धि, सास्कृतिक स्तरो का उन्नयन तथा कम्युनिस्ट मानवीय सम्बन्धो के मानको का पालन। महान चिन्तको ने ऐसे ही लोगो का, ऐसे ही समाज का सपना संजोया था। वैज्ञानिक कम्युनिज्म के सस्थापक मार्क्स और एगेल्स तथा हमारे अमर नेता और शिक्षक व्लादीमिर इल्यीच लेनिन की मानसिक दृष्टियो मे ऐसे ही लोग थे।

(रचनात्मक श्रम द्वारा शान्ति को दृढ कीजिए, पूजीवाद के साथ आर्थिक प्रतियोगिता मे विजय सुनिश्चित कीजिए। कम्युनिस्ट श्रम के तूफानी मजदूरो और ब्रिगेडो के प्रतियोगिता-आन्दोलन के अग्रणी सदस्यो के अखिल संघीय सम्मेलन में किया गया भाषण। २८ मई १९६०। 'सोवियत सघ की विदेश-नीति (१९६०)' शीर्षक सग्रह, खण्ड १, पृष्ठ ५९८ – ५९९)

प्रत्येक से उसके सामर्थ्यानुसार, प्रत्येक को उसके आवश्यकतानुसार

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के नए कार्यक्रम को विदेशों मे अनेक प्रतिक्रियाएं हुई हैं। कुछ लोग तो कार्यक्रम में जनता की भौतिक सुख-सुविधाओ के उत्पादन पर दिये गये विशेष ज़ोर के बारे मे आपत्ति करते है। हमारे पार्टी-कार्यक्रम के कुछ दूसरे आलोचक सोवियत कम्युनिस्टो को ऐसे लोगो की तरह पेश करने की कोशिश करते है, जो कम्युनिज्म को मानो खाने की अच्छी-अच्छी चीज़ो से लदी हुई मेज़ के रूप मे चित्रित करने की प्रवृत्ति रखते हैं।

कम्युनिस्टो की, मार्क्सवादियों-लेनिनवादियों की ऐसी मलामत कुछ नई नही है। वैज्ञानिक कम्युनिज्म के आदर्शवादी विरोधियो ने मार्क्सवादियों-लेनिनवादियो के जनता की दैनिक आवश्यकताओ के प्रति, उनकी भौतिक जरूरतो की पूर्ति के प्रति समझदारी और यथार्थदर्शिता से भरे दृष्टिकोण का हमेशा मज़ाक उडाने और उसे बदनाम करने की कोशिश की है। हमारे विरोधियो ने जनता के कल्याण के सम्बन्ध मे कम्युनिस्टो की फिक्रमन्दी को हमेशा भोंडे और बेहद विकृत ढग से पेश करने की कोशिश की है।

मार्क्सवादियो-लेनिनवादियो ने कम्युनिज्म के खिलाफ ऐसे हमलो का हमेशा पर्दाफाश किया है और उनका दृढ़तापूर्वक मुकाबला किया है।

हमारी पार्टी कम्युनिस्ट समाज के निर्माण का सम्बन्ध प्रचुर भौतिक तथा सांस्कृतिक मूल्यो की उपलब्धि के साथ क्यो जोड़ती है? शायद हम कम्युनिज्म को प्रचुरता के एक ऐसे चषक के रूप में पेश करके कम्युनिस्ट चेतना की, कम्युनिस्ट आदर्श-निष्ठा की भूमिका को तुच्छ तो नहीं बना रहे हैं, जिस तक सबकी पहुंच होगी और जिससे सभी अपनी भौतिक तथा मानसिक आवश्यकताओ की पूर्ण तुष्टि लाभ करेंगे?

कम्युनिस्ट समाज हमारे लिए, सभी मार्क्सवादियों-लेनिनवादियों के लिए समाज के सभी सदस्यो की पूर्ण सामाजिक समानता, सभी नागरिको की उच्च राजनैतिक चेतना और आदर्श-निष्ठा, भौतिक तथा मानसिक मूल्यो की प्रचुरता और तमाम मेहनतकश जनता के लिए एक सुखी और खुशहाल जिन्दगी—एक साथ ही सब कुछ है। अपनी गिरी हुई रहाइश और अपनी फकीरी से सयुक्त प्रारभिक ईसाई-समुदायो की

भावना के साथ समानता का धर्मोपदेश वैज्ञानिक कम्युनिज्म के लिए विजातीय तत्त्व है। कम्युनिज्म को एक ऐसी मेज के रूप मे पेश करना निषिद्ध है, जो "उच्च चेतनायुक्त" और "नितान्त समान" लोगो के लिए खाली तश्तरियो से लदी हो। ऐसे "कम्युनिस्ट समाज" में लोगो को निमन्त्रित करना उन्हे सुए से दूध पीने के लिए निमन्त्रित करने के समान है। वह कम्युनिज्म नही, कम्युनिज्म का भडौआ होगा।

वैज्ञानिक कम्युनिज्म के सस्थापक मार्क्स, एगेल्स और लेनिन ने भावी कम्युनिस्ट समाज के बुनियादी उसूलो की व्याख्या की है। देखा जाए कि कम्युनिज्म के सबसे बडे सिद्धान्तकार कार्ल मार्क्स ने कम्युनिस्ट समाज को किस तरह चित्रित किया है। आपको उनका वह सूत्र याद होगा कि कम्युनिस्ट समाज की सबसे ऊची मजिल मे "केवल तभी पूजीवादी कानून के सकुचित क्षितिज को पूरा का पूरा पार किया जाएगा, जब व्यक्ति के सर्वतोमुख विकास के साथ उत्पादन-शक्तिया भी बढ चुकेगी और सर्वजनिक संपत्ति के समस्त स्रोत अधिक प्रचुरता के साथ प्रवाहित होने लगेगे, केवल तभी समाज की ध्वजा पर ये शब्द अकित होगे प्रत्येक से उसके सामर्थ्यानुसार प्रत्येक को उसके आवश्यकतानुसार!"*

अपने 'कम्युनिज्म के उसूल' मे फ्रे० एंगेल्स ने लिखा है कि नया समाज "अपने सभी सदस्यो की आवश्यकताओ की पूर्त्ति करने के लिए पर्याप्त मात्रा मे उपजे"** पैदा करेगा।

व्लादीमिर इल्यीच लेनिन ने जोर देकर कहा कि पूजीवादी समाज के स्थान पर समाजवादी समाज की स्थापना "उसके सभी सदस्यो के पूर्ण कल्याण और स्वतंत्र सर्वतोमुख विकास की जमानत करने के उद्देश्य से"*** सम्पन्न होगी।

---

*कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एगेल्स, संकलित रचनाए, दो खण्डो मे, रूसी सस्करण, मास्को, 'गोस्पोलीतइज्दात' प्रकाशन गृह, १९५५, खण्ड २, पृष्ठ १५।

**कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एगेल्स, सग्रहीत रचनाए, रूसी सस्करण, खण्ड ४, पृष्ठ ३३५।

***व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाएं, पाचवां रूसी संस्करण, खण्ड ६, पृष्ठ २०४।

कम्युनिज्म की यही मार्क्सवादी-लेनिनवादी धारणा सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम का आधार है, जिसमे कहा गया है कि पार्टी का लक्ष्य जनता की बढती हुई भौतिक तथा मानसिक आवश्यकताओ की अधिकाधिक पूर्णतर तुष्टि उपलब्ध करना है। इस बात को भूलने का अर्थ है पदार्थवादी दृष्टिकोण को तिलाजलि देना, सामाजिक विकास के वस्तुपरक नियमो को गलत ढग से समझना, फिसलकर आत्मवाद मे गिरना और आदर्शवादी दृष्टिकोण अपनाना।

यह बात हमारे शिक्षको के विचारो के पूर्णत अनुकूल है कि सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी का कार्यक्रम कम्युनिज्म को गरीबो मे समानता स्थापित करनेवाले समाज के रूप मे नही, बल्कि एक ऐसे समाज के रूप मे पेश करता है जहा समाज के सभी सदस्यो के लिए भौतिक तथा मानसिक सुख-सुविधाओ की प्रचुरता उपलब्ध की गई है और जहा मानव-व्यक्तित्व का सर्वतोमुख विकास प्रतिभूत है। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी का कार्यक्रम कम्युनिज्म के इस महान और उच्च आदर्श से ओत-प्रोत है सब कुछ इसान के नाम मे, इसान के लाभ के लिए।

मजदूर वर्ग ने, तमाम मेहनतकश जनता ने पूजीवाद पर हमला बोल दिया और समाजवाद तथा कम्युनिज्म को अपने सघर्ष की पताका बनाया, तो इसलिए बनाया कि उसपर एक महान लक्ष्य अकित था— मेहनतकश जनता की गुलामी और शोषण की व्यवस्था का उन्मूलन, एक ऐसे समाज की सर्जना जिसमे सचमुच सभी आजाद और बराबर हो और जिसमे सभी मेहनतकश लोगो के लिए शाति, आज़ादी और सुख का बोलबाला हो।

रूस की ही मिसाल लीजिए। पाशविक शोषण तथा उत्पीडन ने मजदूर वर्ग को, समस्त मेहनतकश जनता को क्रान्तिकारी सघर्ष का मार्ग ग्रहण करने की प्रेरणा दी। यह नही कहा जा सकता कि जब रूस के तमाम मज़दूरो और किसानो ने इनकिलाब का झडा बुलन्द किया तब वे वैज्ञानिक कम्युनिज्म का सिद्धान्त जानते थे। केवल अत्यधिक अग्रसर लोग, क्रान्तिकारी लोग ही उस सिद्धान्त की ठीक जानकारी रखते थे। जहा तक जन-समुदायो का सम्बन्ध है, उन्होने क्रान्तिकारियो का अनुसरण

इसलिए किया कि जनता के जीवन की भौतिक परिस्थितियो ने उन्हे पूजीपतियो और जमीदारो के खिलाफ संघर्ष करने को प्रेरित किया।

'चपायेव' नामक चल-चित्र मे एक अच्छी बात सामने लाई गई है। जब चपायेव से यह पूछा गया कि आप किस इन्टरनेशनल के पक्ष मे है, दूसरे के पक्ष मे या तीसरे के, तब उन्होने जवाब दिया कि जिसके पक्ष मे लेनिन है। यह बिलकुल सच है कि उस समय अधिकतर किसान और लाल फौज के अधिकतर जवान बोल्शेविज्म का सिद्धान्त नही जानते थे। फिर भी उनका प्रबल बहुमत बोल्शेविको के पक्ष मे था। वे यह जानते थे कि बोल्शेविक शांति के पक्ष मे है, साम्राज्यवादी युद्ध के विरोध में है, वे पूजीपतियो और जमीदारो के ख़िलाफ है और वे इस उद्देश्य के लिए लड रहे है कि किसानो को जमीन और मजदूरो को कारखाने और फैक्टरिया बिना दाम मिलें, ताकि सभी श्रमजीवी बेहतर जीवन बिता सकें। मजदूरो और किसानो ने समाजवादी क्रान्ति का रास्ता उस पूजीवादी व्यवस्था का तख़्ता उलटने के उद्देश्य से अपनाया था, जिसका नतीजा पाशविक राजनैतिक, आर्थिक तथा जातीय उत्पीड़न था, जनता की गुलामी था।

लेनिन की पार्टी ने, मजदूर वर्ग और उसके सहयोगियो ने इसान को एक माकूल जिन्दगी देने के लिए सघर्ष किया। आज वे कम्युनिस्ट समाज के निर्माण के लिए काम कर रहे हैं, जो इस महान उसूल को कार्यरूप मे परिणित करेगा: "प्रत्येक से उसके सामर्थ्यानुसार, प्रत्येक को उसके आवश्यकतानुसार"।

इससे ज्यादा गलत बेशक और कुछ भी नही हो सकता कि मार्क्सवादियो-लेनिनवादियो के सिर कम्युनिज्म को निष्क्रियता तथा आकठ-भोजियो के आलस्य का राज्य समझने का आरोप लगाया जाए। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी का कार्यक्रम, बाईसवी पार्टी काग्रेस की सामग्री इस बात को दृढतापूर्वक और जोरदार ढग से रेखाकित करती है कि कम्युनिज्म से श्रम को अलग नही किया जा सकता, समाज के सभी सदस्यो का चेतन एव निष्ठापूर्ण श्रम ही कम्युनिस्ट निर्माण की बुनियाद है और कम्युनिज्म के महान आदर्श ही इस गौरवमय श्रम के प्रेरक है। कम्युनिस्ट

समाज के निर्माण की प्रक्रिया मे ही कम्युनिज्म की उच्च चेतना तथा महती नैतिकता से सम्पन्न मानव की सर्जना होती है और होगी।

मार्क्स और एगेल्स ने लिखा है " जो लोग अपने भौतिक उत्पादन और अपने भौतिक सम्बन्धो का विकास करते है, वे इस यथार्थ के साथ साथ अपने विचार तथा अपने विचार की उपजो को भी परिवर्तित करते है। चेतना जीवन की निर्णायिका नही, बल्कि जीवन चेतना का निर्णायक है।"*

(कम्युनिस्ट निर्माण की वर्तमान मजिल तथा कृषि-प्रबध के सुधार मे पार्टी के कार्यभार। 'सोवियत सघ मे कम्युनिज्म का निर्माण और खेतीवारी का विकास' शीर्षक सग्रह, खण्ड ६, पृष्ठ ३३५–३३८)

भौतिक तथा नैतिक प्रेरणाओ का संयोग

मै कम्युनिस्ट निर्माण के लिए भौतिक प्रेरणा के लेनिनवादी उसूल के बेहद जबर्दस्त महत्व पर एक बार फिर जोर देना चाहता हू। इस उसूल मे पूजीवादी विचारधारा के लिए कोई "रियायत" देखना बिलकुल गलत होगा। इस समाजवादी उसूल और मुनाफे के लिए पूजीवादी भगदड मे कोई समानता नही है। श्रम के अनुसार समाजवादी वितरण तथा "लक्ष्मी-पूजा" के पूजीवादी पंथ मे, मुनाफे के लिए पूजीवादी भगदड और अधिक कार्य-क्षम श्रम के लिए अधिक ऊची मजदूरी के समाजवादी उसूल मे जमीन-आसमान का फरक है।

नैतिक प्रेरणा के विरोध मे भौतिक प्रेरणा को और विचारधारात्मक-शिक्षात्मक कार्य के विरोध मे भौतिक हित को पेश करना भी कुछ कम गलत नही है। हमे व्ला० इ० लेनिन ने सिखाया है कि "सीधे सीधे उत्साह के ही आधार पर नही, बल्कि महान क्रान्ति द्वारा पैदा किए गए

---

*कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एगेल्स, सग्रहीत रचनाए, रूसी सस्करण, खण्ड ३, पृष्ठ २५।

उत्साह की सहायता से, वैयक्तिक हित, वैयक्तिक प्रेरणा और आर्थिक आधार पर"* समाजवाद का निर्माण किया जा सकता है और दसियो करोड लोगो को कम्युनिज्म मे लाया जा सकता है।

समाजवादी निर्माण के समूचे ऐतिहासिक अनुभव से हमारे महान शिक्षक के इन आदेशो की पुष्टि हुई है। उन्हे त्यागने का अर्थ समाजवाद को सगीन चोट पहुचाना होगा। जन-समुदायो का क्रान्तिकारी उत्साह एक प्रचण्ड सृजनात्मिका तथा रचनात्मिका शक्ति है। पिछले पैतालीस साल की मुद्दत मे लेनिन की पार्टी ने, सोवियत जनता ने समाजवाद का निर्माण करने मे निष्ठापूर्ण श्रम तथा वीरत्व के जो नमूने प्रदर्शित किए है, वे सदिया बीत जाने पर भी धूमिल नही होगे। हमारा कार्यक्रम कम्युनिज्म के निर्माण मे भी इस शक्ति के अधिक से अधिक उपयोग की आवश्यकता की ओर ध्यान आकर्षित करता है। किन्तु कार्यक्रम की असल बुनियाद यह है कि चाहे उक्त शक्ति जितनी भी महान क्यो न हो, केवल वही काफी नही है। उत्साह को समाज की उत्पादन-शक्तियो के विकास मे मेहनतकश जनता के भौतिक हित के लेनिनवादी उसूल के साथ जोडना होगा, उसके आधार पर खडा करना होगा।

तात्पर्य यह कि विचारधारात्मक-शिक्षात्मक काम, नैतिक प्रेरणाओ के विकास और भौतिक प्रेरणाओ, भौतिक दिलचस्पी को पुष्ट करने के काम घनिष्ट रूप से जुडे हुए है। नैतिक और भौतिक प्रेरणाए एक दूसरे की सहायता करती है और दोनो ही का लक्ष्य एक है। दोनो को एक दूसरे के विरोध मे खडा करने से केवल कम्युनिस्ट निर्माण की क्षति होगी।

हमारे पार्टी-कार्यक्रम की शक्ति इस बात मे निहित है कि वह सार्वभौमिक समता तथा न्याय की व्यवस्था के रूप मे, उत्पादन-शक्तियो की अभूतपूर्व वृद्धि से मडित मानव-समाज के विकास की एक मजिल के रूप मे कम्युनिज्म की सर्वतोमुखी परीक्षा करता है। कम्युनिस्ट समाज मे विज्ञान और तकनीक मानव को प्रकृति के ऊपर विजय प्राप्त करने के अद्वितीय साधनो से लैस कर देगे और सस्कृति के खजाने समाज के

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, चौथा रूसी सस्करण, खण्ड ३३, पृष्ठ ३६।

हर सदस्य के जीवन का अविछेद्य अग बन जाएगे। ऐसे समाज मे रहनेवाले लोगो के पास स्वभावत उच्च विचारधारात्मक तथा नैतिक गुण होगे।

हमारा कार्यक्रम सशक्त इसलिए है कि वह सप्रयोजन है और उसके अभिप्रायो मे आन्तरिक एकता है, वे सभी बुनियादी तौर से परस्पर सम्बद्ध है। हमारा कार्यक्रम पार्टी तथा जनता को कम्युनिस्ट समाज और उसके निर्माण के रास्तो के बारे मे एक सही वैज्ञानिक समझ के हथियार से लैस करता है।

स्वीकृत कार्यक्रम पर काम करते हुए, पार्टी समस्त सोवियत जनता के प्रयासो को देश के उद्योग तथा खेतीबारी मे और जबर्दस्त बढोतरी हासिल करने मे सकेन्द्रित कर रही है, ताकि जनता की कल्याण-वृद्धि और कम्युनिस्ट समाज के निर्माण मे प्रगति हो।

(कम्युनिस्ट निर्माण की वर्तमान मजिल तथा कृषि-प्रबध के सुधार मे पार्टी के कार्यभार। 'सोवियत सघ मे कम्युनिज्म का निर्माण और खेतीबारी का विकास' शीर्षक सग्रह, खण्ड ६, पृष्ठ ३४२ – ३४४)

कम्युनिस्ट शिक्षा तथा व्यक्ति का सर्वतोमुख विकास

कम्युनिज्म मे समाज के सक्रमण के लिए केवल विकसित भौतिक और तकनीकी आधार ही नही वल्कि समाज के सभी सदस्यो मे ऊचे स्तर की चेतना होना भी आवश्यक है। **करोड़ो जनता की चेतना जितनी ही अधिक ऊंची होगी, कम्युनिस्ट निर्माण की योजनाएं उतनी ही अधिक सफलता के साथ कार्यान्वित की जायेंगी।** इसी लिए जनता की, विशेषकर नयी पीढी की कम्युनिस्ट शिक्षा से सबधित प्रश्नो को असाधारण महत्व प्राप्त हो रहा है।

हमारी पार्टी और हमारे राज्य की सभी विचारधारात्मक क्रियाशीलताओ का उद्देश्य है सोवियत जनता के नए गुणो को विकसित करना, उन्हे नए समाज के महान नैतिक सिद्धान्त, समष्टिवाद तथा श्रम-

प्रियता, समाजवादी अंतर्राष्ट्रीयतावाद एवं देशभक्ति की भावना में, मार्क्सवाद-लेनिनवाद की भावना में शिक्षित करना। कम्युनिज्म ही वह अधिक से अधिक न्यायसगत और निर्दोष समाज है जिसमे स्वतत्र मानव के सर्वोत्तम नैतिक गुण पूर्णतया विकसित होगे। उस कम्युनिज्म की प्राप्ति के लिए हमे अभी से भावी मानव का सस्कार करना होगा। सोवियत जनता मे कम्युनिस्ट नैतिकता को विकसित करना होगा, जो कम्युनिज्म के प्रति निष्ठा और उसके शत्रुओ के प्रति असहिष्णुता पर, सामाजिक कर्त्तव्य की भावना और समाज-कल्याण के काम मे सरगर्म शिरकत पर, मानव-सबधो के बुनियादी नियमो के स्वैच्छिक पालन पर, साथियो के बीच वाछित पारस्परिक सहायता, ईमानदारी एव सत्यनिष्ठा पर और सार्वजनिक व्यवस्था का उल्लघन करनेवालो के प्रति असहिष्णुता पर आधारित है।

कम्युनिज्म के समर्थक जनता को पूजी के जुए से मुक्त करने और मानवता के सामूहिक हित-साधन के महान आदर्श से प्रेरित है। उन्होने अपने उदाहरण और आचरण द्वारा महान नैतिक शक्ति का प्रदर्शन किया है। कम्युनिस्टो ने न कभी कोशिशो मे कमी आने दी और न अपनी जान की ही परवाह की, अपने महान आदर्शो की विजय के लिए उन्होने निर्भय होकर यत्रणाओ और मृत्यु का सामना किया है। आज भी अनेक कम्युनिस्ट अपनी मानवतावादी आस्थाओ, जनता के प्रति अनुरक्ति और उसके सुख के निमित्त अपने आत्मत्यागपूर्ण सघर्ष के लिए पूजीवादी देशो के कैदखानो और काल-कोठरियो मे कष्ट भोग रहे है।

नवजीवन के निर्माण मे करोड़ो लोगो के सक्रिय सहयोग से समाजवादी देशो मे कम्युनिज्म के विचारो का महान नैतिक प्रभाव ज्वलन्त रूप से प्रगट हो रहा है। पूजीवादी राजनीतिज्ञ उस सोवियत जनता की देशभक्ति और श्रमोत्साह को समझने मे असमर्थ है, जो समाज के हितो को व्यक्तिगत हितो से वढकर समझती है, क्योकि वह जानती है कि समाजवाद के अतर्गत सारा समाज लोगो के सुख-कल्याण की जमानत करता है।

उदाहरणार्थ, जनता की पहलकदमी पर कार्यान्वित की गयी राजकीय ऋण-सबधी कार्रवाइयो को ही लीजिये। करोड़ों सोवियत नर-नारियो ने

स्वेच्छा से पुराने राजकीय ऋणो का भुगतान २०–२५ बरस के लिए स्थगित कर दिए जाने के पक्ष मे राय दी। यह उदाहरण हमारे सामने हमारी जनता के चरित्र की ऐसी नयी विशेषताओ का, ऐसे नैतिक गुणो का उद्घाटन करता है, जिनकी शोषणकारी व्यवस्था की हालतो मे कल्पना तक नही की जा सकती।

यह सर्वविदित है कि पूजीवादी व्यवस्था मनुष्य को आत्म-केन्द्रित तथा एकाकी बना देती है और वह केवल अपने ही बल पर निर्भर रहता है, क्योकि उसके लिए और कोई होता ही नही, जिसपर वह भरोसा कर सके। वह जानता है कि यदि उसे काम से हाथ धोना पड़े तो उसकी जीविका छिन जायेगी और उसे गरीबी और भुखमरी का शिकार होना पडेगा।

समाजवाद के अतर्गत स्थिति दूसरी है। यहां हर आदमी अपने लिए अपने समाज और राज्य की चिन्ता को महसूस करता है। इसी के फलस्वरूप सोवियत नागरिक के मन से नफाखोरी और निजी सपत्ति की तृष्णा खत्म हो रही है और सामूहिकता और सार्वजनिक कल्याण की भावना उसके मन मे अधिकाधिक जोर पकड रही है। उदाहरणार्थ, हमारा देश अत्यत समृद्ध प्राकृतिक स्रोतोवाले कई नये क्षेत्रो को विकसित कर रहा है। साइबेरिया मे, कजाखस्तान मे, उत्तरी प्रदेशो मे, सुदूर पूर्व मे, अक्सर अत्यत कठोर जलवायु वाले निर्जन इलाको मे अनेक नये कल-कारखानो, खानो, बिजलीघरो और अन्य उद्यमो का निर्माण हो रहा है। इन उद्यमो का निर्माण करने और उन्हे चलाने के लिए भारी सख्या मे कामगारो की आवश्यकता है। कामगार कहा से आयेगे ?

पूजीवादी देशो मे हमेशा बेकारो की एक बडी फौज होती है। वे भूख के मारे काम की खोज मे कोना कोना छानते-फिरते है। अपने जीवन-यापन के लिए वे कोई भी काम करने को तैयार होते है। सोवियत नर-नारी बेरोज़गारी के अभिशाप से पूर्णतया मुक्त है। हमारे देश मे काम का अभाव नही है और न किसी को अपनी रोटी कमाने के लिए दूर दूर के स्थानो मे मारे मारे फिरने की ज़रूरत होती है। अवश्य ही, सोवियत लोग भी नये नये स्थानो पर जाते है, किन्तु वे जाते है मुख्यत. अपनी उदात्त देशभक्ति की भावना के कारण। राजधानियो और अन्य सास्कृतिक तथा औद्योगिक केंद्रो मे काम से लगे शत शत सहस्र योग्यता-

प्राप्त युवक-युवतिया पार्टी और सरकार की पुकार पर अपने घर-बार को छोडकर नये, अज्ञात स्थानो के लिए रवाना हो जाते है। वे जानते है कि शुरू शुरू मे उन्हे घर पर उपलब्ध अनेक सुख-सुविधाओ से वचित रहना पडेगा। वे यह भी जानते है कि उन्हे तबुओ मे रहना पडेगा और कभी कभी ऐसा भी काम करना पडेगा जो उनकी शिक्षा-दीक्षा के अनुरूप नही होगा।

लगभग सभी सोवियत नागरिको की भावनाए एक उच्च आदर्श के अधीन है। वह आदर्श है—समाज के लिए उपयोगी होना और उसके लिए नित नए भौतिक तथा सास्कृतिक लाभो की सृष्टि करना। पूजीवाद की तरह मुनाफे की प्यास नही, बल्कि यही आदर्श सोवियत जनता के कार्यो को प्रेरणा देनेवाली प्रधान शक्ति है। अमेरिकी लेखक जैक लडन ने पूजीवादी ससार के उन "स्वर्ण-लोभ" ग्रस्त लोगो का बडा ज्वलत चित्रण किया है, जो सोने के पीछे दुनिया के सुदूर भागो तक रेग जाने को तैयार होते है। उन्नतिशील सोवियत लोग सुदूर भागो मे जरूर जाते है, लेकिन "लक्ष्मी-पूजा" के लिए नही, स्वय धन-कुबेर बनने के लिए नही, बल्कि कम्युनिज्म की विजय के नाम पर, समूचे समाज के निमित्त, हमारे बच्चो के निमित्त, हमारे भविष्य के निमित्त नये कल-कारखानो का निर्माण करने, परती जमीनो को जोतने और नये नगर बसाने के लिए जाते है। व्यक्तिवादी प्रवृत्ति और निजी हितो की पूजीवादी धारणावाले लोग सोवियत जनता के नये नैतिक गुणो को नही समझ सकते और इसी लिए वे सोवियत जनता के देशभक्तिपूर्ण कार्यो की अपने ढग से व्याख्या करने का प्रयत्न करते है और कहते है कि उन्हे बलपूर्वक कराया जाता है।

समूचे समाज के हित के लिए, मानव-जाति के हित के लिए वीरत्वपूर्ण कार्य करनेवाले समाजवादी देश के इन्सान की महान नैतिकता को समझने मे असमर्थ उक्त व्याख्याओ तथा व्याख्याकारो पर सोवियत जनता को हसी आती है।

अपने विचारधारात्मक कार्य के सगठन मे हम इस मान्यता को आधार बनाकर चलते है कि कम्युनिस्ट नैतिकता की शिक्षा कम्युनिस्ट निर्माण की समस्याओ के समाधान के साथ लाजिमी तौर से सबद्ध होनी

चाहिए। वैज्ञानिक कम्युनिज्म के इस गभीर सत्य को हमने न केवल सैद्धातिक रूप से वल्कि जीवन के दीर्घकालिक अनुभव मे भी सीखा है कि जनता की जीवन-स्थितियो और दृष्टिकोण मे परिवर्त्तन लाने में क्रातिकारी व्यवहार का निर्णायक स्थान है। जीवन ही, हमारी सोवियत वास्तविकता ही शिक्षा की उत्तम पाठशाला है, सब से कठोर अध्यापक है। कम्युनिस्ट सिद्धान्तो का पुस्तकीय ज्ञान, जीवन से विच्छिन्न ज्ञान निरर्थक है।

शिक्षा सवसे वढकर जीवन के साथ, उत्पादन के साथ, जनता की व्यावहारिक क्रियाशीलताओ के साथ सवद्ध होनी चाहिए। पार्टी सभी लोगो की श्रम-शिक्षा को, श्रम के प्रति चेतन, कम्युनिस्ट दृष्टिकोण के विकास को शिक्षा सम्वन्धी अपनी सभी सरगर्मियो की धुरी मानती है। हम चाहते है कि श्रम, जो सभी भौतिक और सास्कृतिक मूल्यो का स्रोत है, जनता की प्रधान प्राणमूलक आवश्यकता वन जाये।

पूजीवाद के अवशेपो के विरुद्ध सघर्प मे कम्युनिस्ट दृष्टिकोण और व्यवहार के प्रतिमान पुप्ट हो रहे है। हमे आज भी अक्सर ऐसे लोग मिलते है जिनका सामाजिक श्रम के प्रति वेईमानी का रुख है, जो चोरवाज़ारी मे लगे रहते है, अनुशासन को तोडते है और सार्वजनिक व्यवस्था को भग करते है। हमे चुपचाप वैठकर पूजीवाद के इन अवशेपो के अपने आप नष्ट हो जाने की प्रतीक्षा नही करना होगी, हमे कृत-निश्चय होकर उनका सामना करना होगा और जनमत को पूजीवादी विचारो एव प्रथाओ की किसी भी अभिव्यक्ति के विरुद्व, समाजविरोधी तत्त्वो के विरुद्ध खडा करना होगा।

पार्टी अपने शिक्षा सम्वन्धी सभी कामो मे तरुण पीढी की शिक्षा-दीक्षा को विशेष महत्व देती है। व्ला० इ० लेनिन ने कहा था कि "वर्तमान तरुण पीढी की शिक्षा-दीक्षा के समूचे कार्य का लक्ष्य उसमे कम्युनिस्ट नैतिकता का विकास करना होना चाहिए।"

अव तरुण पीढी कम्युनिज्म का निर्माण कर रही है और आगे चलकर वह कम्युनिस्ट समाज मे रहेगी और काम करेगी, सभी सामाजिक कार्यो का प्रवन्ध करेगी। इसी महान ध्येय के लिए सोवियत तरुणो को तैयार किया जाना चाहिए।

हमारी तरुण पीढी को जीवन और सघर्ष के उस स्कूल से नही गुजरना पडा जो पुरानी पीढी की किस्मत मे बदा था। युवा लोगो को क्राति से पहले के दिनो की विभीपिकाओ और कठिनाइयो का ज्ञान नही है और मेहनतकश जनता के शोषण की धारणा वे केवल पुस्तको द्वारा बना सकते है। अत हमारी तरुण पीढी के लिए यह अत्यत महत्वपूर्ण है कि वह अपने देश के, मेहनतकश जनता के मुक्ति-सघर्ष के इतिहास को, कम्युनिस्ट पार्टी के वीरतापूर्ण इतिहास को जाने। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि उसकी शिक्षा-दीक्षा हमारी पार्टी की, मजदूर वर्ग की क्रातिकारी परपराओ के आधार पर हो।

(१९५९–१९६५ के लिए सोवियत सघ के आर्थिक विकास के लक्ष्याक। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की असाधारण २१वी काग्रेस, शार्टहैंड रिपोर्ट, खण्ड १, पृष्ठ ५५–५८)

कम्युनिस्ट भावनाओ मे जनता की दीक्षा कम्युनिस्ट निर्माण का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण अग है।

समाज के समस्त सदस्यो की चेतना और सास्कृतिक स्तर को उन्नत किये बिना श्रम की उच्चतम उत्पादकता के सृजन, कम्युनिस्ट सामाजिक सम्बन्धो के विकास और कम्युनिस्ट आचरण के प्रतिमानो की दृढ स्थापना की कल्पना भी नही की जा सकती। समाज के सदस्यो की चेतना जितनी ही ऊची होगी, उनकी रचनात्मक क्रियाशीलता जितनी ही पूर्णतर और व्यापकतर होगी, उतने ही बेहतर ढग से और उतनी ही तेजी के साथ हम कम्युनिस्ट निर्माण के कार्यक्रम को कार्यान्वित करेगे।

जब हम नये इसान को ढालने की बात कहते है तब हमारी दृष्टि मे कौन से कार्यभार होते है ? वे है

—**कम्युनिस्ट विश्व-दृष्टिकोण का पुष्टिकरण:** कम्युनिस्ट आदर्शो में गहन आस्था, नागरिक कर्त्तव्य-बोध की भावना, समाजवादी अन्तर्राष्ट्रीयतावाद और देशप्रेम, देश के प्रति वफादारी, अपने प्राणो की क़ीमत पर भी उसकी रक्षा करने की तत्परता;

—श्रम द्वारा शिक्षा, श्रम के प्रति, सामाजिक उत्पादन के प्रति कम्युनिस्ट भावना का विकास ;

—कम्युनिस्ट नैतिकता के उसूलो का पुष्टिकरण, कम्युनिस्ट समाज के नियमो का स्वेच्छापूर्वक पालन,

—सांस्कृतिक विकास, विज्ञानो के बुनियादी सिद्धान्तो का ज्ञान, सामान्य और पोलीटेक्निकल शिक्षा, ललित कला सम्बन्धी तथा शारीरिक प्रशिक्षण।

कम्युनिज्म मनुष्य को उदात्त बनाता है। **मानवता के और व्यक्ति के पूर्ण रूप से पल्लवित-पुष्पित होने का ही नाम कम्युनिज्म है।**

पार्टी हमारे समाज के सभी सदस्यो मे चरित्र की नयी, कम्युनिस्ट विशेषताओ का बीजारोपण करती हुई, युवको की कम्युनिस्ट शिक्षा-दीक्षा को विशेष महत्व देती है। पार्टी और जनता ने समाजवाद के निष्ठावान निर्माताओ और स्वदेश के वीर रक्षको की एक शानदार पीढी को पाल-पोस कर तैयार किया है, जिसने अमर यश अर्जित किया है। आज हम जनता को कम्युनिस्ट समाज के जीवन के लिए तैयार कर रहे है। कम्युनिस्ट पीढी को बचपन से ही गढने की जरूरत होती है, यौवन मे उसे सभालकर रखने और इस्पाती बनाने की जरूरत होती है। हमे पूरी मुस्तैदी से यह देखना है कि हमारे देश मे कोई नैतिक पगु न हो, गलत शिक्षा और बुरी मिसाल के शिकार न हो। जब कभी फल के तरुण वृक्षो को तनिक भी क्षति पहुचती है तो उनकी सेवा करके उन्हे स्वस्थ-विकास योग्य बनाने के लिए न जाने कितना परिश्रम करना पडता है। तिस पर भी परिश्रम हमेशा सफल नही होता। यही बात नयी पीढी के लोगो पर भी लागू होती है।

नये इन्सान का निर्माण केवल पार्टी, सोवियत राज्य, ट्रेड-यूनियनो और कोम्सोमोल के शिक्षात्मक कामो के आधार पर ही नही, बल्कि सामाजिक जीवन के ढाचे के—यानी उत्पादन-पद्धति, वितरण के स्वरूप, सार्वजनिक सेवाओ, सामाजिक राजनैतिक सरगर्मियो, न्याय-व्यवस्था के प्रतिमानो और अदालती व्यवहारो के आधार पर भी होता है। जनता की कम्युनिस्ट चेतना को विकसित करने के लिए और पूजीवादी मनोवृत्ति तथा नैतिकता के अवशेषो का उन्मूलन करने के लिए हमे सभी आर्थिक,

सामाजिक, राजनैतिक और काननी साधनो का जरूर पूरा इस्तेमाल करना चाहिए।

पूजीपति वर्ग व्यक्ति की स्वतन्त्रता का सम्बन्ध व्यक्तिगत स्वामित्व के साथ जोडता है। लेकिन पूजीवादी देशों में करोडो लोगों के पास कोई सम्पत्ति नही है और उनके लिए पूजीवादी स्वामित्व स्वतन्त्रता की गारटी नही, बल्कि भारी बोझ है। छोटे सम्पत्तिवान के लिए स्वामित्व व्यक्ति के विकास की शर्त नही, वल्कि एक जजीर है जो उसे इजारेदार पूजी पर पूरी तरह आश्रित रखता है। व्यक्तिगत स्वामित्व सिर्फ पूजीपतियो को ही मेहनतकश जनता का शोषण करने और अपार मुनाफे जमा करने की पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान करता है। हमारे देश मे और सम्पूर्ण विश्व समाजवादी व्यवस्था में सचित अनुभव-निधि से यह प्रगट है कि व्यक्तिगत स्वामित्व नही, बल्कि सार्वजनिक स्वामित्व मनुष्य को सब प्रकार के सामाजिक परावलम्बन से मुक्त करता है और व्यक्ति के स्वतन्त्र विकास के लिए व्यापक अवसर प्रस्तुत करता है। हमारी जनता सामूहिकता, साथीपन और सार्वजनिक कर्त्तव्य के प्रति वफादारी की महान भावना से ओतप्रोत है।

कार्यक्रम के मसौदे में सोवियत जनता के प्रगतिशील वैज्ञानिक विश्व-दृष्टिकोण के अपर विकास को अत्यधिक महत्व दिया गया है। यह स्वाभाविक ही है, क्योकि अगर मनुष्य के दिमाग में रहस्यवादी विचार, अन्ध-विश्वास और थोथी धारणाए भरी रहेगी तो वह सफलतापूर्वक आत्मविकास नही कर सकेगा।

इतिहास में पहली बार करोड़ो-करोड़ो लोगो का विश्व-दृष्टिकोण मार्क्सवाद-लेनिनवाद के वैज्ञानिक आधार पर बना है, जो बेहतर जीवन के लिए, कम्युनिज्म की विजय के लिए जनता के सघर्ष मे उसका विचारधारात्मक अस्त्र बन गया है। मार्क्सवाद-लेनिनवाद ने मानवता को उज्ज्वल कम्युनिस्ट भविष्य की ओर ले जानेवाली सही, सटीक ढग से गणित ऐतिहासिक कक्षा में ला खडा किया है।

हम क्रान्तिकारी और अन्तर्राष्ट्रीयतावादी है और प्रतिक्रियावादी विचारो के प्रचार की तरफ उपेक्षा का भाव नही रख सकते। यह नही हो सकता कि पूजीपति वर्ग जनता की चेतना को अधकाराच्छन्न और

भ्रष्ट करता रहे, वह अन्धराष्ट्रवादिता की भावना भडकाता रहे और हम उसे सुलहपसन्दी के साथ चुपचाप देखते रहे। पार्टी साम्राज्यवादी विचारधारा का पर्दा फाश करती रहेगी।

कम्युनिज्म के लिए सक्रिय संघर्ष मे, सबके कल्याण के लिए काम मे कम्युनिस्ट चेतना ढलती और सुदृढ होती है। प्रत्येक मनुष्य के व्यवहार मे, प्रत्येक समष्टि, प्रत्येक संगठन तथा सस्था के काम मे कम्युनिस्ट कथनी की परिणति तर्कत कम्युनिस्ट करनी मे होनी चाहिए . .

कार्यक्रम के मसौदे मे **कम्युनिज्म के निर्माताओ की नैतिक संहिता** है, नये समाज के नैतिक प्रतिमान है, उसकी नैतिक मान्यताएं है।

पिछले सौ वर्ष से भी अधिक समय से पूजीवादी विचारधारा-निरूपक कम्युनिस्टो पर नैतिकता का खण्डन करने, समाज के नैतिक स्तम्भो का उन्मूलन करने के अभियोग लगा रहे हैं। पूजीपति वर्ग को अपनी अनैतिकता ढकने के लिए इस झूठ की आवश्यकता है। शोपक वर्गो की नैतिक मान्यताओ की वुनियाद मे क्या है? इसका अत्यन्त स्पष्ट चित्र ऐसी कहावतो में मिलता है कि "रुपया क्या नही कर सकता?", "या तो तुम दूसरे को धोखा दो, वरना दूसरा तुम्हे धोखा देगा", "रुपये मे गध नही होती" और "इसान इसान के लिए भेड़िया है' आदि।

हम इन जगली और मानवद्रोही नियमो का सचमुच खण्डन करते है। हम इनके मुकावले सामूहिकतावाद और मानवतावाद के नैतिक सिद्धातो को पेश करते हैं, जिनकी अभिव्यक्ति इन शानदार शब्दो मे होती है कि "प्रत्येक सबके लिए तथा सभी प्रत्येक के लिए" और "इसान के लिए इसान मित्र, साथी और भाई है"।

नये नैतिक उसूलो को समस्त सोवियत जनता की आन्तरिक आवश्यकता बना देना हमारा कार्यभार है। अतीत के अवशेषो को दूर करने के लिए अभी वहुत कुछ किया जाना है। सामाजिक जीवन ने जो कुछ प्रगतिशील है, उसे कोई वाड लगाकर पुराने तथा पिछडे हुए से अलग नही किया गया है। अन्त मे प्रगतिशील की विजय जरूर होती है, मगर पुरातन के अवशेप प्रगति मे वाधा डालते है। अच्छे उदाहरण की शक्ति वढती है और यही हमारी शिक्षा का आधार है। लेकिन सभी

जानते है कि अगर घासपात या मोथो को वक्त पर न रोका जाय तो वे बडी तेजी से उगते है।

जनमत को लोगो के आचरण के मामले में अधिक जागरूक और सख्त बनाने की जरूरत है, क्योकि आखिर बुरे काम भी तो अधिकतर वे ही लोग करते हैं, जो किसी न किसी समष्टि के, किसी ट्रेड-यूनियन, कोम्सोमोल, सामूहिक फार्म के, या किसी सास्कृतिक और शैक्षणिक समाज या समिति के, और कभी-कभी हमारी पार्टी के भी सदस्य होते है। समाजवादी समाज के नियमो और प्रतिमानो को तोडनेवालो के साथ सघर्ष करने के लिए हमे जनमत के नैतिक दबाव तथा प्रभाव का और भी अधिक सक्रियता से उपयोग करना चाहिए।

हम समस्त जनता का सर्वतोमुख विकास करना चाहते है। मजदूर वर्ग के अलावा और किस वर्ग तथा कम्युनिस्ट पार्टी के अलावा और किस शासक पार्टी ने समस्त मेहनतकश जनता की क्षमताओ और योग्यताओ को विकसित करने का लक्ष्य अपने सामने रखा है?

पार्टी जनता के सांस्कृतिक विकास में ही विजयी कम्युनिस्ट निर्माण की गारंटी देखती है। हमारा देश सास्कृतिक क्रान्ति की आखिरी मजिल मे पहुच गया है, जिसका मुख्य उद्देश्य कम्युनिज्म के लिए सारी आवश्यक विचारधारात्मक और सास्कृतिक परिस्थितिया तैयार करना है। इस मजिल का सबसे महत्वपूर्ण कार्यभार सभी मजदूरो और किसानो के सास्कृतिक और तकनीकी स्तर को बुद्धिजीवियो के स्तर तक उन्नत करना है, ताकि बुनियादी तौर से मानसिक और शारीरिक श्रम के मूल भेदो को दूर किया जा सके।

आगामी बीस वर्ष मे समाज के अधिकतर सदस्य किसी न किसी माध्यम से पूर्ण माध्यमिक, विशिष्ट माध्यमिक या उच्च शिक्षा प्राप्त कर लेगे। यह बहुत बडा, मगर बिल्कुल सम्भव काम है।

आनेवाले दस वर्ष के भीतर **स्कूली आयु के प्रत्येक बच्चे के लिए आम और पोलीटेक्नीकल माध्यमिक (११ वर्ष की) शिक्षा लागू की जानी है।** स्कूल-कानून के अनुसार बच्चो के लिए यह लाजिमी है कि वे आठ वर्ष की शिक्षा पूरी करने के बाद किसी कारखाने मे या सामूहिक फार्म पर काम करे और उसके साथ ही पूर्ण माध्यमिक शिक्षा प्राप्त

करने के लिए अध्ययन जारी रखें। इससे एक साथ ही उच्च शिक्षा प्राप्त करने और उत्पादन के ऐसे काम करने का रास्ता खुल जाता है, जिसके लिए विशेष योग्यता अपेक्षित होती है।

यह भी आवश्यक है कि राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था मे काम करनेवाले जिन युवको ने माध्यमिक शिक्षा नही पाई है, वे आगामी दस साल मे कम से कम आठ वर्ष की स्कूली पढाई के बराबर शिक्षा प्राप्त कर ले। यह महत्वपूर्ण और फौरी काम है। यह भूलना नही होगा कि युद्ध-काल मे अनेक लडके और लडकिया माध्यमिक शिक्षा नही प्राप्त कर सकीं। हमारे देश के इन तरुण नागरिको की मुनासिब फिक्र की जानी चाहिए।

मनुष्य के सर्वतोमुख और सामजस्यपूर्ण विकास मे सोवियत स्कूल विशेष रूप से महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है। स्कूली बच्चो को कम्युनिज्म की भावना मे शिक्षित करने के लिए, स्कूलो के लिए लाजिम है कि वे उनमे सर्वोत्तम गुण और आदते पैदा करे, उन्हे योग्यतानुसार ईमानदारी के साथ काम करने, सामाजिक सुविधाओ का समझदारी के साथ उपयोग करने, कम्युनिस्ट नैतिक सहिता और सामाजिक नियमो का दृढतापूर्वक पालन करने के लिए तैयार करे। उठती हुई पीढी की शिक्षा मे एक बहुत बडी भूमिका जन-शिक्षको को अदा करनी है, जिन्हे वस्तुत युवको का आध्यात्मिक परामर्शदाता कहा जा सकता है। जन-शिक्षको की भूमिका हर सम्भव तरीके से बढानी चाहिए और उनकी हर तरह से फिक्र और परवाह की जानी चाहिए।

पार्टी इस बात को बहुत महत्वपूर्ण मानती है कि सार्वजनिक शिक्षा-सस्थाओ का, बोर्डिंग स्कूलो, दिन मे बच्चो की देखभाल करनेवाले स्कूलो और स्कूल-पूर्व की सस्थाओ का और अधिक विकास किया जाए। सार्वजनिक और पारिवारिक शिक्षा का एक-दूसरे से विरोध नही है। बच्चो की सार्वजनिक शिक्षा के साथ उनके ऊपर पडनेवाले परिवार के शिक्षात्मक प्रभाव का तादात्म्य होना चाहिए।

जो लोग यह कहते है कि कम्युनिज्म की ओर सक्रमण-काल मे परिवार का महत्व घट जाता है और वह समय के साथ एकदम खत्म हो जाता है, उनकी बात बिल्कुल गलत है। दरअसल, कम्युनिज्म मे परिवार

और अधिक सुदृढ होगे। भौतिक चिन्ताओ के बोझ से सर्वथा मुक्त पारिवारिक सम्बन्ध और अधिक शुद्ध और स्थायी बन जाएगे।

अपने प्रयत्नो को सार्विक माध्यमिक शिक्षा पर केन्द्रित करने के साथ साथ, पार्टी ने कार्यक्रम मे **सभी प्रकार की उच्चतर शिक्षा को प्रत्येक व्यक्ति के लिए और अधिक सुलभ बनाने** का लक्ष्य भी रखा है। इस समय हमारी उच्च शिक्षा सस्थाओ मे छात्रो की सख्या २६ लाख है, जो परिकल्पना के अनुसार १९८० तक बढकर ८० लाख यानी तिगुनी से भी अधिक हो जाएगी। खासकर सध्याकालीन और पत्रव्यवहार द्वारा शिक्षा देनेवाली उच्च सस्थाओ का बडे पैमाने पर विस्तार करना है।

शहरी जनता की तुलना मे ग्रामीण जनता का सास्कृतिक और तकनीकी स्तर अभी काफी नीचा है, जिसे हमे उन्नत करना है, ताकि इस क्षेत्र मे भी शहर और गाव के मूलभूत भेद दूर हो जायें। यह आवश्यक है कि सास्कृतिक काम करनेवाले सभी सगठन ग्रामीण क्षेत्रो मे सास्कृतिक स्तर को उन्नत करने के काम की ओर अधिक ध्यान दे।

अगले कुछ वर्ष मे सस्कृति के भौतिक आधार–कागज की फैक्टरियो और छापेखानो, रेडियो और टेलीविजन स्टेशनो, थियेटरो, फिल्म स्टूडियो और सिनेमाघरो, क्लबो और पुस्तकालयो–का व्यापक प्रसार करने के लिए बडे पैमाने पर कार्रवाइया करनी है। स्वभावत इसमे बडी लागत लगेगी, मगर कम्युनिज्म का निर्माण करनेवाला हमारा समाज सोवियत जनता की सास्कृतिक आवश्यकताओ की भरपूर तुष्टि के लिए साधन जुटाने मे कजूसी नही करेगा।

तीव्र वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति के हमारे युग में, विज्ञान की उपलब्धियो के नियोजित और सर्वतोमुख उपयोग के बिना, समाज और व्यक्ति के विकास की कल्पना नहीं की जा सकती। जैसा व्ला० इ० लेनिन ने एक बार कहा था, "विज्ञान, सर्वहारा वर्ग और तकनीक के सयुक्त मोर्चे के सामने कोई अन्धकारपूर्ण शक्ति नही टिक सकती।"* यह भविष्यवाणी अब जीवन का यथार्थ बन चुकी है। हमने शोषको की

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, चौथा रूसी सस्करण, खण्ड ३०, पृष्ठ ३७६।

अशुभ शक्ति को चकनाचूर और नष्ट कर दिया है। हमने आर्थिक और आत्मिक उत्पीडन के सभी रूपो को सदा के लिए मिटा दिया है। अब हम प्रकृति पर मनुष्य की निर्भरता को दूर करने और उसे मनुष्य की इच्छा का दास बनाने मे अपने अधिकाधिक प्रयत्न सकेन्द्रित कर रहे है। ऐसा होने से मनुष्य की वास्तविक स्वतत्रता के मार्ग की अन्तिम बाधा दूर हो जाएगी।

विज्ञान से तकाजा है कि वह आज की आवश्यकताओ के अनुकूल बने, राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था की फौरी समस्याओ के हल और समाज की उत्पादन-शक्तियो के विकास का जुझारु और प्रभावशाली साधन बने। आगे चलकर विज्ञान ताप-नाभिक प्रतिक्रियाओ को नियत्रित करने के उपाय खोज लेगा, जिससे आणविक ऊर्जा के अनन्त स्रोतो को शान्तिमय प्रयोजनो के लिए इस्तेमाल किया जा सकेगा, विज्ञान मौसम और जलवायु को नियत्रित करेगा, रोगो पर विजय प्राप्त करेगा और दीर्घ-जीवन सुनिश्चित करेगा, देहागो की प्राणमूलक प्रक्रियाओ पर नियत्रण प्राप्त करेगा, वाछित गुण-धर्म-सम्पन्न अनगिनत कृत्रिम सामग्री उत्पादित करेगा, बाह्य अतरिक्ष पर विजय प्राप्त करेगा और ब्रह्माण्ड मे विश्वस्त सचार-मार्ग स्थापित करेगा। उससे ससार मे विज्ञान और तकनीक के इतिहास का एक समूचा युग निर्मित होगा, मनुष्य के लिए ऊर्जा के अनन्त स्रोत प्रस्तुत होगा और वह प्रकृति का वास्तविक स्वामी बन जाएगा।

कम्युनिज्म की ओर मानवता के ऐतिहासिक मार्ग के अध्ययन मे, पूजीवाद के विध्वस की प्रक्रियाओ की छानबीन मे, सामाजिक विकास और आर्थिक तथा सास्कृतिक निर्माण के नियोजित नेतृत्व के वैज्ञानिक आधार के विवेचन मे, जनता मे पदार्थवादी दृष्टि की सर्जना मे, कम्युनिस्ट समाज के इसान की शिक्षा और पूजीवादी विचारधारा के विरुद्ध सघर्ष मे सामाजिक विज्ञानो का महत्व लगातार बढेगा। पार्टी मानव-ज्ञान के सभी क्षेत्रो के फलने-फूलने के लिए कार्रवाई करेगी।

ज्ञान के प्रमुख क्षेत्रो में सोवियत विज्ञान को जो अग्रणी स्थान प्राप्त है उन्हे सुदृढ़ करना और इस बात की जमानत करना सोवियत वैज्ञानिको का सम्मानपूर्ण और देशभक्तिपूर्ण कर्त्तव्य है कि विश्व-विज्ञान के सभी बुनियादी क्षेत्रो में सोवियत विज्ञान की नेतृत्वकारी भूमिका रहे।

नये इसान की सर्जना मे साहित्य और कला की भूमिका बड़ी है। कम्युनिस्ट आदर्श-निष्ठा और सच्चे मानवतावाद की पुष्टि करके, साहित्य और कला सोवियत मानव मे नये ससार के निर्माता के गुण भरते हैं। वे जनता के सौन्दर्यबोध तथा नैतिकता के विकास मे सहायता पहुचाते है। पार्टी साहित्य और कला के क्षेत्र मे काम करनेवाले सभी लोगो का आवाहन करती है कि वे समसामयिक विषयो की अभिव्यजना करने के लिए नये और साहसिक कला-रूपो का उपयोग करे।

अव्यावसायिक कला, जो व्यापक रूप से फैल रही है, जनता की प्रतिभाओ और क्षमताओ के उदय तथा विकास का एक विस्तृत क्षेत्र प्रस्तुत करती है। फिर भी, इससे व्यावसायिक कलाओ के विकास की आवश्यकता खत्म नही होती। व्यावसायिक कला-केन्द्रो और प्रतिष्ठित कलाकारो की कलात्मक क्रियाशीलताएं ही, भविष्य मे भी, अव्यावसायिक कला के लिए आदर्श रहेगी। दूसरी ओर अव्यावसायिक कला व्यावसायिक साहित्य और कला की समृद्धि और उन्नति के लिए अक्षय स्रोत का काम करेगी।

समाजवादी और कम्युनिस्ट सस्कृति मनुष्य के सास्कृतिक विकास की एक नयी और उच्चतर मजिल है। कम्युनिस्ट सस्कृति के शिखरो तक सफलतापूर्वक पहुचने के लिए हमारे पास सारी आवश्यक परिस्थितिया मौजूद है।

(सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम के बारे मे। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २२ वी काग्रेस, शार्टहैड रिपोर्ट, खण्ड १, पृष्ठ २१७–२२३)

अपनी लेनिनवादी पार्टी के नेतृत्व मे सोवियत जनता कम्युनिस्ट समाज का निर्माण कर रही है। मै इस बात पर जोर देता हू कि कम्युनिज्म का निर्माण करने में हमारा मुख्य लक्ष्य मेहनतकश जनता के बेहतर जीवन के लिए आवश्यक सभी परिस्थितियो की सृष्टि करना है। कम्युनिस्ट समाज बिल्कुल मेहनतकश लोगो का ही समाज होगा।

श्रम मनुष्य की स्वभावगत आन्तरिक आवश्यकता है। महज पूजीवाद मेहनतकश लोगो को अमानुषिक परिस्थितियो मे रखकर विकृत करता

है और उनमे से अनेक लोगो की प्रवृत्ति पर भ्रष्टकारी प्रभाव डालता है। जो लोग मानव द्वारा मानव के शोषण के साथ समझौता नही कर लेते, वे अपने काम के सिलसिले मे अपनी वर्ग-चेतना का विकास करते है और मेहनतकश जनता के हितो के लिए शोषको के खिलाफ सक्रिय सघर्षकर्ता बन जाते है। दूसरे लोग, जो केवल अपने निजी मालिकाना हितो का ही ध्यान रखते है, वे सार्वजनिक जीवन मे निष्क्रिय बने रहते है और पूजीपति वर्ग का तख्ता उलटने तथा नए समाज के निर्माण के लिए चलनेवाले वर्ग-सघर्षो मे नही भाग लेते। कुछ और लोग है, जो दूसरो की मेहनत पर जीते है। ये ही लोग मेहनतकश जनता के शोषक और उत्पीडक है।

कम्युनिज्म केवल श्रम द्वारा, लाखो-करोडो के श्रम द्वारा निर्मित होता है। यही कारण है कि पार्टी इस बात के लिए हर मुमकिन कोशिश करती है कि समस्त सोवियत जनता – मज़दूर, सामूहिक खेतिहर, इजीनियर, डिजाइन-साज़, टेक्नीशियन, शिक्षक, डाक्टर, कृषि-विशेषज्ञ, वैज्ञानिक, सास्कृतिक कार्यकर्ता और कला तथा साहित्य के क्षेत्र मे काम करनेवाले सभी लोग – कम्युनिज्म का निर्माण करने मे एक ठोस समष्टि की तरह भाग ले।

अब हर कोई देख सकता है कि पार्टी की कोशिशो के आश्चर्यजनक नतीजे सामने आ रहे है और हमारी जनता ने कम्युनिज्म की ओर बढने मे महत्वपूर्ण सफलताए प्राप्त की है। लेकिन नए समाज के निर्माण मे हमे जिन कठिनाइयो पर काबू पाना है, उन्हे नज़रन्दाज नही किया जा सकता। उन कठिनाइयो मे समाज के सभी हिस्सो के चन्द लोगो की चेतना मे व्याप्त अतीत के अवशेष भी शामिल है, जो सबसे बढकर श्रम के प्रति, सामाजिक कर्तव्यो की पूर्ति के प्रति, जनता की सेवा के प्रति उपेक्षा-भाव मे प्रगट होते है।

कम्युनिज्म के लिए हम जो सघर्ष चला रहे है उसमे सभी लोगो को कम्युनिस्ट आदर्शो की भावना मे शिक्षित करने का काम घोर महत्वपूर्ण है। वर्तमान समय मे हमारी पार्टी की विचारधारात्मक सरगर्मियो का यही मुख्य कार्यभार है। हमे पार्टी के समस्त विचारधारात्मक

हथियारो को, जिनमे कम्युनिस्ट शिक्षा के साहित्य और कला जैसे प्रबल साधन भी शामिल है, फौजी तरतीब मे सजाना है।

(उच्च आदर्श-निष्ठा और कलात्मक कौशल सोवियत साहित्य और कला की महान शक्ति है। साहित्य और कला के क्षेत्र मे काम करनेवालो के साथ ८ मार्च १९६३ को हुए पार्टी और सरकार के नेताओ के एक सम्मेलन मे किया गया भाषण। 'साहित्य तथा कला के महान ध्येय' शीर्षक सग्रह। मास्को, 'प्राव्दा' प्रकाशन गृह, १९६३, पृष्ठ १६८—१७०)

कम्युनिज्म और आजादी। सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व का समस्त जनता के राज्य में विकास

इतिहास मे केवल मजदूर वर्ग ही एक ऐसा वर्ग है, जिसका उद्देश्य अपने प्रभुत्व को स्थायी बनाये रखना नही है। जब उसके अधिनायकत्व को पैदा करनेवाली परिस्थितियो का लोप हो जाता है, जब वे कार्यभार सम्पन्न हो जाते है जिनको समाज केवल मजदूर वर्ग के अधिनायकत्व की सहायता से ही पूरा कर सकता है, तब राज्य धीरे-धीरे, मजदूर वर्ग के नेतृत्व मे, समाजवादी समाज की समस्त श्रमजीवी जनता का राष्ट्रव्यापी सगठन बन जाता है। देश मे समाजवाद की विजय और पूरे पैमाने पर कम्युनिस्ट निर्माण का दौर शुरू हो जाने के फलस्वरूप सोवियत सघ के मजदूर वर्ग ने कम्युनिस्ट निर्माण के कार्यभार के अनुरूप अपनी पहलकदमी पर अपने वर्गीय अधिनायकत्व के राज्य को समस्त जनता के राज्य मे रूपान्तरित कर दिया है। साथियो, यह इतिहास की अद्वितीय घटना है! अब तक राज्य सदा इस या उस वर्ग के अधिनायकत्व का हथियार रहा है। इतिहास मे पहली बार, एक ऐसा राज्य हमारे देश मे बना है जो किसी एक वर्ग का अधिनायकत्व नही है, बल्कि पूरे के पूरे समाज का, सारी जनता का हथियार है।

कम्युनिस्ट निर्माण के लिए अब सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व की आवश्यकता नही है। हमारे समाज मे तमाम मेहनतकश जनता को समान

अधिकार प्राप्त हैं। निश्चय ही कम्युनिज्म की ओर सक्रमण के काल मे भी मजदूर वर्ग समाज मे अपनी नेतृत्वकारी भूमिका अदा करता रहता है। उसकी यह भूमिका इसलिए कायम रहती है कि वही सबसे अधिक उन्नत और सगठित वर्ग है, एक ऐसा वर्ग जो मशीन-उद्योग से सम्बन्धित है, जो कम्युनिस्ट आदर्शों का सबसे अधिक सुसगत वाहक है।

यह सोचना गलत होगा कि समाज के प्रबल बहुमत के हितो का प्रतिनिधित्व करनेवाले सर्वहारा वर्गीय अधिनायकत्व के राज्य और सारी जनता के राज्य के बीच कोई विभाजक दीवार होती है। अपने जन्म के क्षण से ही, सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व मे सार्वजनीन समाजवादी जनतत्र की चारित्रिकताए मौजूद होती है। वे चारित्रिकताए समाजवाद के विकास के साथ साथ ज़ोर पकडती जाती हैं और उसकी पूर्ण विजय के बाद निर्णायिक बन जाती हैं। राज्य विकसित होकर वर्ग-प्रभुत्व के हथियार के बजाए सारी जनता की इच्छाभिव्यक्ति का उपकरण बन जाता है।

सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व के सम्पूर्ण जनता के राज्य मे विकसित होने के सिलसिले मे हमारे समाज और राज्य की शक्ति कम होने के बजाय, कई गुनी बढ जाती है, क्योकि हमारी शक्ति के पुराने स्रोतो के साथ नये स्रोत भी पैदा होते जाते हैं। हमारी आर्थिक क्षमता के लगातार विकास के साथ साथ, हमारे राज्य का सामाजिक आधार और अधिक सशक्त और विस्तृत हुआ है, हमारा समाज पहले से भी अधिक एकताबद्ध और एकाश्मरी हुआ है। यही है राज्य की शक्ति का मुख्य स्रोत। प्रत्येक मजदूर, प्रत्येक किसान, प्रत्येक बुद्धिजीवी कह सकता है. हमी राज्य हैं, उसकी नीति हमारी नीति है और उसको विकसित तथा सुदृढ करने का कार्यभार, हर प्रकार के हमले से उसकी रक्षा करने का कार्यभार, हम सभी का सम्मिलित कार्यभार है।

मगर इन सब बातो के बावजूद, राज्य को क्यो कायम रखा जा रहा है, जबकि राज्य को जन्म देनेवाली मुख्य चीज, वर्ग-शत्रुता का लोप हो चुका है? उसे इसलिए क़ायम रखा जा रहा है कि जिन कर्त्तव्यो को समाज सिर्फ राज्य की सहायता से ही पूरा कर सकता है, उनकी अभी पूर्ति नही हुई है ...

कम्युनिज्म के पहले दौर की विजय के बाद भी काफी समय तक राज्य कायम रहेगा। उसके विलोप की प्रक्रिया बहुत लम्बी होगी, वह एक पूरे ऐतिहासिक युग तक जारी रहेगी और उस समय तक समाप्त नही होगी, जब तक समाज स्वशासन के लिए पूर्णतया प्रौढ नही हो जाता। कुछ समय तक राजकीय प्रशासन और सार्वजनिक स्वशासन की चारित्रिकताए घुली-मिली रहेगी। इस प्रक्रिया मे राज्य की आन्तरिक कार्यकारिता विकसित तथा परिवर्तित होगी और क्रमश अपनी राजनैतिक चारित्रिकताए खो देगी। जब सोवियत सघ मे विकसित कम्युनिस्ट समाज का निर्माण हो जायेगा और अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे समाजवाद विजयी तथा सुदृढ हो जायेगा, तभी जाकर भविष्य मे राज्य की कोई आवश्यकता नही रहेगी और उसका विलोप होगा।

(सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम के बारे मे। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २२वी काग्रेस, शार्टहैड रिपोर्ट, खण्ड १, पृष्ठ २१०–२१२)

इंसान इंसान का दोस्त और भाई है

पूजीवादी विचारधारा-निरूपक एव राजनीतिज्ञ और उनके अवसरवादी जी हुजूर यह सिद्ध अरने की काफी कोशिश कर रहे है कि कम्युनिस्ट लोग आचार-विचार के नियमो को नही मानते और समाजवाद मानवता के नैतिक कानूनो के प्रतिकूल है। दूसरी ओर वे अपने को नैतिक मूल्यो, मानवतावाद, स्वतन्त्रता और वैयक्तिक अधिकारो के रक्षक के रूप मे विज्ञापित करते है।

लेकिन क्या उनके इन दावो का कोई आधार है? स्वय जीवन इस प्रश्न का उत्तर देता है। दोनो ससारो की नैतिकता की सीधी-सादी तुलना से इसका उत्तर मिलता है।

पूजीवादी समाज की आचारनीति का सार है व्यक्तिवाद, स्वार्थपरायणता, मुनाफे की तृष्णा, शत्रुता और प्रतिद्वन्द्विता की भावना। पूजीवादी समाज का आधार, मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण, नैतिकता

का सबसे बढकर खुला उल्लघन है। शोषक वर्गो की नैतिकता की विशेषता का इस अमानुषिक सूत्र द्वारा प्रगट होना कुछ अकारण नही है कि 'मनुष्य के लिए मनुष्य एक भेडिया है।" समाजवाद इससे भिन्न नैतिकता का समर्थन करता है। उस नैतिकता का सार है सहयोग एव सामूहिकतावाद, मैत्री एव पारस्परिक सहायता। वह सबसे पहले जनता के सम्मिलित कल्याण के लिए एक ऐसी समष्टि मे मानव व्यक्ति के सर्वागीण विकास के लिए चिन्ता करने पर जोर देती है, जिसमे मनुष्य मनुष्य का शत्रु नही, वल्कि मित्र और भाई हो।

(१९५९–१९६५ के लिए सोवियत सघ के आर्थिक विकास के लक्ष्याक। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की असाधारण २१ वी काग्रेस, शार्टहैड रिपोर्ट, खण्ड १, पृष्ठ ५५–५६)

कम्युनिस्ट समानता। समस्त जनता का सुख

स्वतत्रता, समानता और भ्रातृत्व के नारे की सच्ची उपलब्धि कम्युनिज्म है। वह समाज की उत्पादन-शक्तियो के ऐसे विकास की ज़मानत करता है, जिससे "प्रत्येक से उसके योग्यतानुसार और प्रत्येक को उसके आवश्यकतानुसार" के महान उसूल की तामील सभव हो जाएगी। कम्युनिज्म अतीत के महान विरसे को, युग युग से सचित मानव की प्रगतिशील सस्कृति, समझदारी और जानकारी को आत्मसात कर लेता है। नए समाज का निर्माण करने मे हम चाहते है कि सभी लोग खुशहाल रहे, सुखी रहे और खूबसूरती के साथ रहे। हम चाहते है कि हर इन्सान की प्रतिभाए पूर्णत विकसित हो। हम चाहते है कि विज्ञान, सस्कृति और कला हर इन्सान की सम्पत्ति हो और श्रम मे हर व्यक्ति के लिए सर्जना का आनन्द निहित हो।

(फ्रान्सीसी टेलीविज़न पर किया गया भाषण। 'सोवियत सघ की विदेश-नीति (१९६०)' शीर्षक सग्रह, खण्ड १, पृष्ठ ३७६)

कम्युनिज्म एक ऐसा समाज है, जिसमे सभी लोग आजाद और समान होगे। लेकिन इस समानता की उपलब्धि के लिए आवश्यक परिस्थितियो की सृष्टि लाजिमी है। लोगो की समानता क्या है? जब पूजीवाद अपने युग मे सामन्तवाद के खिलाफ सघर्ष कर रहा था तब उसने स्वतन्त्रता, समानता और भ्रातृत्व का नारा बुलन्द किया था। लेकिन दरअसल हो क्या रहा था? वह समान अधिकारो के लिये कुलीनो के खिलाफ सर्वसाधारण का सघर्ष था, वह रईसो, तालुकेदारो और राजकुमारो के खिलाफ व्यापारियो तथा उद्योगपतियो का सघर्ष था। वह मेहनतकश जनता के अधिकारो का सघर्ष नही था। हम कम्युनिस्ट लोग समस्त मेहनतकश जनता के लिये, सभी लोगो के लिये सच्ची समानता चाहते है। लेकिन जनता की सच्ची समानता और वास्तविक स्वतन्त्रता एक ऐसे समाज में नही हो सकती, जहा उत्पादन के साधनो पर व्यक्तिगत स्वामित्व है, जहा धनी और गरीब हैं, मालिक और मजदूर है, शोषक और शोषित है। यही कारण है कि हम कम्युनिज्म के लिये सघर्ष कर रहे है, एक ऐसे समाज के लिए सघर्ष कर रहे है, जिसमे उत्पादन के सभी साधनो पर सार्वजनिक स्वामित्व होगा, जहा सभी लोग अपनी योग्यता भर काम करेगे और अपनी आवश्यकता के अनुसार प्राप्त करेगे। केवल एक ऐसे समाज मे ही समस्त जनता के लिये सच्ची समानता और सुखी जीवन सम्भव है। कम्युनिज्म उन सभी समाजो मे श्रेष्ठतम और उच्चतम समाज है, जिनकी सृष्टि करने मे मनुष्य समर्थ है। पृथ्वी पर एक ऐसे समाज की स्थापना के लिये सघर्ष करना हमारी कम्युनिस्ट पार्टी का शानदार लक्ष्य है, वही हमारे जीवन का एक मात्र उद्देश्य है।

(साहित्य और कला मे नई सफलताओ के लिए। 'साहित्य तथा कला के महान ध्येय' शीर्षक सग्रह, पृष्ठ १२८–१२९)

सोवियत सघ का विकास उस ऐतिहासिक दौर मे पहुच गया है, जिसमे स्वतत्र और सामाजिक चेतना-सम्पन्न मेहनतकश जनता के वर्गहीन कम्युनिस्ट समाज के निर्माण की समस्या को सीधे सीधे हल किया जा रहा है।

वर्ग-भेद के उन्मूलन की प्रक्रिया मे अधिकाधिक वढती हुई सामाजिक एकरूपता पैदा होती है। स्वभावत यह प्रक्रिया क्रमिक और दीर्घकालिक है। वर्ग-भेद अतिम रूप से उस समय तक दूर नही होगे, जब तक एक पूर्ण कम्युनिस्ट समाज का निर्माण नही हो जाता।

इस प्रक्रिया के साथ साथ, उससे अविभाज्य रूप से सम्वन्धित कम्युनिस्ट समता जन्म लेगी, यानी जनता की ऐसी पूर्ण सामाजिक समता पैदा होगी, जिसका अर्थ होगा उत्पादन-साधनो के साथ सम्वन्धो की एकरूपता, वितरण मे पूर्ण समानता और व्यक्तिगत और सामाजिक हितो के आन्तरिक मेल-समन्वय के आधार पर समाज तथा व्यक्ति की एकलयता। इस प्रकार वर्गविहीन कम्युनिस्ट समाज मानव-समुदाय के सगठन का सर्वोच्च रूप होगा।

(सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम के वारे मे। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २२वी कागेस, शार्टहैंड रिपोर्ट, खण्ड १, पृष्ठ २०७–२०६)

समाज के जीवन से युद्ध का वहिष्करण कम्युनिज्म का आदर्श है

मजदूर वर्ग की ऐतिहासिक भूमिका केवल मानव द्वारा मानव के शोषण का अन्त करना ही नही, वल्कि मानव-जाति को युद्धो से मुक्त करना भी है। समाजवाद के विचार मे युद्ध की अस्वीकृति निहित है। यह सत्य है कि पूजीवादी प्रचारको ने कम्युनिज्म को एक आक्रमणात्मक विचारधारा के रूप मे पेश करने के लिए एडी चोटी का पसीना एक कर दिया है, लेकिन झूठ सत्य से डरता है। मै मार्क्सवाद की "आक्रमणशीलता" सम्वन्धी झूठ का जवाव खुद मार्क्स के शव्दो मे देना चाहता हू। उन्होने लिखा " आर्थिक दरिद्रता और राजनैतिक विक्षिप्तता से सयुक्त पुराने समाज के विपरीत एक नए समाज का उद्भव होता है, जिसका अन्तर्राष्ट्रीय उसूल शान्ति होगा, क्योकि उसका राष्ट्रीय शासक हर जगह एक ही होगा–श्रम!" वात वस्तुत ऐसी ही है। जिस देश मे सत्ता मेहनतकश जनता के हाथो मे है, वहा दूसरे लोगो को गुलाम वनाने के

लिए, बाहरी देशो, विदेशी बाजारो, कच्चे माल के साधनो अथवा पूजी-विनियोग के क्षेत्रो पर कब्जा करने के लिए युद्ध छेडने मे दिलचस्पी रखनेवाली सामाजिक शक्तिया नही होती।

सोवियत लोग सोवियत समाजवादी व्यवस्था के विश्वासी पक्षपाती है। पृथ्वी पर अन्तत. कम्युनिज्म की विजय मे हमारा दृढ विश्वास है। किन्तु हम किसी दूसरे के ऊपर न तो अपनी व्यवस्था और न अपनी आस्थाए ही लादने का इरादा रखते है। हर राष्ट्र को खुद अपनी शासन-व्यवस्था का चुनाव करना चाहिए, यही हमारी नीति का उसूल है।

समाजवादी विचार बलपूर्वक निर्यात किए जाने की अपेक्षा नही रखते। वे करोडो स्त्री-पुरुषो के मन से पूजीवादी विचारो को निर्वासित करते हुए, बिना निर्यातित हुए ही सारे ससार मे तेजी और आजादी के साथ फैलते जा रहे है। जब आप उस देश मे हो, यानी फ्रास मे, जो मजदूर वर्गीय आन्दोलन के उषा-काल मे तत्वत समाजवाद की मातृभूमि था, तब इस बुनियादी सत्य को याद करना कुछ अटपटा सा लगता है। समाजवाद की विजय के लिए संसार के मेहनतकश लोगो के सम्मिलित सघर्ष मे फ्रासीसी सर्वहारा वर्ग को एक सम्मानित स्थान प्राप्त है। सौ वर्ष से भी अधिक पहले, जबकि रूस मे क्रान्तिकारी आन्दोलन अभी पैदा ही हो रहा था, फ्रास मे सेन्ट-साइमन, फूरिये और काबे की कृतियो मे भावी समाजवादी समाज के उसूलो को विकसित करने के साहसपूर्ण प्रारम्भिक प्रयत्न हो रहे थे और उस समय भी फ्रासीसी सर्वहारा वर्ग समाजवादी विचारो के झडे के नीचे बैरिकेडो पर लडा।

यह सच है कि रूसी सर्वहारा वर्ग ने फ्रासीसी मजदूरो के अनुभवो से अधिक से अधिक लाभ उठाया। फलत वह बहुत आगे बढ जाने तथा समाजवादी समाज का पथ आलोकित करने मे समर्थ हुआ और उस प्रक्रिया मे उसने पर्याप्त अनुभव का सचय किया। अब यह सबके लिए स्पष्ट है कि अगर किसी देश का मजदूर वर्ग समाजवादी मार्ग पर चल पडे, तो वह रूसी सर्वहारा वर्ग की अपेक्षा इस सक्रमण को कही अधिक आसानी से सम्पन्न करेगा।

मै अपना भाषण समाप्त करता हूं। हमारा विश्वास है कि कम्युनिज्म के निर्माण द्वारा हम सारे ससार के मेहनतकश लोगो के प्रति

अपने अन्तर्राष्ट्रीयतावादी कर्त्तव्य की पूर्ति कर रहे है। विश्व समाजवादी व्यवस्था के सभी देशो की अच्छी प्रगति, विश्व सर्वहारा और सभी देशो की शान्तिकामी प्रगतिशील शक्तियो के सयुक्त प्रयत्न ससार मे शान्ति की शक्तियो के पलडे को निश्चयपूर्वक भारी बना देगे और इस प्रकार सदा के लिए समाज के जीवन से विश्वयुद्ध को बहिष्कृत करने की यथार्थपरक सम्भावना की सृष्टि करेगे। लोग शान्ति के सघर्ष मे जितना ही अधिक घनिष्ठ रूप से सयुक्त होगे, विजय उतनी ही अधिक स्थायी होगी।

(फ्रासीसी ट्रेड-यूनियनो के प्रतिनिधियो को दिया गया वक्तव्य। 'सोवियत सघ की विदेश-नीति (१९६०)' शीर्षक सग्रह, खण्ड १, पृष्ठ ३५३ – ३५४)

पार्टी की २०वी काग्रेस ने निष्कर्ष निकाला था कि युद्ध नियतिवत अनिवार्य नही है। यह निष्कर्ष सही साबित हुआ है। आज तो इस निष्कर्ष की पुष्टि करना हमारे लिए और अधिक सकारण है। अब तो ऐसी प्रचण्ड शक्तिया मौजूद है, जो साम्राज्यवादी आक्रमणकारियो का मुकाबला कर सकती है और अगर उन्होने विश्वयुद्ध छेडा तो उन्हे हरा सकती है।

सोवियत सघ तथा यूरोप और एशिया के सभी समाजवादी देशो की आर्थिक योजनाओ की पूर्ति से अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति मे कौनसे नये तत्त्वो का उदय होगा? **तब अन्तर्राष्ट्रीय मामलो के निपटारे के साधन के रूप में युद्ध के निराकरण की सच्ची सम्भावना पैदा हो जाएगी।**

सच तो यह है कि जब सोवियत सघ ससार का अग्रणी औद्योगिक राष्ट्र बन जाएगा, जब चीनी लोक-जनतन्त्र प्रबल औद्योगिक राष्ट्र बन जाएगा और सभी समाजवादी राष्ट्र मिलकर ससार के औद्योगिक उत्पादन का आधे से ज्यादा हिस्सा उत्पन्न करने लगेगे, तब ससार की स्थिति आमूल बदल जाएगी। समाजवादी शिविर के देशो की सफलताए नि.सन्देह संसार भर मे शान्ति की शक्तियो का बल बढाने मे हाथ

बटायेगी। तब तक स्थायी शान्ति के लिए काम करनेवाले देशो के साथ ऐसे नये देश निश्चय ही आ मिलेंगे, जो औपनिवेशिक जुए को उतारकर फेंक चुके होगे। यह विचार लोगो के दिलोदिमाग मे और भी गहरी जड जमा लेगा कि युद्ध अग्राह्य है। शक्तियो का यह नया सन्तुलन इतने विशद रूप से स्पष्ट होगा कि परले दर्जे के दकियानूस साम्राज्यवादी भी समाजवादी शिविर के विरुद्ध युद्ध छेडने की निष्फलता स्पष्ट रूप से अनुभव करेगे। तब समाजवादी शिविर की ताकत का सहारा पाकर शान्तिप्रिय राष्ट्र युद्धकामी साम्राज्यवादी दलो को नया विश्वयुद्ध छेडने के अपने मनसूबे छोड देने के लिए मजबूर कर सकेगे।

इस प्रकार, समाजवाद की विश्वव्यापी विजय से भी पहले, ससार के कुछ हिस्सो मे पूजीवाद के मौजूद रहते हुए भी, समाज के जीवन से विश्वयुद्ध को बहिष्कृत करने की सच्ची सम्भावना साकार हो उठेगी।

('१९५९–१९६५ के लिए सोवियत सघ के आर्थिक विकास के लक्ष्याक'। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की असाधारण २१ वी काग्रेस, शार्टहैड रिपोर्ट, खण्ड १, पृष्ठ ७२–७३)

साम्राज्यवाद "युद्धतत्परता" की नीति को अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो का सतत चालू नियम बना देना चाहता है। लेकिन हम जिस चीज को अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो का सतत चालू नियम बनाना चाहते है वह है, स्थायी शान्ति और राष्ट्रो की आम सुरक्षा। साम्राज्यवाद की राजनीति मुट्ठी भर इजारेदारियो के स्वार्थो की अभिव्यक्ति है। समाजवाद की राजनीति मे समस्त मानवता के हित मूर्तिमान है। यही कारण है जिससे हमे विश्वास है कि समाजवाद की विदेश-नीति का बुनियादी उसूल—शान्तिमय सह-अस्तित्व का उसूल—ही वह ध्वजा होगी जिसके नीचे समस्त जनगण, वे सभी लोग गोलबद होगे जो मानवता के लिए सच्ची शान्ति और समृद्धि चाहते है।

अपना नया कार्यक्रम स्वीकार करते हुए, हमारी महान् पार्टी सारी मानवता के सामने संजीदगी के साथ एलान करती है कि वह विश्व युद्ध को केवल रोकना ही नहीं, बल्कि समाज के जीवन से उसको अभी,

हमारी पीढ़ी के जीवन-काल में ही, हमेशा के लिए निकाल बाहर करना भी अपनी विदेश-नीति का मुख्य लक्ष्य मानती है।

(सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम के बारे मे। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २२वी काग्रेस, शार्टहैड रिपोर्ट, खण्ड १, पृष्ठ २३४–२३५)

कार्यक्रम का मसौदा सच्चे कम्युनिस्ट मानवतावाद की दस्तावेज है, वह राष्ट्रो के बीच शान्ति और भ्रातृत्व के विचारो से ओतप्रोत है। हम अपने देश की लगातार बढती हुई शक्ति को शान्ति और मानवता की प्रगति की सेवा मे लगाते हैं। जब सोवियत सघ प्रथम औद्योगिक शक्ति बन जायेगा, जब विश्व समाजवादी व्यवस्था विश्व विवर्तन मे पूरी तरह निर्णयकारी तत्त्व बन जायेगी और जब सारी दुनिया मे शाति की शक्तिया और भी प्रबल हो जायेंगी, तब पलडा शान्ति की शक्तियो के पक्ष मे हमेशा के लिए भारी हो जायेगा और अन्तर्राष्ट्रीय हवा का रुख बतायेगा कि "आकाश साफ है। विश्वयुद्ध का खतरा गुजर गया और अब कभी नही लौटेगा।"

साथियो, कम्युनिज्म मानवता का युगो पुराना स्वप्न है। मेहनतकश जनता को विश्वास था कि गुलामी और परावलम्बन, अत्याचार और गरीबी, रोज की रोटी के लिए कटु सघर्ष और राष्ट्रो के आपसी युद्धो के स्थान पर एक ऐसा समाज कायम होगा जहा शान्ति, श्रम, स्वाधीनता, समता और भ्रातृत्व का बोलबाला होगा।

(पूर्वोक्त प्रकाशन, पृष्ठ १६३)

५. कम्युनिस्ट पार्टी समाजवाद और कम्युनिज्म के लिए होनेवाले संघर्ष की संगठनकर्त्री है

कम्युनिस्ट संसार का रूपान्तरण तथा नवीकरण करनेवाली महानतम सृजनात्मिका शक्ति है

साथियो, अक्तूबर १९१७ मे पार्टी ने कम्युनिज्म के ऐतिहासिक पथ पर अपनी पहली महान विजय प्राप्त की थी' शोषकों का शासन उलट दिया गया था और सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व की स्थापना की गयी थी। दूसरी काग्रेस मे स्वीकृत पार्टी-कार्यक्रम पूरा किया गया। देश ने समाजवादी रूपान्तरण के गौरवशाली किन्तु व्यवहारत. अज्ञात मार्ग पर कदम रखे।

एक निर्भीक कर्णधार की भाति हमारे परम प्रिय लेनिन सोवियत जलपोत का संचालन कर रहे थे। उन्होने समाजवादी निर्माण की शानदार योजना तैयार की। आठवी काग्रेस मे स्वीकृत लेनिन का पार्टी-कार्यक्रम एक साहसिक वैज्ञानिक भविष्यवाणी, नये समाज के निर्माण की सुस्पष्ट योजना और जनता के लिए जोशीला क्रान्तिकारी आवाहन—एक साथ ही सब कुछ था। पार्टी इस तथ्य को आधार बनाकर आगे बढी कि हमारे पास समाजवाद के निर्माण के लिए आवश्यक सब कुछ है। उसको नयी व्यवस्था की क्रान्तिकारी क्षमताओ और मेहनतकश जनता की वीरता मे गहरी आस्था थी।

नयी व्यवस्था के निर्माण मे अगणित कठिनाइया थी। विशाल देश के विस्तृत भागो मे सर्वत्र युद्ध चल रहा था। अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया और घरेलू प्रतिक्रान्ति की सयुक्त शक्तिया मानव-जाति को समाजवाद

की ओर ले जानेवाला रास्ता प्रारम्भ मे ही रोक देने की नीयत से सोवियत जनतत्र पर टूट पडी थी।

साम्राज्यवादी युद्ध और दस्तन्दाजो के हमले ने रूस की राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था को बरबाद कर दिया था, जो पहले ही प्रमुख पूजीवादी देशो की तुलना मे आर्थिक दृष्टि से ५० से १०० वर्ष तक पिछडी हुई थी। देश का औद्योगिक उत्पादन १९१९ मे १९१३ के उत्पादन के ५ वे हिस्से के बराबर रह गया था। कृषि बुरी हालत मे थी।

हमारी कठिनाइया इस कारण और बढ गयी थी कि हमारे पास समाजवादी उसूलो पर जीवन सगठित करने का अनुभव नही था और हमे इतिहास मे नया मार्ग बनाना पड रहा था। सोवियत जनता बाहर से कोई भौतिक या तकनीकी सहायता नही प्राप्त कर सकती थी। देश शत्रुतापूर्ण पूजीवादी घेरे मे था और उसे मुहासरे की हालत मे कामकाज चलाना पड रहा था।

इन सभी हैरतनाक कठिनाइयो को पार करने और नव जीवन के निर्माण का पथ प्रशस्त करने के लिए पार्टी तथा जनता से सचमुच ही प्रचण्ड प्रयत्न अपेक्षित थे।

हम कम्युनिस्टो को हमारे शत्रु निर्माण या रचना करने मे असमर्थ, सिर्फ विध्वसकारी कहते थे। हमने सचमुच शोषको की उस व्यवस्था को भूमिसात कर दिया, जिससे जनता नफरत करती थी। मगर हमने ऐसा इसलिए किया था कि पूजीवाद की गदगी और गलीज को साफ करके उस जमीन पर कम्युनिज्म का, एक नयी और सर्वाधिक न्यायपूर्ण समाज-व्यवस्था का निर्माण किया जाय। **कम्युनिस्टो को मानवता के इतिहास में महानतम रचनात्मक शक्ति, दुनिया को बदलने और फिर से नया बनानेवाली शक्ति के रूप में स्थान प्राप्त है।**

इतिहास के तथ्यो ने इस बात की पुष्टि कर दी है कि कम्युनिस्ट सबसे अविचल देशभक्त है, अपने देश के सच्चे सपूत और उसके हितो के सबसे अधिक पुरुषार्थी रक्षक है। हम बोल्शेविको ने ही देश को राष्ट्रीय विनाश और विदेशी साम्राज्यवादियो द्वारा गुलाम बनाए जाने से बचाया तथा उसे समस्त मानवता की निगाह मे महान् बनाया।

पूंजीवादी पार्टियो, राजनीतिज्ञो और विचारधारा-निरूपको ने अमानुषिक घृणा और तिरस्कारपूर्ण उपहास के साथ रूस मे समाजवाद के निर्माण की योजना का स्वागत किया। वे समवेत स्वर मे गाल बजाते थे कि "बोल्शेविक प्रयोग" अनिवार्यत असफल होगा। चर्चिल ने भविष्यवाणी की थी कि "रूस मे जिदगी के सभी रूपो का पूर्ण ह्रास होगा" और "समाजवादी तथा कम्युनिस्ट सिद्धान्त . पूरी तरह विफल होगे"। आज हम श्री चर्चिल से पूछ सकते है कि विफल कौन हुआ? आर्थिक दृष्टि से दुनिया के प्रमुख देशो मे सबसे पिछडा हुआ हमारा देश अब दूसरे नम्बर की औद्योगिक शक्ति बन गया है और ऐतिहासिक प्रगति की अगली पात मे खडा है। इस बीच उस ब्रिटेन ने हमेशा के लिए अपनी स्थिति खो दी है, जो एक समय दुनिया मे पहले नम्बर की शक्ति था। यह है समाजवादी विचारो की महान रूपान्तरकारी शक्ति और साम्राज्यवादी विचारो की विफलता का प्रत्यक्ष प्रमाण।

दूसरी इन्टरनेशनल के नेताओ ने भी यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया कि रूस मे समाजवाद का निर्माण असम्भव है। "पूजीवाद के किसी तरह के बुनियादी विनाश का तो कोई सवाल ही नही है . पूजीवाद पुनरुज्जीवित होगा, उसका पुनरुज्जीवित होना लाजिमी है और शायद बहुत शीघ्र ही।" यह थी भविष्यवाणी जो कार्ल काउत्स्की ने हमारे देश के लिए की थी। उन्होने बिल्कुल साफ कहा था कि बोल्शेविक पार्टी अपने कार्यक्रम की तामील करने मे कामयाब नही होगी। मेन्शेविको और दक्षिणपथी समाजवादी-क्रान्तिकारियो ने भी उनके स्वर में स्वर मिलाया था। दक्षिणपथी समाजवादी-क्रान्तिकारी पार्टी की केन्द्रीय समिति की एक प्रामाणिक दस्तावेज मे कहा गया था कि "आर्थिक दृष्टि से पिछडे हुए एक ऐसे देश को, जिसका उद्योग ध्वस्त और परिवहन विश्रृंखलित हो चुका हो, बदलकर समाजवादी देश बनाने के प्रयत्नो का परिणाम इससे अधिक और कुछ भी नही होगा कि राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था तबाह हो जायेगी और देश अव्यवस्था और अराजकता मे डूब जायेगा।"

पूजीवाद और सामाजिक-जनवाद के नकली पैगम्बर सत्य से दूर भटक गये। अगर दक्षिणपंथी समाजवादी नेता तनिक भी ईमानदार होते तो उन्हे स्वीकार करना पड़ता कि बोल्शेविक सही है। एकमात्र कम्युनिस्ट

पार्टी ही ऐसी पार्टी सिद्ध हुई, जो जानती थी कि किस दिशा मे जनता की रहनुमाई की जानी चाहिए। उसने ज़बर्दस्त कठिनाइया पार की, उसने त्रोत्स्कीपथियो, दक्षिणपथी अवसरवादियो, राष्ट्रवादी पथभ्रष्टो तथा अन्य पस्त-हिम्मतो को अपने मार्ग से झाड फेंका और कथनी तथा करनी की बेमिसाल एकरूपता प्रदर्शित करते हुए अपनी योजनाओ को कार्यरूप मे परिणित किया।

सोवियत संघ में समाजवाद की पूर्ण और अंतिम रूप से विजय पार्टी और जनता की सरगर्मियो का मुख्य परिणाम है। विश्वव्यापी ऐतिहासिक महत्व रखनेवाला घोर अद्भुत कार्य सम्पन्न हुआ। मानवजाति को समाजवाद की स्थापना और विकास का कार्यत आज़माया हुआ विज्ञान उपलब्ध हुआ। अब अन्य लोगो के लिए समाजवाद की राह पर अग्रसर होना अधिक आसान है।

एक नये प्रकार के राज्य, समाजवादी राज्य और एक उत्तम प्रकार के जनवाद, समाजवादी जनवाद की स्थापना और सहृति, राजनैतिक क्षेत्र में पार्टी और जनता की मुख्य उपलब्धि है। सोवियत सघ वस्तुत लोकराज, स्वाधीनता और समता का देश है।

उत्पादन के साधनो के सामाजिक स्वामित्व की स्थापना और वर्गो तथा राष्ट्रो के बीच तीव्र सघर्ष पैदा करनेवाले व्यक्तिगत स्वामित्व का उन्मूलन, आर्थिक क्षेत्र में हमारी मुख्य ऐतिहासिक उपलब्धि है। पूजीपति वर्ग की घोषणा थी कि हजारो वर्ष से कायम व्यक्तिगत स्वामित्व चिरस्थायी और पवित्र है। हम कम्युनिस्टो ने उस सिद्धात का साहसपूर्वक खण्डन किया। समाजवाद ने सामाजिक स्वामित्व के एक नये युग का प्रारम्भ किया और उत्पादन की अराजकता, आर्थिक सकटो तथा अन्य सामाजिक व्याधियो को दूर किया।

आश्चर्यजनक रूप से छोटी मुद्दत मे एक शक्तिशाली उद्योग का निर्माण किया गया, जो समाजवाद का भौतिक आधार और हमारे देश की शक्ति तथा समृद्धि की बुनियाद है। पार्टी ने लेनिन की सामूहीकरण-योजना से लैस होकर, सत्ता-ग्रहण के बाद दूसरे नम्बर की अत्यन्त कठिन समस्या, अर्थात् समाजवादी रास्ता अख्तियार करने मे किसानो की सहायता करने की समस्या को हल किया। किसानो का स्वेच्छाप्रेरित

सामूहीकरण मानवता के सामाजिक-आर्थिक इतिहास मे एक उल्लेखनीय घटना है।

अगर आप हमारे देश पर मन की नजर डाले, अतीत से उसकी तुलना करे तो आप देखेंगे कि उसके रूप मे कितनी उजागर तबदीली आ गयी है और इन वर्षो मे हमने कितनी शानदार मजिल तय कर ली है।

रूस हथौडे और ठेले, लकडी के हल और चर्खे का देश समझा जाता था। उसके पास मशीनो की सख्या अमेरिका की अपेक्षा दस गुनी और जर्मनी की अपेक्षा पाच गुनी कम थी। आज सोवियत सघ उन्नत तकनीक, प्रबल शक्ति-सम्पन्न मशीनो, औजारो और अत्यन्त सूक्ष्म-कार्यकारी उपकरणो का, स्वचल उत्पादन-लाइनो, एलेक्ट्रोनिक सगणको और अतरिक्ष-यानो का देश है। हमारे मशीन-निर्माण और धातु-कर्म उद्योगो का उत्पादन १९६१ मे १९१३ की अपेक्षा ३५० गुना और १९१९ की अपेक्षा लगभग १,००० गुना अधिक होगा।

रूस को लकडी, फूस और छाल का देश समझा जाता था और वहा धातु का वास्तविक अकाल रहता था। आज सोवियत सघ इस्पात और अलुमीनम का, सीमेंट और प्लास्टिक का देश है। हम लगभग उतना इस्पात पैदा करते है, जितना ब्रिटेन, पश्चिमी जर्मनी और फ्रास तीनो मिलकर करते है।

रूस किरासिन के चिरागो और लुआठो का देश समझा जाता था। जब सोवियतो की आठवी काग्रेस के प्रतिनिधि 'गोएलरो' बिजलीकरण-योजना पर विचार कर रहे थे, तब मास्को मे उस इमारत को पूरी तरह रोशन करने के लिए भी काफी बिजली मुश्किल से प्राप्त थी, जिसमे काग्रेस हो रही थी। आज सोवियत सघ मे दुनिया के सबसे अधिक शक्तिशाली विराट ऊर्जा-उत्पादक केन्द्र है। हम ३ खरब किलोवाट घटे से भी ज्यादा बिजली पैदा करते है। १९६१ में १९१३ की तुलना में करीब १६० गुना और १९१९ की तुलना मे ६५० गुना अधिक बिजली पैदा होगी।

बहुत दिन पहले, जब देश समाजवादी निर्माण प्रारम्भ कर रहा था, लेनिन ने हमारे सामने उपस्थित विराट कार्यभारो का वर्णन करते हुए, रूसी कवि नेक्रासोव की उन प्रसिद्ध पक्तियो को याद किया था,

जो अपने देश के प्रति गहरी व्यथा और उसकी शक्ति मे अमिट आस्था से पूर्ण है

ओ दरिद्रिणी,
रत्न-गर्भिणी,
शक्ति-युता तू,
सत्व-हृता तू,
जननि रूस हे!

लेनिन ने बोल्शेविको के इस अडिग सकल्प की घोषणा की थी कि "किसी भी कीमत पर यह उपलब्ध किया जाना चाहिये कि हमारी मातृभूमि दरिद्रिणी तथा सत्व-हृता नही रहे और वह पूरे अर्थ मे शक्तियुक्ता तथा रत्न-गर्भिणी बने"।* हमने यह उपलब्ध कर लिया है!

सामाजिक क्षेत्र में पार्टी ने आम जनता की युग-युग की आशाए पूरी कर दी है। मनुष्य द्वारा मनुष्य के उत्पीडन के सभी रूपो का अन्त कर दिया गया है। शोषक वर्गो का उन्मूलन हो गया है। मजदूर वर्ग समाज की रहनुमाई करनेवाली शक्ति बन गया है। किसानो ने समाजवादी कृषि का रास्ता अपना लिया है। समस्त सोवियत जनता की समाजवादी एकता का उदय हो चुका है। स्त्रियो को पुरुषो जैसे ही अधिकार और समाज की भलाई के लिए सक्रिय रूप से रचनात्मक कार्य करने के सभी सुयोग प्राप्त हैं।

विचारधारा के क्षेत्र में एक ऐसी क्रान्ति हुई है, जिसका अन्तर्य अत्यन्त व्यापक और जिसकी सामाजिक अर्थ-गर्भिता तथा परिणति महान है। कम्युनिस्टो ने ज्ञान-विज्ञान की मशाल उठाई है। सास्कृतिक क्रान्ति ने निरक्षरता का नाश कर दिया है और करोडो लोगो को सस्कृति तथा विज्ञान की उपलब्धिया सुलभ हो गयी है। जन-बुद्धिजीवियो का उद्भव हुआ है। इजीनियरो की प्रशिक्षा के क्षेत्र मे हम बहुत पहले दुनिया मे प्रथम स्थान प्राप्त कर चुके है। भविष्य की सार्वजनीन सस्कृति का

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, चौथा रूसी सस्करण, खड २७, पृष्ठ १३४।

नमूना, एक समाजवादी सस्कृति की रचना हो चुकी है। मार्क्सवाद-लेनिनवाद सोवियत समाज की विचारधारा वन चुका है। वैयक्तिक स्वामित्व द्वारा पोषित मानवद्वेषी भावनाए अब अतीत मे विलीन हो चुकी हैं। सोवियत जनता के जीवन और कार्य मे सामूहिकता के उसूलो की विजय हो चुकी है।

पार्टी ने उस बेहद पेचीदा समस्या, **अन्तर्जातीय सम्बन्धों की समस्या** को, हल कर लिया है, जिसने मानवजाति को सदियो तक परेशान किया है और जो पूजीवादी दुनिया मे अब तक कायम है। जारशाही रूस को "जातियो का जेलखाना" कहा जाता था। सोवियत सघ जातियो के विरादराना परिवार के रूप मे, एक ऐसे देश के रूप मे ख्यात है, जहा अनेक जातिया मैत्रीपूर्वक रहती और फूलती-फलती है। सोवियत व्यवस्था ने पहले की उन समस्त उत्पीडित और अधिकारवचित जातियो मे नवजीवन तथा समृद्धि पैदा की है, जो पितृसत्तात्मक कबीले से लेकर पूजीवादी व्यवस्था तक के ऐतिहासिक विकास की विभिन्न मजिलो में पडी हुई थी। अधिक विकसित जातियो की, सर्वोपरि महान् रूसी जाति की सहायता से पहले की पिछडी हुई जातिया पूजीवादी रास्ते से बचकर आगे निकल गयी और उन्नत जातियो के स्तर तक पहुच गयी। सोवियत संघ मे समान विशेषताओ से युक्त, विभिन्न जातियो की जनता का एक नया ऐतिहासिक समुदाय—सोवियत जन-समुदाय—निर्मित हो चुका है। सोवियत समाजवादी जनतत्र संघ उसकी सम्मिलित समाजवादी मातृभूमि है, समाजवादी अर्थ-व्यवस्था उसकी सम्मिलित आर्थिक बुनियाद है, उसका सम्मिलित सामाजिक वर्गीय ढाचा है, मार्क्सवाद-लेनिनवाद उसकी सम्मिलित विचारधारा है, कम्युनिज्म का निर्माण उसका सम्मिलित लक्ष्य है, और उसकी आध्यात्मिक निर्मिति एव मनोवृत्ति मे अनेक सम्मिलित विशेषताए हैं।

इन सभी विराट रूपान्तरो के फलस्वरूप **जनता के रहन-सहन की परिस्थितियां आमूल बदल गयी है**। जारशाही रूस में मजदूरो को कडी मशक्कत करना पडती थी, जो अक्सर १२ से १४ घटे तक जारी रहती थी। उनका मजूरी जिन्दा रहने के लिए भी मुश्किल से काफी होती थी। अनेक मजदूर गंदे चालो मे रहते थे। किसान सच्चे मानी मे जमीन का

अकाल महसूस कर रहे थे। हर तीसरे परिवार के पास हल जोतने के लिए घोडा नही था। फसल का अधिकाश टैक्स तथा अन्य वसूलियो मे ही चला जाता था। अधिकतर किसानो को भरपेट खाना तक नही जुडता था। उन्हे बडे त्यौहारो पर ही गोश्त नसीब होता था और शक्कर एक अप्राप्य विलास-सामग्री समझी जाती थी। हर साल हजारो किसान तबाही के शिकार होकर शहरो मे बेकारो की फौज मे बढती करते थे।

समाजवाद ने जनता को एक भिन्न जीवन दिया है। मेहनतकश जनता की भयानक विपत्ति, बेकारी का बहुत पहले नाश कर दिया गया था। बेकारी के निराकरण और काम के घटाए गए घटो को देखते हुए, मजदूरो की वास्तविक मजूरी ४८० फीसदी और किसानो की असली आय ५०० फीसदी से अधिक बढी है। गैस, बिजली, टेलीविजन, रेडियो, रेफ्रीजरेटर, पुस्तके और अखबार—ये सभी चीजे मेहनतकश जनता के घरो मे पहुच गयी है। हमारे देश मे मकान भाडा दुनिया भर मे सबसे कम है। टैक्सो की समाप्ति का कानून भी अमल मे लाया जा रहा है। यह तथ्य हमारी सफलताओ का ज्वलत प्रमाण है कि हमारे देशवासियो की औसत आयु बढकर ६९ वर्ष हो गयी है। इस प्रकार समाजवाद ने औसत आयु की मुद्दत दुगुनी से अधिक कर दी है। कम्युनिज्म जीवन की मुद्दत को और अधिक बढाकर कवि के इस स्वप्न को साकार बनायेगा—

"हम शतजीवी हम चिरायु है,
हम वार्धक्य-विहीन आयु है।"

इतिहास मे पहली बार समाजवाद ने मनुष्य को बुनियादी सामाजिक अधिकार—श्रम का अधिकार, अवकाश का अधिकार, बुढापे, बीमारी और अक्षमता की अवस्था मे भौतिक सुरक्षा और शिक्षा प्राप्ति के अधिकार—दिये है। समाजवाद ने सोवियत जनता को अपने और अपने बच्चो के भविष्य मे विश्वास प्रदान किया है, सुरक्षा की भावना दी है और ऐतिहासिक आशावाद की भावना मे सवारा बनाया है।

महान् देशभक्तिपूर्ण युद्ध के काल मे समाजवाद की विराट शक्ति उभरकर सामने आयी, जबकि अजेय समझे जानेवाले जर्मन फासिस्ट दस्युओ को कुचल दिया गया था।

समाजवाद की विजय ने सामाजिक विकास के स्वरूप मे व्यापक परिवर्त्तन कर दिये है। हजारो वर्ष तक लोग वस्तुपरक सामाजिक नियमो की स्वतस्स्फूर्त्त कार्यकारिता के शिकार रहे, उसके मुहरे बने रहे। समाजवाद मे जनता ने वस्तुपरक नियमो का केवल ज्ञान ही नही प्राप्त किया, वल्कि उनके ऊपर आधिपत्य भी प्राप्त कर लिया। मजदूरो और किसानो ने, जिन्हे शोषक एक गूगा और बेजान समूह मानते थे, समाजवादी परिस्थितियो मे सृजनात्मक प्रयास की वास्तविक अनन्त क्षमता, वीरता के चमत्कार, अद्वितीय साहस और प्रचण्ड शक्ति का परिचय दिया है। सोवियत सघ के उदाहरण से अपनी शक्ति मे सभी देशो की मेहनतकश जनता का विश्वास पुष्ट हुआ है।

हमारे देश मे समाजवादी व्यवस्था द्वारा प्रदर्शित मुख्य श्रेष्ठताओ से इस प्रश्न का अत्यन्त निश्चित उत्तर प्राप्त हुआ है कि मानवता को कौनसा रास्ता ग्रहण करना है। तथ्यो से यह सिद्ध है कि पूजीवादी और सामाजिक-जनवादी पार्टियो की सारी योजनाए दिवालिया हो गयी है। ये पार्टिया अपने वायदो को निभा नही सकी। वे कोई भी बुनियादी सामाजिक समस्या न तो हल कर सकी और न कर सकती थी। इतिहास ने इस बात की पुष्टि कर दी है कि कम्युनिस्ट ही एकमात्र ऐसी सामाजिक-राजनैतिक शक्ति है, जो मानवता को परेशान करनेवाली सामाजिक समस्याओ को सचमुच हल करते है और अपनी कार्यक्रम सम्बन्धी जिम्मेदारियो को पूरा करते है।

(सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम के बारे मे। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २२ वी काग्रेस, शार्टहैंड रिपोर्ट, खण्ड १, पृष्ठ १४६–१५४)

पार्टी की आम लेनिनवादी नीति को निरन्तर दृढतापूर्वक पूरा करते रहने के कारण ही हमे अपनी विदेश-नीति तथा गृह-नीति दोनो ही मे महान सफलताए प्राप्त हुई है। पार्टी की बीसवी काग्रेस के ऐतिहासिक फैसलो मे उस नीति की सबल अभिव्यक्ति हुई थी। केन्द्रीय समिति इस बात की सूचना देना आवश्यक समझती है कि बीसवी काग्रेस द्वारा स्वीकृत

नीति विजयी हुई है। यथार्थ द्वारा प्रेरित और लेनिनवादी क्रातिकारी सृजन की भावना से ओत-प्रोत, वह नीति समस्त सोवियत जनता का हेतु बन गयी है। पार्टी ने जनता के साथ अपने सम्बन्धो को अधिक मजबूत किया है और उसकी प्रचण्ड शक्ति की सहायता से सोवियत सघ की महत्ता को और बढाया है।

असाधारण इक्कीसवी काग्रेस हमारी प्रगति के मार्ग की एक महत्वपूर्ण मजिल थी। उसका ऐतिहासिक महत्व था, क्योंकि उसमे सप्तवर्षीय आर्थिक विकास योजना स्वीकार की गयी और पूरे पैमाने पर कम्युनिस्ट निर्माण के युग मे सोवियत सघ के प्रवेश की घोषणा की गयी।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की बाईसवी काग्रेस निश्चय ही एक युगातरकारी भूमिका अदा करेगी, क्योंकि इसमे पार्टी के इस नये कार्यक्रम पर विचार किया जाएगा और उसे स्वीकार किया जायेगा, जो कम्युनिस्ट समाज के निर्माण का कार्यक्रम होगा, जो कम्युनिज्म की विजय के सघर्ष मे पार्टी और जनता की विजय-पताका और विचारधारात्मक हथियार बन जायेगा।

कम्युनिस्टो की वह लेनिनवादी पार्टी, जो मजदूर वर्ग और समस्त श्रमजीवी जनता का हाड-मास है, जो उनका हृदय और उनका मस्तिष्क है, जो उनके बुनियादी हितो और उनके क्रान्तिकारी सकल्प को व्यक्त करती है, एक लम्बी और दुर्गम, किन्तु शानदार मजिल तय कर चुकी है। समाज को बदलने मे ससार की किसी अन्य पार्टी को इतनी सफलता नही मिली है। आपको व्ला० इ० लेनिन की भविष्यवाणी याद होगी "अगर आप हमे क्रान्तिकारियो का एक सगठन दे दीजिये, तो हम रूस की कायापलट कर देंगे!" जब उन्होने यह बात कही थी, तब से साठ वर्ष बीत चुके है। आज सारी दुनिया देख सकती है कि बोल्शेविको ने सचमुच अपने देश की कायापलट कर दी है। जो पहले जारशाही रूस था, आर्थिक दृष्टि से पिछडा एक पूजीवादी देश था, वह एक शक्तिशाली और समृद्ध समाजवादी ताकत बन गया है। आज हम उन पुराने बोल्शेविक सूरमाओ का हार्दिक अभिवादन करते है, जिन्होने लेनिनवादी पार्टी के सदस्य की हैसियत से जनता की सुख-समृद्धि के लिए, समाजवाद के लिए कई दशाब्दियो तक साहसपूर्ण क्रान्तिकारी सघर्ष किया। हम पुराने सूरमाओ

12*

के उन शानदार प्रतिनिधियो को सलामी देते है जो २२ वी पार्टी-काग्रेस के लिए प्रतिनिधि चुने गये है।

हमारी पार्टी को इस बात पर उचित गर्व है कि उसने अपने पहले और दूसरे कार्यक्रम पूरे कर लिये है। सोवियतो की भूमि मे समाजवाद की पूर्ण और अन्तिम विजय प्राप्त करके, हमारी लेनिनवादी पार्टी ने केवल अपने राष्ट्रीय कार्यभार को ही नही बल्कि सभी देशो के सर्वहारा के प्रति, विश्व कम्युनिस्ट आदोलन के प्रति अपने अतर्राष्ट्रीयतावादी कार्यभार को भी सम्मान के साथ निभाया है।

(सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २२वी काग्रेस मे पार्टी की केन्द्रीय समिति द्वारा पेश की गई रिपोर्ट। पूर्वोक्त प्रकाशन, पृष्ठ १००–१०१)

कम्युनिस्ट पार्टी का नेतृत्व सोवियत जनता की समस्त सफलताओं की जमानत। पार्टी-पांतों की संहति तथा पार्टी की संघर्ष-क्षमता में वृद्धि

अपने संगठनकर्ता और नेता महान लेनिन की रहनुमाई मे कम्युनिस्ट पार्टी ने अक्तूबर क्रान्ति की विजय के प्रारम्भिक दिनो से ही सोवियत जनता के सारे प्रयत्नो को क्रान्ति की उपलब्धियो की सुरक्षा, समाजवादी निर्माण-योजनाओ की पूर्ति और सोवियत राज्य की शक्ति-सहति मे प्रवृत्त किया। व्लादीमिर इल्यीच लेनिन की मृत्यु के उपरान्त पार्टी अपनी केन्द्रीय समिति के इर्द-गिर्द सघटित हुई, जिसके अगुआ जो० वी० स्तालिन थे। पार्टी ने लेनिन के कार्यक्रम को दृढता और लगन के साथ पूरा किया तथा हमारे देश को लगातार सफलता की एक मजिल से दूसरी मजिल तक आगे बढाया। उसके नेतृत्व मे सोवियत जनता ने समाजवादी औद्योगीकरण तथा कृषि का सामूहीकरण सम्पन्न किया, समाजवादी समाज का निर्माण किया और महान् देशभक्तिपूर्ण युद्ध मे ऐतिहासिक विजय प्राप्त की। इन विजयो ने हमारे देश को एक प्रबल समाजवादी शक्ति मे परिवर्तित कर दिया तथा उसे और अधिक अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा का पात्र बनाया।

कम्युनिज्म की ओर सोवियत संघ की प्रगति में, पार्टी और जनता के जीवन में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की बीसवीं कांग्रेस एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक मंज़िल थी। हमारे समस्त देश और समूची सोवियत जनता ने बीसवीं कांग्रेस के फैसलों का, उस कांग्रेस द्वारा तैयार की गयी कम्युनिस्ट निर्माण की योजनाओं का हार्दिक समर्थन किया, जिन्हें प्रबल उत्साह के साथ कार्यान्वित किया जा रहा है। कुछ दिनों में मेहनतकश जनता के प्रतिनिधियों की सोवियतों के काम में प्रत्यक्ष ही अधिक सरगर्मी आ गई है और वे आर्थिक और सांस्कृतिक निर्माण की रहनुमाई में अधिक भाग ले रही हैं। ट्रेड-यूनियनें जनता को और अधिक व्यापक पैमाने पर उत्पादन के प्रबन्ध में खींचती हुई उनकी रचनात्मक क्रियाशीलता का विकास कर रही हैं। लेनिनवादी कोम्सोमोल (तरुण कम्युनिस्ट लीग) बहुतेरे उपयोगी काम कर रहा है। वह हमारी पार्टी के आह्वान का सदा उत्साहपूर्वक अनुसरण करता है और कम्युनिस्ट निर्माण के विभिन्न क्षेत्रों में पहलकदमी प्रदर्शित करता है। कांग्रेस के बाद की मुद्दत हमारे देश के विकास में और बड़ी बड़ी सफलताओं के लिए उल्लेखनीय रही है।

तय की हुई मंज़िल के विश्लेषण तथा भविष्य के लिए योजनाएं बनाने में २० वीं पार्टी-कांग्रेस ने उच्च मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त-निष्ठा तथा पिछली कमज़ोरियों और ग़लतियों के प्रति असहिष्णुता प्रदर्शित की, बोल्शेविक आलोचना एवं आत्मालोचना के स्तर को और ऊंचा बनाया और कम्युनिस्ट निर्माण की प्रस्तुत मंज़िल में जीवन द्वारा पेश की गई समस्याओं के समाधान में रचनात्मक दृष्टिकोण का उदाहरण पेश किया। पार्टी-कांग्रेस ने जो० वी० स्तालिन की व्यक्ति-पूजा से सम्बन्धित ग़लतियों की मौलिक आलोचना की और उनके दुष्परिणामों पर विजय पाने के लिए कार्रवाइयां तय कीं। व्यक्ति-पूजा की आलोचना में पार्टी-कांग्रेस ने मार्क्सवाद-लेनिनवाद के बुनियादी उसूलों को, जो० वी० स्तालिन के चरित्र की उन नकारात्मक विशेषताओं और बुराइयों के बारे में ब्ला० इ० लेनिन की राय को आधार बनाया, जो उनके जीवन के अन्तिम दौर में ख़ास तौर से संगीन हो गयी थीं और जिन्होंने हमारे सम्मिलित हेतु को भयंकर क्षति पहुंचाई। उक्त आलोचना ने तथा व्यक्ति-पूजा के दुष्परिणामों को निश्शेष करने के लिए पार्टी द्वारा किए गए अहम

काम ने कम्युनिस्ट पार्टी की सारी सरगर्मियो के सुधार, सामूहिक नेतृत्व तथा पार्टी-जीवन के प्रतिमानो से सम्बन्धित लेनिनवादी उसूलो की निरन्तर तामील, क्रान्तिकारी कानूनो की कडी पाबन्दी, सोवियत और पार्टी के अन्दरूनी जनवाद के अपर विकास, विचारधारा सम्बन्धी कार्यो के सुधार तथा जनता की रचनात्मक पहलकदमी और क्रियाशीलता की वृद्धि मे सहायता की है।

बीसवी काग्रेस मे हमारी पार्टी ने खुद अपनी पहलकदमी पर स्तालिन की गलतियों की आलोचना की। उसने प्रथमत' तो ऐसा इसलिए किया कि उन गलतियो को दुरुस्त कर लिया जाए, दूसरे इसलिए कि कही भी उनकी कदापि पुनरावृत्ति न हो और तीसरे इसलिए कि वैज्ञानिक समाजवाद के महान सिद्धान्त की शुद्धता को सख्ती के साथ बरकरार रखते हुए मार्क्सवाद-लेनिन्वाद के प्रति किसी तरह के कठमुल्लेपन की प्रवृत्ति न पनपने दी जाए और उस सिद्धान्त के प्रति एक रचनात्मक दृष्टिकोण की जमानत हो।

हम कम्युनिस्ट लोग व्यक्ति-पूजा की आलोचना इसलिए करते है कि वह मार्क्सवाद-लेनिनवाद की प्रकृति के विरुद्ध है, वह कुछ ऐसी चीज है जिसे कम्युनिस्ट पार्टी मे, समाजवादी समाज मे बर्दाश्त नही किया जा सकता। पार्टी ऐसा कर रही है अपनी स्थिति को सुदृढ बनाने और समाजवादी व्यवस्था को मजबूत करने के लिए, ताकि ऐसी बाते फिर कभी न पैदा हो। लेकिन हम उन लोगो के साथ सहमत नही हो सकते, जो समाजवादी व्यवस्था के खिलाफ, कम्युनिस्ट पार्टी के खिलाफ हमला करने के लिए व्यक्ति-पूजा की आलोचना को इस्तेमाल करने की कोशिश करते है। स्तालिन की सरगर्मियो के नकारात्मक पहलुओ की आलोचना करते हुए पार्टी उन सब लोगो के खिलाफ लडी और लडती रहेगी, जो स्तालिन को बदनाम करते है, जो व्यक्ति-पूजा की आलोचना करने के बहाने हमारी पार्टी की सरगर्मियो के उस दौर की एक गलत और विकृत तस्वीर पेश करते है, जिसमे केन्द्रीय समिति के रहनुमा जो० वी० स्तालिन थे। एक निष्ठावान मार्क्सवादी-लेनिनवादी और पक्के क्रान्तिकारी के रूप मे स्तालिन को इतिहास मे सुयोग्य स्थान प्राप्त

होगा। हमारी पार्टी और सोवियत जनता स्तालिन को याद रखेगी और उन्हे सम्मान प्रदान करेगी।

कुछ "आलोचक" हमारी पार्टी के संघर्ष के उस दौर को लाछित करने के लिए, समाजवाद के लिए अपने सघर्ष मे सोवियत सघ द्वारा प्रशस्त किए गए राजमार्ग को कुत्सित करने के लिए अपनी शक्ति भर प्रयत्न कर रहे है। वे स्तालिनवादी शब्द को एक नकारात्मक मानी पिन्हाकर उसका इस्तेमाल उन लोगो के लिए करते है, जो निष्ठावान लेनिनवादी है, जिन्होने जनता के हितो के लिए, समाजवाद के हेतु के लिए लडने मे कोई दकीका न बाकी छोडा और न इस समय छोड रहे है। ऐसा करके ये "आलोचक" मार्क्सवाद-लेनिनवाद के प्रति, सर्वहारा वर्गीय अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के प्रति निष्ठावान कम्युनिस्ट तथा मजदूर पार्टियो के नेताओ को बदनाम करने की, उन्हे अविश्वसनीय ठहराने की कोशिश करते है। इस प्रकार के "आलोचक" या तो पक्के परनिन्दक है या ऐसे लोग है जो सशोधनवाद की सडाद मे डूबते जा रहे है और मार्क्सवाद-लेनिनवाद के उसूलो से अपने भटकाव को "स्तालिनवाद" के नारो के पीछे छिपाने की कोशिश कर रहे है। यह बात आकस्मिक नही है कि साम्राज्यवादी प्रचार ने "स्तालिनवाद" और "स्तालिनवादियो" के खिलाफ सघर्ष के उकसावेबाज नारे को अपने हथियारो मे शामिल कर लिया है।

पार्टी मार्क्सवाद-लेनिनवाद से हर भटकाव के खिलाफ, उसके सार को विकृत करने की हर कोशिश के खिलाफ लडी है और दृढतापूर्वक लडती रहेगी, वह उन सब लोगो के खिलाफ लडेगी जो समाजवाद और कम्युनिज्म के सघर्ष मे हमारे सकल्प को कमजोर करना, हमारी सहति को तोडना और हमारी एकता को नष्ट करना चाहते है।

केवल एक ऐसी मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी ही व्यक्ति-पूजा से सम्बन्धित खराबियो और गलतियो की प्रत्यक्ष और खुलेआम आलोचना करने का साहसपूर्ण कदम उठा सकती थी, जो मजबूत है, जिसका जनता पर विश्वास है, जो जनता के साथ अविभाज्य रूप से सम्बद्ध है और जिसे जनता का हार्दिक विश्वास तथा समर्थन प्राप्त है। पूजीवादी देशो मे कहा ऐसी शासक पार्टी है, जो इस तरह का कोई भी काम कर सकती

हो? वहा एक भी ऐसी पार्टी नही है। उल्टे वहा की सभी पार्टिया अपनी सरगर्मियो मे होनेवाली गलतियो और उनके नकारात्मक पहलुओ पर पर्दा डालती है, उन्हे जनता से छिपाती है, पूजीवाद के असाध्य दोषो और नासूरो पर रगसाजी करती है और "वर्ग-शाति" तथा पूजीवादी समाज मे "समन्वय" सम्बन्धी नानाविध मिथ्या सिद्धान्तो द्वारा मेहनतकश जनता को धोखा देती है।

मजदूर वर्ग को, जो उठता हुआ क्रान्तिकारी वर्ग है, नवजीवन के निर्माण मे होनेवाली गलतियो और खामियो को छिपाने की जरूरत नही है। व्ला० इ० लेनिन ने जोर देकर कहा था कि "सर्वहारा वर्ग को यह स्वीकार करने मे कोई भय नही है कि क्रान्ति मे अमुक अमुक बाते शानदार तरीके से ठीक उतरी और अमुक अमुक नही उतरी। आज तक तबाह हुई सभी क्रान्तिकारी पार्टिया इस कारण तबाह हुई कि वे मगरूर हो गई और यह नही समझ पाई कि उनकी शक्ति का स्रोत कहा है, वे अपनी कमजोरियो का जिक्र करने मे डरती थी। लेकिन हम तबाह नही होगे, क्योकि हम अपनी कमजोरियो की बात कहने मे डरते नही है और उन कमजोरियो पर काबू पाना सीख लेगे।"*

पार्टी-जीवन के लेनिनवादी मानको का अडिग रूप से पालन करती हुई, हमारी पार्टी अपने काम के रूपो, तरीको और शैलियो मे निरन्तर सुधार कर रही है। वह ऊपर से नीचे तक हर स्तर पर सामूहिक नेतृत्व और अन्दरूनी पार्टी-जनवाद के उसूलो को लागू कर रही है।

मार्क्सवादी द्वन्द्ववाद सिखलाता है कि प्रत्येक विवर्तन अन्तर्विरोधो के उद्घाटन और निराकरण के माध्यम से घटित होता है। पूजीवादी व्यवस्था की हालतो मे, जिसके अन्तर्गत परस्पर-विरोधी वर्ग मौजूद है, उक्त अन्तर्विरोध अशम्य है और उन्हे केवल वर्ग-सघर्ष की प्रक्रिया मे ही सुलझाया जा सकता है। समाजवाद के निर्माण की प्रारभिक मजिलो मे, जबकि शोषक वर्गो (पूजीपति, जमीदार, कुलक) के अवशेष अभी विद्यमान होते है, जिनका देश मे किसी हद तक असर रहता है और

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, चौथा रूसी सस्करण, खण्ड ३३, पृष्ठ २७८।

जिन्हे बाहर की प्रतिक्रान्तिकारी शक्तियो का समर्थन प्राप्त रहता है, वर्ग-सघर्ष सगीन वन सकता है और अन्तर्विरोध शत्रुता का रूप ग्रहण कर सकते है।

लेकिन महान नैतिक तथा राजनैतिक एकता द्वारा सम्बद्ध समाजवादी समाज मे, जहा शोषक वर्ग नही रह जाते है और केवल मेहनतकश जनता – मजदूरो और किसानो – के मित्रतापूर्ण वर्ग ही शेष रहते है, अन्तर्विरोधो का स्वरूप बुनियादी तौर से भिन्न होता है। वे मुख्यत समाजवादी अर्थ-व्यवस्था की तीव्र प्रगति से सम्बन्धित, जनता की भौतिक तथा सास्कृतिक आवश्यकताओ की वृद्धि से सम्बन्धित अन्तर्विरोध और कष्ट होते है; वे नूतन और पुरातन के, प्रगति और पिछड़ेपन के अन्तर्विरोध होते है, वे समाजवादी समाज के सदस्यो की वढती हुई आवश्यकताओ और उनकी पूर्ति की अब तक सीमित भौतिक तथा तकनीकी सुविधाओ के अन्तर्विरोध होते है। जैसा कि सोवियत राज्य के ४० वर्ष के अनुभव से प्रगट है, समाजवाद और कम्युनिज्म के भौतिक और तकनीकी आधार का तेज़ी और मजबूती के साथ विकास करके, मेहनतकश जनता की समाजवादी चेतना को वढाकर समाजवादी समाज खुद उक्त अन्तर्विरोधो पर विजय प्राप्त कर रहा है।

सोवियत समाज का तूफानी गति से विकास हो रहा है। समाजवादी निर्माण के एक या दूसरे क्षेत्र मे नेतृत्व के रूपो को सुधारने और दोषहीन बनाने की आवश्यकता विकास की निश्चित मजिलो मे पैदा होती है। हमारी पार्टी ने अपनी तमाम सरगर्मियो मे यह दिखला दिया है कि वह गतिरोध और पिछड़ेपन के खिलाफ दृढता के साथ लड रही है, वह अप्रयोजनीय रूपो को अस्वीकार करती है और प्रगति के तकाज़े के अनुकूल नए रूपो का निर्माण करती है।

पार्टी की तमाम व्यावहारिक सरगर्मी मार्क्सवाद-लेनिनवाद की सततजीवी, प्रगतिकामी क्रान्तिकारी भावना की मूर्त अभिव्यक्ति है। इस दृष्टिकोण के उदाहरण है २० वी पार्टी-काग्रेस के निर्णय, गत वर्षो मे कृषि के क्षेत्र मे एकाएक तेज़ वढती और उद्योग एव निर्माण मे नेतृत्व के पुनर्संगठन के लिए पार्टी द्वारा उठाए गए कदम।

कम्युनिस्ट पार्टी की नीति के लिए सोवियत जनता का सर्वसम्मत समर्थन मालेन्कोव, कागानोविच, मोलोतोव और शेपीलोव के उस पार्टी-

विरोधी गुट के सम्बन्ध मे पार्टी की केन्द्रीय समिति के जून (१९५७-संपा०) वाली प्लीनरी मीटिंग के फैसलो का हार्दिक तथा राष्ट्रव्यापी अनुमोदन होने से यकीनी तौर पर जाहिर हो गया था, जिसने सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २०वी काग्रेस द्वारा स्वीकृत लाइन का विरोध किया था तथा पार्टी की लेनिनवादी एकता की जड खोदने की कोशिश की थी। पार्टी और जनता ने उस पार्टी-विरोधी गुट को रास्ते से ठोकर मारकर दूर कर दिया, अपनी पांतो को और घनिष्ट रूप से सयुक्त किया और अब वे कम्युनिस्ट समाज के निर्माण के महान लक्ष्य की ओर एकमात्र सही लेनिनवादी मार्ग पर दृढता और विश्वास के साथ आगे बढ रही है।

सोवियत राज्य के पिछले ४० साल के तजरबे से जाहिर है कि बिना एक ऐसी पार्टी के, जो चट्टान की तरह एकताबद्ध हो, जो सामाजिक विकास के नियमों के ज्ञानरूपी शस्त्र से सज्जित हो, जो मार्क्सवादी-लेनिनवादी उसूलो के प्रति वफादार हो, मजदूर वर्ग, मेहनतकश किसान-समुदाय और हमारी समस्त जनता कभी भी सत्ता पर अधिकार जमाने, अपने शत्रुओ को पराजित करने, समाजवादी समाज स्थापित करने और सफलतापूर्वक कम्युनिज्म मे क्रमिक सक्रमण प्रारभ करने मे समर्थ न हुई होती। आइए हम अपनी शानदार पार्टी की लेनिनवादी एकता की अपनी आख की पुतली की तरह निरन्तर रक्षा करे, जनता के साथ उसके सम्बन्धों को मजबूत करे और मार्क्सवाद-लेनिनवाद की महान विजय-पताका को बुलन्द रखे!

सोवियत देश की भावी सफलताओ की गारंटी है सोवियत सघ की सभी जातियो के आजमाए हुए हिरावल, कम्युनिस्ट पार्टी के गिर्द उनकी घनिष्ट एकता, कम्युनिज्म के संघर्ष मे पार्टी और जनता की अविभाज्य एकता।

(महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति के ४० वर्ष। सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के जयती-अधिवेशन मे पेश की गयी रिपोर्ट। ६ नवम्बर १९५७। सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत का जयती-अधिवेशन ..., शार्टहैंड रिपोर्ट, सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत का प्रकाशन, १९५७, पृष्ठ २९ – ३०)

इस २२वी काग्रेस के मच से हम घोषणा करते है कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद की शिक्षा की शुद्धता और उसके महान उसूलो की समस्त विकृतियो के प्रति असहिष्णुता का रवैया हमारी पार्टी के लिए कानून की हैसियत रखते है। कम्युनिस्टो के लिए क्रान्ति का हेतु, जनता का हेतु सर्वोपरि होता है। जनता के नेता अगर मेहनतकशो के बुनियादी हितो को व्यक्त करे और सही मार्ग पर चलें, तभी नेता कहलाने योग्य है। इस प्रकार के नेता सघर्ष के दौरान मे ही फौलाद बनते है; वे जनता की, कम्युनिस्ट हेतु की सेवा करके मान प्राप्त करते है, वे जनता की सेवा करते है और उन्हे जनता के नियन्त्रण का पाबद होना चाहिये।

साथियो, हमारी पार्टी मे गृह तथा विदेश-नीति की हर समस्या पर सामूहिक रूप से विचार किया जाता है और जो फैसले किये जाते है, वे पार्टी के सामूहिक अनुभव की अभिव्यक्ति होते है। यह लेनिनवादी उसूलो की सच्ची तामील है। केद्रीय समिति की प्लीनरी मीटिगो और सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के अधिवेशनो मे विचारार्थ पेश किए जानेवाले सभी प्रश्नो पर पार्टी के सभी सदस्यो और सारी जनता द्वारा विचार किया जाना एक नियम बन गया है। क्रान्तिकारी वैधता की पुन-स्थापना, पार्टी तथा सोवियत जनवाद की अभिवृद्धि, स्थानीय पार्टी तथा सोवियत निकायो के अधिकार तथा भूमिका-विस्तार और मेहनतकश जनता की सृजनात्मक पहलकदमी के प्रोत्साहन के लिए की गई कार्रवाइयो से अच्छे नतीजे निकले है।

केद्रीय समिति ने इस बात पर विशेष ध्यान दिया है कि पार्टी-काग्रेसो और केद्रीय समिति की प्लीनरी मीटिगो समेत सभी निर्वाचित निकायो की बैठके नियमित रूप से हुआ करे। हम जानते है कि लेनिन के जीवन-काल मे पार्टी-काग्रेसे कितने नियमित रूप से होती थी। सोवियत सत्ता के प्रथम सात सकटमय वर्षो मे वे हर साल हुई और उनमे पार्टी तथा नवोदित सोवियत राज्य के मुख्य कार्यभार पर विचार किया गया। व्यक्ति-पूजा के जमाने मे इस नियम का बेअदबी के साथ उल्लघन किया गया। अठारहवी काग्रेस के बाद लगभग चौदह वर्ष तक कोई काग्रेस नही हुई, यद्यपि इस मुद्दत मे देश को महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध और राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था की बहाली की जबर्दस्त और सख्त कोशिशो के

दौर से गुजरना पडा था। पार्टी की केंद्रीय समिति की प्लीनरी मीटिंग कभी कभी ही होती थी। ऐसी स्थिति मे सत्ता के दुरुपयोग का, कुछ नेताओ को पार्टी तथा जनता के नियत्रण से निकल जाने का मौका मिला।

आज पार्टी मे इस प्रकार की बाते न तो है और न हो ही सकती है। उन्नीसवी काग्रेस के बाद के नौ वर्ष मे पार्टी की बीसवी काग्रेस, असाधारण इक्कीसवी काग्रेस और मौजूदा बाईसवी काग्रेस हो चुकी है। केंद्रीय समिति के नियमित रूप से होनेवाली प्लीनरी मीटिगो मे पार्टी और देश के जीवन के अधिक महत्वपूर्ण प्रश्नो पर विचार किया जाता है, पार्टी-सगठनो और उनके नेताओ की सरगर्मियो की तीखी आलोचना की जाती है, जिनमे सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति तथा उसके अध्यक्ष-मडल के अलग अलग सदस्यो की सरगर्मियो की आलोचना भी शामिल होती है। जिन कार्यकर्ताओ ने अपने को पार्टी के विश्वास का पात्र नही सिद्ध किया, उन्हे अपने पदो से हटा दिया गया है।

व्यक्ति-पूजा की विगत मुद्दत मे, पार्टी, सरकार तथा अर्थ-व्यवस्था के नेतृत्व मे व्यापक रूप से ऐसे हानिकर तरीके इस्तेमाल किये गये, जैसे कि प्रशासन मे धाधली, कमजोरियो की पर्दापोशी, काम मे पसोपेश और हर नयी चीज से भय। ऐसी हालत मे बहुत से खुशामदी, प्रशस्ति-गायक और आख मे धूल झोकनेवाले पैदा हो गये। पार्टी तथा राज्य के अनुशासन को भग करनेवाले सभी लोगो के खिलाफ, उन लोगो के खिलाफ जो पार्टी को और राज्य को धोखा देते है, पार्टी दृढतापूर्वक लडती है और लडती रहेगी। वह सिद्धातनिष्ठ आलोचना तथा आत्मालोचना को प्रोत्साहन देती है और उसे अपने सबसे पैने और सबसे कारगर हथियार के रूप मे इस्तेमाल करती है।

पार्टी मे अदरूनी जनवाद के उन्नयन, पार्टी के स्थानीय निकायो की अधिकार तथा भूमिका-वृद्धि और सामूहिक नेतृत्व के उसूलो की पाबन्दी से पार्टी की सघर्ष-क्षमता बढी है और जनसाधारण के साथ उसके सबध मजबूत हुए है। जनता के साथ पार्टी के अटूट सबधो की स्पष्ट अभिव्यक्ति उसकी सदस्य-सख्या मे वृद्धि से, उसमे निरतर नयी शक्तियो की बाढ से होती है।

विचाराधीन अवधि मे हमारी पार्टी के सदस्यो की सख्या लगभग २५ लाख बढी है। बीसवी काग्रेस के समय पार्टी के सदस्यो की सख्या ७२,१५,५०५ थी, जो इस काग्रेस से कुछ पहले (१ अक्तूबर, १९६१ तक) बढकर ९७,१६,००५ हो गयी थी। पार्टी मे भरती किये गये लोगो मे ४० ७ प्रतिशत मजदूर है, २२ ७ प्रतिशत सामूहिक फार्मों के किसान है, ३५ ६ प्रतिशत दफ्तरो के कर्मचारी और १ प्रतिशत विद्यार्थी है। पार्टी मे भरती किये गये दफ्तरी कर्मचारियो मे कौन लोग है? उनमे से लगभग दो-तिहाई इजीनियर और टेक्नीशियन, कृषि-विज्ञानी, पशु-विज्ञानी और अन्य विशेषज्ञ है।

यह बतलाना जरूरी है कि दफ्तरी कर्मचारियो का जो कुछ भी मतलब समझा जाता था, वह पूरा का पूरा बदल गया है। सोवियत सत्ता के प्रारभिक वर्षो मे बुद्धिजीवी वर्ग मे मुख्यत ऐसे लोग थे, जिनका सबध क्रान्ति से पहले सम्पत्तिवान् वर्गो से था। इसलिए दफ्तरी कर्मचारियो के सिलसिले मे कुछ प्रतिबध लगाये गये थे। अब परिस्थितिया बिल्कुल भिन्न है। आज दफ्तरी कर्मचारियो मे विशाल बहुमत भूतपूर्व औद्योगिक मजदूरो और सामूहिक खेतिहरो या उनकी सतानो का है। इसीलिए दफ्तरी कर्मचारियो की तरफ रवैया भी बदल गया है। जैसे जैसे विज्ञान, तकनीक, उत्पादन का स्वचलीकरण तथा मशीनीकरण बढता जायेगा, वैसे वैसे उस कोटि के लोगो की सख्या भी बढती जायेगी जिन्हे दफ्तरी कर्मचारी कहा जाता है और उत्पादन मे उनकी भूमिका भी अधिकाधिक महत्वपूर्ण होती जायेगी। अन्त मे एक समय ऐसा आयेगा, जब हमे पार्टी के सदस्यो को मजदूरो, सामूहिक खेतिहरो और दफ्तरी कर्मचारियो मे अलग अलग बाटने की जरूरत नही रह जायेगी, क्योकि वर्ग-भेद बिल्कुल मिट चुके होगे और सभी कम्युनिस्ट समाज के सदस्य होगे।

साथियो, यह प्रसन्नता की बात है कि हमारी पार्टी मे सुशिक्षित लोगो की सख्या बढती जा रही है। आज हर तीन कम्युनिस्टो मे से एक ऐसा है, जो उच्च या माध्यमिक शिक्षा पूरी कर चुका है। विशेष रूप से उल्लेखनीय बात यह है कि **पार्टी के कुल सदस्यो और उम्मीदवार सदस्यो में से ७० प्रतिशत से अधिक आज भौतिक उत्पादन के क्षेत्र में**

काम कर रहे हैं। ज्यादातर कम्युनिस्ट निर्णायक क्षेत्रो मे, अर्थात् उद्योग अथवा कृषि मे काम कर रहे हैं।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की पातो मे सोवियत सघ मे बसनेवाली १०० से अधिक जातियो तथा कौमो के प्रतिनिधि शामिल हैं। हमारी पार्टी मजदूर वर्ग के एक अतर्राष्ट्रीयतावादी सगठन के रूप मे पैदा हुई और विकसित होती रही है। वह कम्युनिज्म के निर्माताओ के मैत्रीपूर्ण परिवार मे सुगठित समतापूर्ण समाजवादी जातियो की महान एकता तथा भ्रातृत्वपूर्ण मैत्री का मूर्त्त रूप है।

कम्युनिज्म की नि स्वार्थ सेवा करना ही लेनिनवादी पार्टी के हर सदस्य का सर्वोच्च व्रत है। कम्युनिस्ट के लिए जनता के हेतु के लिए तपना, दिलो-जान निछावर करना लाजिमी है। अगर कोई पार्टी मेम्बर अपने महान कर्त्तव्यो का पालन नही करता, तो उसके लिए पार्टी की पातो मे कोई स्थान नही है ...

पिछले कुछ वर्षो से पार्टी ने राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था की व्यावाहरिक रहनुमाई के सवालो की ओर अधिक ध्यान देना आरम्भ किया है। केन्द्रीय समिति ने पार्टी सगठनो और प्रमुख कार्यकर्त्ताओ का ध्यान उद्योग तथा कृषि मे प्रगतिशील तरीको का ध्यानपूर्वक अध्ययन करने और उन्हे व्यापक रूप से प्रचलित करने की दिशा मे आकर्षित किया है। उसने ठोस सकारात्मक उदाहरणो द्वारा सिखाया है कि हमारे महान कम्युनिस्ट निर्माण के काम को किस तरह ठीक ढग से चलाया जाना चाहिये।

किसी पार्टी कार्यकर्त्ता के श्रम का मूल्याकन किस प्रकार किया जाना चाहिये? एक कार्यकर्त्ता को कुशल तथा कर्मठ सगठनकर्त्ता समझने और दूसरे की भर्त्सना तथा आलोचना करने के लिए कौन से मापदण्ड इस्तेमाल किये जाने चाहिये? यह सभी जानते है कि किसी इस्पात गलानेवाले, किसी खेतिहर या किसी मेमार के श्रम की गुणावस्था और मात्रा दोनो ही की जाच काफी आसानी से की जा सकती है। पार्टी निकायो के नेताओ के कार्य का मूल्याकन फैक्टरी या तामीर में, सामूहिक अथवा राजकीय फार्म पर, वैज्ञानिक सस्थान मे, जिले, प्रदेश अथवा जनतत्र मे उनके द्वारा किए गए काम के ठोस नतीजों के अनुसार किया जाना चाहिये।

सगठन सबधी काम की सफलता और नेतृत्व का स्तर बहुत हद तक नेताओ और आम जनता के पारस्परिक सबधो पर, सर्वप्रधान प्रश्नो को हल करने की दिशा मे मानव-प्रयास को सगठित तथा निर्देशित करने की योग्यता पर निर्भर होता है। परतु आम जनता के साथ सबधो मे अतर हो सकता है ये गहरे और स्थायी, या सतही और अस्थायी हो सकते है। जन-साधारण के साथ घनिष्ठ सबध बनाए रखने के लिए पार्टी नेता मे अनेक गुण होने चाहिये, जिनमे अपने कार्य-क्षेत्र की जानकारी और आर्थिक तथा सास्कृतिक निर्माण के विभिन्न पहलुओ के प्रति प्रगतिशील दृष्टिकोण के गुण शामिल है। नेता को जीवन के साथ साथ कदम बढाते हुए, उद्योग तथा कृषि मे नवीनता के प्रवर्तको द्वारा सचित प्रगतिशील अनुभव और विज्ञान तथा तकनीक की सफलताओ का अध्ययन करके अपने ज्ञान को निरतर बढाते रहना चाहिए। अगर पार्टी कार्यकर्त्ता जीवन की घटनाओ का विश्लेषण करने मे मार्क्सवादी पद्धति का दृढतापूर्वक अनुसरण करे, अगर उसके पास नवीनता को पहचानने के लिए पैनी दृष्टि हो, उसकी रक्षा करने और उसका पथ प्रशस्त करने मे वह सहायक हो, तभी उक्त प्रकार का ज्ञान अर्जित कर सकता है।

इसका मतलब यह नही लगाया जाना चाहिये कि पार्टी-नेता के लिए सभी क्षेत्रो का विशेषज्ञ होना लाजिमी है। उसे बेशक बहुत कुछ जानना चाहिये, सुशिक्षित और बाखबर होना चाहिये, लेकिन सबसे बढकर उसे जिस क्षेत्र की जिम्मेदारी सौपी गयी हो उसकी समझ होनी चाहिए, उसे लोगो के जीवन की गहरी समझ होनी चाहिए, उनके साथ काम करने मे दिलचस्पी होनी चाहिए। **पार्टी-नेतृत्व की शक्ति उसकी सामूहिकता की भावना में निहित है, जिससे अनेक लोगो की प्रतिभा, ज्ञान तथा अनुभव को मिलाकर मानो एक ही प्रतिभा का रूप देने में सहायता मिलती है, जिसके बल पर बहुत बड़े बड़े काम किये जा सकते है।**

बीसवी काग्रेस के फैसलो मे सगठन तथा राजनैतिक काम मे पार्टी के प्राथमिक सगठनो और जिला समितियो की भूमिका को बढाने की आवश्यकता बतायी गयी थी। यही, पार्टी के इन्ही प्राथमिक सगठनो तथा जिला निकायो मे आर्थिक तथा सास्कृतिक क्रियाशीलता की बेहद विभिन्न तथा तात्कालिक समस्याओ को हल किया जाता है। पार्टी का

मेरुदंड प्राथमिक सगठन है और वे ही जन-साधारण के बीच रोजमर्रा के काम करते हैं। औद्योगिक प्रतिष्ठानो मे ४१,८३० प्राथमिक सगठन है, निर्माण-स्थानो मे १०,४२७, रेलवे तथा अन्य परिवहन सेवाओ मे १८,६३८, सामूहिक फार्मो मे ४१,३८७ और राजकीय फार्मो मे ६,२०६। हमारे हेतु की सफलता बहुत हद तक पार्टी की इन निचली इकाइयो द्वारा किए जानेवाले सगठन-सबधी तथा राजनैतिक काम के स्तर पर निर्भर है।

प्राथमिक सगठनो द्वारा किये जानेवाले काम के स्तर को ऊचा उठाने के लिए केंद्रीय समिति सभी कम्युनिस्टो को नियमित रूप से गृह तथा विदेश-नीति से सम्बन्धित महत्वपूर्ण कार्रवाइयो, विचारधारात्मक कार्य तथा अतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आदोलन की समस्याओ की सूचना देती रही है। अनेक अवसरो पर केंद्रीय समिति ने कम्युनिस्ट निर्माण की तात्कालिक समस्याओ की व्याख्या करते हुए प्राथमिक पार्टी सगठनो और पार्टी की जिला समितियो के नाम पत्र लिखे हैं।

हम सभी कम्युनिस्ट कह सकते है कि हमारे लिए पार्टी कार्य से ज्यादा दिलचस्प या महत्वपूर्ण कोई दूसरी चीज नही हो सकती, जिसकी मुख्य विशेषता जनता के साथ सजीव सम्पर्क कायम रखना है। इस प्रकार के काम को अधिक या कम महत्वपूर्ण श्रेणियो मे बाटे बिना उसमे अपना सर्वस्व लगा देना, दूसरे लोग चाहे जिस काम से भी हमारे पास आवे उनका लिहाज करना, हर समस्या की गहराई मे जाना तथा पार्टी-सिद्धातो की दृष्टि से देखना, जीवन से अलग न होना—ये है पार्टी और जनता के प्रति हमारे कर्त्तव्य। इस प्रकार का उत्साहपूर्ण सृजनात्मक कार्य ही लोगो के दिलो मे हौसला भर सकता है और उन्हे श्रम तथा सघर्ष मे बडे बड कारनामे कर दिखाने की प्रेरणा प्रदान कर सकता है।

हमे इस बात को हमेशा याद रखना चाहिये कि पार्टी की शक्ति का स्रोत उसके सदस्यो की क्रियाशीलता, राजनैतिक चेतना और सघर्षशील एकता मे है। पार्टी का काम सारत सार्वजनिक कार्य का ही एक क्षेत्र है और उसमे सक्रिय रूप से भाग लेना हर कम्युनिस्ट का कर्त्तव्य है। हम कम्युनिज्म की ओर आगे बढ रहे है, जिसमे लोग समाज के काम किसी खास सरकारी मशीनरी के बिना ही चला लेगे।

हमारे देश मे समाजवादी राज्य धीरे धीरे विकसित होता हुआ सार्वजनिक स्वशासन का रूप ग्रहण करता जा रहा है। कम्यूनिस्ट समाज के निर्माण मे सलग्न लोगो के हिरावल के नाते हमारी पार्टी को अपने अन्दरूनी पार्टी जीवन को सगठित करने मे भी आगे रहना चाहिए और जनता द्वारा कम्युनिस्ट स्वशासन के श्रेष्ठतम रूप विकसित करने मे एक आदर्श प्रस्तुत करना चाहिये। कहे कि व्यवहार मे इसका मतलब यह हो सकता है कि पार्टी की संस्थाओ मे वेतनभोगी कार्यकर्त्ताओ की सख्या लगातार कम होती जायेगी और अवैतनिक पार्टी कार्यकर्त्ताओ की सख्या बढती जायेगी। पार्टी की सस्थाओ मे ऐसे आयोगो, विभागो, प्रशिक्षको और जिला तथा नगर समितियो के सेक्रेटरियो की सख्या अधिक होनी चाहिये जो स्वेच्छापूर्वक अवैतनिक आधार पर काम करते हो। जन-साधारण के साथ दृढ सबध, लेनिन जैसी मिलनसारी, जनता के बीच, उसके सुख-दुख मे साथ रहने की तमन्ना, नवीन के लिए होनेवाले संघर्ष मे कम्युनिस्ट सुलभ उत्कट भावना – इन विशेषताओ द्वारा पार्टी नेता का रूप निर्धारित होना चाहिये।

साथियो, पार्टी ने काम के सभी क्षेत्रो के लिए बहुत बडी सख्या मे परिपक्व और विचारधारा की दृष्टि से परखे हुए प्रमुख कार्यकर्त्ता तैयार किये है। ये लोग जनता की नि स्वार्थ सेवा को अपना परम कर्त्तव्य समझते है। जहा पहले पार्टी के बहुत से स्थानीय कार्यकर्त्ता हर मौके पर ऊपर से हिदायते और आदेश आने की प्रतीक्षा करते रहते थे और अक्सर अपनी पहलकदमी का परिचय देने का कोई मौका नही पाते थे, वहा अब पार्टी की स्थानीय सस्थाओ के अधिकारो और दायित्वो मे वृद्धि के फलस्वरूप उनसे अधिक स्वतत्र रूप से काम करने और समस्याओ के प्रति सृजनात्मक रवैया अपनाने की आशा की जाती है। हमारे पास अब इस प्रकार के कार्यकर्त्ता है और वे ही हर काम को गति प्रदान करते है...

पार्टी के नेतृत्व मे हमारी जनता ने जो महान् सफलताए प्राप्त की है, वे हर आदमी को स्पष्ट रूप से दिखायी देती है। उनसे समस्त सोवियत जनता को खुशी है और यह विश्वास प्राप्त होता है कि भविष्य मे हम और अधिक सफलता प्राप्त करेगे और ज्यादा तेजी के साथ आगे बढेगे।

लेनिन ने पार्टी को सिखाया था कि वह कभी अपने अदर गरूर और गफलत की भावना न पैदा होने दे, अपने काम की खामियो और कामयाबियो दोनो को देखे और जो समस्याए हल नही हो सकी है उन्हे हल करने मे अपने प्रयास केद्रित करे। हमारे यहा अभी बहुत सी ऐसी समस्याए है। पार्टी और सोवियत सस्थाओ के काम मे अभी भी बहुत सी खामिया है, जिनपर काबू पाना है।

हमे अर्थ-व्यवस्था के विकास और जनता के जीवन-स्तर के उन्नयन मे अपनी पूरी कोशिशें लगा देनी चाहिये। यह आवश्यक है कि हम खेती की पैदावार मे और अधिक वृद्धि करने के लिए, आवास-निर्माण की योजनाओ की पूर्ति के लिए, अर्थ-व्यवस्था की सभी शाखाओ मे श्रम की उच्चतर उत्पादनशीलता के लिए और तैयार किये जानेवाले माल, विशेष रूप से उपभोक्ता माल की गुणावस्था मे काफी सुधार करने के लिए संघर्ष करे।

उत्पादन मे हर नयी और प्रगतिशील चीज को अपना समर्थन प्रदान करने और उनका प्रचलन करने मे हम जितना ही अधिक सक्रिय रहेगे, खामियो पर से पर्दा हटाने और उन्हे दूर करने मे हम जितनी ही ज्यादा सख्ती और बेमुरौव्वती से काम लेंगे, उतनी ही तेजी से वे काम पूरे होगे जो हमारे सामने है। कम्युनिस्ट निर्माण का हेतु करोडो लोगो का महान हेतु है, समस्त जनता का हेतु है।

(सोवियत संघ की कम्यूनिस्ट पार्टी की २२वी काग्रेस मे पार्टी की केन्द्रीय समिति द्वारा पेश की गई रिपोर्ट। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २२वी काग्रेस, शार्टहैड रिपोर्ट, खण्ड १, पृष्ठ १०९–११२, ११३–११५, ११८)

लेनिन की पार्टी जनता की नेत्री और संगठनकर्त्री है

हमारी पार्टी ने समस्त सोवियत जनता को मार्क्सवाद-लेनिनवाद के झडे के नीचे सघटित किया, उसके प्रयत्नो को कम्युनिस्ट निर्माण के महान हेतु मे प्रवृत्त किया और हमारे देश को कम्युनिज्म की विजय के समुज्वल

लक्ष्य की ओर ले जानेवाले एकमात्र सही रास्ते पर चला रही है। साथियो, महान लेनिन द्वारा स्थापित और मज़बूत बनाई गई कम्युनिस्ट पार्टी एक महती शक्ति है। पार्टी के बगैर हम एक असगठित जन-समूह होते। हमारी लेनिनवादी पार्टी की सारी जिन्दगी और सरगर्मी मजदूर वर्ग की, मेहनतकश जनता की सेवा की हौसला बढानेवाली मिसाल है, जनता के बुनियादी हितो के लिए सघर्ष की शानदार मिसाल है। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी जनता की सघर्षशील हिरावल है, उसकी सामूहिक नेत्री और सगठनकर्त्री है। पार्टी और जनता एक दूसरे से अविच्छेद्य है। क्रान्तिकारी लेनिनवादी परम्परा के प्रति वफादार, पार्टी जनता को महान कार्यों को सम्पन्न करने के लिए सगठित और प्रेरित करती है। इस बात का श्रेय एकमात्र लेनिनवादी पार्टी के बुद्धिमत्तापूर्ण नेतृत्व को है कि हमने समाजवादी क्रान्ति मे विजय प्राप्त की, सोवियत सत्ता की रक्षा की, समाजवाद तथा कम्युनिज्म का निर्माण करने मे, अपना आर्थिक, वैज्ञानिक तथा सास्कृतिक विकास करने मे बेहद कामयाबियां हासिल की, जिसपर आज ससार के सभी प्रगतिशील जनो को गर्व है।

दुश्मन हमारी पार्टी की शक्ति को बहुत अच्छी तरह जानते और महसूस करते हैं। उन्होने हमेशा अपना खास ज़ोर पार्टी को नष्ट कर देने और इस तरह सोवियत जनता को उसकी पथ-प्रदर्शिका तथा सगठनकारिणी शक्ति से वचित कर देने की कोशिश मे लगाया है और आज भी लगा रहे है। पार्टी को नष्ट कर देने के लिए यह आवश्यक नही है कि पार्टी के सदस्यो को शरीरत: खत्म कर देने की माग की जाए। नही, वे कहते हैं कि जिस तरह किसी आदमी का दिल या, जैसे कि कहा जाता है, आत्मा निकाल लिया जाता है, उसी तरह पार्टी के विचार को, क्रांतिकारी मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचारधारा को, यानी उस तत्व को उसमे से निकाल लेना चाहिए जो कम्युनिस्टों को जोड़ता और एक करता है।

भिन्न भिन्न उम्र और रग के, भिन्न भिन्न जातियो के पुरुषो और स्त्रियो को, उद्योग तथा कृषि की भिन्न भिन्न शाखाओ मे काम करनेवाले लोगो को, सोवियत जनता के शान्तिमय श्रम की रक्षा करनेवाले सैनिको को, वैज्ञानिको को, साहित्यिको को, कलाकारो को,

विचारधारात्मक आधार, मार्क्सवाद-लेनिनवाद के उसूल एक करते है। हम सभी कम्युनिस्ट महान मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचारो द्वारा एकताबद्ध है। हमारी पार्टी की शक्ति और अजेयता का स्रोत उसकी अविनाश्य विचारधारात्मक तथा सगठनात्मक एकता है।

ससार मे अनेक भिन्न पार्टिया रही है और आज भी है। लेकिन हमारी पार्टी जैसी कम्युनिस्ट और मार्क्सवादी-लेनिनवादी मजदूर पार्टियो को उनमे एक विशेष स्थान प्राप्त है। कम्युनिज्म के महान हेतु की विजय मे कम्युनिस्टो का अडिग विश्वास और यह तथ्य उन पार्टियो की शक्ति का स्रोत है कि मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त उनका पथ-प्रदर्शक है। भविष्य मे दूर तक देखती हुई, जनता मे प्रचण्ड ओज जागृत करती हुई, लोगो को शानदार कार्यभारो की पूर्ति की ओर ले जाती हुई, वे पार्टिया जनता को प्रगति के विज्ञानत सिद्ध मार्ग बतलाती है। समाजवाद के शत्रु हमारे देश के खिलाफ अपने सघर्ष मे न जाने कितनी बार टूट चुके है। उन्होने एक जमाने से समझ लिया है कि समूचे समाजवादी और कम्युनिस्ट निर्माण मे सही नेतृत्व प्रदान करनेवाली, उसके लिए अच्छा सगठन, अच्छी योजना और क्रान्तिकारी गुजाइश प्रस्तुत करनेवाली, उस निर्माण की समस्त सफलताओ को सुनिश्चित करनेवाली मुख्य शक्ति कम्युनिस्ट पार्टी है, उसकी विज्ञानत सिद्ध नीति है, उसकी क्रान्तिकारी विचारधारा है, उसका क्रान्तिकारी दर्शन -- मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त है।

प्लीनरी मीटिग मे भाषण करते हुए पुराने सोवियत लेखक को० अ० फेदिन ने पार्टी के बारे मे, हमारे समाज के जीवन मे, साहित्य और कला के विकास मे उसकी भूमिका के बारे मे बहुत अच्छी बाते कही थी। प्लीनरी मीटिग मे उपस्थित साथियो ने उनके ज्वलन्त भाषण को खूब ध्यानपूर्वक सुना, क्योकि उन्होने तुले हुए शब्दो और चित्रात्मक उपमाओ मे अपनी बात कही और उन्होने हमारी पार्टी के बारे मे, सोवियत लेखको-कलाकारो को पार्टी तथा जनता के साथ जोडनेवाले अटूट बन्धनो के बारे मे, समाजवादी यथार्थवाद की जबर्दस्त शक्ति के बारे मे, सोवियत जनता की पुरानी और नई पीढियो की एकता के बारे मे गभीर आस्था, सचाई और ओज के साथ भाषण किया। जो लोग हमारे सृजनशील बुद्धिजीवियो के मन मे सोवियत साहित्य और कला मे पार्टी-

परायणता तथा जन-हितैषिता के उसूलो के विपरीत गलत विचार भरने की कोशिश कर रहे है, जो लोग पूजीवादी प्रचार की इन मनगढन्तो को फैलाते है कि सृजनशील बुद्धिजीवी पार्टी तथा जनता से कटकर अलग हो गए है, उन्हे फेदिन ने माकूल तुर्की-वतुर्की जवाव दिया।

साथियो, कम्युनिस्ट पार्टी जनता की मानी और आजमाई हुई रहनुमा है। पार्टी जनता की सगठनकर्त्री है, कहू कि वह नए समाज की तामीर की नमूनासाज है, सोवियत समाज की पथ-प्रदर्शिका तथा सचालिका शक्ति है। पार्टी राजकीय तथा सामाजिक विकास की पक्की सगठनात्मक रूप-रेखाए तैयार करती है। मजदूर वर्ग, सभी मेहनतकश लोगो के सबसे अधिक आगे बढे हुए सदस्यो को अपनी पातो मे सघटित करती हुई, जन-समुदायो से अविच्छेद्य रूप से सम्बन्धित हमारी पार्टी जनता की आवाज़ पर निरन्तर ध्यान देती है और गृह तथा विदेश-नीति के मुख्य प्रश्नो पर जनता से परामर्श लेती है। हर नई मजिल पर वह अपनी पातो को नए सिरे से तरतीब देती है और सगठनात्मक ढाचे की जरा-जीर्ण कडियो को बदलकर नयी करती है ताकि हमारे समस्त कार्य की प्रगति अधिकाधिक बेहतर हो, ताकि कम्युनिस्ट निर्माण के शानदार हेतु मे पार्टी तथा समूचा राष्ट्र अपने साधनो तथा अपनी क्षमताओ को अधिक पूरी तरह इस्तेमाल कर सके। पार्टी का अस्तित्व जनता के लिए है और जनता की सेवा को ही वह अपनी सरगर्मियो का सारा प्रयोजन समझती है।

मै एकाधिक बार कह चुका हू कि हमारे देश मे ऐसे अनेक लोग है जिनके पास पार्टी-कार्ड नही है लेकिन जो उच्च पार्टी भावना से ओतप्रोत है। दूसरी ओर कुछ पार्टी-कार्डवाले ऐसे लोग है, जिनके पास पार्टी-परायणता के नाम पर महज कार्ड ही कार्ड रह गया है।

कोन्स्तान्तीन अलेक्सान्द्रोविच फेदिन पार्टी-मेम्बर नही है, लेकिन वे गभीर रूप से पार्टी के आदमी है। लेकिन एक दूसरे लेखक वीक्तोर नेक्रासोव को लीजिए, जिन्हे मै व्यक्तिगत रूप से नही जानता। यद्यपि वे पार्टी-मेम्बर है, वे एक कम्युनिस्ट के बहुमूल्य गुण, पार्टी-परायणता की भावना खो चुके है। लेकिन इससे हमे आश्चर्य नही होना चाहिए।

पार्टी-परायणता कोई प्राकृतिक गुण नही है। उसका विकास तो जीवन करता है। पार्टी-मेम्बर होते हुए भी ढुलमुल-यकीन लोग विरोधी

विचारधारा के प्रभाव से अपनी पार्टी-परायणता की भावना खो दे सकते हैं। लेकिन नेक्रासोव के बारे मे जो बात मुझे हैरान करती है, वह कुछ और है—वे अपनी गलत विचारधारात्मक धारणाओ मे इतने गहरे उलझ गए है, वे इतना बदल गए है कि वे पार्टी के तकाजे को नही समझते। इसके मानी क्या है? इसके मानी है पार्टी लाइन के खिलाफ जाना। यह बात बिलकुल ही अलग है।

हर कम्युनिस्ट को अपनी राय जाहिर करने का अधिकार है, लेकिन एक बार जब पार्टी कोई फैसला मजूर कर लेती है, जब वह एक बार कोई आम लाइन निर्धारित कर लेती है, तब पार्टी के सभी मेम्बर एक ही पात मे खडे हो जाते है और पार्टी की सामूहिक बुद्धि तथा इच्छा द्वारा निर्धारित किए गए काम को करना शुरू कर देते हैं। इस या उस मसले पर पार्टी द्वारा अपना रुख बयान कर दिए जाने के बाद भी अगर अपने को पार्टी-मेम्बर समझनेवाला कोई व्यक्ति गलत रवैया अख्तियार करता है, अगर वह अपनी गलती पर जमा रहता है, तो वह वस्तुतः पार्टी-मेम्बर नही रह जाता। पार्टी को अपने को ऐसे लोगो से बरी कर लेना चाहिए, जो अपनी गलत निजी राय को पार्टी के फैसले से, यानी हम-खयाल लोगो की एक विशाल सेना द्वारा पास किए गए फैसले से बढकर समझते हैं। पार्टी ऐसे लोगो से जितनी जल्दी बरी हो जाए, उतना ही अच्छा है, क्योकि वैसा करके वह अधिक एकताबद्ध और अधिक मजबूत हो जाएगी।

सेम्योन मिखाइलोविच बुद्योन्नी, जो हमारी प्लीनरी मीटिग के कार्य मे भाग ले रहे हैं, अच्छी तरह जानते है कि अपने शत्रुओ से लडने के लिए कोई सैनिक जिस हथियार को इस्तेमाल करता है, उसे हमेशा साफ रखा जाना चाहिए। अगर उसमे ज़ग लग जाए, तो सैनिक उसे फेक देगा, उसकी जगह दूसरा ले लेगा। यही बात विचारधारात्मक हथियार के बारे मे भी सही है। जग लगना वह और भी नहीं बर्दाश्त कर सकता। उसे हमेशा बिलकुल साफ रखा जाना चाहिए।

कोई पर्यटक अमेरिका जाए और उसे केवल उसी एक पहलू से देखे, जिस पहलू से उसे विशेष रूप से नियुक्त किए गए लोग जोर देकर दिखावे। फिर वह घर वापस आ कर यह सोचे कि अमेरिका दरअसल वैसा

ही है। फिर भी अगर कोई आदमी महज खुद गलती मे मुब्तला हो तो वह आधी तकलीफ की बात होगी। लेकिन अगर वह अपनी गलत धारणाओ और विचारो को, विरोधी विचारधारा द्वारा अपने ऊपर लादी गई धारणाओ को एकमात्र अचूक धारणाओ के रूप मे फैलाना शुरू कर दे तो वह और भी अधिक बुरा होगा। ऐसे मामले मे क्या किया जाना चाहिए? जाहिर है कि ऐसे लोगो को, जो पूजीवादी प्रचार की धोखेबाजियो के शिकार हो गए है, सुधारा जाना चाहिए। सोवियत जनता उनको सुधारती है। ध्यान रहे कि हमारे यहा ऐसे लोग थोडे से ही है—दर्जनो या शायद सैकडो। लाखो-करोडो सोवियत जनता, समूचा राष्ट्र हमारे वर्ग-शत्रुओ की चालबाजियो को अच्छी तरह जानता और समझता है, जो समाजवाद और कम्युनिज्म से भयानक नफरत रखते हैं।

सोवियत व्यवस्था ने, कम्युनिस्ट विचारधारा ने शत्रुओ के सभी हमलो को, सभी अग्नि-परीक्षाओ को सफलतापूर्वक झेला है। हम अपने क्रान्तिकारी मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचार पर दृढ है। हम उस पर दृढ रहे हैं, दृढ है और भविष्य मे भी दृढ रहेंगे, क्योंकि वही एकमात्र सही विचार है। जहा तक उन लोगो का सम्बन्ध है, जो फिसल कर हमारे वर्ग-शत्रुओ की स्थिति मे पहुच जाते हैं, जो कुछ ढुलमुल-यकीन लोगो को शत्रुतापूर्ण साम्राज्यवादी विचारधारा के दलदल मे घसीट ले जाने की कोशिश करते है, उनकी हमने हमेशा यह कहकर भर्त्सना की है कि वे विदेशियो के स्वर मे गानेवाले लोग है, वे हमारे शत्रुओ के जी-हजूर है। हम ऐसे लोगो से यह कहते है कि या तो आप हम कम्युनिज्म के निर्माताओ के उस सयुक्त मार्क्सवादी-लेनिनवादी झडे के नीचे दृढतापूर्वक जमे रहिए, जो धरती पर सभी राष्ट्रो के लिए शान्ति, श्रम, आजादी, समानता, भ्रातृत्व और सुख का आग्रही है, या उसके नीचे से हटकर अलग हो जाइए और पार्टी-मेम्बरी के ऊचे नाम पर चोरबाजारी न कीजिए!

साथियो, आलकारिक भाषा मे कहे कि कम्युनिस्ट विचारधारा, मार्क्सवादी-लेनिनवादी शिक्षा वह सीमेन्ट है जो लाखो-करोडो के सकल्पो और कार्यो को, पार्टी और जनता को एकाश्मरी एकता मे आबद्ध करता है। यहा अनेक इंजीनियर मौजूद है। मै अपने पुराने मित्र कामरेड

कुचेरेन्को को देख रहा हू, जो एक प्रमुख मेमार है। सभी मेमारो की तरह वे जानते है कि अच्छे सीमेन्ट से जोडे गए, पिसे पत्थर, ककड और बालू के छोटे छोटे कणो से किस प्रकार मजबूत एकाश्मरी ढाचों का निर्माण किया जाता है। अब लोगो ने चट्टान की तरह मजबूत सीमेन्ट बनाना सीख लिया है।

साथियो, यही बात हमारी विचारधारा पर भी लागू होती है। पार्टी, उसकी विचारधारा, उसकी मार्क्सवादी-लेनिनवादी शिक्षा और उसकी सगठनात्मक एकबद्धता का सीमेन्ट अपने करोड़ो-करोडो कणो को, करोडो-करोडो अलग अलग लोगो को प्रबल एकाश्मरी इकाई मे परिवर्तित कर देता है।

पार्टी की शक्ति की, उसकी मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचारधारा की शक्ति की जीवन मे आजमाइश हो चुकी है। आज ६० साल से अधिक मुद्दत से पार्टी जनता के हेतु के लिए सघर्ष करती रही है। सतत-जीवी मार्क्सवादी-लेनिनवादी शिक्षा की रहनुमाई मे वह उन सघर्षो मे विजय प्राप्त करती रही है। अपने महान सस्थापक और नेता, व्ला० इ० लेनिन की रहनुमाई मे कम्युनिस्ट पार्टी ने मजदूर वर्ग को, मेहनतकश जनता को अक्तूबर १९१७ की महान विजय तक पहुचाया। उसने गृह-युद्ध के समय और हिटलरशाहियत विरोधी युद्ध की मुद्दत मे सोवियत मातृभूमि की रक्षा के लिए जनता को संगठित किया। उसने शान्तिमय निर्माण मे ऐसी सफलताओ की उपलब्धि की है, जिनसे सारा ससार आश्चर्यचकित रह गया है।

हमारी पार्टी की शक्ति हमारे मित्रो और हमारे शत्रुओ दोनो को ही मालूम है। हमारे मित्रो को सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी पर गर्व है। हमारे शत्रु उससे डरते है। आपने सभवत· अनेक बार पढा होगा कि पूजीवादी संसार के विचारधारा-निरूपक अफसोस के साथ कहते है कि पूजीवाद के पास जन-साधारण को आकर्षित करनेवाले विचार नही है, ऐसे विचार नही है जो जनता को उतनी ही मजबूती के साथ एकबद्ध कर सके जिस तरह मेहनतकश लोगो को कम्युनिज्म मे उनकी महान आस्था, कम्युनिस्ट आदर्शों की अनिवार्य विजय मे उनकी आस्था एकबद्ध करती है!

इजारेदारी पूजी के प्रमुख राजनीतिज्ञ स्वीकार करते है कि "हमारे पास जनता को एकवद्ध करनेवाली कोई विचारधारा नही है और हमे जरूर कुछ न कुछ सोचकर निकालना चाहिए " उनके कहने का मतलव यह है कि पूजीवाद आकर्पण की शक्ति नही है। उल्टे वह घृणोत्पादक शक्ति है।

हा, पूजीवादी महाशयो! साम्राज्यवाद ने अपने पाशविक सार को पूरी तरह वेनकाव कर दिया है और जनता के शोपण तथा उत्पीडन की इस व्यवस्था के असाध्य नासूरो और रोगो को कोई भी लेप छिपा नही सकता, जो मानव-जाति के लिए अस्वाभाविक है। साम्राज्यवादी और इजारेदार अपनी दुनिया को "जन-पूजीवाद" या "स्वतन्त्र उद्यम" का समाज कहकर चाहे जितना भी क्यो न पुकारे, वे उसे चाहे कोई भी लिवास क्यो न पहनावे, पूजीवाद और साम्राज्यवाद के जन-विरोधी सार को कोई भी चीज़ परिवर्तित नही कर सकती।

समाजवादी ससार दुनिया के लोगो के सामने पुराने, ह्रासोन्मुख पूजीवादी ससार के ऊपर अपनी असन्दिग्ध वरिष्ठता प्रदर्शित कर रहा है। जनगण हजारो हजारो मिसालो के ज़रिए समाजवाद की वरिष्ठता को देखते है। लेकिन इसका अर्थ यह नही है कि पूजीवाद इतिहास का मैदान खुद अपनी मरज़ी से छोड देगा। नही। यद्यपि साम्राज्यवाद का अन्त नियतिवत अनिवार्य है, फिर भी वह समाजवाद की प्रगति को पीछे धकेलने की, जनता के मन मे कम्युनिज्म की शक्ति मे अविश्वास का ज़हर भरकर उसे विषाक्त वनाने की आशा नही त्याग रहा है।

(मार्क्सवाद-लेनिनवाद हमारी पताका है, हमारे सघर्प का अस्त्र है, पृष्ठ ४–६)

पार्टी की नीति समूचे समाज के हितो की अभिव्यक्ति करती है

कुछ लोगो को परम व्यक्ति-स्वातन्त्र्य की वात करते सुना जा सकता है। मैं नही जानता कि दरअसल इसका अर्थ क्या है, लेकिन मेरा खयाल है कि परम व्यक्ति-स्वातन्त्र्य कभी नही, पूर्ण कम्युनिज्म

मे भी नही होगा। व्ला० इ० लेनिन ने अपने समय मे "परम स्वातन्त्र्य" के पक्षपातियो से कहा था कि "हम 'परमो' मे नही विश्वास करते।"* कम्युनिज्म के अन्तर्गत भी एक व्यक्ति की इच्छा को सम्पूर्ण समष्टि की इच्छा के सामने झुकना पडेगा। अगर ऐसा नही होगा, तो अराजक स्वेच्छा फूट पैदा करेगी और समाज के जीवन को विघटित करेगी। केवल समाजवादी समाज ही नही, बल्कि कोई भी समाज, कोई भी सामाजिक व्यवस्था, यहा तक कि आदमियो का छोटे से छोटा समूह भी बिना किसी सगठनात्मक, नेतृत्वकारी आधार के कायम नही रह सकता।

यह साबित करने की जरूरत नही है कि आदिम अवस्था से लेकर सामाजिक विकास की हर मजिल पर जीवन के साधनो की प्राप्ति के लिए इन्सान समूहो मे सगठित हुआ। हमारे युग मे, अणु, एलेक्ट्रोनिक्स, कैबरनेटिक्स, स्वचलन तथा उत्पादन-लाइनो के युग मे क्या भौतिक उत्पादन और क्या आध्यात्मिक जीवन, दोनो ही क्षेत्रो मे सामाजिक व्यवस्था की सभी कडियो मे सामजस्य, आदर्श एकलयता और सगठन का होना और भी अधिक आवश्यक है। केवल इन्ही शर्तो पर मानव द्वारा सृजित विज्ञान की सभी उपलब्धियो का उपयोग किया जा सकता है और उन्हे आदमी की सेवा मे लगाया जा सकता है।

क्या कम्युनिज्म के अन्तर्गत सार्वजनिक कानून-व्यवस्था को भग करने और समष्टि की इच्छा की अवहेलना करने की कार्रवाइया हो सकती है? हां, हो सकती है। लेकिन जाहिर है कि वे इक्का-दुक्का कार्रवाइया ही होगी। यह नही सोचना चाहिए कि मानसिक विकृतियो की सभावना नही रह जाएगी और मानसिक रोगो से ग्रस्त लोग समाज के नियमो को नही भग करेगे। मै ठीक तो नही कह सकता, लेकिन जाहिर है कि दीवानो की बेलगामी का सामना करने का कोई न कोई साधन जरूर होगा। आज भी 'बन्धन कुर्ता' मौजूद है, जो दीवानो को ऊधम करने

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, चौथा रूसी सस्करण, खण्ड ३२, पृष्ठ ४७९।

और अपने को तथा दूसरो को नुकसान पहुचाने से रोकने के लिए पहना दिया जाता है।

आज की परिस्थितियो मे हमे देश के भीतर अतीत के अवशेषो के खिलाफ और अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे सगठित वर्ग-शत्रु के हमलो के खिलाफ जबर्दस्त सघर्ष चलाना पडता है। हमे इस बात को एक क्षण के लिए भी भूलने का अधिकार नही है। फिर भी कुछ लोग हमे शान्तिमय विचारधारात्मक सह-अस्तित्व की राह पर धकेल देने और "परम स्वातन्त्र्य" के सडे हुए विचार को ऊपर उछालने की कोशिश कर रहे है। अगर हर व्यक्ति अपने आत्मपरक विचारो को सबके द्वारा पालन किए जानेवाले नियमो के रूप मे समाज पर लादने की कोशिश करता है और समाजवादी समाज के सामान्यत स्वीकृत प्रतिमानो के विरुद्ध उनको मान्यता दिलाना चाहता है, तो उससे अनिवार्यत जनता के सहज-सामान्य जीवन और समाज की क्रियाशीलताओ मे कुव्यवस्था पैदा होगी। समाज किसी को भी, चाहे वह कोई भी हो, अराजकता और स्वेच्छाचारिता की इजाजत नही दे सकता।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी हमारे समाजवादी समाज की नेतृत्वकारिणी शक्ति है। वह समस्त सोवियत जनता की इच्छा की अभिव्यक्ति करती है और जनता के बुनियादी हितो के लिए सघर्ष करना उसकी सरगर्मियो का प्रयोजन है। पार्टी को जनता का विश्वास प्राप्त है, जिसे उसने अपने सघर्ष से, अपने रक्त से अर्जित किया है और कर रही है। पार्टी कम्युनिस्ट निर्माण के पथ से उस हर चीज को दूर कर देगी, जो जनता के हितो के प्रतिकूल है।

मानवता के प्रश्न के सम्बन्ध मे, इस सम्बन्ध मे कि क्या अच्छा है, क्या बुरा है और किसके लिए अच्छा या बुरा है, हमे विचार-स्पष्टता पैदा करना होगी। सभी प्रश्नो की तरह हम इस प्रश्न को भी वर्गीय दृष्टिकोण से देखते है, मेहनतकश जनता के हितो की रक्षा करने की स्थितियो से देखते है। जब तक पृथ्वी पर वर्गो का अस्तित्व कायम है, तब तक परम अच्छा कुछ भी नही हो सकता। जो कुछ पूजीपति वर्ग के लिए, साम्राज्यवादियो के लिए अच्छा है वह मजदूर वर्ग के

14*

लिए बुरा है और इसके विपरीत जो कुछ मेहनतकश जनता के लिए अच्छा है उसे साम्राज्यवादियो की, पूजीपति वर्ग की मान्यता नही प्राप्त है।

हम चाहते है कि हमारे उसूलो को सभी लोग, विशेषत. वे लोग जो हमारे ऊपर विचारधारा के क्षेत्र में शान्तिमय सह-अस्तित्व लादने की कोशिश कर रहे है, अच्छी तरह समझे। राजनीति मे मजाक नही चल सकता। जो विचारधारा के क्षेत्र मे शान्तिमय सह-अस्तित्व की वकालत करते है, वे नीचे खिसककर वस्तुपरक रूप से कम्युनिज्म-विरोध की स्थितियो मे पहुचते जा रहे है। कम्युनिज्म के शत्रु हमे विचारधारात्मक हथियार से रहित देखना चाहते है। वे अपने मक्कारी भरे उद्देश्यो की सिद्धि विचारधाराओ के शान्तिमय सह-अस्तित्व के प्रचार द्वारा, उस "माया-मृग" की सहायता द्वारा करने की कोशिश कर रहे है, जिसे हमारे बीच घुसाकर उन्हे खुशी होगी।

हमे विश्वास है कि हमारी मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचारधारा के खिलाफ समाजवाद और कम्युनिज्म के दुश्मनो की सभी कोशिशे हमारे देश के मजदूर वर्ग, सामूहिक खेतिहरो तथा जन-बुद्धिजीवियो की एकाश्मरी विचारधारात्मक तथा राजनैतिक एकता से टकराकर चकनाचूर हो जाएगी।

अखबार, रेडियो, साहित्य, चित्रकला, सगीतकला, सिनेमा और थियेटर हमारी पार्टी के तीव्र विचारधारात्मक हथियार है। पार्टी इस बात की फिक्र रखती है कि उसके ये हथियार हमेशा सघर्ष-तत्पर रहे और शत्रुओ पर अचूक चोट करे। पार्टी इन हथियारो को कुन्द करने या उनकी कार्य-क्षमता को कमजोर करने की इजाजत किसी को नही देगी।

सोवियत साहित्य और कलाए सीधे कम्युनिस्ट पार्टी और उसकी केन्द्रीय समिति की रहनुमाई मे विकसित हो रही है। पार्टी ने उल्लेखनीय प्रतिभाशाली लेखक, कलाकार, सगीतकार, फिल्म और थियेटर-कार्यकर्ता पैदा किए है, जिनमे से सभी ने अपने जीवन और कृतित्व को लेनिनवादी पार्टी तथा जनता के साथ अविच्छेद्य रूप से जोड दिया है।

पार्टी, जनता और लेनिन अविभाज्य है। लेनिन का हेतु पार्टी तथा जनता का हेतु है। इस बात को प्रख्यात कवि व्लादीमिर मायाकोव्स्की ने बहुत अच्छी तरह अभिव्यक्त किया है

"इतिहास-जननि के
दो जुडवा बच्चो मे,
उसके हित कौन बडा,
पार्टी या लेनिन?
'लेनिन' कहने का
'अभिप्राय है 'पार्टी',
'पार्टी' कहने का
आशय होता 'लेनिन'।"

लेनिनवादी पार्टी जनता का सर्व-प्रमुख अश, उसका जुझारू और आजमाया हुआ हिरावल है।

हमारे देश के सभी नागरिक, चाहे वे मजदूर हो या सामूहिक फार्म के सदस्य, वैज्ञानिक हो या लेखक, कलाकार हो अथवा सगीतकार, अपनी जनता की सतान है और अपने को जनता के जीवन से, उसके सृजनात्मक प्रयास से बाहर रखने की कल्पना भी नही कर सकते। कला मे पार्टी-परायणता तथा लोक-भावना एक दूसरी का खडन नही करती, बल्कि वे मिलकर एक पूर्ण इकाई बनाती है।

वे कलाकार जो समाज मे अपना स्थान आज भी नही समझ पा रहे है, उन्हे उसे अच्छी तरह समझने मे मदद दी जानी चाहिए।

जिस प्रकार कोई वाद्यवृन्द-निर्देशक इस बात की फिक्र रखता है कि उसके सभी वाद्य-यत्रो की ध्वनि समन्वित हो, उसी प्रकार पार्टी सामाजिक-राजनैतिक जीवन मे सभी लोगो के प्रयत्नो को एक ही लक्ष्य की सिद्धि की ओर प्रवृत्त करती है।

नेतृत्वकारिणी शक्ति के रूप मे पार्टी का उपयोग करते हुए, समाजवादी समाज उसके जरिए जनता के सहज-सामान्य जीवन मे बाधक और विघ्नकारी तत्वो का निराकरण कर रहा है और कम्युनिज्म के निर्माण के लिए आवश्यक भौतिक, सास्कृतिक तथा विचारधारात्मक पूर्व-स्थितिया पैदा कर रहा है।

पार्टी द्वारा रूपवादी विकृतियो की आलोचना साहित्य और कला के विकास के लिए हितकर है, जिनकी भूमिका हमारे समाज के बौद्धिक जीवन मे महत्वपूर्ण है।

साहित्य और कला मे पार्टी केवल उन्ही कृतियो का समर्थन करती है, जो जनता को प्रेरणा प्रदान करती है और उसकी शक्तियो को सयुक्त करती है। समाज को ऐसी कृतियो की भर्त्सना करने का अधिकार है, जो उसके हितो के विरुद्ध हो।

हम सभी जनता द्वारा सृजित साधनो के ऊपर ही जीते है और अपने श्रम द्वारा जनता को उसका प्रतिदान देने के लिए वाध्य हैं। शहद के छत्ते की मक्खियो की तरह हर व्यक्ति के लिए समाज की भौतिक तथा आध्यात्मिक सपत्ति मे अशदान करना लाजिमी है। ऐसे लोग हो सकते है, जो यह कहे कि वे इस बात से असहमत है, यह व्यक्ति के साथ जबर्दस्ती है, अतीत मे परावर्त्तन है। इसके जवाब मे मै यह कहूगा कि हम एक सगठित समाजवादी समाज मे रहते है, जिसमे व्यक्ति और समाज के हित एक है, उनका आपस मे कोई विरोध नही है।

पार्टी की नीति समूचे समाज के हितो की अभिव्यक्ति करती है। इसलिए वह अलग अलग व्यक्तियो के हितो की भी अभिव्यक्ति करती है। पार्टी की नीति की तामील केन्द्रीय समिति करती है, जिसे पार्टी का विश्वास प्राप्त है और जिसे पार्टी के अधिकार से पार्टी-काग्रेस चुनती है।

(उच्च आदर्श-निष्ठा और कलात्मक कौशल सोवियत साहित्य और कला की महती शक्ति है। 'साहित्य तथा कला के महान ध्येय' शीर्षक सग्रह, पृष्ठ २१८ – २२३)

व्यापक पैमाने पर कम्युनिज्म के निर्माण की मुद्दत में लेनिन की पार्टी

नये कार्यक्रम की गौरव-गरिमा हमारी लेनिनवादी पार्टी की गौरव-गरिमा का परिचय देती है। कम्युनिज्म के उच्च आदर्शों को अभिव्यक्त करके हमारी पार्टी समाज के क्रान्तिकारी रूपान्तरण की नेत्री के रूप मे अपनी भूमिका को श्रेयस्कर ढग से पूरा कर रही है। हमारी **मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी जो मजदूर वर्ग की पार्टी के रूप में पैदा हुई थी, पूरी जनता की पार्टी बन गयी है।** उसी मे सोवियत समाज की एकाश्मरी एकता और शक्ति अभिव्यक्त होती है, जो हितो और विश्व-दृष्टिकोण

की एकता द्वारा जुडी हुई है। अच्छा वक्त हो या बुरा, विजय की घडी हो या मुसीबत की, हर समय, **पार्टी जनता के साथ है और जनता पार्टी के साथ।** कम्युनिस्ट पार्टी वह शक्ति है जो हमारी जनता के सकल्प, प्रयत्नो और स्फूर्तियो को ऐतिहासिक विकास के नये दौर मे हमारे सामने प्रस्तुत होनेवाले कर्त्तव्यो की पूर्ति मे सकेन्द्रित करती है।

आज, जब हमारे देश के पास विराट भौतिक क्षमताए, अत्यन्त विकसित विज्ञान और तकनीक है और जब जनता की पहलकदमी पूरे उभार पर है, तब हमारी प्रगति की रफ्तार मुख्यत देशव्यापी और स्थानीय पैमाने पर परिकल्पित राजनैतिक लाइन की सही तामील, हमारे समस्त राजकीय और सार्वजनिक सगठनो की उचित और प्रभावशाली कार्यकारिता, और समाजवादी व्यवस्था के लाभो का समुचित उपयोग कर पाने की उनकी योग्यता पर निर्भर होती है। इसलिए विस्तृत पैमाने पर कम्युनिज्म के निर्माण के काल मे पार्टी की निर्देश और सगठनकारिणी भूमिका बढाने की आवश्यकता है।

इस काल मे कम्युनिस्ट पार्टी किन मुख्य तरीको से विकसित की जाएगी ? हमारा मत है कि वह विकसित की जाएगी

सामाजिक और राजनैतिक सगठन के सर्वोच्च रूप की हैसियत से पार्टी की भूमिका और कम्युनिस्ट निर्माण के सभी क्षेत्रो मे उसके नेतृत्वकारी प्रभाव का अपर विकास करके,

पार्टी और जनता की एकता को दृढ करके, गैर-पार्टी जनता के साथ पार्टी के सम्पर्को के विभिन्न रूपो को विस्तृत करके, मेहनतकश जनता के अधिकाधिक बडे समुदायो की राजनैतिक चेतना तथा सक्रियता को पार्टी सदस्यो के स्तर तक उठाकर,

पार्टी मे अन्दरूनी जनवाद की और वृद्धि करके, पार्टी सदस्यता के रुतबे को और अहम बनाकर, सभी कम्युनिस्टो मे अधिक सरगर्मी और पहलकदमी जगाकर तथा पार्टी की पातो मे एकता और सहति को दृढ बनाकर।

इस बात पर जोर दिया जाना चाहिए कि पार्टी के राजनैतिक कार्य और सगठनात्मक नेतृत्व को विस्तृत पैमाने पर कम्युनिज्म के निर्माण-काल के अनुरूप बनाने के लिए उनका एक नया और उच्चतर स्तर उपलब्ध

ट्रना है। नये पार्टी कार्यक्रम की मजूरी एक महान ऐतिहासिक कार्य है। मगर यह अभी पहला ही कदम है। मुख्य बात है कार्यक्रम की तामील। कार्यक्रम मे निर्धारित शानदार कर्त्तव्यो से पूरी पार्टी और पार्टी के प्रत्येक सगठन पर बडी भारी जिम्मेदारी आयद हुई है।

हमारी काग्रेस द्वारा नये कार्यक्रम के आधार पर पास की जानेवाली सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के नियम विस्तृत पैमाने पर कम्युनिस्ट निर्माण की मुद्दत की परिस्थितियो और कर्त्तव्यो के अनुरूप पार्टी के सगठनात्मक सिद्धान्तो का निरूपण करेगे।

निर्वाचित पार्टी निकाय किस प्रकार गठित किए जाय, यह प्रश्न बुनियादी महत्व का है। कार्यक्रम के मसौदे मे एक नयी पद्धति प्रस्तावित की गयी है, जिससे **नेतृत्वकारी पार्टी निकायों के कार्यकर्ताओ के नियमित नवीयन** की गारटी होगी। हमारी राय है कि राजकीय तथा सार्वजनिक सगठनो के निर्वाचित निकायो के सम्बन्ध मे भी यही पद्धति लागू करना मुनासिब होगा।

इस पद्धति मे सक्रमण हमारे जनवाद के विकास मे एक बडा अगला कदम होगा। यह सोवियत समाज के राजनैतिक सगठन के इस नये दौर के अनुरूप होगा, जबकि राज्य सारी जनता का राज्य बन गया है और पार्टी समस्त जनता की आकाक्षा और हितो की प्रवक्ता बन गयी है। पार्टी की पातो और उसकी विचारधारात्मक शक्ति की प्रचण्ड वृद्धि, उसके कार्यकर्त्ताओ का विकास और जनता के राजनैतिक तथा सास्कृतिक स्तर की अभूतपूर्व उन्नति इस दौर की परिचायक विशेषताए है।

जब पार्टी पैदा हो रही थी, तब उसमे मुट्ठी भर उन्नत मजदूर और बुद्धिजीवी थे, जो मार्क्सवाद की ओर इसलिए आकृष्ट हुए थे कि वे इतिहास के नियम जानना चाहते थे, समाज मे विद्यमान अन्तर्विरोधो को हल करने के लिए एक क्रान्तिकारी मार्ग खोज रहे थे। कम्युनिज्म के हेतु के प्रति पूर्ण निष्ठावान वे पेशेवर क्रान्तिकारी, उस लेनिनवादी पार्टी के नेतृत्वकारी आधार-स्तम्भ थे, जिसने मजदूर वर्ग और मेहनतकश जनता को सगठित किया, उन्हे राजनैतिक चेतना प्रदान की, पुरानी शोषण व्यवस्था पर हमला करने मे उनका नेतृत्व किया और समाजवाद की विजय उपलब्ध की।

उच्च आदर्शों की निष्ठा, पार्टी की पातो की सहति, अनुशासनशीलता, जनता के साथ पार्टी के सम्बन्ध और मजदूर वर्ग तथा मेहनतकश किसानो द्वारा उसे दिया जानेवाला समर्थन – ये है हमारी पार्टी के जन्म के क्षण से ही उसकी शक्ति के स्रोत।

अक्तूबर क्रान्ति की विजय के सघर्षो मे, गृह-युद्ध की आग मे, समाजवादी निर्माण के मोर्चो पर, महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध की भयानक अग्निपरीक्षा मे और युद्धोत्तर काल की स्थितियो मे हमारी पार्टी की शक्ति वढी, उसकी पाते विस्तृत हुई और उसके कार्यकर्त्ता फौलादी वने। हमारे युग मे गैर-पार्टी लोग भी कम्युनिस्टो के साथ कधे से कधे मिलाकर सक्रिय रूप से कम्युनिज्म का निर्माण कर रहे है, उनके मुख्य समूह कम्युनिस्टो की तरह ही सोचते-विचारते है।

जहा क्रान्ति के प्रारम्भिक वर्षो मे हमारे पास कम्युनिस्ट नेतृत्वकारी कार्यकर्त्ताओ की सख्या सीमित थी, वहा आज हमारे पास नये लोगो को आगे वढाकर प्रमुख पदो पर नियुक्त करने की असीम सम्भावनाए मौजूद है। ऐसा नियम चलाना आवश्यक है, जिससे प्रमुख पदो पर चुने गये साथी, नयी शक्तियो के आगे वढने का रास्ता न वन्द करने पावें, वल्कि इसके विपरीत वे इसके लिए रास्ता खोलें कि दूसरे लोग पार्टी, सोवियत, ट्रेड-यूनियन तथा अन्य सार्वजनिक सगठनो मे जिम्मेदारी के पदो पर काम करने मे, पार्टी तथा देश का नेतृत्व करने मे अपने ज्ञान तथा अपनी क्षमता का इस्तेमाल कर सके। हमारे यहा अनेक योग्य और सुशिक्षित लोग है। उनमे कमी है सिर्फ आवश्यक अनुभव की और इसी मामले मे हमारे नेतृत्वकारी साथियो को नये कार्यकर्त्ताओ के प्रशिक्षक की भूमिका मे प्रगट होना चाहिए।

प्रत्येक शरीर मे अलग अलग कोशिकाए होती है और उसका सतत नवीयन होता रहता है, क्योंकि कुछ कोशिकाए मरती और कुछ अन्य पैदा होती रहती है। पार्टी और पूरा समाज भी इसी प्रक्रिया के, जीवन के इसी नियम के अधीन है। पार्टी तथा पूरे समाज के शरीर के विकास को क्षति पहुचाये विना इस प्राकृतिक प्रक्रिया को न तो रोका जा सकता है और न उसे भग ही किया जा सकता है।

यह वात छिपी नही है कि हमारे बीच ऐसे साथी मौजूद है जिनको अपने समय मे उचित सराहना मिली थी। वे प्रमुख पदो पर चुने गये

थे और दजनो साल से उन पदो पर आसीन रहे है। इस बीच उनमे से कुछ लोगो ने रचनात्मक ढग से काम करने की क्षमता खो दी है, उनका नवीनता-बोध नष्ट हो गया है और वे बाधा बन गये है। उनको इन पदो पर सिर्फ इसलिए बनाये रखना बिल्कुल गलत होगा कि वे कभी उनके लिए चुने गये थे। निश्चय ही हमे हमेशा के लिए अपने को उन्ही व्यक्तियो तक सीमित नही रखना चाहिए, जो कभी प्रमुख सगठनो के लिए चुने गये थे। यह हमारा रास्ता नही है। अगर पार्टी के साथी अपने पद की अवधि समाप्त होने के बाद फिर किसी पार्टी-निकाय मे नही चुने जाते, तो इस कारण उनके साथ कोई भेदभाव जरूर ही नही बरता जाना चाहिए। अगर किसी कम्युनिस्ट ने अपने पद की पूरी अवधि भर भली-भाति काम किया है, तो वह सम्मान और यश का अधिकारी है।

पार्टी और सरकार के प्रमुख नेतृत्वकारी कामो मे ऐसे नये साथियो को खीचना हमारा कर्त्तव्य है जो काम मे अपनी सार्थकता सिद्ध कर चुके हो। मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धान्त और क्रान्तिकारियो तथा समाजवाद के निर्माताओ की कई पीढियो के अनुभव के आधार पर मजे हुए कार्यकर्त्ताओ के सहयोग से, नयी शक्तिया हमारे देश की शक्ति को सुदृढ करेगी, उसकी अर्थ-व्यवस्था, विज्ञान, तकनीक और सस्कृति को उन्नत करेगी। अगर हम इस बात को मद्देनजर रखे कि पार्टी, सोवियत और सार्वजनिक प्राथमिक तथा उच्चतर सगठनो की शाखा-दर-शाखा फैली हुई शृखला मे लाखो निर्वाचित निकाय है, तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि प्रत्येक नियमित चुनाव लाखो नये लोगो को नेतृत्व के पदो पर पहुचाएगा।

निरन्तर नए कार्यकर्त्ताओ का भर्ती किया जाना, अपनी सार्थकता सिद्ध करनेवाले नए साथियो को तरक्की दिया जाना, पार्टी और राज्य की मशीनरी मे अनुभव-वृद्ध तथा युवक कार्यकर्त्ताओ का सयुक्त किया जाना – मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी के विकास का नियम है। इस मामले मे पार्टी खास तौर से जो० वी० स्तालिन की व्यक्ति-पूजा के नतीजो से हासिल सबको के आधार पर आगे बढती है। इस विषय पर मै एकाधिक बार, खासकर मौजूदा काग्रेस के सामने केन्द्रीय समिति की रिपोर्ट के सिलसिले मे बोल चुका हू। कार्यक्रम और नियमो के मसौदो मे, पार्टी की इन बुनियादी दस्तावेजो मे, प्रस्तुत की गई स्थापनाओ से

व्यक्ति-पूजा की पुनरावृत्ति के विरुद्ध गारटी और यकीनी रोक पैदा हो जानी चाहिए। हम इस काग्रेस के मच से घोषित करते हैं . पार्टी को व्यक्ति-पूजा के रास्ते को सदा के लिए वद कर देने के लिए जरूरी सभी कार्रवाइया करनी चाहिए।

निर्वाचित सस्थाओ के नियमित नवीयन को आगे से पार्टी-जीवन, सरकारी तथा सार्वजनिक जीवन का अटूट नियम वनाया जाना चाहिए। इससे सामूहिक नेतृत्व के उसूल को और भी सगत रूप से लागू करने के लिए नये सुयोग पैदा हो जायेंगे।

पार्टी कम्युनिस्टो के, समस्त जनता के सामूहिक अनुभव और सामूहिक चिन्तन को अवलम्व वनाती है, वह जन-सगठनो द्वारा, समस्त सोवियत जनता द्वारा प्रदर्शित पहलकदमी को हर तरह प्रोत्साहन देती है। हर अच्छी शुरूआत, हर अच्छे खयाल और हर मूल्यवान सुझाव पर अत्यन्त ध्यानपूर्वक विचार किया जाना चाहिए, उसका सक्रिय समर्थन और उसकी तामील की जानी चाहिए। लेकिन हमारे यहा ऐसे कार्यकर्त्ता हैं जो जनता द्वारा नाना-विध प्रदर्शित पहलकदमियो की उपेक्षा करते हैं। उनके लिए केवल वही वात महत्त्वपूर्ण है, जो वे ख़ुद सोचते या कहते है। यह कम्युनिस्ट नही, नौकरशाही दृष्टिकोण है। सभी प्रमुख कार्यकर्त्ताओ, सभी पार्टी सगठनो का यह कर्त्तव्य है कि वे कम्युनिस्ट निर्माण के हित मे प्रत्येक नागरिक की प्रतिभा और क्षमता का उपयोग करे।

निर्वाचित निकायो के निर्माण की प्रस्तावित व्यवस्था आलोचना और आत्मालोचना के विकास की नई सभावनाए उद्घाटित करती है, ताकि नेताओ के ऊपर कार्यकर्त्ताओ की व्यक्तिगत निर्भरता को, कुनवा-परस्ती और काम मे एक-दूसरे की कमियो और गलतियो को ढाकने-मूदने की प्रवृत्ति को दूर किया जा सके। कार्यकर्त्ताओ के नवीयन के उसूल के कारण निर्वाचित सस्थाओ से ऐसे लोगो का सफाया करना सम्भव होगा जो सम्वन्धित सगठन के सामूहिक नेतृत्व और जनता की राय और इच्छा पर विचार करने की प्रवृत्ति नही रखते और जिन्होने पार्टी और जनता के प्रति अपनी जिम्मेदारी की भावना खो दी है। इसलिए निर्वाचित निकायो का नियमित रूप से नवीयन होना चाहिए और उनमे ऐसे सभी

योग्यतम लोगो को खीच लिया जाना चाहिए जो अपनी सार्थकता सिद्ध कर चुके हो और कम्युनिज्म के प्रति वफादार हों।

हमारे काम के हित मे यह जरूरी है कि नये और पुराने कार्यकर्त्ताओ का उचित सम्मिश्रण और नेतृत्व की उत्तरोत्तरता कायम रहे। उच्चतर निकायो मे यह विशेष रूप से जरूरी है। उत्तरोत्तरता के बिना सही गृह और विदेश-नीति का अनुसरण और आर्थिक तथा सास्कृतिक विकास का सफल निर्देशन कठिन होगा। नेतृत्व की उत्तरोत्तरता लेनिनवाद का एक बुनियादी उसूल है। व्ला० इ० लेनिन ने हमे सिखाया है "यह है दरअसल पार्टी सगठन और अपने नाम के हकदार पार्टी नेताओ का महत्व कि उन्हे वर्ग-विशेष के सभी विचारशील प्रतिनिधियो के अनवरत, अथक, विविध और बहुमुख प्रयासो के जरिये पेचीदा राजनैतिक समस्याओ को तेजी से और सही ढग से हल करने के लिए आवश्यक ज्ञान तथा अनुभव और—ज्ञान तथा अनुभव के अतिरिक्त—राजनैतिक सहजबोध पैदा करना चाहिए।"*

पार्टी के कार्यकर्त्ताओ की, उसके नेताओ की प्रतिष्ठा पार्टी की मूल्यवान निधि है। जहा हम व्यक्ति-पूजा को अमान्य करते है, वहा हम प्रमुख पार्टी कार्यकर्त्ताओ के प्रशिक्षण तथा उनकी प्रतिष्ठा-वृद्धि की आवश्यकता को किसी भी तरह खारिज नही करते। मुद्दा यह है कि पार्टी नेताओ को, आम पार्टी सदस्यो मे से, उनकी क्षमताओ और उनकी राजनैतिक और कार्यकारी योग्यता के बल पर उन्नति दी जानी चाहिए; उन्हे कम्युनिस्टो से, जनता से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित होना चाहिए। लेनिन के जीवन-काल मे पार्टी कार्यकर्त्ताओ के निर्माण की प्रक्रिया इसी प्रकार चलती थी और आज भी यही होना चाहिए।

हमें पार्टी-जीवन के लेनिनवादी मानकों और सामूहिक नेतृत्व के उसूल का सख्ती से पालन और विकास करना चाहिए; नेतृत्वकारी संगठनो तथा उनके कार्यकर्त्ताओ की सरगमियों पर पार्टी के आम सदस्यों की सख्त निगरानी को, सभी कम्युनिस्टो की सक्रियता और पहलक़दमी

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, चौथा रूसी सस्करण, खण्ड ३१, पृष्ठ ५०।

बढ़ाने को, पार्टी-नीति के निर्धारण और उसकी तामील में उनकी वास्तविक रचनात्मक सहभागिता को और आलोचना तथा आत्मालोचना के विकास को सुनिश्चित बनाना चाहिए।

अगर कोई पार्टी सदा आगे की ओर देखती है, अगर वह अपने अनुभव को समृद्ध और व्यापक बनाते हुए हमेशा जनता को, जनता के विवेक को ध्यान मे रखती है, तो वह सभी परीक्षाओ मे सफल होगी। लेनिन द्वारा सस्थापित और शिक्षित हमारी पार्टी ऐसी ही पार्टी है। इसलिए, साथियो, हम अपने अमर नेता और शिक्षक के आदेशो को पवित्र धरोहर की तरह सजोये तथा अधिकाधिक सुसगत रूप से उनपर अमल करे। तब हमारी सफलताए और भी शानदार होगी।

हमारे विकास के नये दौर मे यह विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है कि सोवियतो, आर्थिक निकायो, ट्रेड-यूनियनो, कोम्सोमोल (तरुण कम्युनिस्ट लीग), सहकारी सस्थाओ तथा अन्य जन-सगठनो मे पार्टी नेतृत्व को बेहतर बनाया जाए। जनता का सगठन बढाने और उसकी रचनात्मक शक्तियो को एकजुट करने के लिए यह एक आवश्यक शर्त्त है। कम्युनिस्ट निर्माण के सभी क्षेत्रो मे काम की हालत की ज़िम्मेदारी सभालते हुए, पार्टी सगठनो को राजकीय तथा सार्वजनिक सगठनो की जगह हरगिज़ नही लेनी चाहिए। जन-सगठनो मे पार्टी नेतृत्व का मुख्य काम उनके प्रयत्नो को कम्युनिज्म के निर्माण के लिए एकजुट करना, उनके नेतृत्वकारी निकायो के गठन मे नियमित रूप से सुधार करना, कार्यकर्त्ताओ को तरक्की देना, उन्हे उचित स्थान पर नियुक्त करना और प्रशिक्षित करना है।

मौजूदा दौर मे पार्टी-मेम्बर की भूमिका और ज़िम्मेदारी विशेष रूप से बडी है। कम्युनिस्ट कहलाना एक बडी बात है। पार्टी-नीति की तामील के सघर्ष मे आगे रहने की जितनी आशा उससे आज की जाती है, उतनी पहले कभी नही की जाती थी। जनता की निष्ठापूर्ण सेवा और सार्वजनिक तथा व्यक्तिगत जीवन मे अपने आचरण द्वारा हर कम्युनिस्ट को कम्युनिस्ट नैतिकता का पालन करने मे और कम्युनिस्ट सम्बन्धो को विकसित और सुदृढ करने मे एक आदर्श उपस्थित करना चाहिए।

पार्टी की शक्ति और अजेयता का एक मुख्य स्रोत उसकी अडिग विचारधारात्मक और सगठनात्मक एकता मे निहित है। लेनिनवादी पार्टी-

उसूलो के खिलाफ की जानेवाली गुटबाजी और दलबंदी की कार्रवाइयो की सभी अभिव्यक्तियो के विरुद्ध पार्टी के शस्त्रागार मे सगठनात्मक गारटिया सुरक्षित है।

कार्यक्रम के मसौदे मे कार्यकर्त्ताओ के नवीयन, व्यक्ति-पूजा की रोक-थाम तथा पार्टी मे अन्दरूनी जनवाद की व्यापक वृद्धि के लिए जो कार्रवाइया प्रस्तावित की गयी है, वे सचमुच क्रान्तिकारी है। वे बुनियादी तौर से पार्टी की आम योजना और कम्युनिज्म के सघर्ष मे उसकी रणनीति तथा कार्यनीति से सम्बन्धित है। इन कार्रवाइयो की तामील से कम्युनिज्म के प्रति निष्ठावान, सुयोग्य कार्यकर्त्ताओ को और भी बडे पैमाने पर प्रशिक्षित करना, पार्टी और तमाम जन-सगठनो की, समस्त सोवियत जनता की सरगर्मी को बढाना सम्भव होगा। इसका अर्थ यह है कि अर्थ-व्यवस्था और सस्कृति के विकास, कम्युनिज्म के निर्माण के सभी कार्य और अधिक सफलता के साथ चलेगे।

साथियो, विस्तृत पैमाने पर कम्युनिज्म के निर्माण का कार्यक्रम निर्धारित करना हमारी पार्टी की, उसकी केन्द्रीय समिति की प्रचण्ड सैद्धान्तिक क्षमता का प्रमाण है। इस कार्यक्रम द्वारा हथियारबन्द होकर हम सोवियत कम्युनिस्ट मानो ऐसी नयी बुलदियो पर चढ रहे है, जहा से हमारा कम्युनिस्ट भविष्य अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। हमे किस बात से शक्ति प्राप्त होती है? सबसे पहले तो अपने चिर-विजयी, सतत-विकासमान मतवाद, मार्क्सवाद-लेनिनवाद से। इसके साथ ही समाजवादी और कम्युनिस्ट निर्माण की प्रक्रिया करोडो जनता के व्यावहारिक अनुभव के आधार पर मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धात के समृद्धिकरण की प्रक्रिया है। नया कार्यक्रम एक शानदार सैद्धातिक और राजनैतिक दस्तावेज है, जिसमे कम्युनिज्म सम्बन्धी मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त के मूलभूत विचार और समाजवादी तथा कम्युनिस्ट निर्माण मे उन विचारो की तामील के सिलसिले मे हासिल अनुभवो से निकाले गए नये निष्कर्ष सकेन्द्रित है।

हम ऐसे रास्ते पर चल रहे है जो कभी आजमाया नही गया है। हमारे लिए कम्युनिस्ट निर्माण के दौरान मे उठनेवाली अनेक विभिन्न समस्याओ को हल करना, सैद्धान्तिक विचारो को विकसित करना और

ठोस रूप देना लाजिमी है। जिस प्रकार जीवित शरीर सूर्य के प्रकाश के बिना सामान्य रूप से विकसित नही हो सकता, उसी प्रकार कम्युनिस्ट निर्माण की भी तब तक कामयाबी के साथ तामील नही हो सकती, जब तक उसका पथ मार्क्सवादी-लेनिनवादी विज्ञान द्वारा ग्रालोकित नही होता। पार्टी का कर्त्तव्य है कि वह हमारे मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त को विकसित करने के सम्बन्ध मे अथक व्यग्रता प्रदर्शित करे, जो कम्युनिज्म की नयी विजयो का मार्ग दिखनेवाला विश्वसनीय कुतुबनुमा है .

मानवता सदियो से एक ऐसे समाज का सपना देख रही थी, जिसमे शोषण न हो, सामाजिक तथा जातीय उत्पीडन न हो, जिसमे जनता के सामने युद्ध का खूनी सकट न लटकता रहे। जनता के हेतु के लिए सघर्ष करने मे अनेक लोगो ने वीरगति प्राप्त की। मगर जनता के लिए सुख सपना ही बना रहा, दुख और आसू ही उनका भाग्य बने रहे। मार्क्सवादी-लेनिनवादी मतवाद की यही महानता है कि उसने मेहनतकश जनता की आकाक्षाओ की पूर्ति का यथार्थपरक मार्ग बताया है। कम्युनिज्म की प्रथम अवस्था, समाजवाद, को साकार रूप देने और कम्युनिज्म की उच्चतर अवस्था की ओर सोवियत जनता की रहनुमाई करने का सौभाग्य हमारी पार्टी को प्राप्त हुआ है।

सारे ससार मे स्वतत्रता की मशाल को, समाजवाद और कम्युनिज्म की पताका को ऊची करके हमारी पार्टी ने बीसवी सदी को मानवता के भाग्य मे बुनियादी परिवर्तनो की सदी होने का गौरव प्रदान किया। अपने साथ जन-समुदायो को लेकर आगे बढनेवाली, सभी देशो के कम्युनिस्टो की महान सेना के वीरतापूर्ण सघर्षो ने इतिहास की गति को तेज किया और उनसे मानवता के श्रेष्ठतम आदर्शो की सिद्धि के दिन और नजदीक आये। फिर भला, सोवियत सघ मे कम्युनिस्ट समाज निर्मित हो जाने के बाद इतिहास की गति और कितनी अधिक तेज हो जाएगी।

कम्युनिस्ट हेतु विराट छलागे मारता हुआ आगे बढ रहा है। कम्युनिज्म की झडाबरदार, मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टियो ने यह दिखा दिया है कि वे क्रातिकारियो और नवीनता-प्रवर्त्तको की पार्टिया है, वे जनता के सुख की जननी है। सभी देशो के प्रगतिशील लोग यह मानते है कि कम्युनिस्टो के साथ वह सब कुछ सम्बन्धित है, जो श्रेष्ठतम है,

जो उज्वलतम है। कम्युनिज्म की शक्तिया अगणित है। जीवन का सत्य, इतिहास का सत्य कम्युनिज्म के पक्ष मे है।

लेनिन की पार्टी का वाछनीय, अन्तिम लक्ष्य सदा ही कम्युनिज्म की विजय रहा है। कम्युनिज्म का वह सपना अब साकार हो रहा है। साथियो, हमारी सताने ही नही, बल्कि हम भी, सोवियत जनता की हमारी पीढी भी कम्युनिज्म की जिन्दगी बिताएगी! यह जानकारी हर सोवियत नागरिक को प्रेरणा प्रदान करती है, उसमे अनुपम उत्साह के साथ जीने और काम करने की लालसा पैदा करती है।

कार्यक्रम हर किसी को बताता है कि उसे कम्युनिज्म के मेमारो की कतार मे कौनसा स्थान ग्रहण करना चाहिए, कम्युनिज्म के हित के लिए किस तरह काम और अध्ययन करना चाहिए, कम्युनिस्ट समाज मे जीने के लिए अपने को किस तरह तैयार करना चाहिए। इसलिए, साथियो! आइए उस दिन को शीघ्र लाने के लिए अपनी सारी कोशिशे, अपनी सारी ताकते लगा दे, जब कि हमारे देश के ऊपर कम्युनिज्म का सूरज चमकने लगे।

लेनिन की पताका ने हमे समाजवाद की विजय के सघर्ष मे प्रेरणा दी और हम विजयी हुए!

लेनिन की पताका हमे अपने देश की नई ऐतिहासिक मजिल मे, कम्युनिस्ट निर्माण की मजिल मे भी प्रेरणा दे रही है।

मार्क्सवाद-लेनिनवाद के झडे के नीचे, कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व मे, कम्युनिज्म की विजय की ओर आगे बढे!

(सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम के बारे मे। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २२ वी काग्रेस, शार्टहैड रिपोर्ट, खण्ड १, पृष्ठ २५०–२५७)